व्लादमिर नाबोकोव
लोलिता

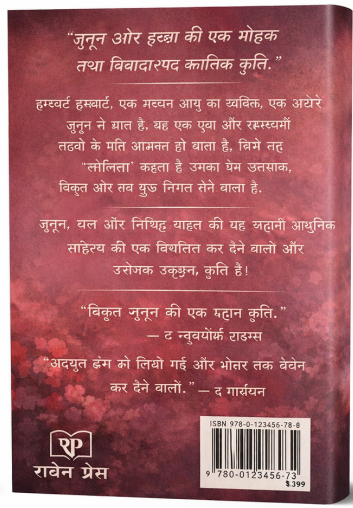
"जुनून और हरछा की एक मोहक
तथा विवादास्पद कातिक कृति."
हम्बर्ट हमबार्ट, एक मध्यन आयु का व्यक्ति, एक अटेरे
जुनून ने ग्रात है, वह एक एवा और रहस्यमयी
तठवो के मति आमनत हो वाला है, बिभे तह
"लोलिता' कहता है उमका घेम उतसाक,
विकृत ओर तव बुछ निगत रोने वाला है.
जुनून, वल और निथिह वाहत की यह यहानी आधुनिक
साहेरय की एक बिथतित कर दैने वालो औँर
उरोजक उकुछन, कुति है!
"बिकुत जुनून की एक महान कुति."
— ट न्युवयोर्क राउम्स
"अदयुत ढंग को लिखो गई और भोतर तक वेवेन
कर दैने वालों." — द गार्यंयन
रावेन प्रेस
ISBN 978-0-123456-78-8
9 780-0123456-73
$399

मैं अब तक सौ से अधिक पेज लिख चुका हूं, लेकिन ऐसा लगता है जैसे मेरी कहानी अभी शुरू भी नहीं हुई हो। मुझे तारीखें भी ठीक से याद नहीं आ रही हैं। शायद यह बात 15 अगस्त, 1947 के आसपास की है। लेकिन अभी फिलहाल मैं कुछ नहीं लिख सकता। अभी तो बस मैं एक ही शब्द लिख सकता हूं-लोलिता... लोलिता... लोलिता और...

उसकी टांगों को सहलाने के दौरान मेरी उंगलियों ने उसकी पिंडलियों पर बालों को महसूस किया और मैं एक अजीब सी धुंध में खो गया। जब वह सेब का बचा खुचा टुकड़ा फेंकने के लिए मुड़ी तो मैं डर गया कि कहीं उठकर चली ही न जाए, लेकिन इसके कारण तो वह मेरे और करीब आ गई और उसके बेशर्म नितंब अब ठीक मेरी गोद में थे। अचानक मुझे लगा कि मैं उस हालत तक पहुंच चुका हूं जहां से वापसी भी मुश्किल होती है और आगे जाना भी नामुमकिन होता है

मनोज पब्लिकेशन्स

लोलिता

नोबल पुरस्कार प्राप्त बहुचर्चित उपन्यास

ओरिजिनल लेखक व्लादिमीर नाबोकोव अडैप्टेशन एस. एन.एस. गुप्ता

मनोज पब्लिकेशन्स

लोलिता

लोलिता ! उसका नाम जुबान पर आते ही जैसे मेरे बदन में एक सिरहन सी दौड़ जाती है। मेरे रोम-रोम में इच्छाओं का तूफान-सा मचल उठता है। लो-लि-ता-मेरी जिंदगी की कहानी लोलिता से ही शुरू होती है और उसी पर जाकर खत्म भी होती है। उसकी सांसों की गर्मी को मैंने अपने अंदर आज तक सहेज रखा है। लोलिता-लोलिता-लोलिता! घर में वो लोला होती थी, तो स्कूल में डॉली, लेकिन मेरी बांहों में हमेशा लोलिता ही होती थी।

हालांकि मेरी जिंदगी में लोलिता पहली लड़की नहीं थी। सच पूछिए तो वो शायद होती ही नहीं, अगर बरसों पहले सागर किनारे मैं उस जैसी ही एक लड़की से न मिला होता। यह लोलिता के जन्म के उतने ही साल पहले की बात है, जितनी कि उस समय मेरी उम्र थी। मेम्बराने जूरी, मैं आपको अपनी जिंदगी के कुछ पन्ने खोलकर दिखाना चाहता हूं। मैं सही या गलत, यह मैं नहीं कह सकता। नतीजे तक पहुंचना आपका काम है।

मेरा जन्म 1910 में पेरिस में हुआ था। मेरे पिता बेहद शरीफ इंसान थे। वे स्विटजरलैंड के नागरिक थे। उनका रिवियेरा में एक आलीशान होटल था। उनके पिता यानी मेरे दादाजी शराब का व्यापार करते थे। तीस साल उम्र में पिताजी ने एक ब्रिटिश लड़की यानी मेरी मां से शादी की। मेरी मां बेहद खूबसूरत थी। लेकिन जब मैं बस तीन साल का था, एक एक्सीडेंट में मेरी मां मर गई। उनकी बस एक धुंधली-सी याद मेरे मन के किसी कोने में बाकी है। मां की मौत के साथ ही जैसे मेरे बचपन का चिराग बुझ गया था। आप समझ सकते हैं कि एक बच्चे के लिए मां का साया सूरज की सुनहरी गुनगुनी धूप जैसा होता है।

मां की मौत के बाद उनकी बड़ी बहन यानी मेरी मौसी सिबल मेरी और पिताजी की देखभाल

करने आ गई। पिताजी के ही रिश्ते के एक भाई के साथ उनकी शादी हुई थी, लेकिन उनके पति ने उन्हें छोड़ दिया था। बाद में किसी ने मुझे बताया कि वे मेरे पिता से प्यार करती थीं और इसका पिताजी ने एक बार नाजायज फायदा भी उठाया था। मुझे वे बहुत अच्छी लगती थीं, हालांकि वे बहुत कड़े स्वभाव की थीं। शायद वे मुझे पिताजी से अच्छा इंसान बनाना चाहती थीं। उनकी आंखों के किनारे गुलाबी और रंगत मोम जैसी चिकनी थी। वे कविता लिखती थीं और उनका

व्यवहार अजीब सूफियाना-सा था। उन्होंने एक बार कहा था कि मेरे सोलह साल का होने पर वे मर जाएंगी और वे सच में मर भी गईं। उनके पति इत्र के व्यापारी थे। ज्यादातर वो अमेरिका में ही रहते थे, वहीं फिर उन्होंने अपनी फैक्टरी डाल दी और धीरे-धीरे बहुत बड़ी जायदाद बना ली।

मैं बेहद खुशमिजाज और तंदुरुस्त बच्चा था। खूबसूरत चित्रों वाली किताबें पढ़ता मैं बड़ा हो रहा था। समुद्र किनारे रेत में खेलता, घरौंदे बनाता। संतरे के पेड़ों के साये तले घूमता। हमारे यहां कई सारे कुत्ते भी थे। होटल मिराना के शानदार माहौल में मैं पला-बढ़ा था। वही मेरा संसार था। वहां मैं सबका दुलारा था। होटल में आने वाली अधेड़ अमेरिकी महिलाएं अपने बेंत का सहारा लेकर मेरी ओर पीसा की मीनार की तरह झुकी जाती थीं। दिवालिया हो चुकी रूसी रानियां मेरे पिताजी के होटल का किराया तो नहीं दे पाती थीं, लेकिन मेरे लिए बॉनबॉन जरूर लाती थीं। और मेरे अच्छे प्यारे पिता मुझे कभी नाव की और कभी अपनी बाइक की सैर कराने ले जाते थे। वो मुझे तैरना सिखाते और दुनिया भर की अच्छी-अच्छी किताबें पढ़कर सुनाते। मैं उनका बहुत आदर करता था। जब नौकर लोग प्रेमिकाओं के बारे में बात करते थे, तो मन ही मन मुझे उनके लिए अच्छा लगता था।

कुछ बड़ा होने पर घर से थोड़ी ही दूर पर स्थित एक डे-बेर्डिंग में मेरा दाखिला हो गया था। पढ़ाई में मैं काफी अच्छा था। स्कूल में मेरे बहुत सारे अच्छे दोस्त बन गए थे और मेरे अध्यापक-अध्यापिकाएं मुझे बहुत पसंद करते थे। तेरह साल की उम्र तक सेक्स के बारे में मैं बहुत कम जानता था। स्कूल में मेरे साथ एक अमेरिकी बच्चा भी था। उसकी मां एक मशहूर अभिनेत्री थी, जिसे उसने असल जिंदगी से ज्यादा सिनेमा के पर्दे पर देखा था। उसने मुझे एक बार सेक्स के बारे में थोड़ा कुछ बताया था। एक-दो बार साथ बैठकर हम दोनों ने कुछेक पुरानी पत्रिकाओं में औरतों के अर्द्धनग्न फोटो भी देखे थे। बाद में पिताजी ने अपने हिसाब से

मुझे सेक्स के बारे में काफी बता दिया था। लेकिन मेरी बदकिस्मती से उन्हीं गर्मियों की छुट्टियों में वे मिसेज आर के साथ इटली घूमने निकल गए थे। कोई भी नहीं था, जिससे मैं सेक्स संबंधी कुछ सलाह ले पाता।

अनाबेल की मां डच और पिता अंग्रेज थे। लोलिता के मेरी जिंदगी में आने से पहले तक उसके चेहरे का एक-एक नक्श मेरे दिलोदिमाग पर छाया हुआ था। अब भी याद करना चाहूं, तो टुकड़ों-टुकड़ों में उसकी शहद में डूबी सी रंगत, पतले-पतले नाजुक हाथ, लंबी पलकें, छोटे-छोटे भरे बाल, भरे-भरे होंठ सब जेहन में कौंध जाते हैं। लेकिन अब एक धुंधली-सी याद ही बाकी है उस प्यारे चेहरे की।

अनाबेल मुझसे बस कुछ महीने ही तो छोटी थी। उसके माता-पिता आंटी

6

सिबल के पुराने दोस्त थे। होटल मिराना के पास ही उन्होंने एक खूबसूरत बंगला किराए पर लिया था। उसके गंजे पिता और मेकअप से लिपे-पुते चेहरे वाली मां से मुझे सख्त चिढ़ थी। पहली बार हम दोनों समुद्र किनारे मिले थे। अनाबेल चुप बैठी अपने हाथों से रेत को फिसलते देखती रहती। उन दिनों के आम यूरोपियन बच्चों की तरह हम लोग भी टेनिस और दुनिया के फलसफे पर बात करते। बेजुबान जानवरों की बेबसी हम दोनों का ही दिल दुखा देती थी। वह किसी सूखाग्रस्त एशियाई देश में नर्स बनकर जाना चाहती, तो मैं मशहूर जासूस...।

फिर अचानक ही हम दोनों एक-दूसरे को पागलपन की हद चाहने लगे थे, लेकिन अपने प्यार को जाहिर करने का मौका हमें नहीं मिल रहा था। अनाबेल के माता-पिता और आंटी सिबल की निगाहें हर वक्त हम पर लगी रहती थीं, खासतौर से अनाबेल के लॉन वाले किस्से के बाद। सबकी नजर बचाकर हम कभी-कभी टहलते हुए समुद्र किनारे किसी चट्टान या झाड़ी के पीछे जा निकलते और मैं जाने-अनजाने कभी अनाबेल का घुटना छू लेता, तो कभी वो चुपके से मेरी कोहनी छू लेती। कभी मौका मिलते ही हम किसी रेत के घरौंदे के पीछे बैठकर एक-दूसरे के नमकीन होंठ चूमते चले जाते। कभी-कभी समुद्र में तैरते हुए पानी के भीतर हम एक-दूसरे के बदन को छूने की कोशिश में रहते, लेकिन ये सब छोटी-छोटी मुलाकातें हमारी बेताब और कच्ची उम्र की प्यास को इस हद तक बढ़ा देतीं कि फिर समुद्र की ठंडी-ठंडी लहरें भी हमारे भीतर की इस मचलती आग को ठंडा न कर पातीं।

अपनी घुमक्कड़ी के इस दौर में मैंने बहुत खोया है और उनमें से एक अनाबेल की तस्वीर भी है, जिसमें अनाबेल, उसके माता-पिता, डॉक्टर कूपर जो उन्हीं दिनों आंटी सिबल को चाहने लगे थे, आंटी सिबल और मैं थे। वो हमारी गर्मियों की छुट्टियों का आखिरी रोज था और हमारी मुलाकात का भी। किसी तरह बहाना बनाकर हम समुद्र की ओर निकल गए। यह दूसरा मौका था जब हम सच में कुछ कर गुजरना चाहते थे, पहली बार के बारे में मैं आपको बाद में बताऊंगा। चट्टानों के बीच एक संकरी सी गुफा हमनें उसी वक्त ढूंढी थी। वहां पहुंचते ही हम दोनों एक-दूसरे की बेताब बांहों में थे। हम दोनों बड़ी बेसब्री से एक-दूसरे के जिस्मों को टटोल रहे थे और बस एक-दूसरे में समा जाने वाले थे कि तभी दो बूढ़े गोताखोर पता नहीं कहां से उन सुनसान चट्टानों की ओर निकल आए। हमें देखकर जोर से सीटियां मारते हुए वे बेहूदा अंदाज में चिल्लाए "लगे रहो, बदमाशो!"

उस अधूरी मुलाकात के बस चार महीने बाद ही मुझे खबर मिली कि अनाबेल नहीं रही। उसे टाइफायड हो गया था। अनाबेल, मेरी पहली मोहब्बत।

मैं अकसर सोचता हूं कि क्या उस दिन सागर किनारे मेरी प्यासी रह गई हवस

7

या अनाबेल के लिए मेरी बेपनाह मोहब्बत मेरी इस हालत की जिम्मेदार है कि किसी भी तेरह-चौदह बरस की लड़की को देखते ही मैं उसे पाने के लिए बेकरार हो जाता हूं या यह मेरी कोई सनक ही है कि मैं हमउम्र औरतों के लिए कभी इस तरह की कशिश महसूस नहीं कर पाया? उन्हें देखकर मेरे मन तो क्या, शरीर के भी किसी कोने में कोई हलचल नहीं होती। मैं ऐसा क्यों हूं, यह समझने की कोशिश में मैं अपनी जिंदगी के ताने-बाने में उलझकर रह जाता हूं। अगर ऐसा न होता, तो मैं ये होता, अगर मैं यह न करता, तो आज शायद कुछ और होता, इन तमाम सवालों के बीच भी मैं यह जानता हूं कि लोलिता के मेरी जिंदगी में आने की सबसे अहम् वजह अनाबेल ही थी।

अनाबेल की मौत मेरी जिंदगी में एक बड़ा शून्य बनकर रह गई। यह सदमा और उस रात का हमारा अधूरा रह गया मिलन-जैसे अब मेरी जिंदगी का एक अटूट हिस्सा बन गया था। फिर कभी मैं किसी लड़की को उस तरह से प्यार नहीं कर पाया। अनाबेल मेरी रूह, मेरी आत्मा की गहराइयों में समा गई है। आजकल के नौजवान हमारे उस लौकिक होते हुए भी अलौकिक पावन प्यार को नहीं समझ सकते। मौत के बाद भी एक अरसे तक अनाबेल और सिर्फ

अनाबेल ही मेरे जेहन में छाई रही। मैं उसी की तरह से सोचता, उसी के ख्यालों में गुम रहता। लोलिता, ओह लोलिता ! काश तुम भी मुझे इस तरह प्यार कर पातीं!

अनाबेल के बारे में बस एक आखिरी बात उस लॉन वाली मुलाकात के बारे में और बताना चाहूंगा। उस रात अनाबेल के माता-पिता, आंटी सिबल और डॉक्टर कूपर अनाबेल के घर ताश खेल रहे थे। अनाबेल सबकी नजर बचाकर किसी तरह लॉन में आ गई। अंधेरी झाड़ियों के पीछे मैं धड़कते दिल से उसका इंतजार कर रहा था। समुद्री बयार के साथ आती फूलों की मादक खुशबू मेरे तन-बदन में एक अजीब सी सनसनी मचाने लगी थी, उस पर अनोबल से मिलने का इंतजार! वो दबे पांव दौड़ती हुई मेरे पास, मेरी बांहों में आ गई। मैंने उसके अधखुले होंठों को चूम लिया। जैसे ही उसके कान की लौ को मैंने अपने होंठों में दबाया, वो सिहर उठी। उसे बांहों में लेते ही मुझे पता लग गया था कि उसने अपनी पतली सी फ्रॉक के नीचे कुछ नहीं पहना था। दूर आसमान में हजारों सितारे झिलमिला रहे थे, अनाबेल का चेहरा भी जैसे उन सितारों की तरह ही तमतमाने लगा था। मेरा हाथ उसके जिस्म के मासूम उभारों से होता हुआ उसकी पतली, चिकनी, खूबसूरत टांगों को सहलाने लगा था। जब उसकी खूबसूरत टांगों को सहलाते, तलाशते हुए मेरे हाथ अपनी मंजिल तक पहुंचे, तो यकायक ही अनाबेल के बालसुलभ चेहरे पर दर्द और आनंद से अजब-सा नूर झलकने लगा था, उसकी आंखें मुंद गईं। वो एक ऊंचे पत्थर पर बैठी थी। आनंद के चरम पर पहुंचकर वो बार-बार आगे झुक कर मुझे

चूमने लगती, अब तक वो भी लाज-शर्म भूल गई थी। वो बार-बार आगे झुकती और अपने नाजुक घुटनों के बीच मेरी कलाइयां दबा लेती और फिर धीरे से मेरे हाथों को अपनी कैद से आजाद कर देती।

उसके होंठ कांप रहे थे, चेहरे पर मदहोशी थी, उसने प्यार की मय का पहला तिलिस्मी जाम चखा था। उसकी सांस तेज चल रही थी। अचानक ही वो अपने होंठ मेरे होंठों के करीब ले आई। अपनी पीड़ा को भूलने के लिए उसने अपने सूखे होंठ मेरे होंठों पर मसल दिए। अपने छोटे-छोटे बालों को झटके से पीछे हटा कर वो फिर आगे आकर मुझे अपने होंठों का रसपान करने देती। उन कुछ पलों में ही मैं अपना सब कुछ-मेरा दिल, मेरी जिंदगी उस पर लुटा देना चाहता था। फिर मैं उसके हाथों को थाम अपने जिस्म पर फिराने लगा। अपनी जंघाओं के मध्य उसके हाथों को ले जाकर मैंने उसकी पकड़ को कस दिया।

अनाबेल के जिस्म से एक सस्ते से पाउडर की खुशबू आ रही थी, जो शायद उसने अपनी स्पेनिश नौकरानी का चुराया था। वो महक अभी तक मेरे दिमाग में बसी हुई है। हम यूं ही एक-दूसरे के जिस्म की वादियों में खोए हुए थे कि पास की झाड़ियों से कुछ आवाजें आईं। हम एक झटके से अलग हो गए, लेकिन हम दोनों के शरीर का पोर-पोर दुख रहा था। शायद कोई बिल्ली थी वहां। तभी अनाबेल की मां की घबराई सी आवाज सुनाई देने लगी। वो जोर-जोर से अनाबेल को पुकार रही थी। डॉक्टर कूपर हमें ढूंढ़ते हुए लॉन की तरफ आते दिखाई दिए।

लेकिन तभी से पो मिमोसा ग्रोव, वो तारों भरी रात और वो कंपकंपाता सिहरन भरा अहसास, अनाबेल के नाजुक जिस्म की गर्मी और उसके प्यासे होंठ मेरी यादों का हिस्सा बनकर रह गए थे। चौबीस साल बाद लोलिता ने मुझे अपनी यादों के इस जंगल से बाहर निकाला। वैसे मैंने कई बार खुद भी अनाबेल के तिलिस्म से खुद को आजाद करने की काफी कोशिश की है।

आज सोचता हूं, तो लगता है कि मेरी जवानी के दिन तो पता नहीं कब कैसे और कहां खत्म हो गए। औरतों से मेरे संबंध कभी एक हद से आगे नहीं जा पाए। लंदन और पेरिस के कॉलेजों में पढ़ाई के दौरान मैं वेश्याओं से ही अपना गुजारा कर लेता था। मैं गहन और गूढ़ अध्ययन करता था, हालांकि उसका बहुत अच्छा फल कभी नहीं निकला। पहले तो मैंने सायकियाट्री पढ़ने की कोशिश की, क्योंकि उस समय का क्रेज ही वह विषय था। लेकिन कुछ ही समय में मुझे लगा कि मैं खुद भी मेंटल केस होता जा रहा हूं। फिर मैंने विषय बदलकर अंग्रेजी साहित्य लिया, हालांकि अंग्रेजी विभाग भी निराश और नाकाम कवियों से भरा था। पेरिस में मेरा दिल लग गया था। मैं वहां रूसियों के साथ उनकी फिल्में देखता और उन

पर बहस करता। समलैंगिकों के साथ बैठकर गप्पें मरता। दुर्बोध रिसर्च जरनलों में अपने गूढ़ आलेख छपवाता। कभी-कभी तुकबंदी भी कर लेता। वहीं रहकर मैंने अंग्रेजी काव्य का संक्षिप्त इतिहास और अंग्रेजी जानने वाले छात्रों के लिए फ्रांसीसी साहित्य पर किताबें भी लिखीं, जिनका आखिरी वॉल्यूम अभी प्रेस में ही है। फिर मैं कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य पढ़ाने लगा। इसी बीच मेरी दोस्ती कुछ समाज सेवकों से हुई, जिनके साथ मैं अनाथाश्रमों और बाल सुधार गृह में जाता और वहां खूबसूरत किशोर होती लड़कियों को बिना किसी रोकटोक के जी भर के निहारता। मुझे अकसर महसूस हुआ है कि नौ साल से चौदह साल तक की लड़कियों के अंदर एक जादुई कशिश होती है। इस मायावी झलक को वे अपने से दोगुनी उम्र के

आदमियों को ही दिखाती हैं। यह कशिश उनके हमउम्र लड़के अकसर नहीं समझ पाते। उनके इस मायावी रूप की परख या तो कलाकार कर सकते हैं या फिर पागल। वो भी मेरी उम्र के। असल में मुझे लगता है कि लड़की खूबसूरत हो, यह बात उतनी मायने नहीं रखती, जितनी कि उसके भीतर की वह आग, जो सब कुछ जलाकर राख कर देना चाहती है।

मुझे अकसर कोफ्त होती कि समाज और कानून एक पच्चीस साल के लड़के को सोलह साल की लड़की के साथ मौज करने की इजाजत देता है, फिर बारह साल की लड़की के साथ क्यों नहीं? वैसे तो दिखावे के लिए मैं भारी-भरकम वक्ष और कूल्हों वाली जवान औरतों के साथ घूमता-फिरता, लेकिन मन ही मन मैं बच्ची उम्र की मायवी सुंदरियों के साथ को तरस रहा था। उन दिनों मेरी दुनिया बंट गई थी, एक ओर कमसिन मायावी बच्चियां थीं, तो दूसरी ओर जवान भरे-पूरे जिस्म वाली औरतें। हालांकि कभी किसी कमउम्र बच्ची को छूने की मेरी हिम्मत नहीं हुई थी, लेकिन मेरा पूरा जिस्म उनके साथ के लिए प्यासा था। मेरी इस इच्छा पर बस मेरे दिमाग ने अंकुश लगा रखा था।

मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा कि उन दिनों यानी 1933 में इंग्लैंड में बाल एवं वयस्क संबंधी विधेयक में आठ से चौदह साल तक की बच्चियों को बालिका और चौदह से सत्रह साल की लड़कियों को किशोरी माना गया था। अमेरिका के मैसाचुसेट्स स्टेट में अनैतिक कामों में लगे सात से सत्रह साल के बच्चों को भटका हुआ माना जाता था। जेम्स प्रथम के शासनकाल में ह्यू ब्राउटन नाम के एक लेखक ने सिद्ध किया था कि रहाब नाम की एक वेश्या बस दस साल की उम्र में ही इस पेशे में माहिर हो चुकी थी। ये सब बातें सुनकर, बल्कि सोचकर ही मेरे बदन में सनसनी सी दौड़ जाती है। मैं उत्तेजना से कांपने लगता हूं। ये देखिए कुछ फोटोग्राफ! और ये हैं इजिप्ट के राजा अख्नातीन और अपने जमाने की खूबसूरत रानी नफरीती की छहों बेटियां। देखिए, गले में मोतियों की मालाओं के सिवाय इन्होंने कुछ भी

तो नहीं पहना है। तीन हजार साल बाद भी इस तस्वीर में कुशन के सहारे से बैठी हुई इन मायावी लड़कियों का उभरता हुआ यौवन, तांबई रंग, छोटे-छोटे बाल, बड़ी काली आंखें और खूबसूरत जिस्म जरा फीका नहीं पड़ा है। और यह तस्वीर है एक पूर्वी देश की एक कबायली रस्म की, इसमें एक दस साल की नववधू को हाथी दांत से अपने कौमार्य को भंग करते दिखाया गया है। आज भी भारतीय उपमहाद्वीप में कैशोर्य से पहले लड़कियों की शादी और उनके साथ साहचर्य का रिवाज है। लेप्चा में तो अस्सी साल के वृद्ध आठ साल की बच्चियों से

संबंध स्थापित करते हैं और कोई कुछ भी नहीं कहता। महान कवि दांते को ही लें, जब वो अपनी प्रेयसी बीट्रिस से पहली बार मिले, तो वो सिर्फ नौ साल की थी। यह है उसकी तस्वीर! लाल फ्रॉक में। पेट्रार्क की माशूका सुनहरे बालों वाली लौरीन बस बारह साल की थी।

लेकिन हम लोग तो बहुत सभ्य और सुसंस्कृत हैं। हम्बर्ट ने, यानी मैंने सभ्य बने रहने की तहेदिल से कोशिश की। वो बाकी आम बच्चों की बहुत इज्जत करता था और उनको पवित्र भाव से देखता था। किसी भी हालत में मैं उन मासूम बच्चों की जिंदगी से खिलवाड़ नहीं कर सकता था। लेकिन अगर बच्चों की भीड़ में मुझे कोई मायावी लड़की नजर आ जाती थी, तो मेरा दिल बल्लियों उछलने लगता था। लेकिन मैं यह भी जानता था कि अगर मैं कोई भी गलत हरकत करूंगा, तो मुझे दस साल की कैद हो जाएगी। इस लालसा को बरबस मन में ही दबाए मैं किसी तरह हमउम्र औरतों के साथ सामान्य जिंदगी बिताता रहा।

दस साल सात महीने की उम्र में लड़कियों का वक्षस्थल विकसित होने लगता है। माहवारी से पहले करीब ग्यारह साल दो महीने पर उनके अंदरूनी अंगों पर बाल आने लगते हैं। जब भी मैं यह सब सोचता हूं, मेरे मन में गुदगुदी सी होने लगती है। तब कैसे-कैसे सपने देखता रहता था कि मैं किसी परनी के जहाज में जा रहा हूं, अचानक जहाज डूब जाता है और एक सुनसान टापू पर मैं एक ऐसी ही नन्ही मायावी लड़की के साथ अकेला रह गया हूं। पार्क की बेंच पर बैठा-बैठा मैं यही सब सोचता रहता। यूं तो कहने को मेरे हाथ में कोई न कोई किताब होती थी, लेकिन मेरे ख्याल कहीं और होते और किताब पकड़े मेरे हाथ कांपने लगते। एक बार तो एक लड़की मेरे पास आकर बैठ गई। उसके घुटने में चोट लगी थी शायद। वैसे तो वो अपने जूते के तस्मे बांध रही थी, लेकिन मेरे बदन में उत्तेजना की लहर दौड़ गई। मेरा सारा जिस्म जैसे तन गया था। किसी को मेरी हालत का पता न चले, इसलिए मैं किताब के पीछे खुद को छुपाने की कोशिश करता रहा। फिर एक रात मुझे अपने सामने वाले फ्लैट में शीशे के सामने कपड़े उतारती एक लड़की दिखाई दी। यह नजारा देखकर तो खुद पर काबू रख पाना मेरे लिए नामुमकिन हो गया। उत्तेजना से मेरा बदन कांप रहा था। तभी वह अनिर्वचनीय दृश्य एक बदसूरत मर्दाना

11

हाथ से ढक गया और मेरी सारी गर्मी पर जैसे ठंडे पानी के छींटे पड़ गए थे।

एक दिन मैं पार्क में अपनी पसंदीदा बेंच पर बैठा था। तभी एक खूबसूरत मायावी लड़की

आकर मेरी ही बेंच के नीचे अपने कंचे ढूंढने लगी। उसको देखकर मैं अपने हसीन सपनों में खो गया कि काला लिबास पहने एक बूढ़ी औरत आकर पूछने लगी कि कहीं मेरे पेट में दर्द नहीं है। भगवान के लिए मुझे इस मेरे स्वर्ग में सुकून से अकेला छोड़ दो। इन नन्ही मासूम बच्चियों को मेरे आसपास रहने दो। काश कि ये कभी बड़ी न हों, मैं बस यही प्रार्थना करता रहता। मैं इन बच्चियों को अपने ख्यालों में इस तरह अपने से वाबस्ता कर लिया करता था कि मुझे लगता जैसे मैंने उन्हें हासिल ही कर लिया हो। मैं अकसर सोचता हूं कि मेरे जेहनी रिश्ते का असर क्या इन मायावी किशोरियों के जवान होने पर उनकी जिंदगी पर भी पड़ सकता है। आह! यह अहसास भी मेरे लिए कितना सनसनाहट भरा और मादक होता था।

मैं जानना चाहता था कि जवान होने पर ये खूबसूरत लड़कियां कैसी दिखती होंगी। कुछ ही दिन में राह चलते मेरी मुलाकात एक ऐसी ही लड़की से हुई। अभी जवानी की दहलीज पर उसने कदम रखा ही था। वो बस मेरे सीने तक आती थी, उसकी लंबी पलकें, तंग पोशाक में से जाहिर होते उसकी देह के उभार देखकर मेरा दिल मचल उठा। अभी वह जादुई आकर्षण उसमें बाकी था। शायद एक या दो साल पहले ही उसने अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी की होगी। हां, तो मैं बता रहा था उस मुलाकात के बारे में, उसने मुझे देखा और बड़ी अदा से मुड़कर मुस्कुराई। पेरिस की लड़कियों की यही खास बात होती है कि वे बड़े अदब से अपनी मासूमियत और पेशेवर कौशल को सहेजे रखती हैं। उसकी मासूम मुस्कुराहट देखकर मैं खुद को काबू में न रख सका। लगभग झपटकर मैंने उसे अपनी बांहों में समेट लिया और धीरे से उससे पूछा, "क्या लोगी?" उसने अपनी सुरीली आवाज में कहा, "सौ फ्रेंक।" मैंने थोड़ा मोलभाव करने की कोशिश की, मगर मेरी आंखों के अंदर झांककर शायद वो मेरे अंदर तक की प्यास को पढ़ चुकी थी, कहने लगी, "सौ भी तुम्हारे लिए सस्ता है।" मैं तो उसे किसी भी कीमत पर पाने के लिए बेकरार था। फिर वो एक संकरे गलियारे से होकर और सीढ़ियां पार करवाकर मुझे एक कमरे की ओर ले गई। घुसने से पहले उसने दरवाजे की घंटी बजाई, ताकि अगर वहां कोई है, तो वह अंदर चला जाए। कमरे में एक साफ-सुथरा बिस्तर लगा हुआ था और दूसरे कोने में एक वॉश बेसिन लगा हुआ था। उसने पहले मुझसे अपने पैसे ले लिए। मैंने उससे उसका नाम और उम्र पूछी 'मोनिका' और उम्र 'अट्ठारह साल' है। वेश्याओं के तौर-तरीकों से मैं काफी वाकिफ रहा हूं, सब अपनी उम्र अट्ठारह-बीस ही बताती रही हैं। हालांकि मुझे साफ दिखता था

12

कि वे झूठ बोल रही हैं, लेकिन उन बेचारियों की भी क्या गलती? आखिर यही तो उनकी

आमदनी का जरिया था। लेकिन मोनिका के कहने के ढंग से साफ जाहिर था कि वह अपनी उम्र एक-दो साल बढ़ाकर बता रही है। कपड़े उतार कर वह यूं ही खड़ी होकर नीचे जा रहे बीन वाले की बीन को सुनने लगी। उसके अर्द्धविकसित, खूबसूरत, नाजुक से जिस्म को देखकर तो मेरा यकीन बिलकुल पुख्ता हो गया। जब वह मेरे पास आई, तो मैंने उसका हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसके छोटे-छोटे नाखूनों में मैल भरा देखकर मेरे मन में हिलोर सी उठने लगी। वो घबराकर हाथ धोने लगी, तो मैंने उसे रोक दिया। उसके भूरे छोटे कटे बाल, स्लेटी आंखें और गोरा बदन मेरी ख्याली माशूका के जैसे ही थे। उसके कूल्हे भी तो लड़कों की तरह एकदम सपाट थे। मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि अब तक जितनी भी वेश्याओं के साथ मैंने रात बिताई है, उनमें से अगर किसी ने मुझे सच में संतुष्ट किया है, तो वह मोनिका ही है। शायद यही वजह है कि अब भी अकसर ख्यालों में की दुनिया में मैं मोनिका के साथ उसी छोटे से कमरे में पहुंच जाता हूं।

मैंने उससे फिर मिलना चाहा, तो उसने मुझे उसी शाम पास वाले कैफे में नौ बजे आने को कहा। उसने मुझे यह भी बताया कि इससे पहले उसने ऐसा काम कभी नहीं किया था। नौ बजे हम एक बार फिर उसी कमरे में पहुंच गए। मैंने उससे कहा कि वह बहुत खूबसूरत है। 'रहने भी दीजिए' उसने नजाकत से कहा। उसने आईने में अपना चेहरा देखते हुए अपनी चटक लाल लिपस्टिक पोंछने की इजाजत मांगी। यह एक इशारा था कि मैं चाहूं, तो उसे चूम सकता हूं। यह सच था कि मैं उसे चूमना चाहता था। फिर मैंने उसके साथ वो सब कुछ भी किया, जो मैं अमूमन वेश्याओं के साथ नहीं करता हूं। वो मेरी अब तक की जिंदगी की सबसे हसीन रात थी। उन्हें देखकर तो वो खुशी से झूमकर नाचने ही लगी थी। उसकी इस मासूम हरकत से मैं आनंदित हो उठा।

अगले दिन ही दोपहर में सवा दो बजे मैंने उसे अपने कमरे में बुला लिया। मगर इस बार बात कुछ बनी नहीं। ऐसा लगा मानो एक ही रात में वह बच्ची से एक भरी-पूरी औरत बन गई है। वो बच्ची, जिसकी मुझे तलाश थी, उसमें मुझे नजर नहीं आई। फिर सौभाग्य से मुझे फ्लू हो गया, जिसकी वजह से हमारी चौथी मुलाकात नहीं हो पाई। अंदर ही अंदर मुझे सुकून मिला, क्योंकि मुझे डर लगने लगा था कि कहीं मोनिका हमारे संबंधों को भावनात्मक रूप से न लेने लगे। लेकिन इसके बाद मेरी कल्पना में एक और सूरत बस गई थी। पतली-दुबली मोनिका, जिसमें किशोरियों का करामाती आकर्षण तो था ही, एक पेशेवर महारत भी थी। मोनिका से इस छोटी सी मुलाकात के बाद मेरे दिमाग में क्या बवंडर मचा

होगा, आप समझ सकते हैं। फिर एक सस्ती किस्म की पत्रिका में मुझे एक और पता मिला। मैं बड़ी हिम्मत करके वहां पहुंचा। इडिथ नाम की एक अधेड़ सी औरत ने मुझे एक एलबम दिखाई, ताकि उसमें से मैं अपनी पसंदीदा लड़की चुन सकूं। थोड़ा हिचकिचाते हुए मैंने इडिथ को कच्ची उम्र की कोई लड़की दिखाने को कहा। सुनते ही वो भड़क गई, मुझे लगा जैसे अभी वो मुझे धक्के मारकर बाहर निकलवा देगी। लेकिन जब मैंने बताया कि ऐसी लड़की के लिए मैं कोई भी कीमत देने के लिए तैयार हूं, तो उस लालची औरत ने मुझे एक दूसरी औरत का पता दिया, जो कमसिन लड़कियां सप्लाई करती थी।

दूसरे ही दिन मैं वहां पहुंच गया। अस्थमा की मरीज उस औरत ने बेहद भद्दा और भड़कीला मेकअप किया हुआ था, बोलती तो उसके मुंह से लहसुन का भभका आता, बोल भी तो एकदम गंवारों की तरह रही थी। उसके काले-काले होंठों के ऊपर मूंछें भी साफ नजर आ रही थीं। वो शायद उसका घर ही था। लड़की के बारे में चटखारे लेकर बताते आ रही थी। वो शायद उसका घर ही था। लड़की के बारे में चटखारे लेकर बताते हुए वो बार-बार अपनी गंदी, काली उंगलियों की पोरों को चूम लेती थी। कोई नायाब चीज वो मुझे दिखाने जा रही हो, इस अंदाज में उसने कमरे के बीच में पड़ा पर्दा खींचकर खोल दिया। उस कमरे में शायद एक भरा-पूरा परिवार सोता था। लेकिन इस समय वहां बस एक मोटी गाब्दू सी पंद्रह साल की लड़की बैठी हुई अपनी गंजी गुड़िया से खेल रही थी। मोटी-मोटी चोटियों में उसने लाल रिबन बांध रखे थे। देखकर ही मुझे उबकाई सी आने लगी। मैंने इंकार में सिर हिला दिया, तो तेज-तेज बोलते हुए वो औरत उस लड़की की जैकेट उतारने लगी। लेकिन फिर मेरी अनिच्छा देखकर उसने आवाज देकर अपने पहलवान सरीखे बेटों को बुला लिया और धमकाते हुए कहने लगी कि उसका बड़ा बेटा पुलिस में है। मैंने चुपचाप उस मोटी लड़की मैरी के पास जाकर उसके हाथ में पैसे पकड़ाए और वहां से निकलने में ही अपनी भलाई समझी।

मैं नहीं जानता था कि इन सब घटनाओं की वजह से या पता नहीं क्यों, मैंने शादी करने में ही भलाई समझी। शायद मुझे लगा था कि शादी से जहां जिंदगी में थोड़ी स्थिरता आएगी, वहीं घर का पका खाना और नियमित सेक्स भी मुझे मिल सकेगा। मुझे यह भी लगा कि शादी के बाद शायद किशोर लड़कियों के लिए मेरी बेकाबू कामुकता कुछ कम हो जाए। हो सकता है कि मेरे सोए नैतिक मूल्य भी उभर आएं। अब तक पिताजी के मरने के बाद मुझे उनकी संपत्ति भी मिल गई थी। इसके अलावा मेरे अच्छे नैन-नक्श भी मेरा प्लस पॉइंट थे। बहुत सोच-विचार के बाद अपने पोलिश डॉक्टर की बेटी को मैंने पसंद कर ही लिया। मैं और डॉक्टर अकसर शतरंज खेला करते थे और उसकी बेटी अपने कैनवस की आड़ से मुझे

देखती रहती थी। अकसर ही उसकी पेंटिंग में मेरे हाथ, आंख या चेहरा झलक आता था। मैं फिर यह कहना चाहूंगा कि तब भी और अब इस उम्र में भी मैं काफी आकर्षक हूं। लंबा सुडौल कद, मुलायम काले बाल, धीर-गंभीर चाल के साथ ही मेरी आंखों में एक अजीब सी उदासी थी, जो अनायास ही लोगों को अपनी ओर खींचती थी। औरतें तो बहुत शीघ्र ही मेरे व्यक्तित्व और मेरे पुरुषत्व से प्रभावित हो जाती थीं। मैं जानता था कि नजर भर देखकर ही मैं किसी भी औरत खुद मेरे सम्मोहन में बंधी मेरी गोद में न आ बैठे, मैं उस पर ध्यान नहीं देता था। ये औरतें वेलेरिया के मुकाबले कहीं ज्यादा आकर्षक और मोहक होती थीं। वेलेरिया को चुनने की वजह मुझे बहुत बाद में समझ आई और वह यह थी कि वेलेरिया मात्र हालात से एक समझौता थी।

मैं सिर्फ अपने अकेलेपन का साथी ढूंढ़ रहा था, लेकिन असल में वेलेरिया के अल्हड़पन ने मुझे बांध लिया था। हालांकि वह करीब सत्ताईस अट्ठाईस साल की रही होगी, लेकिन उसके अंदर अभी बचपना था। बैठती तो छोटी सी स्कर्ट को और ऊंचा करके अपनी गोल-गोल टांगें दिखाती। इन मामलों में मैं कुछ बेवकूफ किस्म का ही रहा हूं। जब वो अपनी नटखट अदा से छोटे-छोटे बाल झटकती, अपने नंगे, गोरे पांव का अंगूठा मेरी ओर करके जैसे ठेंगा दिखाती, उस समय वह मुझे बिलकुल बच्ची सी लगती थी।

हमारी शादी बिल्कुल सादा तरह से एक छोटी सी चर्च में हुई थी। शादी के बाद जब हम अपने छोटे से घर में आए, तो मैंने उसे एक छोटी लड़की की कमीज पहनने को दी। वो कमीज मैं एक अनाथालय से चुराकर लाया था। वेलेरिया को इस सारे नाटक में बड़ा मजा आ रहा था। मैंने शादी के बाद की अपनी उस पहली रात को किसी तरह लुत्फ उठाने लायक बना ही लिया, लेकिन सुबह होने तक वो जाहिल औरत वेलेरिया तो जैसे पगला ही गई थी।

कुछ ही दिनों में वेलेरियों की सच्चाई यूं मेरे सामने आ गई, जैसे रंगे हुए बालों की जड़ों से उनका असली निकल आता है या शेव की हुई टांगों पर कुछ दिन बाद छोटे-छोटे बाल निकल आते हैं। मैं तो वेलेरिया में एक छोटी मासूम-सी किशोरी को ढूंढ़ना चाहता था, लेकिन कुछ ही दिन में वह मोटी टांगों, भारी सीने और कूल्हों वाली औरत लगने लगी थी। अब उसके मोटे-मोटे होंठों को मैं कितने भी प्यार से चूमता, लेकिन हमेशा ऐसा लगता जैसे वे किसी मेंढ़की के होंठ हों।

सन् 1935 से 1939 तक यूं ही हमारी जिंदगी गुजरती रही। वेलेरिया की सबसे बड़ी खूबी उसकी खामोशी थी। जिसकी वजह से हमारे उस छोटे से दो कमरों के घर में अजीब-सी शांति रहती थी। अकसर हमारी शामें यूं ही गुजरती थीं, वह अपनी सोसाइटी मैग्जीनें पढ़ती रहती और मैं कुछ लिखता-पढ़ता रहता था।

15

कई बार हम इकट्ठे फिल्म, साइकिल रेस या बॉक्सिंग मैच देखने चले जाते थे। जिस्मानी तौर पर मैं उसके बासी शरीर से दूर रहने की कोशिश ही करता था, जब तक कि शरीर की भूख मेरे ऊपर हावी नहीं हो जाती थी। उन दिनों घर के सामने रहने वाली एक लड़की मेरी नजरों में चढ़ी हुई थी, जिसकी परछाई भी मुझे पागल बना देती थी। ऐसे मौकों पर वेलेरिया मेरी हवस को शांत करने में बड़ा काम आती थी। हम दोनों ही घर पर खाना बनाने का झंझट नहीं पालना चाहते थे। अकसर हम किसी भीड़ भरे गंदे से होटल में खाना खाते थे।

फिर अचानक ही मेरी जिंदगी में एक बड़ा बदलाव आया। मेरे अमेरिका वाले अंकल अपनी वसीयत में मेरे लिए अपना सारा कारोबार और पैसा छोड़कर गुजर गए थे। लेकिन उनकी शर्त यही थी कि मुझे अमेरिका जाकर उनका कारोबार संभालना होगा। मुझे भला क्या एतराज होता? इधर पिछले कुछ हफ्तों से वेलेरिया का बर्ताव भी कुछ अजीब सा हो गया था। अब वह कुछ चिड़चिड़ी सी हो गई थी। मैंने सोचा कि न्यूयॉर्क जाने की खबर सुनकर वह खुश होगी, लेकिन उसका तो मुंह ही उतर गया। पहले तो मुझे लगा कि शायद पासपोर्ट बनवाने या कागजी कार्यवाही से वह घबरा रही है। मैं उसे बताता रहता कि पेरिस के मुकाबले अमेरिका कितना सुंदर और दिलचस्पी भरा देश है। लेकिन उस पर मेरी बातों का कुछ खास असर नहीं पड़ता था।

मुझे याद है उस दिन हम पासपोर्ट के दफ्तर से निकल रहे थे, कागजी कार्रवाई करीब-करीब पूरी हो चुकी थी। वेलेरिया अचानक बिना कुछ बोले अपना सिर हिलाकर अजीब सा इशारा करने लगी। मैंने पहले तो कुछ नहीं कहा, फिर उससे पूछा कि क्या वह कुछ कहना चाहती थी। उसने जवाब दिया, "मैं अब किसी और से प्यार करती हूं।"

अपनी बीवी के मुंह से ऐसे लफ्ज सुनना किसी भी शौहर को अच्छा नहीं लगेगा। मैं भी चौंक गया। बीच सड़क पर उसे मार तो नहीं सकता था और इतने साल में अपनी इच्छाओं को दबाते दबाते इतना कंट्रोल तो मुझे अपने ऊपर हो ही गया था। इसलिए पास खड़ी टैक्सी में उसे

धकेलकर मैं भी बैठ गया। मैंने धीरे से उससे कहा, "अब बताओ, तुम क्या कहना चाहती हो?" गुस्से से मेरा बुरा हाल हो रहा था, इसलिए नहीं कि मैं उसे प्यार करता था, बल्कि इसलिए क्योंकि गलत-सही, कानूनी-गैगकानूनी फैसले लेने का हक मेरा था। वह बेवकूफ औरत हमारी जिंदगी का फैसला कैसे कर सकती थी? मैंने उसके आशिक का नाम पूछा, लेकिन वह बड़बड़ाए जा रही थी, मेरे साथ उसका दम घुटता है और वह चाहती है कि जल्द से जल्द मैं उसे इस शादी से आजाद कर दूं। "लेकिन वह कौन है?" मैंने आखिरकार गुस्से से चीखकर एक मुक्का उसके घुटनों पर मारा।

16

लोलिता-1

वेलेरिया ने बिना पलक झपकाए बेशर्मी से टैक्सी ड्राइवर की ओर इशारा कर दिया। तब ड्राइवर ने एक छोटे से कैफे के सामने टैक्सी रोक दी और मुड़कर अपना परिचय दिया। हम तीनों अंदर जाकर एक टेबल पर बैठ गए। टैक्सी ड्राइवर ने हम तीनों के लिए वाइन मंगाई। वेलेरिया कुछ-कुछ कहे जा रही थी। आज तक मुझे कभी पता भी नहीं चला था कि वह इतने सारे शब्द भी जानती है। बीच-बीच में टैक्सी ड्राइवर भी कुछ कहता जा रहा था। हालांकि मैं गुस्से से पगला रहा था, लेकिन मुझे याद है कि वह टैक्सी ड्राइवर लगातार मुझसे वेलेरिया की खाने और कपड़ों की पसंद-नापसंद, माहवारी की तारीख, किताबों में उसकी रुचि वगैरह के बारे में पूछे जा रहा था। यह सब सहना जब मेरे लिए मुश्किल हो गया, तो मैंने गुस्से से वेलेरिया से कहा, "ठीक है वेलेरिया, घर चलकर तुम अपना सामान पैक कर लो और चली जाओ।"

मैं सोच रहा था कि घर पहुंचकर वेलेरिया की अच्छी तरह से धुनाई करूंगा, लेकिन पैकिंग में मदद करने के बहाने वह टैक्सी ड्राइवर भी साथ चला आया। जितनी देर वेलेरिया अपना सामान बांधती रही, वह वहीं बैठा रहा। यहां तक कि जाने से पहले वह मेरे बाथरूम में गया और इस्तेमाल के बाद बिना फ्लश किए और ऊपर से एक सिगरेट का टुकड़ा डालकर चला गया जिसे देखकर मैं बेइज्जती के एहसास और गुस्से से बिल्कुल पगला-सा गया। उसी पागलपन में मैं अपने चारों तरफ किसी हथियार को तलाश करने के नजरें दौड़ाने लगा। मैक्सिमोविच (हां, यही तो था उसका नाम) को मारने के लिए उतावलेपन में मैंने सारे किचन के सामान को उलट-पुलट कर रख दिया। लेकिन वहां मुझे झाड़ के अलावा कुछ नहीं मिला।

आखिरकार, हथियार की तलाश छोड़कर मैं मैक्सिमोविच को अपने हाथों से ही पीटने के लिए तेजी से घर से निकल पड़ा। अपनी कुदरती मर्दानगी के बावजूद मैं कोई बॉक्सर नहीं हूं, जबकि नाटा मगर चौड़े कंधों वाला मैक्सिमोविच देखने से ही कच्चे लोहे का बना लगता था। बाहर आकर मैंने देखा कि वे दोनों जा चुके थे, और इस तरह शायद मेरी नाक टूटने से बच गई। खैर, कोई बात नहीं। क्योंकि कुछ ही दिनों बाद मुझे खुद ही उनसे बदला मिल गया। पासाडेना नामक मेरे एक डॉक्टर दोस्त ने मुझे बताया कि मैक्सिमोविच और वेलेरिया एक अच्छी तनख्वाह पर कैलिफोर्निया चले गए थे, जहां दूसरे बहुत से लोगों के साथ उन पर भी यह टेस्ट किया गया कि अगर इंसान एक साल तक चौपायों की तरह चारों हाथ-पैरों पर रहे और सिर्फ केला और खजूर खाए तो उसके ऊपर इसका क्या असर होगा। वहीं अपने बच्चे की पैदाइश के दौरान वेलेरिया की मौत हो गई।

तलाक की कार्रवाई में फंस जाने की वजह से मुझे अमेरिका जाने में देर होती चली गई। और आखिरकार पुर्तगाल में जाड़ों भर बीमार रहने के बाद जब मैं

17

अमेरिका पहुंचा तो उस समय दुनिया पर एक और विश्व युद्ध के बादल मंडरा रहे थे। न्यूयॉर्क में खाली वक्त गुजारने के लिए मैं अपने अंकल की परफ्यूम कंपनी में दिलचस्पी लेने लगा। साथ ही एक यूनिवर्सिटी की दरखास्त पर मैंने अंग्रेजी भाषा बोलने वाले छात्रों के लिए फ्रांसीसी साहित्य पर पहले से चल रहे अपने तुलनात्मक अध्ययन को पूरा करने का भी बीड़ा उठाया। इसका पहला भाग पूरा करने में मुझे दो साल लग गए। इस दौरान मैं रोजाना कम से कम पंद्रह घंटे काम में लगा रहता था। आज मैं सोचता हूं कि मेरा वह समय रोशनी और अंधेरे में बंट गया था। बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियों में रिसर्च का काम करने की रोशनी और अंधेरा मेरी तीव्र इच्छाओं और रतजगों का। सेंट्रल पार्क में खेलती कमसिन लड़कियों को देखकर मेरे अंदर जैसे भावनाओं का सैलाब उमड़ने लगता था, वैसी ही नफरत मुझे बड़ी उम्र की भारी-भरकम लड़कियों को देखकर होती थी। खैर, छोड़िए उन बातों को। फिर अचानक किसी बीमारी के कारण मुझे सालभर तक एक सैनेटोरियम में रहना पड़ा। फिर मैं वापस अपने काम पर आ गया, लेकिन जल्द ही मुझे फिर अस्पताल में भर्ती होना पड़ा।

मेरे एक डॉक्टर का भाई कनाडा में किसी मुहिम पर एक टीम ले जाने वाला था। मुझे आउटडोर की खुली जिंदगी रास आती थी, इसलिए 'मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया के निरीक्षक' की हैसियत से मैं भी इस टीम में शामिल हो गया। अपने दो साथी वैज्ञानिकों और एक बूढ़े बढ़ई

के साथ मैं कभी-कभी इसी टीम में आई डॉ. एनीटा जॉनसन को बांट लेता था। लेकिन मुझे उसके साथ कोई खास आनंद नहीं मिलता था, इसीलिए जब उसे वापस बुला लिया गया तो मुझे खुशी ही हुई। हमारी टीम को तीन ग्रुपों में बांटा गया था, लेकिन किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि इस मुहिम का मकसद क्या है। हम लकड़ी के केबिनों में रह रहे थे, और हमारे पास पढ़ने और खाने की सारी सहूलियतें मौजूद थीं। इस वीरान प्रदेश में मेरी सेहत पहले से काफी अच्छी हो गई थी, लेकिन मुझे लग रहा था जैसे मैं अपने आप से ही अलग होता जा रहा हूं। मेरे अंदर की इच्छाएं पता नहीं कहां चली गई थीं। इसका मतलब ध्रुव प्रदेशों में किशोर परियां होती ही नहीं हैं। मैं अपने काम में लगा रहा और बोर होता रहा। इस मुहिम से वापसी पर एक बार फिर से मुझ पर पागलपन का दौरा पड़ा और मुझे एक बहुत ही महंगे सैनेटोरियम में भर्ती करा दिया गया। ठीक हो जाने के बाद भी मैं एक महीना वहीं रहा, क्योंकि मनोचिकित्सकों से अपने बारे में झूठ बोलकर उन्हें बेवकूफ बनाने में मुझे मजा आने लगा था। एक बार एक नर्स को रिश्वत देकर मैंने अपनी फाइल निकलवाई। मेरी रिपोर्ट में लिखा था, 'संभवतः समलैंगिक' और 'पूर्णतया नामर्द।' यानी मैं उनको बेवकूफ बनाने में कामयाब रहा था।

18

सैनेटोरियम से छुट्टी मिलने के बाद मैं न्यू इंग्लैंड में रहने के लिए जगह ढूंढ़ने लगा ताकि मैं अपने अध्ययन में खुद को फिर से लगा सकूं। अपने अंकल के परफ्यूम के कारोबार में मेरी दिलचस्पी लगभग खत्म हो चुकी थी, लेकिन उनके एक पुराने कर्मचारी ने मुझे राय दी कि मैं कुछ महीने उसके एक रिटायर्ड रिश्तेदार संबंधी मैककू और उसकी पत्नी के घर पर रहकर गुजारू जो कि अपने मकान का ऊपरी भाग किराए पर उठाना चाहते थे। उसने मुझे बताया कि उनकी दो बेटियां हैं, एक छोटी और एक बारह वर्षीय और साथ ही एक बगीचा है तथा घर के करीब ही एक झील भी है। मैंने कहा कि वह जगह मेरे लिए बिल्कुल मुनासिब होगी।

रेम्सेडल में रहने वाले इस जोड़े से मैंने खतो-किताबत शुरू कर दी। रेम्सेडल जाते समय ट्रेन में मैं रात भर सोचता रहा कि उस किशोरी को मैं फ्रांसीसी भाषा में पढ़ाऊंगा और अपनी भाषा में प्यार करूंगा। छोटे से स्टेशन पर जब मैं उतरा तो मुझे लेने के लिए कोई नहीं आया था। मेरे फोन का भी किसी ने जवाब नहीं दिया। आखिरकार भीगे कपड़े पहने और परेशान हाल मैककू आए और उन्होंने बताया कि उनके घर में थोड़ी देर पहले ही आग लग गई-शायद मेरे शरीर की नस-नस में रात भर लगी रही आग के नतीजे में। उनकी पत्नी और बच्चे कार सहित किसी दूसरे स्थान पर रहने के लिए चले गए हैं, लेकिन उनकी पत्नी की दोस्त 342 लॉन

स्ट्रीट पर रहने वाली मिसेज हेज मुझे अपने घर में जगह देने को तैयार हैं। मिसेज हेज के घर के सामने वाली एक औरत ने यहां तक आने के लिए अपने नीग्रो ड्राइवर के साथ मैककू को अपनी लीमोसीन गाड़ी दे दी थी। मेरा यहां आने का मकसद चूंकि अब नाकाम हो चुका था, इसलिए अब मेरा यहां रहना बेकार था। लेकिन एक अच्छे यूरोपियन की तरह, ताकि मैककू को बूरा न लगे, मैं मिसेज हेज के मकान तक जाने के लिए कार में बैठ गया। लेकिन मैं पुख्ता इरादा कर चुका था कि मैं रेम्सेडल में एक दिन भी नहीं रुकूंगा और उसी दिन कहीं चला जाऊंगा।

लॉन स्ट्रीट में गाड़ी मुड़ने पर मुझे जैसे ही मिसेज हेज का गंदा और पुराना मकान नजर आया, मैंने ड्राइवर को टिप दी ताकि वह मुझे किसी होटल तक पहुंचा दे, लेकिन उसने मिसेज हेज के मकान के सामने ही जाकर गाड़ी रोकी। मैं क्या करता? मजबूरन मैंने कॉल बेल बजाई। एक काली नौकरानी मुझे अंदर ले गई और मुझे इंतजार करता छोड़कर किचन में चली गई, जहां शायद कुछ पकते-पकते जलने लगा था।

अभी जबकि मैं इधर-उधर देख ही रहा था कि सामने हॉल के अंत में बनी सीढ़ियों के ऊपर से मिसेज हेज उतरती दिखाई दीं। सैंडल, मैरून रंग के स्लैक्स, पीला सिल्क का ब्लाउज पहने, चौकोर चेहरे की यह स्त्री हाथ में सिगरेट दबाए पूछ रही थी, "क्या आप ही मिस्टर हम्बर्ट हैं?" लगभग पैंतीस वर्षीया मिसेज हेज

19

मुझे ड्राइंगरूम मे ले गई और हम कुछ देर तक मैककू के घर लगी आग और रेम्सेडल के बारे में बातचीत करते रहे। मिसेज हेज बहुत सुंदर नहीं थी, लेकिन बिल्कुल अनाकर्षक भी नहीं थी। उससे बातचीत के दौरान मैंने महसूस किया कि वह बहुत ही साधारण और औपचारिक औरत है और अगर मैं यहां रहा तो शायद एक बार फिर से मैं एक नए चक्कर में फंस जाऊंगा।

लेकिन मेरा वहां ठहरने का तो इरादा ही नहीं था। ऐसे घर में मैं रह भी कैसे सकता था जहां सारा फर्नीचर और किताबें बेढंगेपन से पड़ी थीं। मिसेज हेज मुझे सीढ़ियों के ऊपर ले गई, और फिर वहां से बाईं तरफ 'मेरे' कमरे में, जिसे देखते ही मैंने मन ही मन अस्वीकार कर दिया था। शिष्टता के नाते मैं यह सब कुछ बर्दाश्त करता रहा। वहां से हम मकान के दाईं और गए (जहां 'मेरा और लो का कमरा है'-लो शायद उसकी नौकरानी का नाम होगा) जहां सीढ़ियों और लो के कमरे के बीच एक गंदा-सा बाथरूम था।

बड़ी बेतकल्लुफी से मेरे हाथ को पकड़ते हुए मिसेज हेज, जैसे शब्दों को नाप-तोलकर बोली, "मुझे लगता है कि आपको यह घर पसंद नहीं आया। मैं मानती हूं, यह घर बहुत साफ-सुथरा नहीं है," वह मेरे होंठों को देख रही थी, "लेकिन मैं आपको यकीन दिलाती हूं कि आप यहां बड़े आराम से रहोंगे।" फिर वह एक विजयी भाव के साथ बोली, "चलिए, मैं आपको अपना गार्डन दिखाऊं।"

मैं हिचकिचाते हुए उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों से उतरने लगा। जब हम हॉल के अंत में बने किचन के पास से गुजरे, तो वहां मौजूद नीग्रो नौकरानी ने अपना पर्स उठाते हुए मिसेज हेज से कहा, "अच्छा तो मैं चलती हूं, मिसेज हेज।" "ठीक है, लुईस," मिसेज हेज ने कहा, "मैं शुक्रवार को तुम्हारा हिसाब करूंगी।" एक छोटी सी पैंट्री से होते हुए हम डाइनिंग रूम में पहुंचे। मैंने एक सफेद मोजा जमीन पर पड़ा देखा। मिसेज हेज ने चलते-चलते ही गुस्से में झुककर उसे उठाया और पास की ही एक अल्मारी में फेंक दिया। वहां महोगनी की एक मेज पर फलों की टोकरी थी, जिसमें बेर की एक गुठली के सिवाय कुछ नहीं था। मिसेज हेज अभी भी मेरे आगे चल रही थीं, इसलिए मैंने चुपके से अपनी जेब से रेलवे टाइम टेबल निकाला, क्योंकि ऐसी जगह रहने से बेहतर था कि मैं अगली ही ट्रेन पकड़कर भाग निकलूं। लेकिन तभी मेरे मन में जैसे समुद्र की नीली-नीली लहरें सी उठने लगीं। क्योंकि मेरे सामने ही मेरी तमन्नाओं और आरजुओं का मरकज धूप में पड़ी चटाई पर अर्धनग्न हालत में लेटी काला चश्मा लगाए मुझे ही देख रही थी।

यह बिल्कुल वही किशोरी थी-दुबले-पतले, शहद जैसे रंग के कंधे, नर्म मुलायम पीठ, नन्हा सा सिर। एक काले रूमाल ने जो कि उसके सीने पर बंधा था, मेरी नजरों से तो छुपा लिया था, लेकिन मेरी कल्पना से उन कच्ची-कच्ची छातियों

को नहीं छुपा सका था, जिनसे कभी मैं खेला था। वही छोटा-सा तिल, वही अंदर को धंसा हुआ पेट और उभरे हुए कूल्हे जिन पर कभी मैंने अपने होंठों की छाप छोड़ी थी-ऐसे लगता था जैसे मैं अचानक पच्चीस वर्ष पीछे चला गया हूं।

उस समय मेरे अंदर अचानक जो बिजली-सी चमक और कंपकंपी जागी थी, जज्बात का मेरे अंदर जो तूफान उठा था उसे उसी तरह से बताना बहुत मुश्किल है। मुझे लगा जैसे वह मेरी

डॉक्टर है जो मुझे मेरी तमाम तकलीफों से राहत दिला देगी। एक फिल्मी हीरो जैसा सुंदर मैं जब उसके पास से गुजरा, तो मैं उसकी सुंदरता की तुलना अपनी पच्चीस वर्ष पहले मर चुकी दुल्हन से कर रहा था जिसने कभी समुद्र के किनारे मुझे एक राजकुमार बना दिया था। मुझे क्या पता था कि मेरी लोलिता आने वाले समय में उसको कहीं बहुत पीछे छोड़ चुकेगी। लेकिन मुझे कोई गलतफहमी नहीं है। मैं जानता हूं कि मेरे जज इस सबको एक पागल की बकवास ही समझेंगे। जिस समय मिसेज हेज मुझे बगीचे में ले जा रही थी, तो मेरे घुटने पानी में पड़ रही अपनी परछाई की तरह कांप रहे थे और मेरे होंठ सूखकर रेत की तरह हो रहे थे।

"वह मेरी लो थी," मिसेज हेज ने कहा, "और ये मेरे लिली है।"

"हां," मैंने कहा। "हां। बहुत ही खूबसूरत !!!"

एक महामारी के कारण रेम्सेडल के स्कूलों में गर्मियों की छुट्टियों कर दी गई थी। 1947 की उस जून में जबकि स्कूल बंद होने के कारण लोलिता घर पर ही रहती थी, मैं उसे हर समय घर के अंदर ही देखता था। मुझे आज भी वह दिन बिल्कुल साफतौर पर याद है, क्योंकि मैंने उन दिनों को अपनी डायरी में कैद रखा है।

बृहस्पतिवार को काफी गर्म दिन था। अपनी लोलिता के दर्शन के लिए मैंने अपने बाथरूम की खिड़की को चुना। घर के पीछे ओर वह एक तार से कपड़े उतार रही थी। इसके बाद वह टहलती हुई बाहर निकल गई। उसने नीले रंग की जींस पहनी हुई थी। उसकी एक-एक अदा मेरे शरीर के तारों को झनझना रही थी। कुछ देर बाद ही वह मेरे साथ पोर्च की आखिरी सीढ़ी पर बैठी अपने पैरों के बीच पड़ी कंकरियों और शीशे के टुकड़ों को उठाकर सामने पड़े कनस्तर का निशाना लगा रही थी। 'टन' की आवाज के साथ ही वह कंकरियां कनस्तर को ही नहीं, मेरे पूरे वजूद को झनझना जाती थीं। उसका शरीर क्या शानदार था, उसकी चमड़ी दाग-धब्बों से बिल्कुल आजाद थी। आइसक्रीम जैसी चीजें खाने से भी उसके शरीर पर कोई फर्क नहीं पड़ा था, क्योंकि वह तो मायावी थी, एक आसमानी परी थी। हाय, उसकी कनपटी के ऊपर की वह चमक जो ऊपर जाकर उसके भूरे बालों में खो गई थी, उसके धूल भरे टखने की वह हड्डी मेरे दिल में चुभ रही

थी। जब वह नहाने के लिए उठकर चली, तो मैं उसके कूल्हों को देखता रह गया। उसी समय

वहां कैमरा लिए मिसेज हेज आ गई और मैं कभी आंखें झपकाता हुआ उसे देख ही रहा था कि उसने मेरा फोटो खींच लिया। मैं बेचारा सीढ़ियों पर ही बैठा रह गया।

शुक्रवार को मैंने उसे एक नीग्रो लड़की रोज के साथ जाते देखा। वह अभी बच्ची ही तो थी, फिर क्यों उसके चलने का अंदाज ऐसे मुझे भाता था जैसे अपने हर कदम के साथ वह मेरे दिल में उतरती चली जा रही हो। और तो और मुझे तो उसकी गंवारू भाषा पर भी प्यार आता था। इस समय भी वह इसी ढंग से जो कुछ भी रोज से कह रही थी, वह मुझे उत्तेजित करने के लिए काफी था।

शनिवार को मेरी लो गार्डन में बैठी धूप का मजा ले रही थी, मगर अफसोस कि उसकी मां एक औरत के साथ सारे समय वहीं मौजूद रही। मैं चाहता तो मैं भी पढ़ने के बहाने वहीं बैठ सकता था। लेकिन मुझे डर था कि मेरे अंदर पागलपन मुझे वहां सामान्य ढंग से बैठने नहीं देगा, इसलिए मैंने दूर ही रहना मुनासिब समझा।

इतवार को लोलिता के पहुंचने से पहले ही मैं एक अखबार और पाइप लेकर गार्डन में ऐसी जगह बैठ गया, जहां से मैं उसको अच्छी तरह से देख सकूं। लेकिन मेरी बदनसीबी ने अब भी मेरा साथ नहीं छोड़ा, क्योंकि लोलिता के साथ उसकी मां भी आई थी। वे दोनों ही काले रंग के टू-पीस नहाने के सूट पहने हुए थीं। मेरी डार्लिंग, मेरी स्वीट-हार्ट कुछ देर को मेरे पास रुकी और फिर चटाई पर लेटी अपनी मां की ओर बढ़ गई। वह उसके पास जाकर पेट के बल लेट गई, और मैं उसके नंगे कंधे, उसकी पसलियों और रीढ़ के घुमाव, काले रंग के कपड़ों में छुपे उसके अंग और उसकी किशोर जांघों को निहारता रहा। सातवीं क्लास में पढ़ रही लो अपने रंग-बिरंगे कॉमिक्स पढ़ने में मशगूल थी। मेरे होंठ सूख रहे थे, और मैं धुंधलाई-सी आंखों से उसकी तरफ देख रहा था। मैं अपनी वासना को अखबार के पीछे स्वयं पर केंद्रित करता हुआ धीरे-धीरे अपनी आरामकुर्सी पर झूलने लगा था और इसी प्रकार से अपने आनंद की चरम सीमा तक पहुंचने की सोच रहा था कि तभी मोटी हेज अचानक मेरी ओर पलटी और मुझसे जबरदस्ती की बातचीत करने लगी। उसने मेरा सारा मूड चौपट कर दिया था।

सोमवार को मुझे मिसेज हेज और लोलिता के साथ ग्लास लेक जाना था। पिकनिक मनाने, नहाने और धूप सेंकने। लेकिन दोपहर होते-होते तेज बारिश शुरू हो गई और हमारा प्रोग्राम उसकी नजर हो गया। न्यूयॉर्क और शिकागो में लड़कियों की यौवनावस्था की शुरुआत तेरह वर्ष नौ महीने की उम्र में मानी जाती है। मैं जानता हूं कि मेरे अंदर वह सारी खूबियां मौजूद हैं जो इस उम्र की किशोरियों को आकर्षित करती है, सुंदर चेहरा, स्वस्थ शरीर, भारी-भरकम

कंधे। वैसे भी मैंने सुना है कि मैं लो के किसी पसंदीदा ऐक्टर से मिलता-जुलता हूं।

मंगलवार को भी बारिश जारी रही। मिसेज हेज बाजार गई थी और मैं जानता था कि मेरी लो कहीं मेरे आसपास ही है। चोरी-चोरी तलाश करने के बाद मैंने आखिर उसको उसकी मां के कमरे में पा ही लिया। उसकी आंख में शायद कुछ पड़ गया था जिसे निकालने की वह कोशिश कर रही थी। मुझे उसके बदन की खुशबू पसंद थी, लेकिन उस समय उसके बालों से बदबू आ रही थी। मैंने पहले उसे कंधों से पकड़ा और फिर उसकी कनपटियों से। और फिर अपनी जबान की नोक से मैंने उसकी आंख साफ कर दी। अभी वह हटने ही वाली थी कि मैंने अपने होंठ उसकी आंख पर रख दिए। उसने मेरा साथ दिया और फिर वह हंसती हुई कमरे से बाहर चली गई। अपनी जिंदगी में कभी भी मुझे ऐसा आनंद नहीं मिला था, अपने बचपन की प्रेमिका के साथ भी नहीं।

लेकिन उस रात को मैं अंगारों पर लोटता रहा। मैं आंखें बंद करता तो उसका चेहरा मेरे सामने होता, मैं आंखें खोलता तो भी वह तस्वीर की तरह मेरी आंखों के सामने मौजूद होती। मैंने उसकी तारीफ में एक कविता लिखी, लेकिन फिर उसे फाड़ डाला। शब्दों में उसकी खूबसूरती का बयान करना नामुमकिन था। उसके सुनहरे बाल, उसके सुर्ख होंठ काश मैं कोई लेखिका होता और उसके नग्न शरीर की खूबसूरती देख सकता। लेकिन मैं तो लंबा-चौड़ा, बालों भरे सीने और घनी भवों वाला हम्बर्ट-हम्बर्ट था। मेरे हर विचार में लोलिता थी, मेरा हर विचार लोलिता के इर्द-गिर्द था।

बुधवार को जब कि मैं घर से बाहर निकल रहा था और उसी समय वह अंदर जा रही थी, वह मुझसे अपनी मधुर आवाज में बोली, "कल को मुझे और तुम्हें ग्लास लेक पर ले जाने के लिए मां को तैयार करो।" न सिर्फ मेरे अंदर का बल्कि बाहर का सारा माहौल भी उसकी चमक-दमक से जगमगा उठा।

बृहस्पतिवार से पिछली शाम को गार्डन में हम तीनों फर्श पर तकिए बिछाए बैठे हुए थे-मिसेज हेज, लोलिता और मैं। गर्मी भरी शाम का धुंधलका धीरे-धीरे रात के गहरे अंधेरे में तबदील हो चुका था। जाड़ों में देखी एक फिल्म की कहानी अभी मिसेज हेज ने सुनाई थी, जिसमें एक बॉक्सर एक बूढ़े पादरी के सामने जाने पर खुद को कमजोर महसूस करने लगा था। लो किसी

तरह मेरे और मिसेज हेज के बीच घुस आई थी। मैंने भी अपने कनाडा के दौरे की एक हंसी-मजाक से भरी झूठी कहानी सुनानी शुरू कर दी जिसमें मैंने साइकल से एक सफेद भालू को मार गिराया था। इस सबके दौरान मुझे लोलिता के करीब होने का अहसास सताता रहा, और मैं कहानी सुनाते-सुनाते बार-बार बहाने से उसे छू लेता और कभी अपने होंठ

उसके बालों के करीब ले जाता। फिर अंधेरे का फायदा उठाते हुए मैंने उसकी नंगी टांगों को सहलाना शुरू कर दिया। कभी मेरा हाथ उसकी कमर को सहलाने लगता और वह भी अपनी ओर से मेरा भरपूर साथ देती रही। मेरा हाथ उसकी टांग से बढ़कर उसकी जांघों तक जा पहुंचा और फिर अपनी मंजिल की तरफ रेंगने लगा। मेरा सारा शरीर कठोर होता जा रहा था यह जानते हुए भी कि ऐसा करने का कोई फायदा नहीं है। मैं अपने आनंद की दुनिया में खोता जा रहा था कि तभी मिसेज हेज ने घोषणा की कि अब लो के सोने का समय हो गया है। मजबूरन, मेरी लो को जाना पड़ा और मैं मिसेज हेज के साथ तन्हा रह गया। वह लगातार सिगरेट फूंक रही थी।

मिसेज हेज मुझे बताने लगी कि लोलिता एक साल की उम्र से ही जिद्दी और चिड़चिड़े स्वभाव की रही थी। उस समय भी वह अपने झूले से बार-बार अपने खिलौने फेंकती और अपनी मां को उन्हें उठाकर वापस देने को मजबूर करती रहती थी। और अब बारह साल की होने पर तो वह एक लगातार रहने वाला सिरदर्द बन गई थी। पढ़ाई में भी वह कमजोर थी, हालांकि पिस्की के मुकाबले यहां रेम्सेडल में कुछ बेहतर हो गई थी (पिस्की मिसेज हेज के मायके का शहर था। यह रेम्सेडल वाला घर उसकी स्वर्गीय सास का था और यहां वह सिर्फ दो साल पहले ही आई थीं)। "पिस्की में वह ऐसी क्यों हो गई थी?" मैंने पूछा। "ये तो इस उम्र में होता ही है। इस उम्र से मैं भी गुजर चुकी हूं। बचपन में साथ के लड़कों की छेड़खानी, कभी उनका बालों को खींचना, तो कभी छातियों को नोचना, स्कर्ट उठा देना, इस सबके बाद चिड़चिड़ा हो जाना स्वाभाविक ही है। लेकिन लो के साथ यह सब कुछ जरूरत से ज्यादा ही है। हम्बर्ट, मुझे लगता है कि आप एक विद्वान हैं, भूगोल, गणित, फ्रेंच सभी कुछ जानते हैं, अगर आप जाड़ों तक यहां रुकें तो आप उसके होमवर्क में उसकी मदद कर सकते हैं।" मैं चिल्ला-चिल्लाकर कहना चाहता था कि अगर मुझे अपनी शिष्या के नाजुक बदन को कभी-कभार सहलाने का मौका मिलता रहे, तो मैं तो हमेशा के लिए यहां रह जाऊंगा। लेकिन मैं नहीं चाहता था कि मिसेज हेज किसी भी तरह मेरे इरादों को भांप सके। इसलिए मैंने अपने हाथ-पैर थोड़े अकड़ाए और बिना कुछ कहे वहां से चला आया। अभी मैं अपने बिस्तर पर लेटा ही था। कि

मिसेज हेज चुपके से मेरे कमरे में दाखिल हुई और मुझसे वयस्कों की उस मैग्जीन के बारे में पूछने लगी जो उसने मुझे पढ़ने के लिए दी थी। तभी लो अपने कमरे से चिल्लाई कि वह मैग्जीन उसके पास है।

शुक्रवार को मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि अगर इस घर में मैं अपनी डार्लिंग, अपनी जिंदगी, अपनी नन्ही दुल्हन के इर्द-गिर्द, ऐसे जबरदस्त प्रलोभन के आसपास कुछ दिन और रहा, तो शायद एक बार फिर से मुझ पर पागलपन के दौरे

पड़ने लगेंगे। कभी-कभी मैं सोचता था कि क्या बारह वर्ष की यह बच्ची उन सारी भावनाओं से पहले ही परिचित है? फिर मैं सोचता कि अगर मैंने कभी कोई कत्ल किया ('अगर' की ओर ध्यान दीजिएगा) तो ऐसा शायद पागलपन में ही हो सकता है। हां, यह अलग बात है कि वेलेरिया वाले मामले में मेरे सिर पर जैसा खून सवार हुआ था, लोलिता के लिए शायद उससे कहीं ज्यादा जबरदस्त ढंग से होगा।

रात को खाने के दौरान एक बार फिर से डाइनिंग टेबल पर ही मां-बेटी में झगड़ा हुआ और लोलिता गुस्से में उठकर चली गई। उसके जाने के बाद मिसेज हेज बोली, "अगर लोलिता अपने इस बर्ताव के लिए माफी मांग ले, तो क्या आप कल हमारे साथ ग्लास लेक चलेंगे?" थोड़ी ही देर बाद मैंने दोनों लड़ाई की आवाजें फिर से सुनीं। मतलब, हम ग्लास लेक नहीं जा रहे हैं। जाते तो यकीनन काफी मजा आता।

मैं इस बात का ख्याल रखता था कि जब भी अपने कमरे में बैठकर कुछ लिखता, तो कमरे दरवाजा जरूर खुला छोड़ देता था। कई दिन के इंतजार के बाद, आज शनिवार को मेरी यह चाल कामयाब हुई। लोलिता उस खुले दरवाजे से अंदर आई और थोड़ी देर इधर-उधर घूमने के बाद वह उस डेस्क के पास आ गई जिस पर मैं लिख रहा था और मेरे कागज उठाकर दिलचस्पी से पढ़ने लगी। मैंने एक बाप की तरह उसके गले में अपनी बांह डाल दी। पढ़ते-पढ़ते वह धीरे से मेरी गोद में बैठ-सी गई। उसका सुंदर शरीर, अधखुले होंठ और गुनगुने बाल मुझसे मुश्किल से तीन इंच की दूरी पर होंगे। कपड़ों के पार मैं उसके बदन की गर्मी को महसूस कर रहा था। अचानक मुझे लगा कि मैं उसकी गर्दन या होंठों को चूम सकता हूं। मैं जानता था कि वह मुझे रोकेगी नहीं, बल्कि शायद हॉलीवुड फिल्मों की नायिकाओं की तरह अपनी आंखें भी बंद कर ले। नए जमाने की वह किशोरी जिसे फिल्मी मैग्जीनों को पढ़ने और मेरे जैसे खूबसूरत, जवान मर्दों से दोस्ती करने का शौक था, इस समय इंतजार कर रही थी

कि मैं पहल करूं। लेकिन मैंने बहुत देर कर दी। क्योंकि तभी मिसेज हेज शायद कहीं बाहर से घर में आई थी और लुईस उसको बेसमेंट में किसी मरी हुई चीज के मिलने की खबर दे रही थी। अब ऐसा कैसे हो सकता था कि मेरी नन्हीं सी लोलिता उस खबर में दिलचस्पी नहीं ले।

अगले दिन रविवार को मेरी अजीबो-गरीब, पल में खुशी, पल में गुस्सा दिखाने वाली आकर्षक लोलिता काले रंग की बो लगाकर और पिंडली तक की स्कर्ट पहनकर जो कि उसके सफेद मोजों से शायद दो इंच ऊंची होगी, अपनी मां के साथ हैमिल्टन परिवार में किसी बर्थ-डे पार्टी में चली गई। मुझे लगा जैसे दिन बरबाद हो गया।

सोमवार की सुबह से ही बारिश हो रही थी। मैं चमकदार जाल में बैठी एक

25

कमजोर सी मकड़ी की तरह महसूस कर रहा था जो कि शिकार की तलाश में लगातार इधर-उधर भटक रही हो। हालांकि मेरा जाल तो पूरे घर में फैला हुआ था और मैं एक चालाक जादूगर की तरह अपने कमरे में कुर्सी पर बैठा-बैठा सब ओर की खबर लेने की कोशिश कर रहा था। क्या लो अपने कमरे में है? मैंने पर्दा जरा-सा सरका कर देखा और पाया कि वह वहां नहीं है। टॉयलेट में? वहां भी नहीं। क्या अभी बाथरूम में है और दांत साफ कर रही है? नहीं? वह तो वहां भी नहीं है, तो फिर मेरा खूबसूरत शिकार घर के किस कोने में है? किचन में फ्रिज का दरवाजा खोल रही है या अपनी मां से लड़ रही है? लेकिन उसकी मां तो धीरे-धीरे और चटखारे लेकर फोन पर किसी से कानाफूसी कर रही है। यह सुबह से उसका तीसरा फोन है। शायद मिसेज चैटफील्ड से बात कर रही होगी या फिर मिसेज हैमिल्टन से। तो मेरी सुंदरी घर में नहीं है! कहीं चली गई है! तभी तो सारा घर श्मशान की तरह सूना सूना लग रहा है। मैं परेशान हो उठा और तभी मेरे कमरे के अधखुले दरवाजे से लोलिता के खिलखिलाने की आवाज आई, "मां को मत बताना कि मैंने तुम्हारा सारा बेकन खा लिया है।" लेकिन जैसे ही मैं उठकर उसके पीछे-पीछे बाहर गया, वह भागकर जा चुकी थी और मेरी नाश्ते की ट्रे मुझे घूर रही थी। ओ लोलिता, तुम कहां चली गई?

मंगलवार को एक बार फिर हमारा पिकनिक पर जाने का प्रोग्राम बादलों की नजर हो गया। ग्लास लेक तो पहुंच से दूर होती जा रही लगती थी। क्या किस्मत मेरे साथ कोई खेल खेल रही है? कल तो मैं तैराकी का अपना नया ट्रंक पहनकर शीशे के सामने खुद को देर तक

देखता रहा था।

बुधवार की दोपहर को मिसेज हेज ने मुझे बताया कि वह अपनी किसी दोस्त की दोस्त के लिए कोई तोहफा खरीदने शहर जा रही है। फिर उसने मुझसे कहा कि चूंकि परफ्यूम और कपड़ों के मामले में मेरी पसंद बहुत अच्छी है, इसलिए मैं भी उसके साथ चलूं। हम्बर्ट बेचारा तो परफ्यूम का बिजनेस कर चुका था, इसलिए मना कैसे करता? जब हम जा रहे थे तो पोर्च में खड़ी कार में बैठते समय भी मैं कोई ऐसी तरकीब सोच रहा था कि मैं मिसेज हेज के साथ से बच जाऊं। उसी समय मिसेज हेज ने कार स्टार्ट कर दी थी और सड़क पर बैक होकर मुड़ते एक ट्रक को बुरा-भला कह रही थी कि तभी ड्राइंगरूम की खिड़की से लोलिता की आवाज सुनाई दी, "तुम लोग कहां जा रहे हो? रुको, मैं भी चलूंगी।" "उसकी ओर ध्यान मत दीजिए," मिसेज हेज ने कहा। लेकिन तब तक लोलिता दौड़ती हुई वहां पहुंच चुकी थी और मेरी ओर का दरवाजा खोल रही थी। "यह हरकत बर्दाश्त करने लायक नहीं है," मिसेज हेज ने कहा। लेकिन लो खुशी से लगभग कांपती हुई मुझसे बोली, "अपने कूल्हे उधर हटाओ।" "लो!" मिसेज हेज चिल्लाई, और

26

मेरी तरफ ऐसे देखने लगी जैसे मैं अभी लोलिता को उठाकर बाहर फेंक दूंगा। एक झटके के साथ कार को आगे बढ़ाते हुए मिसेज हेज बोली, "कोई बच्चा इतना भी बदतमीज हो सकता है! यह चीज मेरी बर्दाश्त से बाहर है। वह जानती है कि मैं उसे साथ नहीं ले जाना चाहती। अभी नहाई भी नहीं है। ऊपर से यह बदतमीजी !"

अब तक तो मेरी उंगलियों के पोरों ने उस बच्ची की जींस को सहलाना शुरू कर दिया था। मैंने देखा वह नंगे पैर थी। पैर के अंगूठे पर बची-खुची नेल पॉलिश के निशान थे और साथ ही कोई टेप भी चिपका हुआ था। उसके उन प्यारे-प्यारे पैरों को चूमने के लिए मैं कुछ भी लुटा सकता था। अचानक उसका हाथ मेरे हाथ में आ गया और बिना उसकी मां के देखे मैं उसके गर्म हाथ को पकड़ने, सहलाने, मसलने लगा। रास्ते भर हमारे बीच यही रहा और मैं दिल ही दिल में हुआ मांगता रहा कि बाजार कभी नहीं आए, लेकिन आखिर बाजार आ ही गया। वापसी में मेरे हाथ निराशा के अलावा कुछ नहीं आया क्योंकि मां ने बेटी को पिछली सीट पर बिठा दिया था।

महीने की शुरुआत में हुई गर्मी का खामियाजा बृस्पतिवार को ओले और हवा के सर्द झोंकों से भुगतना पड़ा। अपने कमरे में एक किताब के अंदर रखा एक कागज मुझे मिला जिस पर एक तरफ किसी बच्चे ने अमेरिका का नक्शा बनाने की कोशिश की थी और दूसरी ओर शायद अपने क्लास के सारे बच्चों के नाम लिखे थे। वे सारे नाम आज भी मुझे एक कविता के रूप में याद हैं क्योंकि उनमें वह एक नाम है जो मेरे लिए हमेशा सारे नामों से ऊपर रहेगा-डोलर्स हेज यानी मेरी लोलिता का नाम !

शुक्रवार को मेरा जी चाहने लगा था कि भूकंप जैसी कोई बड़ी दुर्घटना हो या कोई विस्फोट हो जिसमें लोलिता की मां मारी जाए। मीलों दूर तक चारों ओर सभी लोग खत्म हो जाएं। और उन अवशेषों के बीच लोलिता मेरी बांहों में आकर समा जाए। वह मेरी प्यार भरी हरकतों से हैरत में पड़ जाए और मैं अपनी हरकतों की वजह और अर्थ उसको समझाता रहूं। लेकिन ऐसा सोचने का क्या फायदा! शायद मैं सुंदर और लंबा-चौड़ा होने के बावजूद भी बहुत डरपोक हूं वरना कल जब वह मेरे कमरे में मुझे अपनी ड्राइंग की कॉपी दिखाने के लिए आई थी, तभी मैं हिम्मत से काम लेकर उसे अपना लेता। मुझे शायद हमेशा इस बात का डर लगा रहता है कि मेरे ऐसा करने से कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए।

उसी रात को मैं अपने एक सपने को डायरी पर लिखने के लिए बैठ गया। उस सपने में हेज ने रात को खाने के समय ऐलान किया था कि चूंकि मौसम विभाग के अनुसार इतवार को धूप खिली रहेगी, इसलिए हम सब इतवार को चर्च के बाद पिकनिक मनाने लेक पर जाएंगे। इस सपने को लिखने के बाद मैं लेट गया और

27

फिर मैंने एक आखिरी योजना बनाई। मुझे मालूम था कि मिसेज हेज लोलिता से नफरत करती है क्योंकि लोलिता मुझ पर मेहरबान है। इसलिए मैंने फैसला किया कि पिकनिक वाले दिन मैं पहले मिसेज हेज को संतुष्ट करूंगा। सिर्फ उसी से बात करता रहूंगा और फिर मौका देखकर मैं उससे कहूंगा कि मैं अपनी घड़ी या चश्मा उधर घास पर भूल आया हूं और इस बहाने मैं अपनी लो को साथ लेकर जंगल में घुस जाऊंगा। यह सोचते-सोचते मैं हकीकत की दुनिया से दूर चला गया क्योंकि अब मेरे ख्यालों में जंगल के अंदर लोलिता ऐसे भ्रष्ट और नंगे ढंग से मेरा साथ दे रही थी जो कि हकीकत से कहीं दूर था। तीन बजे सुबह को मैंने एक नींद की गोली खाई, और फिर मुझे एक और स्वप्न दिखाई दिया जिसमें ग्लास लेक के ऊपर बर्फ की एक तह जम गई थी और एक एस्किमो उसे तोड़ने की नाकाम कोशिश में लगा हुआ था।

लेक के पास ही हेज और लोलिता घोड़ों पर दनदनाती फिर रही थीं। उनके पीछे-पीछे घोड़े पर सवार मैं भी चल रहा था, लेकिन मेरे नीचे घोड़ा नहीं था। शायद स्वप्न-देवता की भूल के कारण!

शनिवार की सुबह को भी रात को देखे सपने के कारण मेरा दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसी दिन मैंने लोलिता को एक खिड़की की चौखट पर लटके हुए नीचे खड़े अखबार वाले से बात करते देखा। वह एक टी-शर्ट और सफेद रंग के शार्ट्स पहने हुए थी और दोनों के बीच में उसकी चमकीली कमर का निचला भाग दिखाई दे रहा था। मैं किसी पैंटोमाइम कलाकार की तरह चुपके-चुपके उसकी तरफ बढ़ने लगा। उसके छोटे-छोटे कूल्हों तक पहुंचने में मुझे घंटों लग गए होंगे। आखिरकार मैं ठीक उसके पीछे पहुंच गया, लेकिन अपने असल मकसद को छुपाने के चक्कर में मैं एक बेवकूफी कर बैठा-मैंने उसकी गर्दन पकड़कर उसे जोर से हिला दिया, लेकिन जवाब में वह जोर से चिल्लाई, "दूर हटो!" और मुझे दांत निपोरते हुए पीछे हट जाना पड़ा, जबकि वह कमरे से निकलकर चली गई। लेकिन अब सुनिए कि इसके बाद क्या हुआ। लंच के बाद मैं एक कुर्सी पर

बैठा कुछ पढ़ने की कोशिश कर रहा था कि तभी दो नन्हे नन्हे हाथों ने पीछे से आकर मेरी आंखों को ढक लिया, जैसे वह मुझसे मेरी सुबह की हरकत का बदला ले रही हो। मैं बिना जगह बदले अपने हाथ पीछे ले जाकर उसको पकड़ने की कोशिश करता रहा और वह मुझसे बचने के लिए इधर-उधर झटके खाती रही। मेरे हाथ उसकी टांगों को बार-बार छू लेते थे। तभी मेरी गोद से फिसलकर किताब गिर पड़ी और मिसेज हेज की कड़कती आवाज आई, "अगर यह आपकी पढ़ाई में दखल दे तो एक थप्पड़ मारना इसके !" इतना कहकर वह गंदी औरत मेरे सामने आकर घास में बैठ गई। मिसेज हेज की आवाज सुनते ही लोलिता अंदर भाग गई थी। तभी एक टेनिस की गेंद मिसेज हेज को आकर लगी, साथ ही घर के अंदर

से लो की आवाज आई, "माफ करना मां, मैंने तुम्हारा निशाना नहीं लिया था।" मैं जानता हूं, डार्लिंग, तुमने किसका निशाना लिया था।

मेरी डायरी की बीस प्रविष्टियों में यह आखिरी थी और आप देख चुके होंगे कि शैतान की सारी चालाकियों के बावजूद रोजाना का प्रोग्राम एक-सा ही रहता था। शैतान पहले तो मुझे बहकाता और ललचाता था और फिर निराश कर देता था, जिससे मेरा सारा वजूद एक दर्द भरा साज

बनकर रह जाता था। मुझे मालूम था कि मुझे क्या चाहिए और किस तरह चाहिए क्योंकि मैं उस बच्ची की पवित्रता को बर्बाद किए बिना ही उससे आनंद प्राप्त करना चाहता था। कुछ भी हो, मुझे किशोरियों के प्रति इस अहसास का एक लंबा तजुर्बा था, पार्क में खेलती कितनी ही खूबसूरत किशोरियों को मैंने अपनी नजरों से हासिल किया था, भरी हुई बस से एक कोने में बैठकर स्कूल जाती आती, बस्ते सिर पर लटकाए कितनी ही किशोरियों को देखकर मैंने अपने ऊपर जब्त किया था। लेकिन पिछले तीन सप्ताह से मेरे सारे उपायों पर मिसेज हेज ठंडा पानी डालती आ रही थी। मेरे द्वारा लो को प्राप्त कर लिए जाने से ज्यादा डर शायद उसे इस बात का था कि कहीं लो मुझसे आनंद हासिल न कर ले। इस नन्ही परी के प्रति मेरे दिल में उठ रहा तूफान एक बार फिर से मुझे अभी कुछ और समय अपना खिलौना बनाए रखना चाहता था, इसलिए आखिरकार उसे मुझ पर रहम खाना ही पड़ा।

मिसेज हेज ने लेक पर जाने का प्रोग्राम बनाने में मेरे साथ धोखेबाजी की थी। उसने मुझे यह नहीं बताया था कि हमारे साथ लो की सहेली रोज (जो कि खुद भी काफी खूबसूरत थी) भी जाएगी ताकि दोनों किशोरियां अपने आपमें मस्त रहें और मिसेज हेज अर्धनग्न अवस्था में बीच पर मेरे साथ लेटने का मजा लूट सके। भाग्य भी कैसे-कैसे खेल खेलता है! जिससे हम बचना चाहते हैं, कभी-कभी उसी को हम बाद में गले लगाते हैं। मेरे रेम्सेडल आने से पहले, मिसेज हेज नौकरी करने के बारे में सोच रही थी और इसलिए लो की देखभाल करने के लिए (या शायद मुझसे बचाने को) उसने मिस फालेन नामक एक बूढ़ी अविवाहिता को भी बुलाया था, लेकिन वह कूल्हा टूट जाने के कारण नहीं आ पाई। और अब हेज मेरे साथ रहने के लिए बहाने तलाश कर रही थी।

मौसम विभाग के अंदाजे के मुताबिक ही इतवार को खूब अच्छी धूप खिली हुई थी। जब नाश्ते के बर्तन कमरे के बाहर पड़ी कुर्सी पर रखने के लिए मैं बाहर निकला तो नीचे से आ रही आवाजों से मैंने अंदाजा लगाया कि मां-बेटी में आज फिर झगड़ा हुआ था। दरअसल मिसेज हैमिल्टन ने सुबह को फोन पर बताया कि उनकी बेटी रोज को बुखार हो गया है इसलिए वह हमारे साथ पिकनिक पर नहीं

जा सकेगी। मिसेज हेज ने अपनी बेटी से कहा कि पिकनिक का प्रोग्राम फिर से टालना पड़ेगा। जवाब में बेटी ने कहा कि अगर पिकनिक पर नहीं जाना है, तो उसे चर्च भी नहीं जाना है और फिर मिसेज हेज गुस्से में भरी अकेली ही चर्च को चली गई।

मैंने अभी शेव किया ही था और साबुन मेरे कानों पर लगा हुआ था। मैंने साबुन को साफ किया, अपने बालों और बगलों में खुशबू लगाई और गुनगुनाता हुआ, लो की तलाश में सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। उसके बाद मैंने जो कुछ किया, मैं चाहता हूं कि मेरे पाठक उस पर बिना किसी पक्षपात के अपनी टिप्पणी करें।

वह गुलाबी रंग के चेक की स्कर्ट पहने हुए थी। उसने लिपस्टिक भी लगा रखी थी। वह नंगे पैर थी और हाथ में एक चमकदार लाल रंग का सेब लिए हुए थी और उसे उछाल उछाल कर खेल रही थी। जैसे ही उसने एक बार सेब को हवा में उछाला, मैंने उसे कैच कर लिया। उसने अपनी मरमरी हथेली मेरे सामने फैलाते हुए इल्तेजा की, "वापस दे दो।" मेरे वापस करने पर उसने सेब को अपने दांतों से काटा, और जो मैग्जीन मैं खोल चुका था, उसने छीन ली। फिर वह तेजी से उसके पन्ने पलटने लगी जैसे वह मुझे उसमें कोई खास तस्वीर दिखाना चाहती हो। आखिरकार वह तस्वीर उसे मिल ही गई। तस्वीर में दिलचस्पी लेने के बहाने मैं उसके इतने करीब आ गया कि अब मेरी कनपटी उसके बालों को और उसका बाजू मेरे गाल को छू रहा था। उत्तेजना से आंखों के सामने छाती जा रही धुंध की वजह से मैं उस तस्वीर को साफ तौर पर नहीं देख पा रहा था और इसीलिए अभी तक मेरी ओर से उस पर कोई प्रतिक्रिया भी नहीं हुई थी। जिसके कारण वह अपने नंगे घुटनों को बेसब्री से एक-दूसरे से टकरा रही थी। आखिर मैंने उस मैग्जीन को एक झटके के साथ वापस छीन लिया और उसे वापस लेने के बहाने वह पूरी तरह मेरे ऊपर आ रही। मैंने उसकी कलाई थाम ली और उधर मैग्जीन किसी जख्मी चिड़िया की तरह नीचे गिर पड़ी। अगले ही लम्हे, बहुत ही सादगी से उसने अपनी टांगें मेरी गोद में रख दीं।

इस वक्त मैं उत्तेजना की उस सीमा तक पहुंच चुका था जिसके बाद सिर्फ पागलपन रह जाता है। सोफे पर संभलकर बैठते हुए मैंने धीरे-धीरे इस तरह हिलना शुरू किया कि उसको मेरे अंदर लगी हुई आग का अंदाजा भी न हो सके और मुझे भी कुछ ठंडक मिलती रहे। यह कोई आसान काम नहीं था। तेजी से बातें करते हुए, अपनी सांस को बार-बार दुरुस्त करते हुए मेरी कल्पना की आंख लगातार अपने सुनहरी निशाने पर थी और मैं अपने घर्षण के जरिए अपने पाजामे और उसके कपड़ों तक उसकी टांगों और अपनी वासना के फोड़े के बीच की दूरी को खत्म करने की कोशिश में लगा हुआ था। साथ ही मैं उस जमाने के एक मशहूर

गाने की पंक्तियां गुनगुनाने या शायद बड़बड़ाने लगा। मुझे यह डर भी लगा हुआ था कि कहीं अचानक कुछ ऐसा न हो जाए कि मेरे अरमानों पे एक बार फिर से पानी फिर जाए, इसलिए शुरू के एक मिनट तक मैं अपना काम जरूरत से ज्यादा तेजी से करता रहा। जो गाना मैं गाने की कोशिश कर रहा था, उसने अब उसे गाना शुरू कर दिया। साथ ही वह अपना सेब भी खाती जा रही थी। मैं उसकी टांगों को सहला रहा था और जब वह अपने पैर की एड़ी से दूसरे पैर की पिंडली को खुजाती, तो उसके हिलने की वजह से मुझे अपने हिलने के कारण को छुपाने में आसानी हो जाती।

उसकी टांगों को सहलाने के दौरान मेरी उंगलियों ने उसकी पिंडलियों पर बालों को महसूस किया, और मैं एक अजीब सी धुंध में खो गया। जब वह सेब का बचा-खुचा टुकड़ा फेंकने के लिए मुड़ी तो मैं डर गया कि कहीं उठकर चली ही न जाए, लेकिन इसके कारण तो वह मेरे और करीब आ गई, और उसके बेशर्म नितंब अब ठीक मेरी गोद में थे। अचानक मुझे लगा कि मैं उस हालत तक पहुंच चुका हूं जहां से वापसी भी मुश्किल होती है और आगे जाना भी नामुमकिन होता है मेरे सारे बदन में आनंद की लहरें एक तूफान की तरह उठ रही थीं। जिसके थमने का अब कोई चांस नहीं था। हालांकि मैं उसे थोड़ी देर तक थामे रखना चाहता था। मैं उस वक्त सारी दुनिया से बे-नियाज जैसे अधर में था या फिर शायद शून्य में, क्योंकि मैंने अपने को आनंद की चरम पर पहुंचकर भी किसी तरह रोके हुआ था। और फिर वही हुआ जो होना था, 'तूफां की तरह मैं बह निकला, सैलाब मेरे रोके न रुका।' मेरा हाथ उसकी टांगों पर फिसलता हुआ जितना ऊपर तक जा सकता था चला गया। मेरे साथ और मेरी मंजिल के बीच सिर्फ कपड़े की एक तह थी। अभी जबकि उसके बाएं नितंब से टकराकर मेरे बांध टूटे थे, उसी समय वह अपने निचले होंठ को दांतों में दबा रही थी।

टेलीफोन शायद बहुत देर से घनघना रहा था। वह सोफे से उतरी और टेलीफोन पर अपनी मां से बात करने लगी। उसकी मां उसको चैटफील्ड परिवार के यहां लंच पर आने को कह रही थी (पता नहीं क्या योजनाएं बना रही थी मिसेज हेज) लो उससे बातचीत के दौरान मुझ पर ऐसे ही नजर डाल रही थी जैसे कमरे के फर्नीचर पर। शायद उसकी नजर मेरी हालत पर नहीं पड़ी थी। बैंक गॉड! हालांकि मैं उसकी हालत देख रहा था, तमतमाए गाल, बिखरे बाल। बहरहाल, मैं तो अपने में मगन था, और उसको इसी तरह अपनी मां से बहस करता छोड़कर अपने माथे का पसीना पोछते हुए मैं सीढ़ियों से ऊपर जाने लगा। मैंने नहाने के लिए टब में पानी भरना शुरू कर दिया, और एक बार फिर से उसी मशहूर गाने को गुनगुनाने लगा, 'तू किसी और के दामन की कली है लेकिन मेरी रातें तेरी खुशबू से बसी

रहती हैं, तू कहीं भी हो तेरे फूल से गालों की कसम, तेरी पलकें मेरी आंखों पे झुकी रहती हैं।'

आराम से देर तक नहाने के बाद मैंने शहर जाकर लंच खाया-इतनी भूख आज मुझे बरसों बाद लगी थी। जब मैं वापस पहुंचा, तब भी लो घर में नहीं थी। दोपहर भर मैं सुबह के बारे में सोचता और आगे के लिए योजनाएं बनाता रहा। मुझे यह सोचकर अपने ऊपर गर्व हो रहा था कि मैंने बिना उस बच्ची को बर्बाद किए अपनी ख्वाहिश को पूरा कर लिया था, बिना छत्ते को तोड़े शहद चुरा लिया था। जैसे कोई जादूगर किसी औरत के पर्स को दूध या शीरे या झागदार शैम्पेन से भर दे और पर्स फिर भी खराब होने से बच जाए। मैंने भी अपनी पाप भरी कल्पना को इस तरह से साकार किया था कि लोलिता हिफाजत से थी मैं भी महफूज था। लो को तो पता ही नहीं चल सका था कि क्या हुआ। इसलिए मैंने सोच लिया था कि जैसे ही मौका मिलेगा मैं इसकी पुनरावृत्ति करने से नहीं चूकूंगा। दोपहर ढलती रही और मेरी ख्वाहिश परवान चढ़ती रही। मैं दुआ करने लगा कि काश वह आए और जबकि उसकी मां किचन में हो, मैं सुबह से अहसास को दोबारा जी सकूं। उसके लिए मेरे दिल में एक भयंकर चाहत उमड़ रही थी। नहीं, भयंकर नहीं, बल्कि शायद दयनीय, क्योंकि दीवानगी के बावजूद मैं उसकी पवित्रता को बचाए रखना चाहता था।

लेकिन इसका इनाम मुझे क्या मिला? लोलिता घर वापस ही नहीं आई, क्योंकि वह मिसेज चैटफील्ड की बेटी के साथ फिल्म देखने के लिए चली गई थी। और मिसेज हेज खाने की मेज पर बैठी अपनी खाली प्लेट को पकड़े (वह डाइटिंग कर रही थी) खाने के बजाय मेरा दिमाग खाती रही। आपको सलाद कैसा लगा? आज का दिन काफी अच्छा रहा। मिसेज चैटफील्ड बहुत अच्छी स्त्री हैं। उनकी बेटी फिलिस कल को तीन हफ्ते के समर कैंप में जा रही है। लोलिता बृहस्पतिवार को जाएगी। जुलाई तक इंतजार करने का क्या फायदा? फिर स्कूल खुलने तक वह वहीं रहेगी।

इतना सुनते ही मुझ पर जैसे बिजली गिर पड़ी। क्योंकि इसका मतलब तो यह था कि मेरी लोलिता जिसे मैं सबकी नजरों सें छुपाकर अपनी बना चुका था, वह अब मुझसे दूर होने वाली है। अपने दुख को छुपाने के लिए मैंने दांत के दर्द का अपना खास बहाना किया। "हमारे पड़ोस में डॉ. क्विल्टी रहते हैं," मिसेज हेज ने कहा, "वह बहुत अच्छे डेंटिस्ट हैं।" "नहीं, यह ऐसे ही ठीक हो जाएगा।" मैंने जवाब दिया। "जैसी आपकी मर्जी।" और एक बार फिर से उसकी बकवास शुरू हो गई। मुझे लगता है कि लोलिता आपको बहुत तंग कर रही है। शायद जाने से

पहले वह फिर काफी हंगामा खड़ा करेगी। उसने समर कैंप में जाने से साफ इंकार

कर दिया है और इसीलिए मैंने उसको यहां अपने साथ लाने के बजाय फिलिस के साथ फिल्म देखने भेज दिया। शायद इस तरह उसका गुस्सा ठंडा हो जाए। फिलिस बहुत अच्छी लड़की है। उसके साथ वक्त गुजार कर शायद वह बेहतर महसूस करेगी। सच, मुझे आपके दांत में दर्द का बहुत अफसोस है। अगर दर्द ठीक नहीं हुआ तो मैं कल सुबह पहले डॉ. आइवर क्विल्टी से ही बात करूंगी।

वैसे मैं समझती हूं कि समर कैंप में रहकर उसकी सेहत और मिजाज भी ठीक होगा और वह बहुत कुछ सीख भी सकेगी। क्या फायदा कि वह यहीं रहकर बेकार के काम करे या आपको तंग करती रहे? क्या अब हम थोड़ी देर गार्डन में चलकर बैठे या फिर आप आराम करना चाहेंगे।

"आराम करूंगा।" कहकर मैं अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन कैंप के सामान की खरीदारी के लिए वह दोनों बाजार चली गई। कपड़ों की खरीदारी करके लो हमेशा खुश हो जाती थी। लेकिन रोजाना की तरह रात को खाने की मेज पर वह फिर से झगड़े के मूड में थी। खाने के फौरन बाद वह अपने कमरे मे चली गई उन कॉमिक्स को पढ़ने के लिए जो कि वह कैंप ले जाने को लाई थी (कैंप जाने से पहले ही वह उन सबको पढ़ चुकी थी, इसीलिए उन्हें ले जाने की जरूरत ही नहीं पड़ी)। मैं भी अपनी मांद में आकर चिट्ठियां लिखने लगा। अब मेरा इरादा यह था कि मैं कहीं और चला जाऊंगा, और लोलिता के वापस आने पर ही मैं भी वापस आऊंगा, क्योंकि मैं इस घर में उसके बिना नहीं रह सकता था। मंगल को वे दोनों फिर से बाजार चली गई और मेरी ड्यूटी लगाई गई कि अगर कैंप प्रबंधक का फोन आए तो मैं बात करूं। फोन आया। (और एक महीने बाद ही कैंप प्रबंधक से मुझे फिर से मिलना पड़ा)। उस दिन लो ने खाना अपने कमरे पर ही खाया, क्योंकि उस दिन भी मां से लड़ने के बाद वह हमेशा की तरह रो रही थी। मिसेज हेज ने मुझे बताया कि उसने लोलिता से कह दिया था कि मैं भी उसके कैंप जाने के हक में हूं।

बुधवार को जब लो एक संदूक में कुछ तलाश रही थी, मैं उसके पीछे पहुंच गया। मजाक में कुछ कहते हुए मैंने उसकी कमर पर हाथ रख दिया, लेकिन जवाब में मुझे देखे बिना वह गुर्राई, "धोखेबाज," और जूते का एक तस्मा मेरे बाजू पर खींच मारा। मैं भी नाराजगी दिखाता हुआ वहां से हट गया। उस रात भी उसने हमारे साथ खाना नहीं खाया और अगले दिन मिसेज हेज उसे समर कैंप में छोड़ने चली गई।

मैं जानता था कि मुझे लोलिता से प्यार हो गया है, लेकिन मैं यह भी जानता था कि वह हमेशा तो लोलिता नहीं रहेगी। पहली जनवरी को वह तेरह बरस की हो

जाएगी। लगभग दो साल बचे थे, और उनमें से भी दो महीने समर कैंप की नजर हो जाने वाले थे। लोलिता मेरे खून में इस तरह रच-बस गई थी कि वह मेरे लिए हमेशा वैसी ही रहेगी, जैसी आज थी, लेकिन मैं ये दो महीने भी क्यों बर्बाद होने दूं? मैं दो महीने उसके बिना कैसे जिऊंगा? उसके कुल दो वर्ष के किशोरीत्व में से दो कीमती महीने मैं कैसे गंवा सकता हूं? क्या मैं किसी लड़की का भेष बदलकर उसके कैंप के बाहर अपना टैंट लगा लूं, जहां से कैंप की लड़कियां मुझे अपने कैंप जाएं और वहां मैं डोलर्स हेज के साथ सो सकूं। खोखली कल्पना! दो बेशकीमती महीने हमेशा के लिए बर्बाद होने वाले थे, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था।

लेकिन उस बृहस्पतिवार को शहर की एक अमूल्य बूंद मुझे मिल गई जिसने मुझे आने वाले दो महीने गुजारने का सहारा दे दिया। मिसेज हेज उसे सुबह-सुबह ले जाने वाली थी। मेरी आंख खुलीं, तो मैं बिस्तर से उठा और खिड़की से नीचे देखने लगा। पोपलर के पेड़ों के नीचे कार स्टार्ट हो चुकी थी, लोलिता कार में बैठ रही थी कि तभी उसकी नजर पोपलर के पेड़ों पर पड़ी (जिन्हें वह दोबारा कभी नहीं देख पाएगी) और फिर मुझ पर और वह दौड़ती हुई घर में घुसी। अगले ही क्षण सीढ़ियों पर उसके चढ़ने की आवाज आई। मैं नहीं जानता कि उस वक्त मेरा दिल जरूरत से ज्यादा तेज धड़क रहा था या धड़कनें बिल्कुल ही रुक गई थीं। मैंने दरवाजा खोला और अगले ही पल हांफती-कांपती मेरी लोलिता मेरी बांहों में समा चुकी थी और मैं उसके नाजुक होठों को अपने जंगली जबड़ों से मसल रहा था। और उसके अगले ही क्षण वह फिर से तेजी के साथ सीढ़ियां उतर रही थी। मिसेज हेज जो कि अभी तक गुस्से में उसे पुकार रही थी, कार स्टार्ट किए हुए उसका इंतजार कर रही थी। और जैसे ही लोलिता अपनी सीट पर बैठी, उसने एक झटके से कार आगे बढ़ा दी।

उसके जाने के बाद भी मुझे अपने हाथों और सांसों में लोलिता की महक आ रही थी। ऐसा लगता था जैसे वह अभी भी मेरी बांहों में हो और मैं उसकी कमर को सहला रहा हूं। उससे जुदाई मेरी बर्दाश्त से बाहर थी। मैं उसके बिखरे पड़े कमरे में घुस गया और उसकी अलमारी खोलकर मैंने उन गुंजले हुए कपड़ों पर अपने को गिरा दिया जिन्होंने कभी लोलिता के बदन को छुआ था। उनमें से गुलाबी रंग की उसकी ड्रेस को मैंने अपने सीने के इर्द-गिर्द लपेट लिया। मेरे अंदर एक तीखा खालीपन गूंज रहा था, क्योंकि घर की नौकरानी लुईस मुझे पुकारती हुई ऊपर ही आ रही थी। उसने कहा कि उसके पास मेरे लिए एक खत है और इतना कहकर उसने एक बिना टिकट लगा साफ-सुथरा लिफाफा मेरे कांपते हुए हाथ में थमा दिया और चली गई।

34

'यह इकरार इस बात का है कि मैं तुमसे प्यार करती हूं। (खत की शुरुआत इस तरह से थी और क्षण भर को मुझे लगा कि यह लिखाई किसी स्कूली बच्ची की है) पिछले इतवार को जब चर्च में मैंने भगवान से पूछा कि इन हालात में मैं क्या करूं, तो मुझसे यही करने के लिए कहा गया, जो मैं इस समय कर रही हूं। इसके अलावा कोई चारा भी तो नहीं है। पहली ही नजर में मैंने तुम्हें अपने दिल में बसा लिया था। मैं एक जज्बाती और तन्हा औरत हूं, और तुम मेरी कायनात हो।

'मेरे महबूब, अब तुम मेरे दिल की हालत से वाकिफ हो चुके हो। इसलिए मेरे वापस आने से पहले तुम अपना सामान बांधो और मेरे मकान से चले जाओ। यह एक मकान मालकिन का हुक्म है। मैं अपने किरायेदार को बाहर निकल जाने का हुक्म देती हूं। जाओ यहां से! चले जाओ! भाग जाओ! अगर रास्ते में मेरा एक्सीडेंट नहीं हुआ (हो भी जाए, तो क्या फर्क पड़ता है), तो मैं रात के खाने तक वापस घर पहुंच जाऊंगी, और तब मैं तुम्हें अपने घर पे नहीं देखना चाहूंगी। इसलिए उससे पहले ही तुम चले जाओ। जल्दी करो! इस पैगाम को भी पूरा मत पढ़ो। जाओ, अलविदा !

'मैं जानती हूं कि मैं तुम्हारी कोई नहीं लगती। इसमें भी कोई शक नहीं कि मुझसे बात करना, मुझसे छेड़छाड़ करना तुम्हें पसंद है, मेरा घर, मेरा गार्डन और मेरी बेटी की शरारतें भी तुम्हें अच्छी लगती हैं लेकिन मैं तुम्हारी कोई नहीं हूं। कुछ भी नहीं! और हां अगर मेरी इस 'स्वीकृति' को पढ़ने के बाद तुम इसके जरिए मुझसे नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करते

हो, तो तुम एक मुजरिम होगे-बच्चों से बलात्कार करने वाले मुजरिम। इसलिए मेरे वापस आने पर अगर तुम मुझे घर पर ही मिले (मुझे मालूम है तुम नहीं मिलोगे और इसीलिए मैं तुम्हें इस ढंग से लिख रही हूं), तो इसका सिर्फ एक मतलब होगा कि तुम भी मुझसे उतना ही प्यार करते हो, जितना कि मैं तुमसे, कि तुम मेरे जीवन साथी और मेरी नन्ही सी बेटी के बाप बनने को तैयार हो।

'मुझे अपनी बक-बक थोड़ी देर और जारी रखने दो, क्योंकि मैं जानती हूं कि अब तक तुम इस खत को फाड़कर फेंक चुके होगे। तुम नहीं जानते कि इस जून में मैंने तुम्हें लेकर न जाने कितने ख्वाब देखे हैं। मैं जानती हूं कि तुम खास यूरोपियन, बल्कि ब्रिटिश अंदाज में एक खामोश-मिजाज आदमी हो, और एक अमेरिकन लड़की के इस तरह अपने घायल मन को खोलकर तुम्हारे सामने रख देने से जरूर तुम्हें एक झटका लगेगा। तुम जो अपने गहरे जज्बात को भी छुपाकर रखना जानते हो, मुझे शायद बेशर्म-बेहया कहोगे। लेकिन मैंने अपनी जिंदगी में बहुत सारे सदमे झेले हैं। मिस्टर हेज एक शरीफ इंसान थे, लेकिन उम्र में मुझसे बीस बरस बड़े थे। खैर, पुराने जख्मों को कुरेदने का क्या फायदा? शायद तुमने मेरी दरखास्त को नजरअंदाज करते हुए इस खत को आखिर तक पढ़ लिया हो। कोई बात नहीं। लेकिन अब इसे बर्बाद कर दो, और यहां से चले जाओ हमेशा के लिए। कमरे में अपनी डेस्क पर चाबी छोड़ जाना, और साथ ही एक कागज के पुर्जे पर अपना पता भी, ताकि मैं तुम्हारे बारह डॉलर लौटा सकूं। अलविदा!"

35

यह खत इससे कम से कम दोगुना लंबा था, लेकिन मुझे जितना याद रहा, उतना मैंने आपके सामने रख दिया। उस खत में लोलिता से दो साल छोटे उसके एक भाई के लिए एक कविता भी थी, जो कि दो साल की ही उम्र में मर गया था। खत को पढ़कर मेरी पहली भावना नफरत और उबकाई जैसी थी। लेकिन फिर एक दोस्त की तरह मैंने अपने को समझाया कि कुछ भी फैसला करने से पहले अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। मैं फिर से लोलिता के कमरे में आ गया। उसके बिस्तर के ऊपर एक फिल्म एक्टर का फोटो लगा था, जिस पर लोलिता ने मेरा नाम लिख रखा था। बिस्तर पर उसके सारे कॉमिक्स बिखरे हुए थे। यह यकीन कर लेने के बाद कि लुईस जा चुकी है, मैं लोलिता के बिस्तर पर लेट गया और चिट्ठी को दोबारा पढ़ने लगा।

ज्यूरी के मोहतरम मेम्बरान! मैं इस बात की कसम नहीं खा सकता कि ऐसे ख्यालात खुद मेरे दिमाग में पहले कभी आए ही नहीं थे। लेकिन यह भी सच है कि मैंने बड़े ध्यान से शायद इस बारे में नहीं सोचा था। हां कभी-कभी एक गुजरते हुए ख्याल की तरह मेरे जेहन में यह जरूर आता था कि क्यों न मैं अधेड़ विधवा शैर्लट हेज से, जो कि इस भरी दुनिया में तन्हा है, शादी कर लूं और इस तरह उसकी बेटी (लो, लोला, लोलिता) तक पहुंच जाऊं। मैं यहां यह भी बताना चाहता हूं कि कभी-कभी मैं तारीफी नजरों से शैर्लट के सुर्ख होंठों, सुनहरे बालों और गहरे गले को भी देख लेता था और उसके बारे में सोचने भी लगता था।

थोड़ी देर बाद मैं अपने कमरे में आकर गहरी सोच में डूब गया। मैंने अपने बाल बिखरा लिए और दांत पीस-पीसकर कराहने लगा। लेकिन इसी परेशानी के आलम में अचानक मेरे होंठों पर एक मुस्कुराहट फैलती चली गई। मैं सोचने लगा कि लोलिता की मां के पति की हैसियत से तो मैं लोलिता को जब चाहूंगा, सहला सकूंगा, मैं उसको रोजाना कम से कम तीन बार अपने सीने से लगाया करूंगा। जब मैं उसे प्यार से अपने घुटने पर बिठाऊंगा और एक बाप की तरह प्यार से उसके गाल को चूम लूंगा तो मेरी सारी परेशानियां दूर हो जाएंगी, ये सारे गम धुल जाएंगे और मैं सेहतमंद हो जाऊंगा।

मैं कसम खाता हूं कि मैंने शैर्लट से शादी की योजना यह सोचकर नहीं बनाई थी कि मैं एक भद्दे, खतरनाक और बेरहम ढंग से उसकी शराब में जहर की गोलियां डालकर उसको मार डालूंगा। लेकिन हां, मैंने यह जरूर सोचा था कि शैर्लट से शादी के बाद लोलिता के साथ अपने संबंध मैं सिर्फ सहलाने की ही हद तक क्यों रखूं। मैंने कल्पना की कि मैं मां और बेटी दोनों की नींद की दवा देकर गहरी नींद में सुला दिया करूंगा और फिर जब शैर्लट के खर्राटों से सारा घर गूंज

रह होगा, तो मैं पूरी आजादी के साथ लोलिता के जिस्म के साथ हर तरह के खेल खेलूंगा। नहीं, नहीं, मैं उस हद तक कभी नहीं जाऊंगा कि उसकी पाकीजगी पर आंच आए।

इसी तरह मैं अपनी कल्पनाओं और ख्वाबों में डूबा रहा और शराब पीता रहा। मैं सोचने लगा कि इस खेल में मैं आखिर में शैर्लट को मजबूत कर दूंगा कि वह मुझे मेरी कानूनन सौतेली बेटी के साथ वह सब कुछ करने दे, जो मैं चाहता हूं, और अगर वह मुझे ऐसा नहीं करने देगी,

तो मैं उसे छोड़ देने की धमकी दूंगा। यह सब कुछ मैं इसलिए सोच रहा था कि मैं उस वक्त शैर्लट को अपने रास्ते की रुकावट मान रहा था।

अचानक मैंने सोचा कि जिन ख्यालात को लेकर शैर्लट यहां से गई है, उनमें गाड़ी चलाते हुए कहीं वह अपना एक्सीडेंट न कर बैठे (जिससे मेरे और उसके दोनों ही के ख्वाब चकनाचूर हो जाएंगे), इसलिए मैंने काफी सोच-विचार के बाद लोलिता के कैंप में फोन किया। पता चला कि शैर्लट वहां से आधा घंटा पहले वापसी के लिए चल चुकी है। मां से बात न हो पाने पर मैंने बेटी से बात की और उसे बताया कि मैं उसकी मां से शादी करने वाला हूं। उसने कहा, "फिर तो बड़ा मजा आएगा! शादी कब है?" उससे बात करने पर मुझे महसूस हुआ कि दो ही घंटे के अंदर वह बच्ची मेरी खूबसूरती को अपने दिमाग से साफ कर चुकी है। लेकिन अब मुझे इससे क्या फर्क पड़ता था? शादी के कुछ ही समय बाद मैं उसे वापस बुला लूंगा।

लुईस के जाने के बाद मैंने फ्रिज खोलकर देखा और फिर कुछ खाने-पीने की चीजें लेने शहर चला गया। मैं कुछ अच्छी शराब और दो-तीन तरह के विटामिन भी ले आया। मुझे पूरा यकीन था कि अपनी कुदरती मर्दानगी और इन चीजों की मदद से मैं अपने दिल में शैर्लट के प्रति मौजूद लापरवाही पर काबू पा सकूंगा, और जरूरत पड़ने पर उसे अपने जिस्म की बेताब लौ से झुलसाऊंगा। साथ ही मैं उसे प्यार करते समय यह भी सोचूंगा कि यह तो लोलिता की बड़ी बहन है। इस विचार से भी मुझे काफी मदद मिलेगी, वैसे भी अगर मैं उसके भारी-भरकम कूल्हों, गोल-गोल घुटनों, पकी हुई छातियों और गले के भद्दे गुलाबी रंग के बारे में न सोचूं, तो एक नजर में देखने पर वह कुल मिलाकर एक अच्छी खासी खूबसूरत औरत थी।

सुबह गुजरी, दोपहर बीती और फिर शाम होने को आ गई। मैं दिन में अनन्नास का जूस मिलाकर एक के बाद एक ड्रिंक लेता रहा और फिर मैंने सोचा कि क्यों न आज लॉन की सफाई की तरफ ध्यान दिया जाए। शराब और लोलिता का नशा मेरी नस-नस में उतरा हुआ था, जिन कुर्सियों को मैं एक जगह से हटाकर दूसरी

37

जगह रखना चाहता था, उन्हीं पर लगभग गिर पड़ा। लॉन से सामने की सड़क साफ दिखाई देती थी। इसलिए मैं वही शैर्लट के इंतजार में इस ढंग से बैठ गया, जैसे कि मैं कोई अच्छा काम करने वाला हूं। घास काटने की मशीन चलाते हुए मैंने अपनी नजर उसी सड़क पर रखी।

बड़े-बड़े पेड़ों के झुरमुट से आती हुई यह सड़क हमारे पोर्च (जो कि मुझे यहां से नहीं दिखाई दे रहा था) के सामने से गुजरती थी, और मुझे बिलकुल साफ नजर आ रही थी। मेरियन और माबेल नाम की दो किशोरियां जिन पर मैं पिछले कुछ समय से नजर रखे हुए था-हालांकि लोलिता से उनका कोई मुकाबला नहीं था-बातें करती हुई गुजरीं। सामने वाली पड़ोसन का ड्राइवर और माली नीग्रो लैसली मुझे देखकर दूर से चिल्लाकर और इशारों से बात कर रहे थे कि आज मैं बहुत खुश दिखाई दे रहा हूं। एक अन्य कबाड़ी पड़ोसी का कुत्ता एक नीली कार के पीछे दौड़ा, लेकिन यह नीली कार शैर्लट की नहीं थी। दोनों किशोरियों में से ज्यादा प्यारी (शायद माबेल) दौड़ती हुई एक तरफ को निकल गई। थोड़ी देर बाद एक स्टेशन वैगन गुजरी और कबाड़िए का बेवकूफ कुत्ता-मुझे कुत्तों से सख्त नफरत है-एक बार फिर उसके पीछे लग गया। थोड़ी देर सड़क सूनी पड़ी रही और फिर अचानक मेरे दिल की धड़कनें तेज हो गई क्योंकि शैर्लट की नीले रंग की सीडान वापस आ रही थी। उसके शांत-संजीदा चेहरे पर मेरी नजर पड़ी और फिर कार पोर्च तक पहुंचते-पहुंचते वह मेरी नजरों से ओझल हो गई। मैं सोचने लगा कि सीढ़ियों के ऊपर जाए बिना तो वह नहीं जान पाएगी कि मैं गया या नहीं। एक ही मिनट बाद, परेशानी और शर्मिंदगी भरे चेहरे से उसने लो के कमरे की खिड़की से नीचे झांककर मुझे देखा और फिर उसके कमरे से निकलने से पहले ही मैं दौड़ता हुआ उस तक पहुंच चुका था।

जब दुल्हन एक विधवा हो और दूल्हा एक विधुर, जब दुल्हन मुश्किल से दो वर्ष से किसी शहर में बसी हुई हो और दूल्हा को वहां आए एक महीना भी पूरा नहीं हो, जब दूल्हा जल्दी शादी कर डालना चाहता हो और दुल्हन को भी इससे कोई एतराज न हो, तो मेरे प्यारे पाठको, ऐसे अवसरों पर शादी सादी हो जाती है। हमारी शादी भी सादी ही रही, हालांकि इस मौके पर लोलिता की मौजूदगी थोड़े रंग बिखेर सकती थी, लेकिन मैं अभी लोलिता के लिए अपनी असल भावनाओं का प्रदर्शन नहीं करना चाहता था, इसलिए शैर्लट के कहने के अनुसार मैंने उसे उसके कैंप से वापस बुलाना मुनासिब नहीं समझा।

उत्तेजक चीजें खाने-पीने के बावजूद भी शुरू में शैर्लट को संतुष्ट करने में मुझे काफी परेशानी उठानी पड़ी। लेकिन अपनी इस कमी को मैं पुराने जमाने जैसी

मीठी-मीठी बातों से पूरा करने की कोशिश करता था। मैंने अंदाजा लगाया कि मेरी तन्हा और जज्बाती शैर्लट रोजाना की जिंदगी में काफी समझदार और मिलनसार औरत थी। वह बहुत

जज्बाती होने के बावजूद भी वह एक उसूल-पसंद औरत थी। एक बार उसने मुझसे पूछा कि भगवान और धर्म के बारे में मेरा क्या विश्वास है। कहने को तो मैं कह सकता था कि इस मामले में मेरा खुला दिमाग है लेकिन इसके बजाय मैंने कहा कि मेरा भगवान में पूरा विश्वास है। वह कहने लगी कि अगर ऐसा नहीं होता, तो वह खुदकुशी कर लेती। तभी मुझे लग गया कि वह उसूलों वाली औरत है।

वह सचमुच एक बहुत ही शिष्ट औरत थी। उसका अन्य औरतों से बातचीत करने और मेरे बारे में बात करने का ढंग बताया था कि वह कितनी भली थी। मैंने सोचा कि अगर मेरी वजह से उसके लोगों के बीच उसका नाम हो तो उसे जरूर खुशी होगी। हमारी शादी के दिन रेम्सेडल के एक लोकल अखबार में मेरा एक इंटरव्यू और शैर्लट का फोटो छपा और यह देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह पिछले बीस महीनों से रेम्सेडल में रह रही थी। इतने दिनों में चर्च में काम करके और लो के क्लास की दूसरी लड़कियों की चीजों से संबंध बनाकर उसने खुद को रेम्सेडल का एक जाना-पहचाना नागरिक बना लिया था, लेकिन उसके नाम के साथ जो ग्लैमर मैंने मिस्टर एड्गर एच. हम्बर्ट, लेखक और अन्वेजाक ने जोड़ दिया था, वह उसे इससे पहले कभी हासिल नहीं हुआ था। मेरा इंटरव्यू मैककू के भाई ने लिया था, और इंटरव्यू के दौरान मैंने उससे कहा था कि मैं शैर्लट के भूतपूर्व पति मिस्टर हेज का दूर का रिश्तेदार हूं और उनकी शादी से पहले से ही शैर्लट के साथ मेरे प्रेम संबंध थे।

अब मैं आपको वह कहानी सुनाऊं जो कि मेरे साथ उस दिन घटित हुई जबकि किराएदार से मेरी तरक्की प्रेमी तक हुई थी। उस दिन मेरे दिल में उसके लिए कोई कड़वाहट नहीं थी। बल्कि शायद मुझे यह तरक्की अच्छी ही लगी थी। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह हास्यास्पद, मगर खूबसूरत औरत जिसका चर्च के प्रति अंधा विश्वास है, जिसके बोलने का ढंग अत्यंत शिष्ट और निराला है और जो अपनी बारह साल की बेटी के लिए बहुत ही सख्त और अनुशासनीय है। वह उस वक्त जबकि लोलिता के कमरे के दरवाजे पर मैंने उसे बांहों में भरना चाहा, तो अचानक मुलायम पड़ जाएगी और पीछे हटते हुए कहेगी, "नहीं-नहीं, प्लीज, नहीं।"

अपनी शर्मीली अदाओं से वह इस वक्त और भी खूबसूरत दिखाई देने लगी थी। उसकी मुस्कुराहट जो कि मुझे अभी तक बनावटी सी लगती थी अचानक इतनी खूबसूरत दिखाई देने लगी कि मुझे उसमें लोलिता की खामोश मुस्कुराहटों की झलक नजर आने लगी। जब वह किसी दूसरी औरत के साथ बैठी बातें कर रही होती, और उसके चेहरे पर सारी स्त्री जाति की तरह किस्मत से समझौता करने

के भाव आते, तो वह एकदम लोलिता की तरह ही दिखाई देती थी और मैं उसे देखता रह जाता था।

हमने शराब के बड़े जाम पिए। मुझे उम्मीद थी कि शराब के नशे में मैं मां के पास होते हुए भी बेटी को अपने करीब महसूस कर सकूंगा। उसके साथ होते हुए भी मैं लगातार यही सोच रहा था कि यही वह गोरा गोरा पेट है जिसमें 1934 में मेरी लोलिता एक मछली की तरह पड़ी थी। बिस्तर में पड़ी शैर्लट के बालों से मुझे लगातार लोलिता की महक आती रही। शैर्लट को अपनी बांहों में भरे मैं लगातार अपने से यही कहता रहा कि मैं लोलिता के शरीर के करीब हूं, क्योंकि लोलिता की उम्र में शैर्लट भी लोलिता जैसी ही रही होगी, और शायद एक दिन लोलिता की बेटी भी आज की लोलिता जैसी ही होगी। शैर्लट ने अल्मारी से निकालकर मुझे एक तीस साल पुरानी एल्बम में अपना बचपन का फोटो दिखाया और उस फोटो में मैं लोलिता की टांगों, होंठों, गालों और नाक को देखता रहा। और इस तरह से जब कोमल छातियों और भरी-भरी जांघों वाली शैर्लट ने मेरे बदन को सहलाकर और चूमकर मुझे मेरी रात की ड्यूरी के लिए तैयार किया, तो उस समय भी मैं उसके शरीर में लोलिता की खुशबू को तलाश करता चला गया।

मैं आपको बता नहीं सकता कि मेरी पत्नी कितनी प्यार करने वाली और नरम दिलवाली औरत थी। सुबह को जब किचन में टेबल पर बैठ नाश्ता करता, तो वह अपनी कोहनी टेबल पर रखकर अपने गाल को अपनी मुट्ठी पर रखे हुए मुझे एकटक देखती रहती और उस समय उसकी आंखों में मेरे लिए अथाह प्यार होता। मुझे उसकी इस हरकत पर गुस्सा आता था, लेकिन मैं खामोश रहता था और इसे वह मेरा प्यार समझती थी। मेरी छोटी सी आमदनी जब उसकी और भी कम आमदनी में मिली, तो उसे ऐसा लगा जैसे उसे कोई बड़ा खजाना मिल गया हो, इसलिए नहीं कि अब परिवार की जरूरतें ज्यादा आसानी से पूरी हो सकती थीं, बल्कि इसलिए कि इसमें उसे प्यार की महक आती थी।

हमारे साथ रहने के पचास दिनों में ही शैर्लट ने बरसों का प्यार समेटने की कोशिश की। उसने बहुत से ऐसे काम करने शुरू कर दिए, जिन्हें उसने या तो बहुत पहले ही छोड़ दिया था या फिर उनमें उसकी कभी दिलचस्पी ही नहीं रही थी। मुझसे शादी करके अपनी जवानी और जिंदगी के प्रति उसका उत्साह जैसे दोबारा लौट आया था। उसने उस गंदे घर की सफाई की, खिड़कियों के शीशे साफ किए, पर्दे धुलवाए, नए पर्दे बाजार से लाई, मुझे पसंद न आने पर

फिर से बाजार जाकर उन्हें बदलकर लाई। उसने सोफे का रंग बदला-वह सोफा जहां मैंने एक बार स्वर्ग का आनंद उठाया था। उसने नाविल पढ़ना छोड़कर घर सजाने के बारे में किताबें पढ़ना शुरू कर दिया। हालांकि हमारे डबलबैड का गद्दा काफी अच्छा था, लेकिन फिर भी उसने एक नया गद्दा मंगाया।

40

उसे रेम्सेडल मे रहते अभी इतना समय नहीं हुआ था कि वह वहां के सारे ही अच्छे लोगों को जान पाती। उसकी हल्की-फुल्की जान-पहचान तो काफी लोगों से थी, लेकिन करीबी संबंध चैटफील्ड परिवार, मैककू परिवार और फारलो परिवार से ही थे। फारलो पति-पत्नी खास हमारी शादी के लिए ही चिली के अपने कारोबारी दौरे से बीच से लौट आए थे। जॉन फारलो एक अधेड़ उम्र का सेहतमंद आदमी था और खेलों के सामान का एक अच्छा खासा कामयाब बिजनेसमैन था। उसने मुझे बताया कि वह कभी-कभी वकालत भी करता है। उसकी जवान पत्नी जीन के पास दो बड़े-बड़े कुत्ते, दो नुकीली छातियां और दो सुर्ख होंठ थे। वह एक अच्छी पेंटर भी थी। मुझे याद है कि उसने एक बार अपनी भतीजी रोजालीन होजेल की बड़ी अच्छी सी तस्वीर बनाकर मुझे दिखाई थी, और उस फोटो को देखते-देखते जॉन ने अपने मुंह से पाइप हटाते हुए कहा था कि यह बड़े दुख की बात है कि स्कूल में लोलिता और रोजालीन की अच्छी दोस्ती नहीं हुई थी, लेकिन उसे उम्मीद थी कि शायद अपने-अपने समर कैंपों से वापस आने के बाद उनमें अच्छी दोस्ती हो जाएगी। हम देर तक उन दोनों किशोरियों के बारे में बात करते रहे और अचानक मैं कल्पना करने लगा कि मेरी सुंदर, नशीली, छोटी सी लोलिता कैंप से वापस आ रही है। और सोचते-सोचते बेसब्री से मैं लगभग रोने लगा।

अभी जबकि हालात अच्छे हैं (जल्दी ही एक खतरनाक दुर्घटना होने वाली है), मैं मिसेज हम्बर्ट यानी अपनी पत्नी शैर्लट के बारे में कुछ और बताना चाहूंगा। मैं जानता था कि वह मुझे पूरी तरह अपना लेना चाहती है, लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि वह क्यों हर उस चीज से जलती थी जिसे मैं पसंद करता था। इसीलिए वह मेरी गुजरी जिंदगी के बारे में जानने को कुछ ज्यादा ही उत्सुक थी। वह चाहती थी कि मैं उसे अपनी सारी प्रेमिकाओं के बारे में बताऊं, ताकि वह मुझसे उन सबका अपमान करा सके और खुद को उनसे ज्यादा महत्वपूर्ण समझ सके। उसने वेलेरिया से मेरी शादी के बारे में भी पूछा। मैंने उसको झूठ बोलकर अपनी अनेक प्रेमिकाओं के बारे में बताया, ताकि वह इतनी सारी औरतों के मुकाबले खुद को मेरी नजरों में महत्वपूर्ण समझे और खुश हो। उन औरतों की मैं जितनी ज्यादा तारीफ करता, शैर्लट उतना

ही खुश होती।

लोलिता के बारे में वह बहुत कम बात करती थी। हमारे बैडरूम में उसके बरसों पहले मर चुके बच्चे का एक फोटो लगा हुआ था। लोलिता से ज्यादा वह उस बच्चे के बारे में बात कर लेती थी और कहती थी उस बच्चे की आत्मा लौटकर उस बच्चे में आएगी, जो हमारी शादी से पैदा होगा। मुझे हालांकि बच्चे की कोई ख्वाहिश नहीं थी, लेकिन मुझे बस इतनी उम्मीद थी कि बच्चा पैदा करने के लिए उसका ऑपरेशन होगा और जब वह किसी नर्सिंग होग में पड़ी होगी, तो मैं

41

घर पर लोलिता के साथ अकेला रहूंगा और उसे नींद की गोलियां खिलाकर उसके साथ जी भरकर ऐश करूंगा। कभी-कभी तो मुझे लगता था कि वह लोलिता से नफरत करती है। उसकी नजरों में लोलिता एक आक्रामक, शोर मचाने वाली, बेसब्र, चिड़चिड़ी, बदतमीज, गंवार और जिद्दी लड़की थी।

रेम्सेडल से कुछ मील दूर एक जंगली झील थी। जुलाई के आखिरी सप्ताह में बहुत तेज गर्मी होने के कारण हम रोजाना वहां जाने लगे। उस झील में जब हम दोनों आखिरी बार साथ नहाए थे, उस दिन के बारे में मैं आपको बताना चाहता हूं। सड़क से कुछ ही दूरी एक जंगली झील थी। जुलाई के आखिरी सप्ताह में बहुत तेज गर्मी होने के कारण हम रोजाना वहां जाने लगे। उस झील में जब हम दोनों आखिरी बार साथ नहाए थे, उस दिन के बारे में मैं आपको बताना चाहता हूं।

सड़क से कुछ ही दूरी पर हमने अपनी कार छोड़ी और झील तक जाने के लिए देवदार के जंगल में बने रास्ते पर चल पड़े। शैर्लट मुझे बताने लगी कि पिछले इतवार को जब जीन फारलो यहां सुबह पांच बजे पेंटिंग के लिए आई थी तो उसने लैसली को यहां नहाते देखा था।

मैंने कहा, "उस समय तो पानी बहुत ठंडा होगा।"

"बात यह नहीं है। दरअसल वह कुछ पागल सा है और मुझे लगता है कि लुईस को उससे प्रेम हो गया है।"

थोड़ी देर बाद शैर्लट बोली, "तुम्हें मालूम है हम्बर्ट, मेरा एक सपना है।" फिर, जैसे अपने सपने पर शरमा रही हो, कुछ इस अंदाज में वह जमीन की तरफ देखते हुए बोली, "मैं चाहती हूं कि हमारे घर में एक ट्रेंड नौकरानी हो।"

"लेकिन हमारे घर में तो जगह ही नहीं है," मैंने कहा।

"हम उसे लो के कमरे में रखेंगे। वैसे भी मैं उस कमरे को गैस्ट रूम बनाना चाहती थी। वह हमारे घर का सबसे गंदा और ठंडा कमरा है," शैर्लट अपनी रौ में कहती चली गई।

"तुम कह क्या रही हो?" मैंने अपनी झुंझलाहट और गुस्से को दबाते हुए कहा।

"क्या तुम उस कमरे को किसी और को इसलिए नहीं देना चाहते कि वह हमारी पहली बिस्तर की मुलाकात की यादगार है?" उसने पूछा।

"नहीं ऐसी बात नहीं है," मैंने कहा। "मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि वह कमरा किसी मेहमान या नौकरानी को दे देने के बाद तुम अपनी बेटी को कहां रखोगी?"

आंखों में सपने लिए, मुस्कुराते हुए शैर्लट ने ऐलान किया, "मैंने सोच लिया है कि लो अपने कैंप से सीधी किसी अच्छे बोर्डिंग स्कूल में जाएगी। वहां पढ़ाई

पूरी करने के बाद वह बर्ड्स्ले कॉलेज चली जाएगी। मैं चाहती हूं कि वह स्कूल में कुछ अनुशासन सीखे और धार्मिक ट्रेनिंग ले।" शैर्लट कह रही थी कि वह अपनी सुस्ती छोड़कर जल्दी ही मिस फालने की बहन को पत्र लिखेगी, क्योंकि वह सेंट एल्जब्रा स्कूल में पढ़ाती है। अब तक हम चमचमाती झील तक पहुंच चुके थे। तभी मैंने बहाना किया मैं अपना सनग्लास कार ही में छोड़ आया हूं। शैर्लट से थोड़ी देर में वापस आने को कहकर मैं कार की तरफ वापस चल दिया। मैं गुस्से और निराशा में हाथ मल रहा था।

अगर शैर्लट की जगह वेलेरिया होती, तो मैं इस मामले में बड़ी आसानी से निपट लेता। वेलेरिया से अपनी कोई भी बात मनवाने के लिए मुझे सिर्फ उसकी कलाई मरोड़नी पड़ती थी, लेकिन शैर्लट के बारे में मैं इस ढंग से सोच तक नहीं सकता था। सच तो यह है कि मुझे उससे डर-सा लगता था। मेरा सोचना कि मैं अपने प्रति उसकी भावनाओं से उसे काबू में कर लूंगा,

गलत साबित हुआ था। वह मुझे जिस रूप में देखती थी, मैं उस आकृति को तोड़ नहीं सकता था। अपनी डार्लिंग की मां की हैसियत से मेरा उसके साथ अब तलक काफी चापलूसी भरा बर्ताव रहा था और शादी के बाद भी उस बर्ताव का अंश अभी बाकी था। मेरे पक्ष में बस एक ही बात थी और वह यह कि उसे लो के प्रति मेरे वहशियाना प्यार की खबर नहीं थी। लो द्वारा मुझे पसंद किया जाना उसे अच्छा नहीं लगा था, लेकिन लो के प्रति मेरी भावनाओं का अंदाजा उसे नहीं हो पाया था।

वेलेरिया होती, तो शायद मैं उससे कहता, "बेवकूफ मोटी औरत, लोलिता के लिए क्या अच्छा है, क्या बुरा है, मैं बेहतर जानता हूं।" लेकिन शैर्लट से मैं इतना भी नहीं कह सकता था कि, "माई डियर, माफ करना, लेकिन मैं तुम्हारी बात से सहमत नहीं हूं। शायद हमें लोलिता को एक मौका और देना चाहिए। अगले एक वर्ष तक मैं उसकी देखभाल करूंगा। एक बार तुमने ही तो कहा था कि ।" हकीकत तो यह है कि लोलिता के बारे में मैं उससे कुछ भी कहता, तो निश्चय ही हमारे संबंध खत्म हो जाते। आप इन आदर्शों वाली औरतों को नहीं जानते। शैर्लट वैसे एक बहुत ही सीधी-सादी औरत थी, लेकिन अगर मैं लो को अपने पास रखने की नीयत से कुछ भी कहता, तो वह तुरंत ही मेरे इरादों को भांप लेती। शैर्लट की इच्छा-शक्ति को तोड़ने के लिए मुझे उसका दिल तोड़ना पड़ता। मैं उसका दिल तोड़ता, तो मेरे प्रति उसका विश्वास भी टूट जाता। अगर मैं उससे कहता, 'मैं जैसा चाहता हूं, मुझे लोलिता के साथ वैसा ही करने दो और इस राज को राज रहने दो, या फिर मेरा तुम्हारे साथ रिश्ता खत्म हुआ समझो,' तो दुख और निराशा से उसका चेहरा तो जरूर पीला पड़ जाता, लेकिन उसका जवाब यही होता कि, 'ठीक है, अब तुम चाहे जो भी कहो, लेकिन हमारा रिश्ता यहीं समाप्त होता है।' और फिर हमारा रिश्ता वाकई हमेशा के लिए खत्म हो जाता।

43

इन्हीं सारी मुसीबतों के बारे में सोचता हुआ मैं कार तक वापस आया, और वहां मैंने ठंडे-ठंडे पानी से अपने हाथ धोए। फिर मैंने ढेर सारा पानी पिया, जैसे उस पानी के पीने से मुझे जादुई समझबूझ, जवानी, आजादी और साथ ही एक नन्हीं सी रखैल भी हासिल हो जाएगी। देवदार के पेड़ों के झुरमुट के नीचे बैठे-बैठे मैंने दो नन्ही किशोरियों को एक छोटी-सी साइकिल पर घूमते और खेलते देखा, एक बार फिर मुझे बुरी तरह अपनी लोलिता की याद सताने लगी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं और मेरी बेटी लोलिता इन्हीं जंगलों में कहीं एक-दूसरे में लीन होते जा रहे हों। बहुत सोच-विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि अब मेरे पास एक ही रास्ता है- शैर्लट को जान से मार डाला जाए। लेकिन कैसे?

बिना गलती किए हत्या करना इंसान के बस की बात नहीं है। हां, भाग्य ऐसा जरूर कर सकता है। जैसा कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में एक फ्रांसीसी औरत मैडल लैकर के साथ हुआ था। एक दाढ़ी वाला अज्ञात छः फुटा आदमी, जिसके बारे में बाद में पता चला कि वह मैडम लैकर का गुप्त प्रेमी था, एक भीड़ भरी गली में चलता हुआ मैडम लैकर के पास आया जबकि कुछ ही समय स्त्री की शादी कर्नल लैकर, जो कि खुद भी एक ताकतवर आदमी था, ने उसे पकड़ लिया। भाग्य का खेल था कि पास ही के एक घर में एक इटैलियन बारूद से कुछ बना रहा था। जिससे वहां एक जबर्दस्त धमाका हो गया। सारी गली धुएं से भर गई, और उस धमाके से केवल एक आदमी मरा-कर्नल लैकर। भीड़ में गुम होकर हत्यारा वहां से भाग निकला। मैंने सोचा काश कि ऐसा ही कुछ भाग्य मेरे लिए भी कर दे।

मैं वापस झील तक आया जहां शैर्लट बेचैनी से मेरा इंतजार कर रही थी। मैं इतनी खामोशी से आकर उसके पास बैठ गया कि वह अचानक चौंक पड़ी।

"क्या हम पानी में चलें?" थोड़ी देर बाद उसने पूछा।

"अभी नहीं," मैंने कहा। "मैं अभी कुछ सोचना चाहता हूं।"

मैं सोचने लगा। थोड़ी देर बाद मैंने कहा, "चलो।"

"क्या तुम्हारे ख्यालों में मैं थी?" शैर्लट ने पूछा।

"बिल्कुल। तुम्हीं तो थीं।" कहते हुए मैं झील में उतर गया।

"मुझे यकीन है," शैर्लट ने कहा। और मेरे पीछे-पीछे वह भी पानी में उतर गई। पानी उसकी जांघों तक पहुंचा, तो उसने अपने हाथों को जोड़ते हुए और अपने मुंह को बंद करके आगे की तरफ पानी में एक छपाके के साथ छलांग लगा दी।

दूसरी ओर का किनारा हम से कम से कम एक हजार गज की दूरी पर था। और उस किनारे पर दो आदमी कुछ काम करते दिखाई दे रहे थे, लेकिन इतनी दूर से भी मैंने उनको पहचान लिया था उनमें से एक रिटायर्ड पुलिस अफसर था और दूसरा

एक रिटायर्ड पलंबर जो कि उस किनारे के जंगल के एक बड़े भाग का मालिक भी था। वे दोनों हमसे इतनी दूर थे कि बिल्कुल बौनों जैसे नजर आ रहे थे।

हम गहरे पानी तक पहुंच चुके थे। छुट्टी का दिन न होने की वजह से हमारे आसपास दूर-दूर तक कोई भी नहीं था। सिर्फ दूर वे दोनों और आसमान में लाल रंग का हवाई जहाज था, जो थोड़ी देर में आसमान में गुम हो गया। शैर्लट की हत्या करने के लिए यह बिल्कुल उपयुक्त माहौल था। सबसे अच्छी बात यह थी कि गवाह के तौर पर एक कानून का आदमी और एक उसी इलाके का आदमी था, जो कि इतनी दूर से एक दुर्घटना होते देख सकते थे कि एक आदमी अपनी डूबती हुई पत्नी को बचाने के लिए चिल्ला रहा है लेकिन यह नहीं समझ सकते थे कि वह आदमी ही अपनी पत्नी को डुबो रहा है। वैसे अभी तक मैंने ऐसा कोई कदम उठाया नहीं था, बस सोच ही रहा था। अभी तो मैं सिर्फ यह बनाना चाहता हूं कि कितनी आसानी से उस वक्त मैं ऐसा कर सकता था। शैर्लट बड़े भद्दे ढंग से मेरे पास ही तैर रही थी। मुझे बस इतना करना था कि मैं एक गहरी सांस लेकर पानी के अंदर जाता और उसकी पिंडली पकड़कर उसे अंदर खींचकर एक मिनट तक वहीं रोके रखता। इतनी ही देर में वह झील का ढेर सारा पानी पी जाती। जरूरत पड़ती, तो मैं एक-दो बार पानी के बाहर अपना मुंह निकालकर सांस ले लेता और फिर अंदर जाकर उसे अपनी टांगों में तब तक दबाए रखता, जब तक कि वह मर नहीं जाती। उसके बाद मैं मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगता और जब वे दोनों आदमी अपनी नाव में वहां पहुंचते, तो यही समझा जाता कि तैरते हुए अचानक कोई दौरा पड़ जाने के कारण शैर्लट खुद को संभाल नहीं सकी और डूब कर मर गई।

क्या यह बिल्कुल आसान काम नहीं था! लेकिन, दोस्तो, मैं इतना भर करने की हिम्मत भी नहीं जुटा पाया।

मुझ पर पूरा विश्वास किए हुए शैर्लट एक भद्दी सी सील मछली की तरह मेरे पास ही तैरती रही। बार-बार अपनी दिली ख्वाहिशों की गूंज मुझे अपने कानों में सुनाई दे रही थी। यही समय है! यही सही मौका है! मगर दोस्तो! मैं कुछ भी नहीं कर पाया। खामोशी से मैं किनारे पर लौट आया। कुछ पल बाद वह भी पानी से बाहर आ गई। वह गूंज मेरे कानों में अभी भी सुनाई दे रही थी, लेकिन मैं उस बेचारी चिकनी और विशालकाय शैर्लट को डुबोने की हिम्मत जुटाने में नाकाम रहा। धीरे-धीरे वह गूंज मुझसे दूर होती चली गई, क्योंकि अब मुझे अहसास हो चला

था कि मैं कभी भी उसे नहीं मार सकूंगा। हां, अगर उसकी जगह वेलेरिया होती, तो मैं मार-मारकर उसकी छातियों तक का हुलिया बिगाड़ देता, जरूरत पड़ने पर उसके प्रेमी के पेट के नीचे गोली मार देता, लेकिन मैं शैर्लट को नहीं मार सकता था-खासतौर से इसलिए भी कि शायद हालात इतने ज्यादा खराब नहीं थे

45

जितने कि सुबह से मुझे लग रहे थे। अगर मैं उसे मार भी डालता, तो उसका भूत जिंदगी भर मुझे तंग करता। हां, अगर यह सन् 1947 के बजाय पांच सौ साल पहले का 1447 होता, तो शायद मैं उसे जहर देकर मार डालता और किसी को पता नहीं चलता कि उसका कातिल कौन है। लेकिन इस दौर में तो एक आम हत्यारा होने के लिए भी वैज्ञानिक होना जरूरी है। लेकिन मैं न तो हत्यारा था और न वैज्ञानिक।

ज्यूरी के माननीय सदस्यो! सेक्स के अपराधी बहुत ही सीधे-सादे लोग होते हैं, जिनसे किसी को जान-माल का नुकसान पहुंचाए जाने की आशा तक नहीं की जा सकती। वे तो बस इतना चाहते हैं कि पुलिस और समाज के डर के बिना वह किसी किशोरी के साथ शारीरिक संबंध बनाकर (जिसे उनका भटका हुआ होना बताया जाता है) अपनी तृप्ति कर सकें। हम लोग सेक्स-दरिंदे नहीं हैं। हम सैनिकों की तरह बलात्कार नहीं करते। हम तो बहुत भले लोग हैं जो कि भरी-पूरी उम्र की लड़कियों के साथ तो अपनी इच्छाओं को काबू में रख सकते हैं, और किसी किशोरी को सिर्फ प्यार से छू भर लेने के इंतजार में अपनी जिंदगी के कई-कई कीमती वर्ष धीरज से गुजार सकते हैं। हम लोग कातिल नहीं हैं। हम तो कवि हैं। आज भी मुझे इस बात की खुशी है कि उस दिन मौका होते हुए भी मैंने पानी में शैर्लट की कब्र नहीं बनाई।

लेकिन हां, यह भी सच है कि वह उस दिन बस बाल-बाल बची थी।

हम तेज धूप में झील के किनारे बिछे अपने तौलियों पर बैठ गए। उसने चारों ओर देखकर अपनी ब्रा ढीली की और पेट के बल लेट गई। मैं उसकी नंगी पीठ को देखता रहा। शायद वह यही चाहती थी। वह कहने लगी कि उसे मुझसे बहुत प्यार है। फिर उसने अपनी जेब से सिगरेट निकाली और बैठकर सिगरेट पीने लगी। फिर अचानक अपने धुएं भरे मुंह से उसने मुझे चूम लिया। तभी पास की झाड़ियों में से एक पत्थर लुढ़कता हुआ हमारी तरफ आया। फिर एक और पत्थर इसी तरह लुढ़का।

"यह ताका-झांकी करने वाले बदतमीज बच्चों की हरकत है," शैर्लट ने कहा। उसने अपनी ब्रा अपनी छातियों से लगाई और फिर से पेट के बल लेट गई, "मुझे इस बारे में शिकायत करनी पड़ेगी।" तभी झाड़ियों की तरफ से कदमों की आवाज आई और फिर उनके बीच से हाथों में अपनी पेंटिंग का सामान लिए जीन फारलो नमूदार हुई।

"तुमने तो हमें डरा दिया था," शैर्लट ने उससे कहा।

जीन ने बताया कि वह झाड़ियों में छुपी बैठी प्रकृति की जासूसी कर रही थी। वह वहां से झील का चित्र बनाना चाहती थी, लेकिन असफल रही। शैर्लट ने उससे पूछा कि क्या उसका पति जॉन भी आने वाला है। मेरे और शैर्लट के बीच बैठते हुए उसने कहा कि जॉन भी लंच के लिए आएगा। वह शॉर्ट्स पहने हुए थी और

उसकी लंबी-लंबी चिकनी और भूरी टांगें काफी आकर्षक लग रही थीं। लेकिन हंसते समय उसके मसूड़े दिखाई देते थे।

"मैं तो झील बना रही थी, लेकिन उसमें तुम दोनों भी थे। हम्बर्ट, तुम घड़ी पहने-पहने ही झील में उतर गए थे," जीन बोली।

"वॉटर-प्रुफ है," शैर्लट ने कहा।

जीन ने मेरी कलाई अपने घुटने पर रख कर शैर्लट द्वारा मुझे भेंट की घड़ी को देखा और फिर वापस मेरे हाथ को नीचे रख दिया।

"तो यहां से छिपकर तुम कुछ भी देख सकती हो," शैर्लट ने उसे छेड़ते हुए कहा।

जीन ने एक ठंडी सांस ली," एक बार शाम के समय मैंने यहां दो बच्चों-एक लड़के और एक लड़की को सेक्स करते देखा था। मैंने तुम्हें मिस्टर टॉमसन के बारे में भी तो बताया था। मुझे लगता है कि कभी मोटा आइवर भी यहां मिलेगा। उस दिन उसने मुझे अपने भतीजे के बारे में बहुत ही भद्दी बात बताई। ऐसा लगता है कि...।"

"हैलो," पीछे से जॉन की आवाज आई और जीन की बात अधूरी ही रह गई। नाराजगी में खामोश हो जाने की मेरी आदत से परेशान होकर वेलेरिया रोने-बिलखने लगती थी। मैंने शैर्लट पर भी यह तरकीब आजमाने की कोशिश की, लेकिन उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह बोलती ही रही। अजीब औरत थी! मैंने सोचा कि मैं अपने पुराने कमरे में चला जाऊं कुछ समय के लिए क्योंकि मुझे एक किताब भी लिखनी थी। उस पर इसका भी कोई असर नहीं पड़ा। वह पहले की ही तरह घर को खूबसूरत बनाने, फोन पर बातें करने और चिट्ठियां लिखने में लगी रही। मैंने अपनी खिड़की से उसे मिस फालेन की बहन को लिखे पत्र को पोस्ट करने जाते हुए भी देखा। झील पर जाने के बाद का इसी धूप-छांव में गुजरा एक सप्ताह मेरी जिंदगी का शायद सबसे बुरा समय रहा था। उसके बाद उम्मीद की दो-तीन किरणें दिखाई दीं और फिर खिली धूप।

मैंने सोचा कि मेरे पास एक तेज दिमाग है और इसकी सहायता से अगर मैं लो के बारे में शैर्लट की योजनाओं में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता, तो भी दूसरे तरीकों से मुझे घर के अन्य मामलों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना और शैर्लट की जिंदगी में अपने महत्त्व को बढ़ाना चाहिए और इस महत्त्व का बाद में किसी खास मौके पर इस्तेमाल करना चाहिए। इसके लिए एक दिन शैर्लट ने खुद ही मुझे मौका दे दिया।

"मैं तुम्हें एक आश्चर्य देना चाहती हूं." एक दिन उसने रात के खाने के समय कहा। "इस वर्ष के अंत में हम इंग्लैंड जाएंगे।"

47

मैंने कहा, "मैं भी तुम्हें एक आश्चर्य देना चाहता हूं। हम इंग्लैंड नहीं जाएंगे।"

"क्यों, क्या हुआ?" उसने मेरे अंदाजे से ज्यादा हैरत से पूछा।

"सीधी सी बात है," मैंने कहा, "किसी भी घर में सारे ही फैसले पत्नी द्वारा नहीं लिए जाते हैं। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिनका फैसला पति के ही हाथों में होता है। मुझे सारे यूरोप से नफरत है। यूरोप के साथ मेरा सिर्फ दुखद अतीत जुड़ा हुआ है, जिसे किसी भी तरह की यात्रा बदल नहीं सकती।"

"माई डार्लिंग," शैर्लट ने कहना चाहा, "दरअसल मैं....।"

"नहीं, अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई है। यह मामला तो सिर्फ एक इत्तफाक है। मैं एक आम बात कर रहा हूं। जब तुमने चाहा कि मैं अपना काम छोड़कर अपनी शामें तुम्हारे साथ झील पर गुजारूं, एक विद्वान और शिक्षक होने के बजाय तुम्हारे लिए सिर्फ शान बढ़ाने का सामान बन जाऊं, तो मैंने इसे भी आसानी से स्वीकार कर लिया। जब तुम मुझे क्लब ले जाती हो, तो मैं इंकार नहीं करता। जब तुम घर को सजाने में लगी रहती हो, तो मैं हस्तक्षेप नहीं करता। नहीं, नहीं, मेरी बात पूरी होने दो। तुम्हारे फैसलों पर मैं आशिक या पूरे तौर से असहमत हो सकता हूं, लेकिन मैं कभी कुछ कहता नहीं हूं। दरअसल, मुझे तुम्हारी बातें मानना अच्छा लगता है। लेकिन हर खेल के कुछ उसूल होते हैं। मैं नाराज नहीं हूं। मैं बिल्कुल नाराज नहीं हूं। लेकिन मैं तुम्हें यह बात देना चाहता हूं कि मैं इस परिवार का आधा भाग हूं, और मेरा अपना एक महत्त्व है।"

इतनी देर में वह मेरे पास आ चुकी थी और घटनों के बल खड़ी जोर-जोर उसे अपना सिर हिला रही थी। वह बोली कि उसने कभी इस तरह सोचा ही नहीं, और वह कहने लगी कि मैं उसका मालिक और भगवान हूं। फिर मुझे मनाने के लिए उसने कहा कि नौकरानी जा चुकी है, इसलिए हम सेक्स करें। मेरे कोई प्रतिक्रिया न करने पर अंत में उसने कहा कि अगर मैंने उसे माफ नहीं किया तो वह मर जाएगी।

इस बात से मुझे मन ही मन बहुत खुशी हुई। मैंने उससे कहा कि माफी मांगने के बजाय वह अपने को सुधार ले। मैंने फैसला किया कि अब मैं उससे थोड़ा अलग-अलग रहकर अपनी किताब का काम या कम से कम काम करने का बहाना किया करूंगा। इस घटना के दो दिन बाद जब मैं अपने कमरे में एक टेबल पर बैठा कुछ काम कर रहा था तो शैर्लट वहां आ गई। वह कहने लगी कि उसे ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे मैं अभी तक उससे नाराज हूं। पिछली दो रातों से जैसे ही हम दोनों बिस्तर पर जाते थे, मैं फौरन सोने का बहाना करता और फिर सवेरे ही उठता था।

48

लोलिता-3

"मैंने इस वक्त तुम्हें डिस्टर्ब तो नहीं किया," वह पूछने लगी।

"नहीं," मैंने कहा।

शैर्लट उठकर एक टेबल के पास गई और कहने लगी, "मैंने अकसर तुमसे पूछना चाहा है कि इस टेबल की दराज में हमेशा ताला क्यों लगा रहता है? यह बहुत गंदी लगती है। क्या तुम चाहते हो कि इतनी गंदी टेबल तुम्हारे कमरे में रहे?"

"इसे यहीं रहने दो," मैंने कहा। "इसकी चाबी कहां है?" "मैंने छुपाई हुई है।"

"ओह, हम्बर्ट...।"

"ताले में मेरे प्रेम-पत्र बंद हैं।"

उसने मुझे जख्मी नजर से घूरा और फिर काफी देर तक वही खड़ी खिड़की को देखती रही। मैं अपनी किताब पढ़ता रहा। थोड़ी देर बाद वह आई और मेरी कुर्सी के हत्थे पर बैठकर एक तस्वीर की ओर उंगली उठाकर बोली, "क्या तुम इंग्लैंड के बजाय इस जगह चलना पसंद करोगे?"

"क्यों?" मैंने धीरे से पूछा।

पहले उसने कंधे उचकाए, और फिर बोली, "यह जगह मेरी देखी हुई है। बहुत खूबसूरत जगह यहां एक होटल भी है, जिसका खाना लाजवाब है। बड़ी शांत जगह है।"

इतना कहकर उसने मेरी कनपटी पर अपना गाल सहलाया, और बोली, "क्या तुम रात के खाने में कोई खास चीज लेना चाहोगे? बाद में जॉन और जीन भी आएंगे।"

मैंने 'हूं' कहकर जवाब दिया। उसने मेरे निचले होंठ को चूमा और यह कहती हुई कि वह मेरे लिए केक बनाएगी (मेरे किराएदार की हैसियत के दिनों से ही वह जानती थी कि मुझे केक पसंद है), वह चली गई।

उसके जाने के बाद मैंने सावधानी से किताब को एक तरफ रखा और चाबी छुपाने की जगह देखी-चाबी मेरे पुराने रेजर के नीचे रखी हुई थी। मैं सोचने लगा कि क्या चाबी को छुपाने के लिए यह जगह ठीक है। रेजर का डिब्बा जिसमें चाबी रखी हुई थी, मेरे एक छोटे से संदूक में

रखा था। क्या इससे बेहतर कोई स्थान और हो सकता है? चीजों को छुपाना कितना मुश्किल काम है-खासतौर से जब पत्नी हमेशा फर्नीचर को इधर-उधर करती रहती हो।

जहां तक मुझे याद पड़ता है आखिरी बार साथ तैरने के ठीक एक सप्ताह बाद

49

ही दोपहर की डाक से मिस फालेन की बहन की चिट्ठी आई थी। उसने लिखा था कि अपनी बहन के अंतिम संस्कार के बाद वह अभी ही लौटी है। कूल्हे की हड्डी टूटने के बाद से वह ठीक ही नहीं हो पाई। जहां तक मिसेज हम्बर्ट यानी शैर्लट की बेटी के दाखिले का सवाल है, तो अब बहुत देर हो चुकी है। उसने यह आश्वासन जरूर दिया कि अगली जनवरी में वह उसका दाखिला जरूर करा सकती है।

अगले दिन दोपहर के खाने के बाद मैं अपने डॉक्टर से मिलने गया। लो कैंप से वापस रेम्सेडल आ जाएगी, यह खबर सुनकर मैं बहुत खुश था। मैं उसके आने की पूरी तैयारी कर लेना चाहता था। सच तो यह है कि शैर्लट के लो को कैंप से ही स्कूल भेज देने के फैसले से पहले ही मैं अपनी तैयारी में जुट गया था। मुझे इस बात की तैयारी करनी थी कि लो की वापसी की रात और फिर उसके बाद उसके सेंट एल्जब्रा स्कूल चले जाने तक रात दर रात मैं उन मां-बेटी को गहरी नींद में सुला दूं, ताकि वे किसी भी तरह जाग न सकें। लगभग सारी जुलाई मैं तरह-तरह की नींद की गोलियां शैर्लट पर आजमाता रहा था। पिछली बार जो गोली मैंने उसे दी थी, वह उसे चार घंटे तक गहरी नींद में सुलाने में कामयाब रही थी। इस दौरान मैंने रेडियो पूरी आवाज से खोला, शैर्लट के चेहरे पर फ्लैशलाइट जलाई, उसे धक्के दिए, नोचा, खरोचा, लेकिन उसकी गहरी नींद पर जरा सा भी फर्क नहीं पड़ा। लेकिन मैंने जैसे ही उसे जरा सा चूमा, वह किसी ताजा फूल की तरह जाग उठी। इसलिए मैंने सोचा कि इस दवा से भी काम नहीं चलेगा। जब मैंने डॉ. बाइरन को बताया कि उनकी दवा का मेरी नींद न आने की बीमारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो उन्हें मुझ पर यकीन ही नहीं आया उन्होंने कहा कि मैं फिर से कोशिश करूं। फिर मेरा ध्यान बंटाने के लिए उन्होंने मुझे अपने परिवार का एक फोटो दिखाया। जिसमें लोलिता की उम्र की ही एक आकर्षक बच्ची थी। लेकिन मैंने उनसे कहा कि वह मुझे अपनी सबसे तेज दवाई दें। पहले तो उन्होंने मुझे गोल्फ खेलने का मशवरा दिया, लेकिन फिर अपनी अल्मारी से एक नीले और बैंगनी रंग का कैप्सूल निकालकर मुझे दिया और कहा कि यह कैप्सूल जरूर मेरी समस्या हल कर देगा।

वापसी में मैं बहुत खुश था। उस दिन शुरू से सब कुछ ठीक होता जा रहा था। एक दिन पहले ही मैंने शैर्लट से अलग-थलग रहने के अपने फैसले को बदल डाला था और अब वापस आकर घर मैंने खुशी-खुशी शैर्लट को आवाज दी। शैर्लट एक कोने में बैठी कोई पत्र लिख रही थी। दरवाजे पर खड़े-खड़े ही मैंने फिर से आवाज लगाई। वह एक क्षण तक जहां की तहां बैठी रही। फिर वह धीरे से मुड़ी और अपनी कुहनी उसने कुर्सी के हत्थे पर रख ली। उसका चेहरा गुस्से से सुर्ख हो रहा था और वह कह रही थी, "यह औरत हेज, बड़ी सी कुतिया, बूढ़ी बिल्ली, बदतमीज मां, बूढ़ी मूर्ख हेज अब तुम्हारे हाथों और बेवकूफ नहीं बनेगी। उसने, उसने...।"

50

अपना जहर और आंसू पीने के लिए वह कुछ पल रुकी। फिर वह आगे बोली, "तुम एक वहशी दरिंदे हो। शैतान हो। नफरत के लायक हो, धूर्त हो, कमीने हो, अपराधी और धोखेबाज हो। अगर तुम मेरे पास आए, तो मैं चिल्लाने लगूंगी। मुझसे दूर रहना!" थोड़ी देर रुककर वह फिर बोली, "मैं आज रात जा रही हूं। यह सब कुछ तुम्हारे लिए छोड़कर, लेकिन अब तुम कभी भी मेरी बेटी की शक्ल नहीं देख सकोगे। फौरन निकल जाओ इस कमरे से।"

बिना कुछ बोले मैं वहां से निकलकर ऊपर अपने कमरे में पहुंचा। कमरे में घुसते ही मैंने देखा कि मेज की दराज खुली पड़ी थी और उसके ताले में एक चाबी झूल रही थी। मैं अपने बैडरूम में गया और वहां शैर्लट के तकिए के नीचे से अपनी डायरी निकालकर मैंने जेब में रख ली। फिर मैं सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा, लेकिन बीच में ही शैर्लट को फोन पर बात करते सुन मुझे रुक जाना पड़ा। क्योंकि मैं सुनना चाहता था कि वह फोन पर किससे और क्या बात कर रही है। वह किसी चीज का ऑर्डर कैंसल कर रही थी। मैं हॉल में होता हुआ किचन में गया और स्कॉच की बोतल को लेकर कोने के कमरे में आ गया। वहीं से मैंने जोर से कहा, "तुम मेरी और अपनी जिंदगी बर्बाद कर रही हो। यह सब तुम्हारी नजर का धोखा है। जो कुछ तुमने मेरी डायरी में पढ़ा, वह मेरे एक पुराने नाविल के अंश हैं। तुम्हारा और लो का नाम महज एक इत्तफाक है। इसलिए अच्छी तरह सोच-समझकर ही कोई कदम उठाना। मैं तुम्हारे लिए ड्रिंक तैयार करता हूं।" उसने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप पत्र लिखती रही। शायद दो चिट्ठियां वह लिखकर लिफाफे में डाल चुकी थी। अब तीसरी लिख रही थी। मैं वापस किचन में चला गया।

मेरे लिए बहुत ही खराब हालात हो गए थे। फ्रिज की आवाज तक मुझे भयंकर लग रही थी। मैंने दो गिलासों में शराब डाली और उन्हें ट्रे में रखकर लाते हुए जोर से कहा, "मैंने तुम्हारे लिए

भी ड्रिंक बनाई है।"

पागल कुतिया ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने ट्रे को एक तख्त पर रख दिया क्योंकि फोन की घंटी बजने लगी थी।

"मैं लैसली बोल रहा हूं, लैसली टॉमसन," लैसली ने फोन पर कहा, "मिसेज हम्बर्ट कार से कुचल गई हैं। आप फौरन आ जाइए।"

शायद मैंने यह जवाब दिया था कि मेरी पत्नी बिल्कुल ठीक और सुरक्षित है, और फोन का रिसीवर पकड़े-पकड़े मैंने दरवाजा थोड़ा सा खोलकर कहा, "कोई आदमी फोन पर कह रहा है कि तुम मर चुकी हो शैर्लट!"

लेकिन शैर्लट तो वहां थी ही नहीं।

रिसीवर पटक कर मैं तेज से घर से बाहर निकला। हमारी गली के दूसरी छोर पर एक अजीब सा ही नजारा था। एक काले रंग की पैकर्ड कार खड़ी थी, उसके

दरवाजे खुले हुए थे। उसके दाईं तरफ एक सफेद मूंछों वाला बूढ़ा एक बढ़िया सा सूट पहने जमीन पर लेटा था। सामने के मकान में रहने वाली बूढ़ी मिस अपोजिट की नर्स पानी का गिलास लिए उसकी तरफ दौड़ रही थी। वह बूढ़ी औरत बुरी तरह चिल्ला रही थी, पड़ोसी का कुत्ता लगातार भौंक रहा था। काफी भीड़ भी जमा थी, जिसमें लैसली, दो पुलिस वाले और एक और अजनबी था। वह अजनबी शायद पैकर्ड का ड्राइवर फ्रेडरिक बियाल था और उसी का 79 वर्षीय बाप जमीन पर लेटा हुआ था। वह शायद सिर्फ बेहोश हुआ था। जब शैर्लट तीनों चिट्ठियां डालने के लिए घर से निकली थी, तो तेजी से सड़क पार करते हुए वह इस पैकर्ड कार नीचे आ गई थी और अब उसकी बुरी तरह कुचली हुई लाश सड़क पर पड़ी थी। वे चिट्ठियां एक छोटी बच्ची ने लाकर मुझे पकड़ा दीं, जिन्हें मैंने फौरन अपनी जेब में डालकर फाड़ डाला।

कुछ ही देर में तीन डॉक्टर और फारलो दंपति भी वहां आ गए। यह विधुर यानी मैं जो कि बहुत ही बहादुर आदमी था, न तो रोया न चिल्लाया। थोड़ा लड़खड़ाया जरूर। उसने जबान

केवल तभी खोली, जब जरूरत पड़ी। शाम ढलते-ढलते उसे लो के कमरे में सोने के लिए भेज दिया गया। दुख में उसके पास में ही रहने के लिए उसके बैडरूम में जॉन और जीन फारलो सो गए। मुझे यकीन है कि वह रात भी उन्होंने भोलेपन से सोकर नहीं गुजारी होगी। उनकी रंगलियां ऐसे नाजुक मौके पर भी चलती रही होंगी। मुझे अंतिम संस्कार के बारे में बताने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह भी उतनी ही सादगी से किया गया, जितनी सादगी से हमारी शादी हुई थी। लेकिन शैर्लट की मौत के चार-पांच दिनों के अंदर हुई कुछ बातें मैं यहां जरूर बताना चाहूंगा।

विधुर होने के बाद पहली रात मैंने इतनी ज्यादा शराब पी ली कि रात भर मैं गहरी नींद सोता रहा। अगली सुबह मैंने सबसे पहले अपनी जेब में पड़ी चिट्ठियों के टुकड़ों को जांचा। वे इतनी बुरी तरह से फटकर एक दूसरे में मिल चुके थे कि अब उन्हें एक जगह इकट्ठा करना नामुकिन ही था। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरे पंजे इतने मजबूत और तेज होंगे कि वह जेब में पड़ी चिट्ठियां इतनी बुरी तरह से फाड़ सकें। फिर भी मैं उनको जोड़कर इतना समझने में तो कामयाब रहा कि शैर्लट लो को कैंप से सीधे किसी ऐसे स्कूल में भेजना चाहती थी, जिसमें इतनी ज्यादा सख्ती की जाती थी कि उसे 'लड़कियों के सुधार-गृह' के नाम से जाना जाता था।

उस दिन जॉन को अपने एक ग्राहक से मिलने जाना था और जीन को अपने कुत्तों की देखभाल के लिए जाना था, लेकिन उन्हें यह डर भी लग रहा था कि कहीं अकेले में मैं दुखी होकर आत्महत्या न कर लूं। चूंकि शैर्लट के अन्य दोस्त

भी ऐसे ही किन्हीं कामों में फंसे हुए थे कि वे नहीं आ सकते थे, इसलिए मेरी देखभाल के लिए लैसली और लुईस को बुला भेजा गया। मुझे कहीं शैर्लट का एक पुराना फोटो मिल गया था, तब उससे पहली बार मेरी मुलाकात हुई थी। हम मिले और पागलपन की हद तक एक-दूसरे को चाहने लगे। बदकिस्मती से मैं उस वक्त शादीशुदा था और शैर्लट की भी मिस्टर हेज के साथ सगाई हो चुकी थी। उसी समय यह फोटो उसने मुझे दिया था। बाद में मेरे यूरोप लौटने के बाद भी हम एक-दूसरे को पत्र लिखते रहे। जॉन और जीन थोड़ी देर तक उस फोटो को देखते और इधर-उधर की बातचीत करते रहे और फिर कुछ घंटों के लिए वहां से चले गए।

उनके जाने के फौरन ही बाद एक पादरी मिलने के लिए आ गया। मैंने हालांकि उससे बहुत कम बात की, लेकिन उसे अपने ऊपर शक नहीं होने दिया। मैंने उससे कहा कि अब मेरी

जिंदगी का एक मात्र मकसद अपनी बेटी लोलिता की देखभाल करना था। फिर मैंने उसे एक क्रॉस दिखाते हुए कहा कि यह मुझे शैर्लट ने बहुत पहले दिया था। मैंने उससे कहा कि न्यूयॉर्क में मेरी एक अविवाहित चचेरी बहन रहती है और उसकी सहायता से मैं लोलिता के लिए वहीं कोई अच्छा प्राइवेट स्कूल ढूंढूंगा। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं, हम्बर्ट, इतना चालाक और तेज दिमाग हूं।

लैसली और लुईस को दिखाने के लिए (ताकि जॉन और जीन के आने पर वे उन्हें बताएं) मैंने फोन पर बात करने का बहाना किया। मैंने ऐसा दिखावा किया जैसे मैं लो के कैंप में बात कर रहा हूं। जब लॉन और जीन वापस आए, तो मैंने उन्हें बताया कि लो पांच दिन के लिए कैंप से एक ग्रुप के साथ कहीं घूमने के लिए चली गई है।

"ओह गॉड," जीन ने कहा। "फिर हमें क्या करना चाहिए?"

जॉन ने कहा कि वह पुलिस की मदद से एक घंटे के अंदर पता लगा लेगा कि वे घूमने वाले बच्चे इस समय कहां होंगे।

"मैं अभी लो के समर कैंप चला जाता हूं, और आप जीन के साथ सो जाइए," उसने प्रस्ताव रखा।

लेकिन मैं रो पड़ा। मैंने कहा जैसा चल रहा, वैसा ही चलने दो। मैं अपने आसपास रोती-बिलखती बच्ची को सहन नहीं कर सकूंगा। इसका बच्ची के भविष्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। इस पर सभी खामोश हो गए।

लेकिन फिर जॉन ने थोड़े तीखे ढंग से कहा, "ठीक है, आप डॉक्टर हैं, लेकिन मैं भी शैर्लट का करीबी दोस्त और सलाहकार था। इसलिए मैं जानना चाहता हूं कि बच्ची के बारे में तुम्हारी आगे क्या योजना है।"

53

"जॉन," जीन ने चिल्लाकर कहा। "वह इनकी ही बेटी है, मिस्टर हेज की नहीं। समझे तुम? लोलिता के वास्तविक पिता यही हैं।"

"ओह," जॉन ने कहा। "आई एम सॉरी। मैंने तो यह सोचा ही नहीं। फिर तो परेशानी को कोई बात ही नहीं है। आप अपनी बेटी के लिए जो भी सोचेंगे वही ठीक होगा।"

और बेचारे दुखी बाप ने कहा कि वह अपनी नाजुक बेटी को जल्दी ही अपने पास ले आएगा और अगर दुख से खुद भी नहीं मर गया, तो अपनी बेटी को दुख से उबारने के लिए उसे न्यू मैक्सिको या कैल्फिोर्निया जैसी किसी अच्छी जगह ले जाएगा। मैंने दुखी होने का इतना अच्छा अभिनय किया कि जॉन और जीन ने मुझे कुछ दिन अपने ही घर पर एक कमरे में रहने के लिए जगह दे दी।

और अब मैं लोलिता को रेम्सेडल से दूर ही रखने का कारण बताऊं। शैर्लट की मौत के बाद जब मैं एक आजाद बाप की हैसियत से घर वापस आया, और जमकर शराब पीने के बाद बाथरूम में गया, तो मेरे दिमाग में यह विचार था कि अब से कुछ ही घंटों के अंदर मेरी, अपनी, पूरी तरह मेरी, प्यारी सी, भूरे बालों वाली, गर्मा-गर्म लोलिता मेरी बांहों में होगी, वह आंसू बहा रही होगी। लेकिन अभी जबकि मैं बाथरूम में अपनी आंखें फैलाए शीशे के सामने खड़ा था, तभी दरवाजे पर जॉन फारलो ने मेरा हाल पूछने के लिए दस्तक दी और उस समय मुझे लगा कि इन लोगों के घर में होते हुए लोलिता को यहां बुलाना निरा पागलपन ही होगा, क्योंकि ये लोग तो शायद मेरी लो को मुझसे जुदा करने की ही कोशिश में लगे हुए थे। और फिर लो का भी क्या भरोसा था? हो सकता है कि अचानक उसके दिल में मेरे प्रति कोई डर, नफरत या अविश्वास की भावना पैदा हो जाए और विजय मिलने के साथ ही मैं इनाम खो दूं।

घर मैं मौजूद लोगों के बारे में बात करने पर मुझे याद आया कि उन्हीं में एक फ्रेडरिक बियाल भी था, जिसकी कार से शैर्लट कुचलकर मरी थी। जॉन उसे मेरे पास छोड़ गया था। कुत्ते जैसे जबड़ों, छोटी-छोटी काली आंखों, चौड़े नथुनों वाला यह भारी-भरकम आदमी शक्ल से ही जल्लाद मालूम होता था। उसने एक कागज पर एक्सीडेंट का नक्शा बनाया था, और मुझे बताने की कोशिश कर रहा था कि किस तरह वह हमारे पड़ोसी के कुत्ते को बचाने की कोशिश कर रहा था कि तभी तेजी से सड़क पार करती शैर्लट उसकी कार के सामने आकर फिसल गई थी और कार के नीचे आ गई थी। बियाल ने मुझसे कहा कि अगर मैं चाहूं, तो अपनी पत्नी के अंतिम संस्कार का खर्च उससे ले सकता हूं। मैंने हां कर दी, जिसकी शायद उसे उम्मीद नहीं थी। उसने फिर से अपनी बात दोहराई और मैंने फिर से हां कर दी। उसके बनाए नक्शे को देखकर मैं अपने को विश्वास दिलाने लगा कि शैर्लट की

मौत में मेरा कोई कसूर नहीं है। वह तो अपनी ही गलती से मारी गई। यही उसका भाग्य था। अलविदा शैर्लट! बियाल के चले जाने के बाद मैं उसके लिए रोया। जी हां, ज्यूरी के माननीय सदस्यो, मैं शैर्लट के लिए रोया!

जिस मकान का एक कमरा मैंने सिर्फ दस सप्ताह पहले एक किरायेदार की हैसियत से लिया था, उसी को अब मैं छोड़कर जाने वाला था। उस दिन हवा बहुत तेज चल रही थी और रेम्सेडल से ऊपर काले तूफानी बादल मंडरा रहे थे। मैं अनजानी मंजिलों की तरफ निकलने की पूरी तैयारी कर चुका था। हल्की सी बूंदाबांदी शुरू हो चुकी थी। जॉन मेरा सामान कार में रख रहा था। उसी समय एक अजीब बात हुई। शायद मैंने आपको पहले भी बताया है-मैं बार-बार इस बात को नहीं कहना चाहता क्योंकि अपने मुंह से अपनी ही तारीफ करना बड़ा हास्यास्पद सा लगता है कि मैं इतना स्मार्ट, खूबसूरत और हैंडसम हूं कि हर उम्र की लड़कियां और औरतें मेरी ओर स्वयं ही आकर्षित होने लगती हैं। इसीलिए लोलिता भी मुझ पर मुग्ध हो गई थी। और इसीलिए शैर्लट अपना सब कुछ मेरे ऊपर न्यौछावर करने को तैयार थी। और अब तो इक्तीस वर्षीय खूबसूरत बदन वाली जीन फारलो भी मुझे बहुत पसंद करने लगी थी। वह हद से ज्यादा शराब पीती थी, और कैंसर की मरीज थी, जिससे वह दो साल बाद तैंतीस वर्ष की उम्र में मर जाने वाली थी। मेरे जाने से कुछ क्षण पहले जबकि जॉन बाहर था उसने मुझे हॉल में रोका और अपनी हमेशा कांपती रहने वाली उंगलियों से मेरी कनपटी को छूते हुए अपने सुर्ख प्यासे होंठों को मेरे होंठों पर चिपकाने की नाकाम कोशिश की।

"अपना ध्यान रखना," वह बोली, "मेरी ओर से अपनी बेटी को प्यार करना।"

उसी समय बिजली कड़की और वह बोली, "शायद कभी कहीं किसी बेहतर जगह और समय पर हम फिर से मिले सकें।"

थोड़ी ही देर बाद मैं उन दोनों से विदा लेने के लिए हाथ मिला रहा था।

आपको लगेगा कि अब जबकि मेरे रास्ते की सारी रुकावटें दूर हो चुकी थीं और असीमित खुशियों भरा भविष्य मेरे सामने था, तो मैंने इत्मीनान की गहरी सांसें लेनी शुरू कर दी होंगी। लेकिन दोस्तो, ऐसा नहीं हुआ। मुस्कुराती हुई किस्मत के जवाब में मुस्कुराने, खुश होने के बजाय मेरे दिल में सैकड़ों तरह के शक और अंदेशे पल रहे थे। मिसाल के तौर पर क्या लोग यह नहीं सोचेंगे कि लोलिता को उसके परिवार की खुशियों और गम में क्यों शामिल नहीं किया गया? आपको याद होगा कि उसे हमने अपनी शादी पर भी घर नहीं बुलाया था। या हो

सकता है कि जिस तरह किस्मत ने एक मासूस औरत को मेरे रास्ते का कांटा बनने से रोक दिया था, उसी तरह वही किस्मत लोलिता को उसकी मां की मौत की भी खबर पहुंचा

दे। इसमें कोई शक नहीं कि शैर्लट की मौत की खबर सिर्फ एक लोकल अखबार में ही छपी थी, लेकिन क्या किसी और जरिए से लोलिता तक यह खबर नहीं पहुंच सकती? फिर क्या मेरे लोलिता तक पहुंचने से पहले ही वह अपने कैंप से वापस रेम्सेडल के लिए नहीं चल पड़ी होगी? इससे भी ज्यादा परेशानी मुझे इस बात की थी कि लोलिता को कानूनी तौर पर अपनी बेटी बनाने के लिए मैंने कोई कदम नहीं उठाया था। मैं यह सोचकर कांप उठता था कि इस कारण मैं कभी किसी बड़ी कानूनी अड़चन में पड़ सकता हूं।

लेकिन मेरी योजना बड़ी ही शानदार थी मैंने सोच रखा कि मैं लोलिता के कैंप जाऊंगा। उससे कहूंगा कि उसकी मां बीमार है और एक अस्पताल में भर्ती है, जहां उसका ऑपरेशन होने वाला है और फिर अपनी सुंदर परी को लिए शहर-शहर, सराय-सराय घूमता फिरूंगा, बीच-बीच में उसे बताता रहूंगा कि उसकी मां की तबीयत पहले से ठीक है और आखिर में कहूंगा कि वह मर गई। लेकिन जैसे-जैसे मैं कैंप की तरफ बढ़ रहा था, मेरी परेशानी भी बढ़ती जा रही थी। मुझे यह सोचकर भी डर लग रहा था कि अगर लोलिता मुझे कैंप में नहीं मिली या अगर मिली तो डरी-सहमी सी, यह मांग करती हुई कि उसे वापस रेम्सेडल में किसी मित्र परिवार के घर जाना है? आखिर मैंने फैसला किया कि मैं उसके कैंप फोन करूं। मैंने फोन पर कैंप की इंचार्ज होम्स से बात की, तो पता चला कि लोलिता घूमने के लिए दो दिन पहले पहाड़ियों पर गई थी और आज शायद देर शाम तक लौटेगी, इसलिए मैं अगर कल जाऊं तो बेहतर होगा। मैंने उससे कहा कि लो की मां की तबीयत बहुत ज्यादा खराब है, इसलिए कल मैं उसे लेने के लिए आऊंगा, लेकिन उसकी मां की हालत के बारे में उसे न बताया जाए। हालांकि मुझे आनंद की प्राप्ति में एक दिन की देर हो रही थी, लेकिन फिर भी मैंने सुकून की सांस ली और अपनी अच्छी किस्मत को धन्यवाद दिया। अब क्या किया जाए? मैं पार्किंगटन शहर के बिजनेस सेंटर पहुंचा, और सारा दिन मैंने लो के लिए खूबसूरत तोहफे खरीदने में बिताया। मैंने उसके लिए तरह-तरह के कपड़े खरीदे। उसके कपड़ों के नाप का मुझे खूब अंदाजा था-कूल्हे उन्तीस इंच, जांघे सत्रह इंच, पिंडली और गर्दन ग्यारह इंच, छाती सत्ताईस इंच, बाजू आठ इंच, कमर तेईस इंच, कद सत्तावन इंच, वजन अठत्तर पौंड, शरीर तना हुआ।

ढेर सारी खरीदारी करने के बाद मैं पास के ही एक होटल में ठहरने के लिए चला गया। मेरे

विचारों में रंग-बिरंगी रोशनियां बिखरी हुई थीं। मेरे वजूद में लो की खुशबू, लो की महक, लो की मस्ती छाई हुई थी। अचानक मुझे उस होटल की याद आई, जिसके बारे में कुछ दिन पहले शैर्लट ने मुझसे बात की थी। मैंने फौरन एक गाइड से पता चलाया कि वह होटल ब्राइसलैंड में है जो कि लो के कैंप से चार घंटे के सफर की दूरी पर था। पहले मैंने वहां फोन करने का सोचा, लेकिन फिर यह

56

सोचकर कि कहीं मेरी आवाज जज्बात में बहकर कुछ ज्यादा ही न कांप जाए, मैंने टेलीग्राम करने का फैसला किया। अब मेरे सामने समस्या थी कि मैं टेलीग्राम में क्या लिखूं-हम्बर्ट और बेटी, हम्बर्ट और उसकी छोटी सी बेटी, हम्बर्ट और नाजुक सी लड़की, या हम्बर्ट और एक बच्ची? खैर, किसी तरह मैंने तार भेजकर अगली रात के लिए अपने और लो के लिए एक डबल बैड वाला कमरा बुक करा लिया। मेरे पास नींद की चालीस गोलियां थीं। यानी चालीस हसीन रातें!

इस मकबरे जैसी जेल में अपनी और लोलिता की कहानी लिखते-लिखते मेरे सिर में दर्द होने लगता है। लेकिन इस कहानी को पूरा करने के लिए मुझे खुद को संभालकर रखना ही है। मैं अब तक सौ से अधिक पेज लिख चुका हूं, लेकिन ऐसा लगता है जैसे मेरी कहानी अभी शुरू भी नहीं हुई हो। मुझे तारीखें भी ठीक से याद नहीं आ रही हैं। शायद यह बात 15 अगस्त, 1947 के आसपास की है। लेकिन अभी फिलहाल मैं कुछ नहीं लिख सकता। अभी तो बस मैं एक ही शब्द लिख सकता हूं-लोलिता, लोलिता, लोलिता, लोलिता, लोलिता, लोलिता, लोलिता, लोलिता, लोलिता। यह पेज पूरा होने तक बस लोलिता ही लोलिता !

रात भर मैं जगता रहा। आखिर किसी तरह सोया, तो एक ही घंटे बाद मेरी आंख खुल गई। सुबह के छः बजे थे। मैंने सोचा कि क्यों न मैं समय से पहले ही कैंप पहुच जाऊं। पार्किंगटन से कैंप की दूरी कोई सौ मील थी और इससे भी ज्यादा दूरी कैंप से ब्राइसलैंड की थी। मुझे डर था कि कहीं मुझे देर हो जाने के कारण लोलिता रेम्सेडल फोन न कर ले। ऐसा होने से मेरे सारे किए-धरे पर पानी फिर जाता। खैर, जब सुबह साढ़े नौ बजे मैंने चलने की तैयारी की तो पाया कि मेरी कार की बैट्री खराब हो चुकी है। नतीजन, मेरे पार्किंगटन से निकलते-निकलते सूरज ऊंचा हो चुका था।

मुझे अपनी मंजिल तक पहुंचते-पहुंचते ढाई बज गए थे। मैंने अपनी कार देवदार के पेड़ों के

एक झुरमुट में पार्क की। वहां खड़े एक भद्दे से लड़के ने मुझे कैंप के दफ्तर का पता बताया। कैंप की इंचार्ज के ढेरों सवालों का मुझे सामना करना पड़ा। वह रूखे से बालों वाली एक बदसूरत औरत थी। उसने बताया कि लोलिता ने अपना सारा सामान पैक कर लिया है, लेकिन गंभीर रूप से नहीं। उसने पूछा-मिस्टर हेज, मेरा मतलब, मिस्टर हम्बर्ट, क्या आप कैंप के अधिकारियों से मिलना चाहेंगे? या लड़कियों के रहने के केबिन देखना चाहेंगे? या लोलिता को बुलाने के लिए किसी को भेजा जाए? उसने बताया कि सारी लड़कियां डाइनिंग रूम में डांस की तैयारी कर रही हैं।

57

मैं उन क्षणों के बारे में विस्तार से बताता हूं-उस चुड़ैल होम्स ने एक रसीद लिखी, अपना सिर खुजाया, अपनी डैस्क की एक दराज खींची, मेरी हथेली पर कुछ सिक्के वापस रखे और उनके ऊपर एक नोट। दीवारों पर किशोरियों के फोटो, भड़कीली तितलियां, जैसे दीवार पर मारकर चिपका दी गई हों, मेरे कांपते हाथ जिनमें लो के चरित्र का सर्टिफिकेट रख दिया गया ('ठीक-ठीक से लेकर अच्छा चरित्र, तैराकी और नौकायन में रुचि'), पेड़ों और चिड़ियों की आवाजें, मेरा धड़कता दिल... मैं दरवाजे की तरफ पीठ किए खड़ा था, और तभी मेरे सारे वजूद में एक चमक सी दौड़ गई, जबकि मुझे अपने पीछे से उसकी सांसों और बोलने की आवाज आई। वह एक भारी-भरकम सूटकेस को घसीटकर ला रही थी। "हाय!" उसने कहा और खामोश खड़ी हो गई। उसकी आंखों में खुशी की चमक थी, और उसके अधखुले होंठों पर एक प्यारी सी मुस्कुराहट सजी हुई थी।

इस कुछ ही अरसे में वह पहले से ज्यादा पतली और लंबी हो गई थी, और मुझे एक क्षण को लगा कि जिस लोलिता के सपने मैं पिछले एक महीने से संजोए हुए था, वह उससे थोड़ी कम आकर्षक हो गई थी उसके गालों में गड्ढे से थे और मेकअप की वजह से उसके गालों की गुलाबी रंगत भी दब गई थी, उसकी आंखों के नीचे धब्बे से दिखाई दे रहे थे। लेकिन दूसरे ही क्षण वह मुझे फिर से अपने सपनों की लोलिता दिखाई देने लगी। बल्कि, हकीकत तो यह है कि अब वह मुझे पहले से भी ज्यादा अपनी सी लग रही थी। मैंने अपना हाथ उसके गहरे भूरे बालों वाले सिर पर रख दिया और बैग अपने हाथ में ले लिया। वह गुलाब और शहद से मिलकर बनी लगती थी। उसके बाजू और टांगें सुनहरी सी लग रही थीं। अलविदा कैंप ! कार में वह मेरी बगल में बैठ गई, अपने प्यारे से घुटने पर बैठी मक्खी को उसने थप्पड़ मारा और जोर-जोर से च्यूइंग गम चबाने लगी। फिर उसने अपनी साइड के शीशे को नीचा किया और हम चल पड़े।

"मां कैसी है?" उसने पूछा।

मैंने कहा कि अभी डॉक्टर समझ नहीं पाए हैं कि उसे क्या बीमारी है। शायद कुछ पेट की बीमारी है। लेकिन वहां तक पहुंचने में हमें समय लगेगा। क्योंकि अस्पताल यहां से काफी दूर लेपिंगविले में है। उसने पूछा कि "क्या हम रात नौ बजे तक लेपिंगविले पहुंच जाएंगे।"

"हम रात के खाने तक ब्राइसलैंड पहुंच जाएंगे," मैंने कहा, "और कल हम लेपिंगविले चलेंगे। तुम्हारी सैर कैसी रही? कैंप में तो काफी वक्त कटा होगा?"

"उह-हुंह।"

"वापस जाने का दुख हो रहा है?"

"ऊं-ऊं।"

"बात करो, लो-बड़बड़ाओ मत। मुझे बताओ कुछ।"

"क्या बताऊं, डैड।"

"कोई पुरानी बात।"

"ओके, अगर मैं आपको ऐसा-वैसा कुछ कहूं?"

"ठीक है।"

"वैसे आपको मम्मी से कब इश्क हो गया?"

"लो, आगे चलकर, मेरा मतलब थोड़ी बड़ी होने पर ही तुम कुछ भावनाओं और हालात को समझ सकोगी जैसे-प्यार, समझौता या फिर आत्मा का संबंध।"

"वाह!" वह सनकी सुंदरी बोली।

थोड़ी देर हम दोनों ही खामोश रहे और आसपास की प्राकृतिक सुंदरता को देखते रहे।

"देखो लो, उस पहाड़ी पर गायें हैं," मैंने कहा।

"मुझे डर है कि अगर मैंने और गायें देखी, तो मुझे उल्टी हो जाएगी।"

"तुम्हें मालूम है लो, मुझे तुम्हारी याद बुरी तरह सताती थी।"

"मैंने तुम्हें नहीं याद किया। सच तो यह है कि मैं तुम्हारे लिए बेवफा हो गई हूं, लेकिन क्या फर्क पड़ता है? तुमने भी तो मेरा ख्याल रखना बंद कर दिया है। तुम मेरी मम्मी से भी कहीं ज्यादा तेज कार चलाते हो, मिस्टर।"

मैंने गाड़ी की स्पीड सत्तर से पचास कर दी।

"तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैंने तुम्हारा ख्याल रखना छोड़ दिया है, लो?" मैंने पूछा।

"तुमने अभी तक मेरा चुंबन तक नहीं किया है। नहीं क्या?"

अंदर-अंदर मरता हुआ, जलता हुआ, कराहता हुआ मैं! मैंने सड़क की चौड़ी छाती को देखा और गाड़ी एक तरफ रोक दी। लेकिन साथ ही मैंने अपने को याद दिलाया कि अभी वह बच्ची है।

कार अभी पूरी तरह रुकी भी नहीं थी कि लोलिता मेरी बांहों में सिमटी चली आई। मैं हिम्मत नहीं जुटा पाया कि अपने ऊपर रखे जब्त के सारे बांध खोल दूं, मुझे यह भी अहसास नहीं हो पाया कि यह मिठास, यह कंपकंपाती आग मेरा भाग्य बनने वाली थी, मैं उस समय यह हिम्मत नहीं कर सका कि उसके होंठों को चूम लूं, और मैंने बड़े ही पाकीजा ढंग से उसके खुले हुए गर्म होंठों पर अपनी उंगलियां रख दीं, लेकिन उसने बेसब्री से अपने होंठ मेरे होंठों पर इतनी सख्ती से जमा दिए कि न सिर्फ मुझे उसके दांत गड़ते महसूस हुए, बल्कि फौरन ही मैं भी उसके मुंह में रखी च्यूइंगगम का स्वाद चखने लगा। मैं एक मनोवैज्ञानिक था। बलात्कारी

की तरह मैं जानता था कि उसकी तरफ से यह सिर्फ किसी फिल्म की नकल में बस

59

एक मासूम-सा खेल था, लेकिन मुझे डर था कि कहीं मैं जज्बात में बहकर बहुत दूर न निकल जाऊं, जिससे डरकर वह मुझसे नफरत करने लगे। और वैसे भी मैं उत्सुक था कि उसको ब्राइसलैंड के उस होटल में ले जाऊं जो अभी भी हमसे अस्सी मील दूर था, इसलिए मैंने खुद पर काबू पाते हुए उसे खुद से अलग किया, और ठीक उसी क्षण एक गश्ती पुलिस कार हमारे पास आकर रुकी।

उस गाड़ी में से एक पुलिस ऑफिसर ने मुझे घूरकर देखते हुए पूछा, "क्या आपने कोई नीले रंग की सीडान, आपकी गाड़ी जैसी, अपनी गाड़ी से आगे निकलकर जाती देखी है?"

"नहीं तो।"

"हमने नहीं देखी," लो ने अपने हाथ मेरी टांगों पर रख कर खिड़की में से सिर निकालते हुए कहा, "लेकिन क्या वह नीली ही थी, क्योंकि-"

पुलिस ऑफिसर ने मुस्कुराकर लो को देखा और अपनी गाड़ी घुमाकर वापस चला गया। हम आगे बढ़ते रहे।

"बेवकूफ!" लो बोली, "उसे तुम्हें गिरफ्तार कर लेना चाहिए था।"

"मुझे! मुझे क्यों?"

"क्योंकि यहां पचास से ज्यादा स्पीड पर गाड़ी नहीं चला सकते, जबकि तुम सत्तर पर चला रहे थे। नहीं, अब गाड़ी मत धीमी करो। अब तो वह जा चुका है।" "हमें अभी बहुत दूर जाना है," मैंने कहा, "और मैं अंधेरा होने से पहले वहां पहुंचना चाहता हूं। इसलिए अच्छी लड़कियों की तरह चुपचाप बैठी रहो।"

"नहीं, बुरी लड़की," उसने आराम से कहा। "बिगड़ी हुई लड़की। पीछे रैड लाइट थी। मैंने ऐसी ड्राइविंग कभी नहीं देखी।"

हम एक छोटे से कस्बे से गुजर रहे थे।

"अच्छा बताओ, अगर मां को पता चल जाए कि हम दोनों प्रेमी हैं, तो वह गुस्से से पागल नहीं हो जाएगी।" लो बोली।

"माई गॉड, लो, ऐसे बात नहीं करते।"

"लेकिन प्रेमी तो हम हैं ही ना?"

"मुझे नहीं मालूम। मुझे लगता है कि बारिश होने वाली है। क्या तुम मुझे अपने कैंप में हुई मजेदार बातें नहीं सुनाओगी?" मैंने बात टालने के लिए कहा।

"तुम बिल्कुल किताबी ढंग से बातें करते हो डैड।"

"कैंप में क्या-क्या हुआ? मैं तुमसे कहता हूं, मुझे बताओ।"

"तुम्हें आसानी से किसी बात से तकलीफ तो नहीं होती?"

"नहीं, तुम बोलो।"

"किसी सुनसान जगह चलो तो मैं बताऊं।"

60

"तो सुनो। मैंने कैंप में कराए जा रहे सारे कामों में भाग लिया।"

"जैसे?"

"जैसे, मुझे बताया गया कि जिंदगी को खुशी और शान के साथ गुजारना चाहिए और अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए।"

"हां, तुम्हारे कैंप की किताब में मैंने भी ऐसा ही कुछ पढ़ा था।"

"हम बड़े-बड़े पत्थरों के पास आग जलाकर या फिर इन तारों की छांव में शोर मचाते थे, जहां हर लड़की अपनी खुशी को सबकी आवाजों में डुबो देती थी।"

"तुम्हारी याददाश्त बहुत अच्छी है, लो लेकिन तुम गली वाले शब्द मत बोला करो। और कुछ?"

"मैंने भी इसी को अपनी जिंदगी का उसूल बना लिया है। मैं अपनी जिंदगी में बढ़िया-बढ़िया काम करती हूं जैसे कि अच्छा, छोड़ो। मेरा कर्त्तव्य है-काम आना। मैं पुरुष जानवरों की दोस्त हूं। मैं आदेश का पालन करती हूं। मैं खुश हूं। मैं फिजूल खर्ची नहीं करती और मैं अपने विचारों, शब्दों और कामों में बहुत गंदी हूं।"

"समझदार बच्ची, मुझे लगता है कि तुमने कैंप में बस इतना ही सीखा है।"

"हां-बस। नहीं, एक मिनट रुको। हमने खाना भी बनाया।"

"यह तो और भी अच्छी बात है।"

"हमने सैकड़ों बर्तन धोए और हमने तस्वीरें भी बनाईं।

"इसका मतलब सब ठीकठाक रहा," मैंने फ्रेंच में पूछा।

"ठीक ही था, बस एक छोटी-सी बात के अलावा। जिसे तुम्हें बताने में मुझे शर्म सी आती है।"

"क्या तुम उस चीज के बारे में मुझे फिर कभी बताओगी?"

"अगर हम अंधेरे में बैठें और तुम मुझे चुपके से अपने कान में बोलने दो, तो क्या तुम अभी भी अपने पुराने कमरे में सोते हो या मां के साथ ढेर होकर।"

"पुराने कमरे में। लो, तुम्हारी मां को एक गंभीर ऑपरेशन कराना पड़ सकता

है।"

"उस आइसक्रीम की दुकान पर गाड़ी रोको," लो ने कहा।

एक ऊंचे स्टूल पर बैठी लोलिता के नंगे बाजू पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी। उसे एक गंदे से लड़के ने एक बड़ी-सी आइसक्रीम लाकर दी। वह लड़का मेरी नाजुक सी लड़की को ललचाई नजरों से देख रहा था। ब्राइसलैंड पहुंचने की मेरी बेसब्री लगातार बढ़ती जा रही थी। भाग्य से उसने आइसक्रीम को जल्दी से चट कर लिया।

"तुम्हारे पास कितने पैसे हैं?" मैंने पूछा।

"एक पैसा भी नहीं," उसने उदास नजरों से मेरी तरफ देखते और अपना खाली पर्स मुझे दिखाते हुए कहा।

61

"खैर कोई बात नहीं," मैंने कहा, "तुम्हें इस बारे में परेशान होने की जरूरत नहीं है।"

"क्या इस दुकान में हाथ धोने की कोई जगह होगी?" उसने पूछा।

"तुम्हें वहां जाने की जरूरत नहीं है," मैंने कहा। "यह जगह बहुत गंदी है। अब जल्दी चलो।"

उसने मेरा कहना माना और कार में बैठने के बाद मैंने उसकी गर्दन को चूम लिया।

"यह मत करो," उसने बगैर किसी बनावट के कहा। "तुम्हें मेरे लिए राल टपकाने की जरूरत नहीं है। गंदे आदमी!" और इतना कहकर उसने अपने गले को अपने उठे हुए कंधे से पोंछ डाला।

"सॉरी," मैंने पूछा। "लेकिन मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं। बस इतनी सी बात है।" हम आगे बढ़ते रहे। थोड़ी देर बाद वह मेरे करीब होते हुए बोली, "मैं भी तुम्हें चाहती हूं।"

जिस समय हम होटल की तलाश में ब्राइसलैंड पहुंचे, तो शाम का धुंधलका फैलने लगा था। हलकी बूंदाबांदी के बावजूद भी मौसम में गर्मी थी। सड़कों पर बिजली के खंभे हल्की-हल्की

सी रोशनी बिखेर रहे थे। एक जगह हमने देखा कि एक थिएटर के बाहर फिल्म देखने वाले लोगों की कतार लगी हुई थी।

ना?" "मैं वह फिल्म देखना चाहती हूं। हम रात के खाने के बाद चलेंगे। चलोगे

"हो सकता है," मैंने कहा। लेकिन मैं जानता था कि जब रात नौ बजे फिल्म का शो शुरू होगा, तो मेरा 'शो' भी शुरू हो रहा होगा और तब लोलिता मरी हुई सी मेरी बांहों में होगी।

मुझे लग रहा था कि अगर हम जल्दी ही होटल नहीं पहुंचे, तो यह खटारा कार जरूर हमें परेशान करेगी, लेकिन मैं जिन लोगों से होटल का पता पूछ रहा था, वे खुद उस होटल से अनजान लग रहे थे। लो को फिर से भूख लगने लगी थी। इधर मैं ब्राइसलैंड की सड़कों और गलियों पर होटल की तलाश में भटकता फिर रहा था।

बहरहाल किसी तरह किस्मत मुझ पर मेहरबान हुई। जब एक पेड़ के नीचे खड़ी कार में बैठे एक लड़के और लड़की, जो कि एक दूसरे से चिपके हुए थे-से मैंने पूछा तो उन्होंने मुझे होटल का सही पता बताया, और थोड़ी ही देर बाद हम होटल के सामने खड़े थे। कारों की लंबी कतार में हमें जगह नहीं मिल पा रही थी, लेकिन तभी उनमें से एक कार निकलकर गई और मैंने अपनी कार उसी जगह पार्क कर दी।

62

"वाह! बढ़िया होटल है," लोलिता ने कार निकलते हुए कहा। हल्की-हल्की बारिश अभी भी जारी थी। मैंने कार की डिक्की खोली, और एक कुबड़ा नीग्रो हमारा सामान होटल की लॉबी में ले जाने लगा। वहां पर अधिकतर पादरी और बूढ़े लोग ही थे। मैं उस भीड़ में जगह बनाता हुआ रिसेप्शन तक पहुंचा, जहां एक बूढ़ा आदमी खड़ा था। लगता था कि जैसे इस बूढ़े होटल में सभी बूढ़े हों। उसने मेरा टेलीग्राम निकालकर मुझे दिखाया और बोला, "सॉरी, मैंने दो बैड वाला एक कमरा आपके लिए साढ़े छः बजे तक रोके रखा, लेकिन अब वह किसी और को दिया जा चुका है। एक धार्मिक सम्मेलन के अलावा ब्राइसलैंड में आजकल एक फ्लावर शो भी चल रहा है।

जिसकी वजह से यहां काफी भीड़ है, और "मेरा नाम हम्बर्ग नहीं है," मैंने उसकी बात काटते हुए कहां, "न हम्बग है, बल्कि हम्बर्ट है, और कोई भी कमरा चल जाएगा। बस उसमें मेरी बेटी के लिए बैड डलवा दीजिए। वह दस साल की है और बहुत थकी हुई है।"

बूढ़े आदमी ने लो को देखा, जो कि जमीन पर बैठकर एक कुत्ते के सिर पर हाथ फेर रही थी, और कुत्ते की मालकिन उससे बात कर रही थी। उसे देखकर बूढ़े के मन में जो भी संदेह था, दूर हो गया। उसने कहा कि अभी एक डबल बैड रूम खाली है। लेकिन शायद बैड एक ही मिल पाए।

मैंने अपना पैन निकालते हुए कहा, "हम ऐसे ही काम चला लेंगे। वैसे शायद बाद में मेरी पत्नी भी आ जाए, लेकिन हम रात गुजार लेंगे।" बूढ़े ने जिसका नाम स्वाइन था, एक और बूढ़े पाट्स को हमें कमरा बताने को कहा। मैंने स्ट्रीट, रेम्सेडल। कमरा नंबर भी 342 था, जिसकी चाबी हमें दी गई। हम एक लिफ्ट में चढ़ गए, जिसको एक नीग्रो औरत ऑपरेट कर रही थी।

"अरे, यही तो हमारे घर का भी नंबर है, " लो बोली।

कमरे में डबल बैड था, दो कुर्सियां थीं, दो स्टूल थे। बैड शानदार था। हमारा सामान रख और टिप लेने के बाद टॉम नाम का लड़का जा चुका था।

"क्या हम एक कमरे में सोएंगे?" लो ने कहा। क्या सवाल था!

"मैंने एक अलग बैड भी मंगाया है। तुम चाहो तो उस पर मैं सो जाऊंगा।"

"तुम पागल हो," लो ने कहा।

"क्यों, डार्लिंग?"

"क्योंकि, डार्लिंग, अगर मां को पता चल गया, तो वह तुम्हें तलाक दे देगी और मेरा गला घोंट देगी।"

"देखो," मैंने बैठते हुए कहा, जबकि वह खड़ी शीशे में खुद को देख रही थी। देखो लो, एक बात समझ लो। मैं तुम्हारा बाप हूं। मुझे तुम्हारी बहुत फिक्र है। और

तुम्हारी मां के न होने पर तुम्हारा ख्याल रखना मेरा फर्ज है। हम ज्यादा पैसे वाले नहीं हैं और सफर के दौरान हमें ऐसे ही रहना पड़ेगा। जब दो लोगों को ऐसे रहना पड़े, तो उनका रिश्ता-उनका रिश्ता-"

"सेक्स का रिश्ता। निकट संबंधियों के सेक्स वाला," लो ने कहा और हंसती हुई बाथरूम में चली गई।

मैंने खिड़की खोली, अपनी पसीने से सराबोर शर्ट उतारकर दूसरी शर्ट पहनी, अपने कोट की जेब में रखे नींद की गोलियों के पैकेट को चैक किया। वह बाहर निकली, मैंने खाने से पहले थोड़ा प्यार दिखाने के लिए उसे बांहों में लेना चाहा। वह बोली, "बस इस चुंबन के खेल को खत्म करो और खाने के लिए कुछ मंगाओ।"

और फिर वह खुले हुए सूटकेस की तरफ बढ़ी, और उसमें से उसने एक सेक्सी ड्रेस निकालकर मुझे दिखाई। फिर वह वापस आई, और मेरी बांहों में समाती चली गई। वह मुझे ऐसे देख रही थी जैसे अपनी आंखों से मुझे सहला रही हो।

"चुंबन से क्यों परेशान होती हो?" मैं किसी तरह से बड़बड़ाया।

"तुम्हें चुंबन करने का सही तरीका नहीं आता।"

"तो तुम बता दो।"

और उसने मुझे सही तरीका बताया। उसका सारा शरीर मुझसे चिपक गया, उसकी सांसें मेरी सांसों में खो गईं, उसके हाथ मेरे हर अंग को सहला रहे थे। शायद एक ही क्षण बाद मैं कोई भयानक गलती कर बैठता, लेकिन तभी वह मुझसे अलग हुई और वापस सूटकेस की तरफ मुड़ गई।

बाथरूम में जाकर मुझे वापस अपनी सही हालत में आने में थोड़ा समय लगा, जबकि बाहर से उसकी खुशी भरी किलकारियों की आवाजें आती रहीं।

"ठीक है, अगर तुम्हें भूख लगी है, तो खाने के लिए चलो," मैंने वापस आकर कहा। हम फिर से लिफ्ट तक आए और पास-पास खड़े हो गए। उसने पूरा मुंह खोलकर एक जम्हाई ली और

अपने सिर को झटका दिया।

"तुम्हें कैंप में सुबह किस वक्त उठा दिया जाता था?"

आई। "साढ़े-" उसे फिर से जम्हाई आ गई, "छः। साढ़े छः," उसे फिर एक जम्हाई

होटल का डाइनिंग हॉल नौ बजे बंद हो जाता था। इसलिए हमारे खाना खत्म करने तक वहां बस हम दोनों ही रह गए थे। खाने के बाद हमने अपने लिए आइसक्रीम मंगाई और तब मैंने अपनी जेब से नींद की गोलियों की शीशी निकाली। बहुत संभालकर मैंने उसमें से एक गोली निकालकर हथेली पर रखी, और फिर जिस तरह मैं कई बार शीशे के सामने बैठकर प्रैक्टिस कर चुका था-अपनी खाली

64

लोलिता-4

हथेली को मैंने अपने मुंह पर इस तरह मारा जैसे एक गोली खाई हो। मुझे जिस बात की आशा थी, वही हुआ। लो फौरन मेरी शीशी पर झपटी।

है?" "नीली!" वह जोर से बोली, "गहरी नीली। यह किस चीज की बनी हुई

"यह फलों और विटामिनों से बनी है। इसे खाकर बैल जैसी ताकत आ जाती है। तुम लोगी?

लोलिता ने सिर हिलाते हुए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

मुझे उम्मीद थी कि इसका उस पर जल्दी ही असर होगा और ऐसा हुआ भी। वह सुबह से उठी हुई थी। सवेरे उठकर वह बेटिंग के लिए गई थी, इसलिए थकी हुई भी थी। उसकी जम्हाइयां बढ़ती चली गईं। डाइनिंग रूम से निकलने तक फिल्म देखने का प्रोग्राम भी उसके दिमाग से निकल चुका था। लिफ्ट में वह मेरा सहारा लेकर खड़ी रही। मैं लगभग घसीटकर उसे कमरे तक लाया। वहां वह झूमती हुई उसी बैड के किनारे बैठ गई।

"अगर मैं तुम्हें बता दूं." वह नींद में झूमती हुई बोल रही थी, "तो वादा करो, वादा करो, तुम

मुझ पर नाराज नहीं होगे।"

"बाद में, लो, अभी तुम सो जाओ।"

"ओह, मैं बहुत खराब लड़की हूं." उसने अपनी बात जारी रखी, "मैं तुम्हें बताती हूं- "

"कल बताना, लो। अभी सो जाओ, मैं तुम्हें यहीं छोड़कर जा रहा हूं।" मैंने कमरा बाहर से बंद किया और चाबियां लेकर सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा।

ज्यूरी की माननीय सदस्याओ ! मैं आपका थोड़ा-सा समय लेना चाहूंगा। तो इस तरह से यह मेरे लिए बड़ा ही शानदार मौका था, जिसके लिए मैं कब से इंतजार कर रहा था! मैं लोलिता को नींद की गोली के नशे में बैड के किनारे बैठा छोड़कर चला आया था, जहां वह अपने जूतों के फीते खोलने की कोशिश में अपनी टांगें उठाए अपनी जांघ का अंदर का भाग और पैंटी तक मुझे दिखा रही थी। अपनी टांगों को दिखाने के मामले में वह या तो लापरवाह थी या फिर बेशर्म। मुझे मालूम था दरवाजे में अंदर से बंद करने के लिए कुछ नहीं था। मेरे हाथ में मेरे भविष्य की चाबी थी। कुछ ही मिनटों में, शायद बीस मिनट या आधे घंटे में मैं कमरे में जाकर अपनी सुंदरी, अपनी महबूबा, अपनी दुल्हन को गहरी नींद में पाता। उस वक्त अगर मेरी खुशी बोल पाती, तो उसकी आवाज से सारा होटल गूंज उठता। और आज मुझे सिर्फ इसी बात का खेद है कि मुझे उसी समय चाबी को होटल के काउंटर पर जमा करके उस शहर, उस देश, बल्कि इस दुनिया को ही छोड़ देना चाहिए था।

65

वह अपने ऊपर जो इल्जाम लगा रही थी, उससे मैं ज्यादा परेशान नहीं था। मैंने फैसला किया हुआ था कि मैं उसकी पवित्रता से नहीं खेलूंगा, इसीलिए मैं उसे नशे में सुलाकर सिर्फ उसकी नग्नता से लुत्फ लेना चाहता था। मैंने अपने ऊपर काबू रखने का पक्का इरादा कर लिया था, भले ही उसने कैंप के दौरान समलैंगिक रिश्ते बना कर खुद ही अपनी पवित्रता को किसी हद तक बर्बाद कर लिया हो। लेकिन मुझे आज भी अफसोस है कि मेरे अंदर जो वासना उमड़ रही थी और जिसे मैं हर कीमत पर दबाए रखना चाहता था, मुझे उसकी तरफ ध्यान देना और पूरा कर लेना चाहिए था। मुझे समझ लेना चाहिए था कि जिस लोलिता को मैं अपने बचपन की अनाबेल की तरह मासूस समझ रहा था, वह मासूस नहीं थी। मुझे नहीं मालूम था कि जिसे मैंने अपने मजे के लिए तैयार किया था, वह मेरे सारे मजे को किरकिरा कर देगी।

और अब वह मेरी थी। मेरी! चाबी मेरी मुट्ठी में थी, मुटठी मेरी जेब। कितनी ही बार मैंने अपनी कल्पनाओं में सोचा था कि नींद की गोलियों का असर होने के बाद वह बिस्तर पर कैसी पड़ी होगी। नंगी, एकदम नंगी। एक मोजे और एक कंगन के अलावा बिल्कुल नंगी। उसके चारों हाथ-पैर फैले हुए होंगे। उसके स्विम सूट का निशान उसके शहद जैसे शरीर पर होगा। उसकी नन्हीं-नन्हीं सी छातियों की और भी नन्हीं-नन्हीं नोकें, और उसकी चिकनी टांगों के बीच एक छोटे से टीले पर चमकते बाल-यह सब अभी मेरी कल्पनाओं में था। मुझे शराब की जरूरत थी, लेकिन वहां कोई बार नहीं था। आखिर मैं पुरुषों वाले कमरे में चला गया। वहां थोड़ी देर रुकने के बाद मैं काउंटर पर पहुंचा। अपनी कुहनियों को काउंटर पर टिकाते हुए मैंने पॉट्स से पूछा कि क्या मेरी पत्नी का कोई फोन तो नहीं आया, और अतिरिक्त बैड का क्या हुआ। उसने बताया कि मेरी पत्नी का कोई फोन नहीं आया (वह तो मर चुकी थी) और बैड कल डलवा दिया जाएगा, अगर हम कल भी रुके तो।

मैं इधर-उधर घूमता रहा। मेरे खून का दौरा बार-बार बढ़ता-घटता जा रहा था। मैं एक बार फिर से वापस लॉबी में आया, और वहां मैंने देखा कि बहुत सारे लोग थे, जो फूलों वाले या फिर काले कपड़े पहने मौजूद थे। मेरी नजर एक जगह टिक गई। वह लोलिता की ही उम्र की एक किशोरी थी। उसे देखकर लोलिता के प्रति मेरी प्यास फिर से बढ़ गई। उस लड़की ने मेरी प्यासी नजरों को भांप लिया, और मुझसे नजर बचाकर अपनी मां से बातें करने लगी। मैं लॉबी से निकलकर बाहर आया, और लैंपों के आसपास मंडराते कीड़े-मकोड़ों को देखने लगा। मैं सोच रहा था कि क्या मैं लोलिता के पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा हूं। तभी मुझे महसूस हुआ कि अंधेरे में मेरे पास ही कोई और भी है। मैं उसका चेहरा तो नहीं

देख पाया, लेकिन उसके वहां होने का अहसास मुझे हो गया था। मैं वहां से हटने ही वाला था, कि वह मुझसे बोला, "तुम उसे कहां छोड़ आए?"

"मैं समझा नहीं।" मैंने कहा।

"मैंने कहा कि मौसम अच्छा हो गया है," वह बोला।

"लगता तो ऐसा ही है।"

"तुम्हारे साथ वह लड़की कौन है?"

"मेरी बेटी।"

"तुम झूठ बोल रहे हो-वह तुम्हारी बेटी नहीं है।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

"मेरा मतलब उसकी मां कहां है?"

"मर गई।"

"समझा! आई एम सॉरी। वैसे आप दोनों कल मेरे साथ लंच करें तो मुझे अच्छा लगेगा। तब तक यहां की सारी भीड़ भी जा चुकी होगी।"

"तब तक हम भी जा चुके होंगे। गुड नाइट।"

"सॉरी। मैं पिए हुए हूं। गुडनाइट। तुम्हारी बेटी को नींद की जरूरत है। कहते हैं कि नींद एक गुलाब की तरह होती है। आप सिगरेट पिएंगे?"

"अभी नहीं।"

उसने माचिस जलाई, लेकिन फिर भी शायद तेज हवा की वजह से मैं उसका चेहरा नहीं देख सका। हां, उसी के पास बैठे एक बूढ़े का चेहरा मैंने जरूर देखा। अंधेरा फिर से छा गया। बूढ़े आदमी ने खांसते हुए थूक दिया। मैं वहां से हट आया। कम से कम आधा घंटा जरूर हो गया होगा। मुझे उस आदमी से लेकर शराब पीनी चाहिए थी। मेरा सारा शरीर सितार के तारों की तरह तना हुआ था और दुख रहा था। लिफ्ट के बाहर काफी भीड़ थी। इसलिए मैं लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों से ऊपर आया। चाबी ताले में लगी और अगले ही पल मैं कमरा नं 342 के अंदर था।

बाथरूम के अधखुले दरवाजे से रोशनी आ रही थी। खिड़की के बाहर से छन-छन कर आ रही

रोशनी में मैंने देखा कि लोलिता अपना एक नाइट गाउन पहने करवट लिए सो रही थी। उसकी पीठ मेरी तरफ थी। पतले से नाइट गाउन से झांकते उसके नंगे अंग के आकार के हो रहे थे। उसने अपने सिर के नीचे दोनों तकिए रखे हुए थे। मैंने अपने कपड़े उतारकर पाजामा पहनने में जरा भी देर नहीं लगाई। मैंने अपना घुटना अभी बैड के किनारे पर रखा ही था कि लोलिता ने करवट ली और मुझे देखने लगी।

यह बात मेरी उम्मीद के बिल्कुल खिलाफ थी। मैंने तो सोचा था कि वह गोली पूरी एक सेना को सुलाने में सक्षम होगी, लेकिन यहां मेरे सामने लोलिता तो आंखें

खोले मुझे देख रही थी और भर्राई हुई आवाज में मुझे "बारबरा" कहकर पुकार रही थी। जबकि यह बारबरा पाजामा पहने बिस्तर के किनारे बिल्कुल खामोश खड़ी थी। आखिर निराशा के साथ एक ठंडी सांस छोड़कर वह फिर से सो गई। दो मिनट तक मैं उसी निराशा के साथ उसी तरह खड़ा रहा। उसकी सांसों की आवाज से लग रहा था कि वह सो गई है। आखिर मैं बिस्तर के किनारे लेट गया, और वह मुंह खोले मुझे फिर से देखने लगी।

मुझे यह बाद में पता चला कि जो गोलियां मुझे रेम्सेडल के डॉक्टर ने दी थीं, वे बिल्कुल साधारण गोलियां थीं। जिनका असर हल्के से नशे के अलावा कुछ नहीं होता था, वह डॉक्टर बिल्कुल बेवकूफ था या बहुत चालाक, मुझे नहीं मालूम। मुझे तो बस इतना मालूम है कि मैं धोखा खा चुका था। जब लोलिता ने दोबारा आंखें खोलीं, तो मैं समझ गया कि मैंने जिस चीज पर भरोसा किया हुआ था, वह बेकार साबित हुई। धीरे-धीरे उसने फिर अपना सिर घुमाया और तकिए पर रख दिया। मैं बिस्तर के किनारे लेटा उसके बिखरे बाल, उसके कंधे व कूल्हे को देखता रहा। उसकी सांसों से मैं उसकी नींद की गहराई का अंदाजा लगाता रहा। कुछ समय गुजरा, तो मैंने उस पागल कर देने वाले हुस्न के थोड़ा करीब जाने का फैसला किया। लेकिन जैसे ही मैंने कोशिश की, उसकी सांसों को फिर से झटका लगा और मुझे महसूस हुआ कि वह जाग रही है। उस वक्त मेरी क्या हालत होगी, आप महसूस कर सकते हैं। मेरे सिर के नीचे तकिया नहीं था मैं परेशानी से लेटा हुआ था, और दिल में आग सी लगी हुई थी।

वह फिर से गहरी नींद में सो गई थी, लेकिन अब अपना काम शुरू करने की मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैंने सोचा कि कल को मैं उसे वो पहले वाली गोलियां खिलाऊंगा, जिससे उसकी मां एक बार गहरी नींद से सोई थी। लेकिन अभी क्या मैं एक घंटे इंतजार करने के बाद फिर से

कोशिश करूं? मैं सीधा लेटा हुआ था। मेरी हिम्मत लोलिता के कूल्हों की तरफ करवट लेने की भी नहीं हो रही थी। आधी रात तक आसपास के शोर की आवाज से मैं जागता रहा-कभी लिफ्ट का शोर और उसमें से निकलकर जाने वाले लोगों की 'गुडनाइट' का शोर, कभी किसी पड़ोसी के खांसने या झरने की तरह टॉयलेट में बहने वाले पानी का शोर, और कभी खिड़की के नीचे ट्रकों का शोर।

और मुझसे, मेरे जलते हुए वजूद से छः इंच से भी कम दूरी पर लोलिता लेटी हुई थी। काफी देर इंतजार के बाद मैं फिर उसकी तरफ बढ़ा और वह जागी नहीं। उसके कंधे मेरे गाल को छू रहे थे। और फिर वह अचानक उठ कर बैठी, कुछ बड़बड़ाई और फिर से लेटकर सो गई। लेटते-लेटते उसका हाथ मेरे मुंह पर पड़ा। मैंने उसे पकड़ लिया, लेकिन उसने नींद में ही अपना हाथ छुड़ाया और हालात

68

फिर पहले जैसे हो गए। उसकी कमर हम्बर्ट की ओर, और हम्बर्ट अपनी ही आग में जलता हुआ।

मैं उठकर पानी पीने के लिए बाथरूम में गया, और जब वापस आया तो वह भी उठकर बैठ गई और पानी मांगने लगी। जब वह पानी पी रही थी, तो मैंने उसके नीचे से एक तकिया अपने लिए खींच लिया। पानी पीकर उसने अपने गीले होंठ मेरे कंधे से पोंछे, और फिर से सो गई। मैं उसे एक और गोली देने की हिम्मत नहीं कर सका, लेकिन पता नहीं क्यों, मुझे अभी भी पहली गोली पर किसी हद तक भरोसा था। कई बार निराशा हाथ लगने के बावजूद भी मैं फिर से उसकी ओर बढ़ा। मेरे तकिए में उसके बालों की खुशबू बसी हुई थी। उसकी तरफ बढ़ते हुए मैं बार-बार डरकर रुक जाता था। कभी-कभी मुझे ऐसा भी धोखा होने लगता था जैसे वह खुद भी अपने कूल्हे मेरी तरफ बढ़ा रही हो। अजीब कशमकश की हालत थी, कभी डर तो कभी उम्मीद !

मैं उस रात के बारे में इतना विस्तार से इसलिए बता रहा हूं, ताकि मैं यह साबित कर सकूं कि मैं न तो एक दुष्ट और जंगली आदमी हूं, न था और न हो सकता था। मैं लोलिता को एक अपराधी की नहीं, बल्कि एक शायर की नजर से देखता था। रात के चार बजे तक होटल में सन्नाटा छाया रहा। उसके बाद फिर से रात के पहले पहर जैसा शोर शुरू हो गया-लिफ्ट का शोर, टॉयलेट में पानी के बहने का शोर, लिफ्ट से आते-जाते लोगों की हाय-हैलो का शोर।

ज्यूरी की बे-हिस सदस्याओ! मैंने सोचा था कि लोलिता के प्रति अपनी ख्वाहिश का इजहार करने में मुझे महीनों नहीं, बल्कि शायद कई साल लग जाएंगे, लेकिन वह सुबह छः बजे जागी और छः बजकर पंद्रह मिनट होते-होते हम एक दूसरे के प्रेमी बन चुके थे।

और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऐसा करने की दावत उसने मुझे दी। उसके उठने की पहली जम्हाई सुनते ही मैं बहाने से गहरी नींद में सो गया, क्योंकि मेरी समझ में ही आया कि और क्या करूं। मैं सोच रहा था कि क्या वह मुझे अपने ही बैड पर लेटा देखकर नाराज होगी। क्या वह मांग करेगी कि उसे फौरन उसकी मां के पास रेम्सेडल ले जाया जाए? या उसे वापस कैंप में छोड़ आया जाए? लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। मुझे महसूस हो रहा था जैसे वह मुस्कुराती हुई नजरों से मुझे देख रही है। वह मेरे करीब आ गई, और मुझे अपनी गर्दन पर उगे बालों का लम्स महसूस हुआ। मैंने अचानक आंख खुल जाने का बहाना किया, और फिर हम एक-दूसरे की बांहों में थोड़ी देर तक लेटे रहे। मैंने प्यार से उसके बालों को सहलाया और फिर हमारे होंठ एक-दूसरे से जुड़ गए। लेकिन चुंबन के दौरान जिस तरह से वह अपने होंठों और जबान को चला रही थी, उससे मुझे लगा कि यह सब

कुछ वह पहले ही किसी लड़की के साथ कर चुकी है। कोई मर्द उसको इतना नहीं सिखा सकता था। उसने पीछे हटकर मुझे गौर से देखा। उसके गाल तमतमा रहे थे, होंठ भीगे हुए थे और इधर मेरा भी बुरा हाल था। फिर अचानक उसने अपना मुंह मेरे कान पर रख दिया, लेकिन जो कुछ उसने कहा, वह मैं नहीं सुन सका। वह अपने चेहरे से बालों को हटाती हुई हंसी। और एक बार फिर उसने मेरे कान में कुछ कहने की कोशिश की, और हालांकि मैं सुन इस बार भी नहीं सका लेकिन जो कुछ मैंने अंदाजा लगाया, वह यह था कि वह सब कुछ किया जा सकता था। "तुम्हारा मतलब है कि तुमने कभी नहीं-" उसको जैसे मेरी बात का यकीन नहीं आ रहा था। "तुमने कभी नहीं-" वह फिर से बोली। मैं अपनी नाक से उसके चेहरे को सहलाने लगा। लेकिन उसने पीछे हटते हुए कहा, "लेट जाओ तुम।" (बड़ी अजीब सी बात है कि उस दिन भी और बाद में भी काफी लंबे समय तक वह मुंह के चुंबन और संभोग के अलावा कुछ भी करने को 'बकवास' या 'बेवकूफी' कहा करती थी)

"तुम्हारा मतलब," अब वह मेरे ऊपर झुकी हुई कह रही थी, "तुमने अपने बचपन में कभी यह नहीं किया।"

"कभी नहीं," मैंने जवाब दिया।

"तो ठीक है," लोलिता बोली। "यहां से शुरू किया जाता है।"

लेकिन मैं अपने पाठकों को वह सब बताकर बोर नहीं करूंगा, जो वह जानते ही हैं। बस मैं इतना कहूंगा कि इस खूबसूरत किशोरी में शर्म और हया नाम की कोई चीज मुझे उस दिन दिखाई नहीं दी। आधुनिक समय के लड़कों के साथ पढ़ाई, उठना-बैठना, खेलना-कूदना और कैंप उसे बिल्कुल ही बिगाड़ चुके थे। वह इस सारे काम को सिर्फ एक खेल की तरह ले रही थी। जो काम बड़ों के लिए नस्ल आगे बढ़ाने की चीज है, वह उसके लिए खेल था। मेरे अंगों से वह ऐसे खेल रही थी जैसे वे मेरे शरीर से अलग कल-पुर्जे हों। सारी तकलीफ के बावजूद भी सिर्फ अपने घमंड के कारण वह पीछे नहीं हटी। मैं मूखों की तरह पड़ा रहा, और उसे सब कुछ करने दिया। बहरहाल, यह सब तो बेकार की बातें हैं। लोग जिसे 'सेक्स' कहते हैं, मेरा वह मकसद ही नहीं था। मैं तो बस किशोरियों के जादुई संसार को समझना चाहता था। और हां, इस सबके बावजूद उसके प्रति मेरे प्यार में कोई कमी नहीं आई थी।

रोम के कानून के अनुसार, लड़की बारह साल की उम्र में शादी कर सकती है चर्च ने भी इस कानून को अपनाया। अमेरिका के काफी भाग में भी यही कानून प्रचलित है। एक मैग्जीन में मैंने पढ़ा कि लड़की बारह साल की उम्र में बालिग हो जाती है। यानी एक चालीस साल का आदमी उससे शादी करके जड़ तक उसके अंदर समा सकता है। तो फिर ज्यूरी की सदस्याओ! जिस बात की इजाजत प्रकृति

ने दी हो, उसे करने में मैं क्यूं डरता? और वैसे भी, आपने तो अब समझ ही लिया होगा कि मैं लोलिता का पहला प्रेमी नहीं था।

बाद में उसने मुझे बताया कि वह कैसे बिगड़ी थी। हम खाते रहे, और यही सब बात करते रहे। उसने सबसे पहले पिछले साल लगे कैंप की अपनी एक साथी लड़की के बारे में बताया। लेकिन वह मुझे उसका नाम नहीं बता रही थी।

"क्या वह ग्रेस एन्जल थी?" मैंने पूछा।

"नहीं," लोलिता ने सिर हिलाते हुए कहा। "वह एक बड़े बाप की बेटी थी।"

"तो फिर क्या रोज कारमीन थी?"

"नहीं, वह भी नहीं।"

"तो फिर एगनीस शैरिडन होगी?"

लोलिता ने फिर सिर हिलाकर इंकार किया, और पूछने लगी कि इन सबके बारे में मैं कैसे जानता हूं। मैंने उसे बताया, तो वह बोली, "अच्छा, अगर तुम जानना ही चाहते हो, तो मैं तुम्हें बताती हूं कि वह लड़की एलिजाबेथ टैलबोट थी," और तब मुझे याद आया कि शैर्लट अक्सर समारोहों में दूसरी स्त्रियों से बात करते हुए कहती थी, "जब पिछले साल मेरी बेटी एलिजाबेथ टैलबोट के साथ कैंप में गई थी, तो...।"

मैंने पूछा कि शैर्लट को या एलिजाबेथ की मां को इस संबंध के बारे में पता था। "ना बाबा," लोलिता अपने सीने पर हाथ रखते हुए डर और सुकून के मिले-जुले भाव से बोली।

मैं यह जानने के लिए ज्यादा इच्छुक था कि उसका पहला मर्द साथी कौन था। लोलिता को रेम्सेडल आने पर ग्यारह वर्ष की उम्र में छठी क्लास में दाखिला दिलाया गया था। उसने बताया कि मिरांडा परिवार की दो जुड़वां लड़कियां एक ही बैड पर लेटकर 'कुछ-कुछ' किया करती थीं। स्कूल का सबसे बुद्धू दिखने वाला लड़का डोनाल्ड स्कॉट भी अपने अंकल के गैरेज में हेजेल स्मिथ नाम की लड़की से यह कर चुका था और एक लड़का कैनथ नाइट अपने शरीर के अंग हमेशा मौका मिलने पर दर्शाया करता था, और-

"तुम अपने कैंप के बारे में बताओ," मैंने उसकी बात काटते हुए कहा। और तब उसने मुझे सारी कहानी सुनाई। बारबरा बर्क, जो सुनहरे बालों वाली एक सेहतमंद लड़की थी, और लोलिता से दो वर्ष बड़ी थी, कैंप की सबसे अच्छी तैराक थी, और बोटिंग में लोलिता उसकी साथी थी। कैंप के पास ही एक वीरान सी जगह थी, जहां वे दोनों अक्सर कैंप की इंचार्ज मिसेज होम्स के बेटे चार्ली होम्स के साथ घूमने जाया करती थीं। रोजाना सुबह को ये तीनों बच्चे वहां घूमने

जाते थे, और वहां चार्ली और बारबरा झाड़ियों के पीछे छुपकर संभोग करते थे, जबकि लोलिता उनकी पहरेदारी किया करती थी। शुरू में लोलिता ने उन दोनों के कहने के बावजूद भी कि "ट्राई करके देखो कैसा लगता है" मना कर दिया, लेकिन बाद में दोस्ती और उत्सुकता के कारण उसने 'ट्राई' किया, और अब दोनों लड़कियां एक के बाद एक चार्ली के साथ यह काम किया करती थीं। जबकि चार्ली जो कि एक गंदा और दुष्ट शैतान सा लड़का था, एक कच्ची गाजर की तरह ताकतवर था, और किसी परेशानी में पड़ने से बचने के लिए पास की ही एक झील से कंडोम निकालकर उन दोनों पर इस्तेमाल करता था। मगर इस 'मजे' के बावजूद भी लोलिता को चार्ली अच्छा नहीं लगता था।

दिन के लगभग दस बज चुके थे, और अपनी प्यास बुझा लेने के बाद अब मुझे कुछ अजीब-सा महसूस हो रहा था, जिसके कारण मेरे सिर में हल्का-सा दर्द भी शुरू हो गया था। भूरे और दुबले-पतले बदन की लो शीशे के सामने नंगी खड़ी थी। उसके नितंब मेरी तरफ थे। वह कूल्हों पर हाथ रखे और टांगें फैलाए शीशे में अपना अक्स देख रही थी। तभी कमरे के दरवाजे को किसी ने खोलने की कोशिश की। मैंने फौरन लो को बाथरूम में भेज दिया और उससे कहा कि वह अच्छी तरह से नहाए। बैड बहुत गंदा हो रहा था। लो ने मेरे भेंट किए हुए कपड़ों में से एक ब्लाउज और स्कर्ट पहनकर देखा, लेकिन वह उसके काफी टाइट था, उसने उन्हें उतारकर एक और जोड़ा पहनकर देखा जो कि काफी ढीला था। उसने उसे भी उतार दिया। मुझे अब वहशत सी होने लगी थी, इसलिए मैंने उससे कहा कि जल्दी करे। इस पर उसने मेरे दिए कपड़ों को उठाकर एक कोने में फेंक दिया और कल के ही उतारे कपड़ों को पहन लिया। जब वह तैयार हो गई, तो मैंने उसे चमड़े का एक पर्स दिया, जिसमें कुछ पैसे भी थे। मैंने उससे कहा कि वह नीचे लॉबी में अपने लिए उन पैसों से कोई मैग्जीन खरीद ले।

"मैं अभी नीचे आ रहा हूं," मैंने कहा।" और हां, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं किसी भी अजनबी से बात नहीं करता।"

पैक करने के लिए बहुत ज्यादा सामान नहीं था। हालांकि मुझे डर भी लग रहा था कि लोलिता नीच जाकर कुछ उल्टा सीधा न कर बैठे, लेकिन फिर भी बिस्तर को ठीक करने में मैंने काफी समय लगा दिया, ताकि ऐसा लगे जैसे पिछली रात उसमें बाप-बेटी ही सोए हों, यह नहीं कि जैसे कैद से छूटे किसी अपराधी ने दो मोटी-मोटी वेश्याओं के साथ वहां रंगरेलियां मनाई हों। उसके बाद मैंने होटल के एक कर्मचारी को अपना सामान उठवाने के लिए बुला लिया।

नीचे लॉबी में लोलिता एक गहरी सुर्ख आराम कुर्सी में धंसी एक रंगीन फिल्म मैग्जीन को बड़े गौर से पढ़ रही थी। उसकी टांगें अभी भी बड़ी लापरवाही से

एक के ऊपर एक रखी थीं। मेरी जैसी अधेड़ उम्र का एक आदमी हाथ में एक बोसीदा सा अखबार और सिगार लिए मेरी लो को ललचाई नजरों से घूर रहा था। और मैं सोच रहा था कि अगर इस कमीने को मालूम हो जाए कि मैं अभी तक उस बच्ची-कमसिन बच्ची के भेष में जैसे वह कोई अमर आसमानी परी हो-के शरीर के लम्स को महसूस कर रहा था, तो उसे कैसा महसूस होता।

चलते-चलते मैंने काउंटर पर बैठे बूढ़े से फिर पूछा कि क्या वाकई मेरी पत्नी का कोई फोन नहीं आया। नहीं, उसने बताया। मैंने उससे कहा कि अगर उसका फोन आए, तो उसे बात दे कि मैं लोलिता को लेकर क्लेअर आंटी के घर जा रहा हूं। मैंने बिल अदा किया और लोलिता को उसकी कुर्सी से उठाया। वह मैग्जीन पढ़ते-पढ़ते ही कार तक गई। रास्ते में भी वह पढ़ती ही रही और मैं उसे पास ही एक कॉफी शॉप पर ले गया। वहां उसने मैग्जीन अलग रखकर नाश्ता किया, लेकिन अभी भी वह पहले जैसी खुश नहीं दिखाई दे रही थी। मैंने उसकी उदासी (जो कि पता नहीं किसलिए थी) दूर करने के इरादे से फिर से कैंप के बारे में बात करना शुरू की। अभी तक वह मेरी हर बात का जवाब कंधे उचका कर और नाक चढ़ाकर सिर्फ 'हां-हूं' में दे रही थी, लेकिन इस बार वह रोने जैसा मुंह बनाती हुई बोली, "बस अब इस बारे में मैं और बात नहीं करना चाहती।" मैंने उसे प्यार से पुचकारते हुए रास्ते के नक्शे की तरफ उसका ध्यान लगाने की कोशिश की। हमारी मंजिल लेपिंगविले थी, जहां किसी काल्पनिक अस्पताल में उसकी मां पड़ी थी। मैं न तो नहाया था, न ही शेव किए हुए था। मैं सुबह से टॉयलेट तक नहीं गया था। इस पर लोलिता का अजीबो-गरीब व्यवहार। और उस पर भी यह परेशानी कि लेपिंगविले में मैं क्या बहाना बनाऊंगा और उसके बाद भी कब तक क्या-क्या बहाने बनाकर लो को अपने साथ रखूंगा।

वापस कार की तरफ जाते हुए मैंने उसके चेहरे पर तकलीफ का भाव देखा। कार में मेरे पास बैठते-बैठते एक बार फिर, पहले से ज्यादा गहराई से वही भाव उसके चेहरे पर आया। और मुझ बेवकूफ ने उससे पूछ लिया कि क्या हुआ। "कुछ नहीं, तुम जंगली आदमी!" "तुम क्या?" मैंने पूछा। वह खामोश थी। खौफ की एक ठंडी सी लहर मुझे अपनी रीढ़ में दौड़ती महसूस हुई। वह अनाथ थी। एक कमजोर बेसहारा बच्ची, जिसके साथ मुझ जैसे भारी-भरकम आदमी ने आज ही सुबह तीन बार संभोग किया था। हालांकि मुझे अपनी उम्मीदों और ख्वाबों से कहीं

ज्यादा प्राप्त हो चुका था, लेकिन अब मैं सोच रहा था कि क्या मैंने अपने जोश में आकर लापरवाही तो नहीं दिखाई, उसके साथ ज्यादती तो नहीं की। लेकिन इस अहसास में एक डर इस बात का भी शामिल था कि अगर लोलिता का मूड ऐसा ही रहा, तो रास्ते में किसी सुनसान जगह कार रोककर मैं एक बार और उसके शरीर का आनंद नहीं ले पाऊंगा। बहरहाल, मैं कार लेपिंगविले की तरफ बढ़ाता

73

रहा, मगर मैं दुखी था, और सोच रहा था कि इस खामोशी को कैसे तोडूं। लेकिन खुद उसी ने खामोशी तोड़ दी।

"अरे, वह कुचली गिलहरी," वह बोली। "कितनी शर्म की बात है।"

"है ना?"

"किसी पेट्रोल पंप पर गाड़ी रोकनी चाही, ताकि.....।

"चलते रहो," लो जोर से चिल्लाई।

"ठीक है, ठीक है," मुझे कहना पड़ा। मैंने उसकी तरफ चुपके से देखा, और दिल ही दिल में भगवान का शुक्र अदा किया। वह मुस्कुरा रही थी।

"तुम पगले," उसने मुझे मुस्करा कर देखते हुए कहा। "तुम भद्दे आदमी! मैं एक फूल की तरह ताजा और नाजुक थी और तुमने मेरा क्या हश्र कर डाला। मुझे पुलिस को बुला लेना चाहिए था और तुम पर बलात्कार का इल्जाम लगाना चाहिए था। गंदे बूढ़े आदमी।"

क्या वह सिर्फ मजाक कर रही है? मुझे पसीना आ गया था। फिर हल्के से सिसकारी लेते हुए उसने बताया कि उसे दर्द हो रहा है, और वह बैठ नहीं पा रही है। वह कह रही थी कि मैंने उसके अंदर किसी चीज को फाड़ डाला है। एक पेट्रोल पंप पर गाड़ी रुकते ही वह बाहर निकल गई, और काफी देर बाद वापस आई। आने के बाद वह बोली, "मुझे कुछ सिक्के दे दो। मैं अस्पताल में अपनी मां से बात करना चाहती हूं। अस्पताल का फोन नंबर क्या है?"

"बैठ जाओ," मैंने कहा, "तुम उस नंबर पर बात नहीं कर सकतीं।"

"क्यों?"

"बैठ जाओ और दरवाजा बंद कर लो।"

उसने गाड़ी में बैठकर दरवाजा बंद कर लिया। मैंने गाड़ी एक बार फिर सड़क पर डाल दी।

"मैं अपनी मां से क्यों बात नहीं कर सकती?" थोड़ी देर बाद उसने पूछा।

"क्योंकि," मैंने कहा, "तुम्हारी मां मर चुकी है।"

लेपिंगविले शहर पहुंचकर मैंने उसको किताबें, आइसक्रीम, कोका कोला, ज्वैलरी, सैनिटरी पैड का डिब्बा, टेनिस का बल्ला, स्केट्स, जूते, कपड़े, चश्मा, च्यूइंग गम, रेडियो, रेनकोट सब कुछ दिलाया। होटल में मैंने दोनों के लिए अलग-अलग कमरे लिए, लेकिन आधी रात को वह रोती-सुबकती मेरी बांहों में चली आई, और मैंने बड़े आराम से अपना काम पूरा किया। वह और जाती भी तो कहां?

भाग दो

और इसके बाद हम सार अमेरिका में शहर-शहर, सराय-सराय घूमते रहे।

ठहरने की जगह के तौर पर मैं अन्य किसी भी होटलों को छोड़कर छोटे-छोटे ढाबे जैसे होटलों को पसंद करता था। यह होटल साफ-सुथरे तो होते ही थे, साथ ही सोने, बातचीत करने और कभी न बुझाने वाली अवैध प्यास को बुझाने के लिए आदर्श स्थान थे। शुरू-शुरू में मुझे डर था कि कहीं मेरे और लोलिता के बीच पनपे असली रिश्ते का राज न खुल जाए, इसलिए मैं दोनों के लिए अलग-अलग कमरे लिया करता था। कभी-कभी लोलिता की जिद पर मुझे महंगे होटलों में भी ठहरना पड़ता था। मुझे महसूस हुआ कि जिस्मानी तौर पर भले ही लोलिता किसी स्वप्न-सुंदरी जैसी हो, लेकिन उसका दिमागी स्तर आम बच्चों की ही तरह था। उसे सिर्फ महंगे होटल ही नहीं, बल्कि हर भड़कीली और दिखावटी चीज पसंद थी। फिल्म मैग्जीनों में दिए हुए तरह-तरह के इश्तेहारों पर वह आंखें बंद करके यकीन कर लिया करती थी। वह किसी भी आइसक्रीम की दुकान पर 'बर्फ जैसी ठंडी आइसक्रीम' का बोर्ड देखती, तो वह वहां आइसक्रीम खाए बगैर आगे नहीं बढ़ती थी, हालांकि आइसक्रीम तो हर जगह की बर्फ जैसी ठंडी होती है। किसी भी गिफ्ट शॉप पर नजर पड़ते ही वह मचल जाती थी और कुछ न कुछ

खरीदे बगैर मुझे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाने देती थी। हर ऐरे-गैरे गायक की एल्बमों को खरीदना उसकी आदत थी। और अपनी इस कमसिन रखैल को खुश रखने के लिए मुझे ये सारी चीजें खरीदनी ही पड़ती थीं। मैंने उससे कह रखा था कि महीनों क्या, शायद बरसों तक उसे इसी तरह मेरे साथ खानाबदोशों जैसी जिंदगी गुजारनी पड़ेगी और मैं उसे फ्रेंस और लैटिन भी पढ़ाता चलूंगा, लेकिन इस बात पर वह तेवर बिगाड़ लेती थी।

मैंने शुरू से ही इस बात का ध्यान रखा था कि इन संबंधों के राज को राज बनाए रखने के लिए यह जरूरी था कि इसे छुपाने में मुझे लोलिता का भी पूरा सहयोग मिले, भले ही वह अपने दिल में मेरे लिए थोड़ी सी नफरत रखती हो, भले ही इसके बदले में वह मुझसे कुछ भी क्यों न मांग ले, लेकिन इस रहस्य को हमेशा छुपाए रखे। इसके लिए मैंने जहां और बहुत से उपाय अपनाए, वहीं उसे सुधार-गृह भेज दिए जाने की भी धमकी देता रहा। "आओ, अपने बूढ़े को चुंबन करो," मैं कहता था, "और अपना मूड ठीक करो।"

"मेरी प्यारी बेटी, मुझे तुम्हारी फिक्र है। तुम्हारी उम्र की लड़कियों के साथ सुनसान जगहों पर जो-जो होता है, मैं उससे तुम्हें बचाना चाहता हूं। तुम्हारे हर भले-बुरे का मैं जिम्मेदार हूं, और अगर तुम साथ देती रहीं, तो जल्दी ही यह रिश्ता कानूनी हो जाएगा। मैं कोई ऐसा सेक्स अपराधी नहीं हूं, जो बच्चों के साथ

बलात्कार करते हैं। बलात्कारी तो चार्ली होम्स था, मैं तो तुम्हारा इलाज कर रहा हूं। मैं तुम्हारा डैडी हूं। मेरे पास किशोरियों के बारे में एक बड़ी अच्छी किताब है। देखो इसमें क्या लिखा है। मैं सुनाता हूं-'एक आम लड़की अपने बाप को खुश रखने को हमेशा उत्सुक रहती है। इसीलिए समझदार मांओं को बेटी और उसके बाप के बीच गहरा संबंध बनाने देना चाहिए।' और आगे सुनो- 'सिसिलियन लोगों में बाप और बेटी के बीच सेक्स संबंध एक आम बात है, और ऐसी लड़कियों को जो ऐसे संबंध बनाती हैं, बुरी नजर से नहीं देखा जाता है।' लो, मैं इसीलिए सिसिली के लोगों का प्रशंसक हूं, वे अच्छे खिलाड़ी, अच्छे संगीतज्ञ, भले और महान प्रेमी होते हैं। खैर, मैं कहना यह चाहता हूं कि अगर तुमने पुलिस में यह रिपोर्ट लिखा दी कि मैंने तुम्हारा अपहरण करके तुम्हारे साथ बलात्कार किया है, तो जानती हो क्या होगा? मुझे ज्यादा से ज्यादा दस साल की सजा होगी। मैं जेल चला जाऊंगा लेकिन तुम्हारा क्या बनेगा, जानती हो? तुम चूंकि अनाथ हो, इसलिए तुम्हें या तो सुधार गृह भेज दिया जाएगा, या फिर एक वयस्क के साथ अनैतिक व्यवहार रखने के लिए तुम्हें भी बच्चों की जेल भेजा जाएगा। वहां तुम कपड़े

सियोगी, बुनाई करोगी, श्लोक पढ़ोगी, तुम्हारी इंचार्ज औरतें बहुत सख्त होंगी, न तो अच्छा खाना मिलेगा और न अच्छे कपड़े, जैसे तुम अब पहनती हो। एक गंदे से हॉल में तुम चालीस लड़कियों के साथ सोया करोगी। इन हालात में तुम्हारे लिए यही बेहतर होगा कि तुम अपने इस बूढ़े के ही साथ रहो।"

हालांकि लो बहुत ही चंचल तबीयत की थी, लेकिन वह इतनी समझदार नहीं थी, जितनी कि अपनी बातों और हरकतों से लगती थी, इसलिए अपनी इन बातों से उसे डराने में मैं कामयाब हो गया। लेकिन मैं उसे बहुत खुश रखने में कामयाब नहीं हो पाया। उसे रात तक खुश रखने के लिए मुझे रोजाना कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। उसे उसकी पसंद की चीजें दिलाने से लेकर घूमते-फिरने की खूबसूरत जगहें दिखाने तक सभी कुछ करना पड़ता था, तब कहीं जाकर मैं रात तक उसे अपने लिए तैयार कर पाता था। वरना वह बहुत ही चिड़चिड़ी हो जाया करती थी।

अगस्त 1947 से अगस्त 1948 तक उस एक साल में जबकि हम अमेरिका के 48 राज्यों में घूमते फिर रहे थे, मुझे लोलिता को खुश रखने के लिए हर-हर कदम पर, बल्कि हर-हर चुंबन के बीच कितने पापड़ बेलने पड़ रहे थे, आप इसका अंदाजा नहीं लगा सकते। रास्ते में चलते-चलते मैं उसको प्रकृति की खूबसूरती दिखाता तो वह चिढ़ जाती थी। रास्ते में तो उसे बस दो चीजें पसंद आती थीं या तो आइसक्रीम की दुकानें या फिर टॉयलेटों पर पुरुषों और स्त्रियों के लिए बनाए गए तरह-तरह के निशान। अमेरिका के एक दक्षिणी राज्य में मैं उसे मैग्नोलिया गार्डन दिखाने ले गया। जिसके बारे में कहा जाता था कि उस गार्डन में जाकर बच्चों

की आंखों में सितारों जैसी चमक आ जाती है और ऐसा लगता है जैसे वे जादू के असर में चल रहे हों (लोलिता भी तो बच्ची ही थी), लेकिन लोलिता के साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, बल्कि वहां जाकर वह और भी चिढ़ी हुई लगने लगी। बहरहाल यह एक साल मेरी जिंदगी का शायद सबसे खूबसूरत साल था। जिसमें मैं लोलिता को साथ लिए अमेरिका के कोने-कोने में घूमता रहा और आखिर में बर्ड्सले शहर पहुंच गया।

इस दौरान हमने दर्जनों जगहें तो घूमी ही, तरह-तरह के लोगों से भी मिले। लेकिन मैं लो पर कड़ी नजर रखा करता था। लगातार शारीरिक संतुष्टि मिलने की वजह से लो की सेहत अच्छी हो गई थी और उसके चेहरे पर चमक आ गई थी। हालांकि कभी-कभी बोर होकर वह पूछने

लगती थी कि कब तक हम गंदे-गंदे होटलों में रहकर गंदी गंदी हरकतें करते रहेंगे, कब हम सामान्य जिंदगी फिर से जी पाएंगे, लेकिन कुल मिलाकर वह खुश थी। अकसर लोग, खास तौर से मर्द, उसे ललचाई नजरों से घूर घूरकर देखते थे, वह भी खूबसूरत और स्मार्ट मर्दों को घूरा करती थी और मेरी नजर बचते ही वह उनसे बातें भी करने लगती थी। अगर किसी जगह हम कुछ ज्यादा दिन रुकते और किसी सुबह को उसके साथ बिस्तर पर अच्छा वक्त गुजरने की वजह से मैं खुश होता और उसे इजाजत दे देता कि वह पड़ोस के कमरे में रहने वाली लड़की और उसके आठ साल के भाई के साथ घूमने चली जाए, तो आप जानते हैं कि क्या होता था। लोलिता दिए हुए वक्त से कम से कम एक घंटा देर से आती थी, पड़ोसी लड़की उसके बहुत पीछे चल रही होती, और उसके साथ घूमने जाने की इजाजत मांगती थी, तो मैं हरगिज भी उसे नहीं जाने देता था।

मुझे याद है कि एक बार मैंने उसे ऐसे ही स्केटिंग करने के लिए जाने की आज्ञा दे दी। उसने साफ कह दिया कि अगर मैं साथ जाऊंगा, तो उसे बिल्कुल मजा नहीं आएगा, क्योंकि वह जगह सिर्फ बीस साल से कम उम्र के बच्चों के लिए है। आखिर हमने यह समझौता किया कि मैं स्केटिंग के मैदान में तो उसके साथ नहीं जाऊंगा, लेकिन बाहर कार में मौजूद रहूंगा। वहां करीब पचास बच्चे थे जिनमें लड़कियों ने ज्यादातर लोलिता की तरह जींस पहनी हुई थी। सिर्फ एक लंबी और चिकनी टांगों वाली लड़की थी जिसने लाल रंग की हॉफ पैंट पहनी हुई थी। मैं उसे देखने के साथ-साथ लोलिता पर भी पूरी नजर रखे हुए था। इसके बाद भी बस एक बार जैसे ही मेरी नजर बची, वह गायब हो गई और जब दोबारा दिखाई दी तो उसके साथ गुंडों जैसी शक्लों के तीन लड़के थे। वे तीनों लड़के थोड़ी देर पहले ही मेरी कार के पास खड़े स्केटिंग करती लड़कियों के बारे में बात कर रहे थे।

एरिजोना या कैलिफोर्निया या किसी भी बड़े शहर में दाखिल होते वक्त चैक

पोस्ट हो या कहीं घूमने की जगह, लोलिता के लिए खामोश प्रशंसकों की कहीं कोई कमी नहीं थी। वह तो मेरी मौजूदगी की वजह से उस तक पहुंचने की कोई हिम्मत नहीं कर पाता था, वरना लोलिता तो खुद उनको अपने पास आने की खामोश दावत देती रहती थी।

हम जिस शहर में भी रुकते थे, वहां मैं सबसे पहले पास के स्कूलों, स्कूलों में बच्चों की तादाद और इसी तरह की दूसरी जानकारियां हासिल करता था, और छुट्टी के वक्त मैं अपनी कार

ऐसी जगह पार्क करता था, जहां से मैं किशोरियों को देख सकूं-कितना खूबसूरत दृश्य होता था वह! मगर लोलिता को इस सबमें जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। आखिर समझौते के तौर पर मैं उसे ऐसे स्वीमिंग पूलों पर ले जाने लगा, जहां छोटी-छोटी लड़कियां तैरा करती थीं। एकाध डुबकी लगाने के बाद मैं कुर्सी पर बैठ जाता, और पुल में तैरती लोलिता और उसके साथ तैरती दूसरी लड़कियों को देखकर अपनी आंखें सेका करता था। रबर की टोपी, नर्म सी पैंट और ब्रा पहने लोलिता की खूबसूरती को मैं निहारता और मन ही मन खुश होता रहता कि सारी लड़कियों में सबसे हसीन यह लड़की मेरी और सिर्फ मेरी है। लेकिन मुझे हमेशा लोलिता की तरफ से होशियार रहना पड़ता था, क्योंकि अगर मैं जरा सी भी देर के लिए वहां से हटता, तो अगले ही क्षण वह स्वीमिंग पूल के किनारे किसी स्मार्ट से लड़के के साथ बैठी दिखाई देती थी।

मैंने उसे टेनिस सिखाने की कोशिश की, ताकि मेरा उसके साथ और भी अधिक समय बीते, क्योंकि मुझे भी टेनिस खेलने का काफी शौक था। हालांकि अपनी जवानी में मैं टेनिस का अच्छा खिलाड़ी था, लेकिन लोलिता को टेनिस सिखाने के मामले में मैं नाकाम रहा। इसलिए कैलिफोर्निया में मुझे उसके लिए एक महंगे कोच का इंतजाम करना पड़ा। यह कोच एक भारी-भरकम शरीर का आदमी था, और उसे खेलता देखकर मुझे याद पड़ता था कि शायद यह अपने जमाने का एक मशहूर खिलाड़ी था, जिसे मैंने कभी-कभी बड़े-बड़े खिलाड़ियों को हराते भी देखा था। जब वह लोलिता को सिखाने लगा, तभी पहली बार मुझे लग पाया कि अब शायद वह इस खेल को खेलना सीख सकेगी। अकसर किसी होटल के टेनिस कोर्ट पर लोलिता के साथ खेलते-खेलते मुझे याद आ जाता था कि मैं किस तरह अपने बचपन में कभी गर्मी में, कभी ठंड में, कभी धूप में, सफेद स्कर्ट और काला मखमली हेयर बैंड पहने अनाबेल (मेरी अपनी अनाबेल) के साथ टेनिस खेला करता था। लोलिता के साथ परेशानी यह थी कि उसको सिखाने के लिए कोई नसीहत करने का मतलब होता था उसके गुस्से को दावत देना। उसे खेल से ज्यादा पसंद था गेंद के साथ खिलवाड़ करना, और वह भी अपनी ही उम्र के किसी लड़के या लड़की के साथ। ऐसे मौकों पर जब वह अपनी हमउम्र किसी

लड़की के साथ खेल रही होती, तो मैं उस लड़की को ही बैंक हैंड या फोर-हैंड शॉट लगाने के सही तरीके के बारे में बताता और इस बहाने कभी उसके नंगे बाजू को, तो कभी जांघ को छू लेता। और तब लोलिता अपने रैकेट को जमीन पर बेत की तरह टिकाकर 'उफ' कहती हुई मेरी

दखलअंदाजी पर नाराजगी का इजहार करने लगती। इस पर मैं कोर्ट से बाहर आकर उनको खेलता देखने लगता और दोनों के जिस्मों की तुलना करने लगता। लो जब सर्विस करती तो उसका हाथ उठने के साथ ही पसीने में भीगी उसकी बगल दिखाई देती और दोनों ही अपने अनाड़ी खेल का स्कोर जोर-जोर से बोलकर खुश होती रहतीं और मैं उन्हें देख कर।

मुझे याद है कि एक दिन मैं उन दोनों को कोल्ड ड्रिंक पिलाने का सोचकर होटल के अंदर गया और अनन्नास के जूस के दो बड़े गिलास, सोडा तथा बर्फ लेकर बाहर आया, लेकिन बाहर निकलते ही मेरा कलेजा जैसे उछलकर मुंह को आ रहा, क्योंकि अब टेनिस कोर्ट खाली पड़ा था। मैं गिलासों को एक बेंच पर रखने के लिए जैसे ही झुका, मुझे अपनी कल्पना में शैर्लट का मुर्दा चेहरा याद आ गया। मैंने गिलास रखकर पलट कर देखा, तो गार्डन के रास्ते पर लो एक लंबे आदमी के साथ टहलती दिखाई दी, जिसके हाथ में टेनिस के दो बल्ले थे। मैं उनके पीछे दौड़ा, लेकिन फिर उन्हें झाड़ियों में बल्लों से गेंद ढूंढ़ते देखकर मैं रुक गया।

मैं ये छोटी-छोटी बातें आपको इसलिए बता रहा हूं, ताकि जज साहेबान को इस बात का यकीन हो जाए कि मैंने अपनी ओर से लोलिता को एक अच्छी जिंदगी देने की भरपूर कोशिश की। कितना अच्छा लगता था मुझे यह देखना कि लोलिता, जो कि खुद ही एक बच्ची, अपने हाथ कमर पर बांधे गौर से उसको देखती रहती। जबकि लोलिता को देखकर मुझे यूरोप में गुजरे अपने बचपन की याद आने लगती। खुद रस्सी कूदने के बाद वह अपनी दोस्त को रस्सी दे देती और अपने माथे से बाल हटाती हुई, अपने हाथ बांधकर और एक पैर को दूसरे पर रखकर या फिर अपने हाथ अपने सुडौल कूल्हों पर रखकर वह उसे रस्सी कूदते देखती रही। इस बीच हमारे कमरे की सफाई पूरी होने की इत्तला मुझे मिलती, तो मैं दूसरी लड़की को मुस्कुराकर अलविदा कहता और फिर लो के बालों में उंगलियां फेरता हुआ प्यार से उसकी गर्दन को पकड़कर कमरे में ले जाता, ताकि खाने से पहले एक बार 'ताजगी' हासिल कर ली जाए।

मैं हमेशा लोगों से दूर रहने की कोशिश किया करता था, क्योंकि मेरे ऊपर पड़े लोलिता के नाखूनों और दांतों के निशानों को देखकर अक्सर कोई न कोई पूछ बैठता था, "क्या आपको किसी बिल्ली ने खसोट लिया है?" लेकिन दूसरी तरफ लोलिता की कोशिश हमेशा दूसरों से घुलने-मिलने की रहा करती थी। किसी भी अजनबी से मुलाकात होने पर, एक तरह से वह कुतिया की तरह न सिर्फ अपनी

दुम, बल्कि और भी बहुत कुछ हिलाया करती थी। मेरी इसी बात से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि मुझे उसकी यह अदा कितनी नापसंद थी। मैं अपना नाश्ता सवेरे ही कर लेता था। लोलिता चूंकि देर से सोकर उठती थी, इसलिए नाश्ते के बाद मैं उसके लिए कॉफी ले जाया करता था। लेकिन मैं उसे कॉफी तभी पीने देता था, जब वह अपनी सुबह की 'ड्यूटी' पूरी कर लेती थी। इसीलिए मुझे उसके लिए कॉफी लेकर आना बहुत ही अच्छा लगता था।

मैं उसका कितना अच्छा दोस्त, बाप और डॉक्टर था! मैं उसके आराम का कितना ख्याल रखता था! मैं उसे कितना प्यार करता था! उसके खूबसूरत जिस्म का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं था, जहां मेरे होंठों ने अपनी श्रद्धांजलि उसके अंदर धड़कते दिल, लीवर, फेफड़ों और किडनियों को नहीं दे सकता था। तेज गर्मी के दिनों में दोपहर के खाने के बाद आराम करने के लिए मैं ठंडे से चमड़े की आराम कुर्सी पर बैठ जाता और मुझे अपने नंगे बदन पे चमड़े की ठंडक से सुकून महसूस होता था। लोलिता मेरी गोद में बैठी हुई मेरे आनंद से लापरवाह अखबार में इस तरह से खोई होती थी जैसे कि वह जिस चीज पर बैठी है वह और कुछ नहीं, बल्कि कोई जूता या गुड़िया या टेनिस के बल्ले का हैंडल हो, और अपने आलस्य की वजह से वह उसे हटा नहीं रही हो। वह लापरवाही से अपनी नाक में उंगली डालती रहती और अखबार में किसी एक्सीडेंट या अपनी पसंद के किसी हीरो या फिर नंगी नंगी जांघों वाली लड़कियों की तस्वीरें देखती रहती। कभी-कभी उसके पेट या छाती के भूरे भाग पर मक्खी आ बैठती, तो वह उसे हाथ से उड़ाने के बजाय पकड़ने की कोशिश करती (बिल्कुल शैर्लट की तरह!) और एक बार फिर से अखबार की तस्वीरों में खो जाती। पढ़ते-पढ़ते उसके गाल मुझसे दूर होने लगते, लेकिन मैं फिर से उन्हें करीब ले आता। और यह सिलसिला कभी-कभी सारी दोपहर चलता रहता। वे भी क्या दिन थे !

मेरी यानी हम्बर्ट की दुनिया में हम्बर्लैंड में जब लोलिता दाखिल हुई थी, तो वह मेरी खूबसूरती की वजह से मेरी दुनिया के बारे में जानने को बहुत उत्सुक थी। फिर मेरी दुनिया को देखकर उसे बहुत अच्छा नहीं लगा, शायद अब उसे मुझसे, मेरी दुनिया से नफरत सी भी होने लगी थी। और अब मुझे लगने लगा था कि वह इसी नफरत के साथ मेरी इस दुनिया से, मेरी जिंदगी से निकल भागना चाहती थी। मेरे छूने से अब उसे किसी तरह के मजे का अहसास नहीं होता था, बल्कि कभी-कभी तो बड़े तीखे ढंग से वह बोल पड़ती थी, "तुम यह क्या कर रहे हो?" उसके लिए मेरे बेइंतहा प्यार, सारी परेशानियों का अब मुझे यह इनाम मिला करता था। हम्बर्गर से ज्यादा उसे हैमबर्गर पसंद था। मेरे साथ अकेले वक्त गुजारने से ज्यादा अच्छा उसे खराब से खराब फिल्में देखना लगता था। सच मानिए, दुनिया

में एक लाड़ले बच्चे से ज्यादा क्रूर दूसरा कोई नहीं होता है। रास्ते में एक बार हम एक मिल्क बार पर रुके, जिसका नाम था 'इंडी रानी'। मैंने लोलिता से कहा कि वह मेरी 'ठंडी राजकुमारी' है, लेकिन हसरत और उदासी से भरे मेरे इस मजाक को वह समझ तक न सकी।

लेकिन मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मैं खुश नहीं था। दरअसल मैं तो खुशी जैसी चीजों से अब बहुत ऊपर उठ चुका था, क्योंकि एक किशोरी को सहलाने, चूमने, प्यार करने से ज्यादा हसीन खुशी दुनिया में और कोई है ही नहीं। यह खुशी दुनिया भर की खुशियों से अलग है। हमारे सारे झगड़ों के बावजूद उसकी सारी बदतमीजियों और चिड़चिड़ेपन के बावजूद और सारे खतरों के अलावा यह जानते हुए भी कि हमारे इस रिश्ते का कोई भविष्य नहीं मैं अपने आपको जन्नत में महसूस करता था। इसमें शक नहीं कि इस जन्नत के आसमान का रंग जहन्नुम की लपटों जैसा था, लेकिन फिर भी यह थी तो जन्नत ही ना!

बचपन में समुद्र के किनारे अनाबेल के साथ किए अधूरे रोमांस की चुभन अभी भी मेरे जेहन के किसी कोने में बाकी थी। और अपनी जिंदगी के इस अधूरे अध्याय को पूरा करने की कसक अब मेरे दिल में लगातार बढ़ती जा रही थी, और कभी-कभी तो नश्तर बनकर चुभती रहती थी। इसमें कोई शक नहीं कि लोलिता ने मेरे दिल में बसी कितनी ही हसरतों को पूरा कर दिया था, लेकिन वो कहते है न 'हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले। बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।' ऐसे ही अरमानों को निकालने के लिए मैं अब खूबसूरत समुद्री किनारों की तलाश में रहा करता था। इस तलाश में मैं एक बार कामयाब तो हुआ, लेकिन खराब मौसम की वजह से मेरी खोज बेकार ही साबित हुई। दूसरी बार फिर मेरी किस्मत ने साथ नहीं दिया, क्योंकि समुद्र में तूफानी हवाएं चल रही थीं। आखिर कैलिफोर्निया के एक समुद्री किनारे पर मेरी किस्मत मेहरबान हुई और वहां मुझे एक गुफा जैसी जगह मिली। हालांकि वहां भी तट पर खेलती लड़कियों के शोर-शराबे की आवाज आ रही थी, लेकिन कोहरे की एक मोटी चादर ने हमें दूसरों की नजरों से ढक रखा था। लेकिन उस दिन पहली बार लोलिता के प्रति मेरे बदन में वह सनसनी नहीं थी, जो कि अभी तक हुआ करती थी। शायद इसकी वजह पास में ढेर सारे लोगों की मौजूदगी रही थी। इससे ज्यादा मजा तो मुझे तब आया था, जब रेम्सेडल की उस खराब सी झील से बहुत दूर घर के लॉन में मैंने

लोलिता को घुटनों के बल झुके देखा था।

समुद्री किनारों से ऊबने के बाद अब मैंने जंगलों का रुख किया। अमेरिका के जंगल बहुत ही खूबसूरत हैं, लेकिन खुले में प्यार करने के लिए बिलकुल भी मुनासिब नहीं है। जहरीले पौधे अगर प्रेमिका के नितंबों में चुभते हैं, तो अनजाने

कीड़े उसके प्रेमी के नितंबों में काटते हैं, नुकीले कांटे अगर प्रेमी के घुटनों में चुभते हैं तो कीड़े प्रेमिका के घुटनों से लिपट पड़ते हैं, साथ ही हर समय किसी न किसी तरफ से किसी सरसराते फुफकारते सांप के आने का भी खतरा लगा रहता है। और फिर कपड़ों पर भी तरह-तरह के कांटे और कीड़े लगते रहते हैं। लेकिन फिर भी एक गर्मी की दोपहर को एक पहाड़ी झरने के किनारे खूबसूरत फूलों वाले पेड़ों और पौधों के नीचे हमें-मुझे और लोलिता को अपने मतलब की एक जगह मिल ही गई। मैंने लोलिता के लिए जो चादर बिछाई, उसके नीचे फूल कुचलते रहे और हम अपनी प्यारी सी दुनिया में खोए रहे। पास की पहाड़ी हमें सूरज की तेज धूप से बचा रही थी, तो दूसरी तरफ ढेर सारे फूलों के पौधे हमें इंसानों की नजरों से बचा रहे थे। लेकिन अफसोस, मेरी नजर पास की ही एक पतली-सी सड़क पर नहीं पड़ पाई, क्योंकि घने पेड़ों की वजह से वह हमसे छुप गई थी। मिलन की हालत में देख लिए जाने का खतरा हमारे इतने करीब और कभी नहीं आया था।

मुझे याद है कि हम दोनों उस वक्त तक जी भरकर प्यार करके निपट चुके थे और लोलिता रो रही थी, क्योंकि उसे मेरा किया हुआ एक वादा याद आ गया था, जो कि ऐसे ही वक्त में एक बार जज्बात के बहाव में मैंने उससे कर लिया था, लेकिन जिसे बाद में मैंने पूरा नहीं किया था। वह अभी भी नंगी लेटी हुई थी, और मैं जिस हाथ से उसे सहला रहा था, उसे बार-बार गुस्से में नोच रही थी। मैं उसकी मासूमियत पर बार-बार कहकहे लगा रहा था कि तभी मेरी नजरें उन आंखों से चार हुईं जो अपलक हमें घूरे जा रही थीं। उनकी शक्लें देखकर यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं था कि वे जुड़वां न सही, भाई-बहन तो हैं ही। वे दोनों नीले रंग के कपड़े पहने मुंह फाड़े हमें देखे जा रहे थे। मैंने अपने नंगेपन को छुपाने की नाकाम कोशिश में जल्दी से चादर उठाई, लेकिन ठीक उसी वक्त मेरी नजर पास की ही झाड़ियों में फूल चुनती एक सेहतमंद औरत पर पड़ी जो कि हमें एकटक देख रही थी। बिल्कुल उसी तरह जैसे कि उसके दोनों मासूम बच्चे हमें घूर रहे थे।

आज जब मैं उस घटना के बारे में सोचता हूं, तो मुझे लगता है कि मैं काफी हिम्मत वाला आदमी था। मैंने उन तीन जोड़ी आंखों के सामने भी खुद को नॉर्मल रखा और धीरे से लोलिता से कहा कि वह उठ जाए। आराम से कपड़े पहनने के बाद हम बड़ी शान से चलते हुए अपनी कार तक पहुंचे, जिसके पीछे एक स्टेशन वैगन भी खड़ी हुई थी। वहीं एक खूबसूरत आदमी जो शायद उन बच्चों का बाप और उस औरत का शौहर था, 'ऊंचाई दस हजार फीट' एक बोर्ड का फोटो खींच रहा था। हम अपनी कार में बैठे और तेजी से वहां से चल पड़े। लोलिता अभी भी अपने कपड़े ठीक करने में लगी हुई थी और साथ ही मुझे ऐसी-ऐसी गालियां भी देती जा रही थी कि मैं सोच भी नहीं सकता था कि उसकी उम्र की कोई लड़की उन्हें इस्तेमाल करना तो दूर, जानती तक भी होगी।

82

इसी तरह के और भी कई नाखुशगवार हादसे हमारे साथ हुए। मिसाल के तौर पर, फिल्म थिएटर वाला वाकया। लोलिता को फिल्में देखने का इंतहाई शौक था। उस एक साल के अंदर अलग-अलग शहरों में हमने डेढ़ सौ से दौ सौ फिल्में देखी होंगी। कभी-कभी तो एक हफ्ते में छः-छः फिल्में हम देख लिया करते थे, जिसके साथ-साथ हमें एक ही न्यूज रील छः बार देखनी पड़ती थी। लोलिता को सबसे ज्यादा पसंद थीं अच्छे गीत-संगीत वाली फिल्में। दूसरे नंबर पर उसे मार-धाड़ वाली फिल्में अच्छी लगती थीं और तीसरा नंबर था रोमांटिक फिल्मों का। लेकिन कुल मिलाकर वह फिल्मों की इतनी शौकीन थी कि कोई भी फिल्म वह कभी देख सकती थी। हां तो एक बार एक थिएटर में जब हम फिल्म देख रहे थे, तो मैंने लोलिता के कंधे को अपने बाजू के हलके में ले लिया और मेरा गाल उसके माथे पर पहुंच गया। लेकिन तभी हमारे पीछे बैठे दो शरारती लड़कों ने अजीब-अजीब सी बातें बड़बड़ाना शुरू कर दीं हालांकि जो कुछ उन्होंने कहा, मैं समझ तो नहीं सका, लेकिन इतना जरूर समझ गया कि मैं लोलिता से थोड़ा अलग होकर बैठ जाऊं। मगर उसके बाद बाकी का शो मेरे लिए धुंध से ज्यादा कुछ नहीं था।

एक बार हम दोनों रात के वक्त कहीं से वापस आ रहे थे, तब मैंने उसे बताया कि बर्ड्सले में मैं उसका जिस स्कूल में दाखिला कराऊंगा, वह सिर्फ लड़कियों का स्कूल है और वहां पढ़ाने का ढंग काफी सख्त है। मेरा इतना कहना था कि लोलिता फट पड़ी। गालियां, अपमानजनक शब्द, खुशामद, बदतमीजी, बचकानी निराशा, जो कुछ वह लगातार बक रही थी, क्या कुछ नहीं था उसमें। लगभग बीस किलोमीटर तक वह इसी तरह मुझे भला-बुरा कहती रही और मैं पचास की स्पीड पर गाड़ी दौड़ाता रहा। तभी दो पुलिसवालों ने अपनी स्पॉट-लाइट हम पर

डाली और हमें रुकने को कहा। मैंने लोलिता से चुप हो जाने को कहा, क्योंकि वह किसी मशीन की तरह बोलती जा रही थी। गाड़ी रुकने पर पुलिसवालों ने शक भरी नजर से मुझे और लो को देखा। लोलिता उन दोनों को देखकर अचानक इस तरह मुस्कुराने लगी, जैसे अभी कुछ हुआ ही न हो। उस दिन मुझे लगा कि लोलिता भी कानून से डरती है।

यहां में एक बात का इकबाल करना चाहता हूं। आप हंसेंगे, लेकिन हकीकत यही है कि मैं कभी नहीं जान पाया कि लोलिता के साथ मेरा कानूनी रिश्ता क्या था। सच तो यह है कि मुझे आज भी नहीं मालूम। हां, इस बारे में कुछ छोटी-मोटी कानूनी बातें मैं जरूर जान गया। अलबाना में संरक्षक को यह हक हासिल नहीं है कि वह कोर्ट की इजाजत के बगैर बच्चे के रहने की जगह भी बदल सके। जबकि मिनेसोटा में-मैं मिनेसोटा को सलाम करता हूं-जब एक आदमी चौदह साल से कम उम्र के बच्चे के संरक्षण की जिम्मेदारी लेता है, तो सिर्फ एक महीने का

सौतेला बाप है, जो अधेड़ उम्र का दिमागी मरीज है और जिसकी सौतेली बेटी की मां मर चुकी है, जो कि एक यूरोपी है, एक बार का तलाकशुदा है और जो कुछेक पागलखानों में भी रह चुका है, क्या एक ऐसे आदमी को संरक्षक का दर्जा दिया सकता है? क्या मैं अपने सौतेले बाप के हक को हासिल करने के लिए अदालत में दरखास्त दूं? और अदालत को दावत दूं कि वह सीधे-सादे मुझसे और खतरनाक लोलिता से सवाल-जवाब करे? मैंने कई छोटे-बड़े शहरों की लाइब्रेरियों में शादी, बलात्कार और गोद लेने के मौजू पर किताबें पढ़ीं, लेकिन उससे भी कुछ खास पता नहीं चला। पिल्विन और जैपेल की किताबें पढ़ीं, लेकिन उससे भी कुछ खास पता नहीं चला। पिल्विन और जैपेल की किताब में सौतले बाप और बिन मां की लड़कियों के बारे में कुछ कहा ही नहीं गया है। एक और किताब में लिखा था, 'ऐसा कोई कानून नहीं है कि हर नाबालिग बच्चे का कोई संरक्षक होना ही चाहिए, अदालत तभी बीच में आती है, जबकि बच्चे को कोई खतरा हो।' यह सब पढ़ समझकर मैंने यह नतीजा निकाला कि किसी को संरक्षक तभी बनाया जाता है, जबकि वह अपनी ख्वाहिश जाहिर करे और इस काम में बरसों भी लग सकते हैं। इसलिए चूहा बनकर अपने बिल में घुसे रहना ही मैंने बेहतर समझा। अदालत तभी बीच में आएगी, जबकि मामला पैसे का हो। लेकिन हमारे मामले में ऐसा कुछ नहीं था। शैर्लट की जायदाद आराम से लोलिता के बालिग होने का इंतजार कर रही थी।

जॉन फालों, जो कि एक वकील भी था, अपनी बीवी जीन के कैंसर में इतना मसरूफ था कि

उसे हमारे मामले में टांग अड़ाने की फुर्सत ही नहीं थी। वैसे भी मैंने उसे पहले ही यह यकीन दिला रखा था कि लोलिता मेरी सगी बेटी है। अब तक आप जान गए होंगे कि मैं एक गरीब बिजनेसमैन हूं, लेकिन इतना भी गरीब नहीं कि अदालत का खर्च न उठा सकूं। लेकिन फिर भी मैंने अदालत न जाने का ही फैसला किया, क्योंकि मुझे लगता था कि लोलिता मेरे लिए कुदरत का दिया हुआ एक हसीन तोहफा है और अगर मैंने कुदरत के काम में हस्तक्षेप किया, तो यह तोहफा मुझसे छिन भी सकता है। मैंने फैसला किया कि मैं बर्ड्सले में उन किताबों को पढ़ुंगा, जो मैं अभी तक नहीं पढ़ पाया था। जहां तक लोलिता का सवाल है, मेरे हजार कहने के बावजूद वह किस्से-कहानियों की किताबों के अलावा कुछ भी नहीं पढ़ा करती थी। हालांकि 'अरेबियन नाइट्स' जैसी किताबें उसे पसंद थीं, लेकिन ऐसी किताबों को पढ़ना उसे स्कूल की पढ़ाई जैसा लगता था, जिन पर वह अपना वक्त बर्बाद नहीं करना चाहती थी।

अब मुझे लगता है कि मैक्सिको की सरहद पार करके आगे जाने और अपने इन खूबसूरत दिनों की उम्र बढ़ाने के बजाय वापस बर्ड्सले आकर मैंने गलती की।

84

मुझे कुछ दिन और इंतजार करके लोलिता से शादी कर लेना चाहिए थी। लेकिन मेरा दिमाग एक जगह पर नहीं था। कभी तो मुझे लगता था कि लगभग 1950 के आसपास मुझे लोलिता से छुटकारा हासिल करने की कोशिश करनी पड़ेगी, क्योंकि तब तक वह जवान हो चुकेगी, और कभी मैं सोचता था कि उससे शादी करके एक और लोलिता-लोलिता ई- पैदा कर लूं, जो कि 1960 तक 8-9 साल की हो जाएगी और जिसके साथ मैं नाना होने का फर्ज निभा सकूंगा।

अपने इस लंबे सफर के दौरान मै यह महसूस नहीं कर सका कि लोलिता के बाप की हैसियत से मैं बिल्कुल नाकाम रहा था। हालांकि मैंने अपनी ओर से पूरी कोशिश की, मैंने बार-बार 'अपनी बेटी को पहचानिए' शीर्षक की किताब पढ़ी, लेकिन रहे वही ढाक के तीन पात। खुशगवार वक्त के दौरान भी जबकि बारिश के मौसम में बैठे हम पढ़ते (लो बार-बार अपनी घड़ी और खिड़की की तरफ देखती रहती) या किसी भीड़-भाड़ वाले होटल में बढ़िया-सा खाना खाते या लो बचकाना ढंग से ताश के पत्ते खेलती या खरीदारी के लिए जाती या खामोशी से आती-जाती कारों को घूरती रहती। इसी तरह के बहुत सारे मौकों पर मैं इतना ही दिखावटी बाप दिखाई देता था जितनी कि वह बेटी। शायद अपराध का अहसास हम दोनों को ही अपने-अपने रोल में सही ढंग से फिट नहीं होने दे रहा था। मैं सोचता कि अगर उसका

दाखिला स्कूल में करा दिया जाए और वह रोजाना स्कूल जाने लगे, तो क्या हालात कुछ बेहतर होंगे।

बर्ड्सले का चुनाव करने का कारण सिर्फ यही नहीं था कि वहां लड़कियों के लिए एक अच्छा स्कूल था, बल्कि यह भी कि वहां लड़कियों का एक कॉलेज भी था। नहीं, मुझे लड़कियों से कोई दिलचस्पी नहीं हैं बल्कि उस कॉलेज के फ्रेंच विभाग में मेरा एक दोस्त था, जो कि मेरी लिखी किताबों को उस कॉलेज में पढ़ाए जाने में मददगार हो सकता था। उसी ने एक बार मुझे वहां लेक्चर देने के लिए भी बुलाया था, लेकिन उस समय मैंने मना कर दिया था। लेकिन अब मैं चाहता था कि मेरा एक बैकग्रांउड हो, एक पहचान हो। गैस्टन गोडिन का सहारा लेने की एक और वजह भी थी, जो कि आपको बाद में पता चलेगी।

साथ ही पैसे का भी सवाल था। हमारी इस महीनों लंबी सैर में मेरा सारा पैसा खत्म होता जा रहा था। बेशक मैं ज्यादातर सस्ते होटलों में ही ठहरा करता था, लेकिन अकसर महंगे डीलक्स होटलों में भी ठहरना पड़ जाता था, जिससे मेरे बजट की कमर ही टूट जाती थी। फिर पिकनिक और लो के कपड़ों पर भी काफी पैसा खर्च होता था। इसके अलावा, मेरे पास शैर्लट की जो पुरानी कार थी, वह हालांकि अभी भी काफी अच्छी हालत में थी, लेकिन जब-तब उसमें भी छोटी-बड़ी मरम्मत करानी पड़ जाती थी। अपना बयान लिखने के लिए अदालत

ने उस जमाने के जिन कुछ कागजात को देने की मेहरबानी की है, उनसे मैंने यह हिसाब लगाया कि उस एक साल, अगस्त 1947 से अगस्त 1948 तक के अंदर मैंने हम दोनों के खाने और रहने पर 5,500 डॉलर खर्च किए, गैस, तेल और कार की मरम्मत पर 1,234 डॉलर, और दूसरे खचर्चों पर भी लगभग इतने ही। और इस तरह से 150 दिन के सफर, जिसमें हम लगभग 27,000 मील चले, और 200 दिन के ठहराव के दौरान मैंने तकरीबन 8,000 डॉलर खर्च किए या यूं कहिए कि लगभग दस हजार डॉलर खर्च किए, क्योंकि मुझ जैसा भुलक्कड़ यकीनन बहुत से खर्चों को तो भूल भी गया होगा।

और इस तरह हम वापस बर्ड्सले की तरफ चल दिए। मैं अपनी प्यास बुझने के बावजूद परेशानहाल था, जबकि उसकी सेहत पहले से कहीं बेहतर हो गई थी। उसकी छाती अभी भी लड़कों की तरह सपाट थी, हालांकि उसका कद दो इंच और वजन आठ पौंड बढ़ चुका था। हम इस एक साल में हर जगह गए थे, लेकिन सच यह है कि हमने कहीं भी कुछ भी नहीं देखा

या घूमा। आज मैं सोचता हूं कि हमारे इस लंबे सफर ने हमें क्या दिया-शायद सिर्फ कुछ फटे-पुराने नक्शे, टूरिस्ट बुक्स, पुराने टायर और लोलिता की सिसकियां हर रात मेरी बनावटी नींद के बाद।

जब हम 14 थेयर स्ट्रीट पहुंचे तो एक छोटे से लड़के ने हमें गैस्टन की एक चिट्ठी और उस मकान की चाबियां पकड़ा दीं, जो कि गैस्टन ने हमें किराए पर दिया था। मेरी लो ने अपने चारों तरफ कुछ भी देखे बगैर घर में घुसते ही रेडियो चला दिया। इसके बाद उसने एक मेज पर पुरानी मैग्जीनों के एक चट्टे में से अपने लिए कुछ मैग्जीनें चुनीं और उन्हें लेकर सोफे पर लेट गई। रहने की जगह कैसी भी हो, मुझे उससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, अगर उसमें मेरे और लोलिता के लिए अकेले बंद होने की जगह हो। लेकिन गैस्टन के खतों से अभी तक मैं मकान के बारे में जो अंदाजा लगाता आया था, वह उससे काफी अलग था। असल में वह मकान शैर्लट के मकान, जो कि अब हमसे सिर्फ 400 मील दूर था, से काफी मिलता-जुलता था और बड़ा उदास-सा दिखाई देता था। मकान की छतों और कमरों की बनावट शैर्लट के ही मकान जैसी थी। यहां तक कि फर्नीचर की भी बनावट और सजावट कमोबेश वैसी ही थी। लेकिन मेरे लिए जो पढ़ने का कमरा था, वह काफी बड़ा था, जिसमें फर्श से लेकर छत तक केमिस्ट्री की लगभग दो हजार किताबें चुनी हुई थीं, क्योंकि मेरा मकान मालिक बर्ड्सले कॉलेज में केमिस्ट्री ही पढ़ाया करता था। मुझे उम्मीद थी कि बर्ड्सले स्कूल, जो कि एक महंगा स्कूल था और वहां लड़कियों के लिए एक जिमनेजियम भी था, वहां लड़कियों की जिस्मानी कसरत के साथ-साथ उन्हें अच्छी तालीम भी दी जाती थी। जब मैं स्कूल की हेड मिस्ट्रेस प्रैट से पहली बार मिला, तो पहले तो उसने मेरी

बेटी की 'खूबसूरत नीली आंखों' और गैस्टन जैसे काबिल आदमी से मेरी दोस्ती की तारीफ की। बाद में उसने लो को एक टीचर मिस कॉर्पोरन्ट के हवाले कर दिया और फिर मुझसे बोली, "डॉ. हम्बर्ड, हम अपने स्कूल की लड़कियों को किताबी कीड़ा बनाने, यूरोप की सारी राजधानियों के नाम या पुरानी जंगों की तारीखें याद करवाने से ज्यादा इस बात पर ध्यान देते हैं कि वे अपनी सामाजिक जिंदगी में कामयाब हो सकें। इसीलिए हम डांस, ड्रामा, बातचीत और मेलजोल जैसी चीजों पर ज्यादा जोर देते हैं। आपकी बेटी के लिए अब लोगों से मेलजोल, कपड़े पहनने का ढंग, तौर-तरीके वगैरह इतने ही जरूरी होंगे, जितने कि आपके लिए बिजनेस में कामयाबी। मैं अपनी लड़कियों का बहुत ध्यान रखती हूं। हम चाहते हैं कि

बच्चे अपने आसपास की दुनिया को बेहतर ढंग समझ सकें।

"डॉ. हम्बर्ग, पुराने ढंग के स्कूलों में जो बेकार की चीजें पढ़ाई जाती रही हैं, हमने उनको छोड़कर व्यावहारिक चीजों की तरफ ध्यान दिया है। ताकि लड़कियां आगे चलकर अपनी और अपने शौहरों की जिंदगी को अच्छी तरह संभाल सकें। मिस्टर हमरसन, लोग आमतौर पर बच्चों को स्कूल इसलिए भेजते हैं कि उन्हें अच्छी तालीम मिल सके। लेकिन तालीम या शिक्षा है क्या, शायद कोई नहीं बता सकता। मेरे कहने का मतलब है कि हो सकता है एक बच्चा बहुत सारी किताबें पढ़ लें, लेकिन अगर वह अपने आसपास की दुनिया को ही नहीं समझ सके, तो इतनी सारी किताबों को पढ़ने का क्या फायदा है? आप मेरी बात से सहमत होंगे डॉ. हम्बर्ड कि बच्चे के लिए पुरानी तारीखों को याद रखने से ज्यादा जरूरी है आज की तारीख को याद रखना। बगैर जिंदगी के तजुर्बे के सारी तालीम बेकार है।"

मैं उसकी इन बातों को सुनकर पहले तो बहुत परेशान हुआ, लेकिन बाद में उसी स्कूल से जुड़ी दो समझदार औरतों से बात करने पर मुझे पता चला कि स्कूल में अच्छी-खासी पढ़ाई होती है, और 'मेलजोल' वाली बात महज एक दिखावा है, जो कि पुराने ढंग के बर्ड्सले स्कूल को एक नया रूप देने के लिए की जाती है।

उस स्कूल की तरफ मेरे लगाव की एक वजह और भी थी, जो कि आपको तो अजीब सी लगेगी, लेकिन मेरे लिए बहुत अहम थी। हमारी गली के पार, ठीक हमारे घर के सामने एक खुला मैदान था, जिसमें रंग-बिरंगी झाडियां, ईंटों और बांसों के ढेर और तरह-तरह के फूल थे और उसके पार स्कूल की सड़क थी। इस तरह मैं अपने घर बैठा स्कूल को देख सकता था और लोलिता के स्कूल जाने के पहले ही दिन वहां कुछ मजदूरों ने काम करना शुरू कर दिया और एक दीवार बना डाली, जिसकी वजह से मैं स्कूल के खूबसूरत नजारे से महरूम हो गया। हालांकि उस काम को मजदूर बीच में ही छोड़कर चले गए, लेकिन मेरा तो काम बिगड़ ही चुका था।

थेयर स्ट्रीट में रहते हुए पड़ोसियों से बचना नामुमकिन सा काम था, लेकिन फिर भी मैं बड़ी समझदारी के साथ अपने संबंध बनाए या बिगाड़े हुए था। मैं उनके साथ नरमी बरतते हुए भी अलग-थलग रहा करता था। मेरा पश्चिमी पड़ोसी जो कि देखने से कोई बिजनेसमैन या कॉलेज का टीचर लगता था, अपने गार्डन में काम करते हुए-अपनी कार को धोते हुए या फिर दूसरे

किसी काम में लगे हुए मुझसे बातें करता रहता था, लेकिन मैं सिर्फ मुस्कुराकर या हां-हूं में उसे जवाब दिया करता था। सामने की तरफ के दो मकानों में दो इंग्लिश प्रोफेसर रहा करती थीं। वे दोनों-छोटे-छोटे बालों वाली मिस लैस्टर और नाजुक सी मिस फेबियन-सिर्फ एक ही बात किया करती थीं-मेरी बेटी की खूबसूरती या फिर गैस्टन गॉडिन की आकर्षक शख्सियत। लेकिन सबसे खतरनाक मेरी पूर्वी साइड की पड़ोसन थी-तीखी नाक वाली उस औरत का स्वर्गीय भाई कभी कॉलेज से भी जुड़ा रहा था। मुझे याद है कि जब मैं कमरे की खिड़की पर खड़ा बेताबी के साथ लोलिता के स्कूल से वापस आने का इंतजार कर रहा होता था, तो वह खतरनाक और गैर शादी-शुदा औरत मीठी-मीठी बातें करके मेरी लोलिता से तरह-तरह के सवाल किया करती थी। मेरी लो ठंड के बावजूद कोट के बटन खोले, गंदे मोजों के ऊपर अपने गुलाबी घुटनों के साथ, पेट पर किताबों का बोझ लगाए खड़ी रहती थी, और तुम्हारी मां कहां हैं? तुम्हारे पिता क्या काम करते हैं? तुम पहले कहां रहती थीं? जैसे सवालों से जूझती रहती थी। एक बार उसने मुझे भी घेरने की कोशिश की, लेकिन मैं किसी तरह बचकर निकल आया और उसके कुछ ही दिन बाद उसने मुझे एक चिट्ठी भेजी, जो कि जहर में लिपटी मिठाई की तरह थी। उसने लिखा था कि कि अगर लो चाहे, तो किसी छुट्टी के दिन वह उसके घर आकर बहुत सी अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ सकती है, बजाय इसके कि वह रात भर तेज आवाज से रेडियो चलाती रहे।

मुझे मिसेज होलिगन से भी होशियार रहना पड़ता था, जो कि हमारे घर खाना वगैरह बनाने का काम करती थी। हमसे पिछले किराएदार का खाना भी वही बनाती थी। हालांकि वह एक सीधी-सादी औरत थी और हालात को गहराई से नहीं देख पाती थी। लोलिता को दोपहर का खाना स्कूल में ही मिल जाता था और नाश्ते में मैं उसे मिसेज होलिगन का रात का बनाया खाना गर्म करके खिलाता था। अब तक मैं बिस्तर ठीक करने में महारत हासिल कर चुका था, लेकिन फिर भी मुझे डर लगा रहता था कि अगर चादर पर लगे किसी खतरनाक धब्बे पर मेरी नजर नहीं पड़ी और उसे मिसेज होलिगन ने देख लिया तो क्या होगा। हालांकि लो और मिसेज होलिगन कम ही एक साथ घर में हुआ करती थीं, लेकिन फिर भी कभी वे साथ हुई और बातों-बातों में लो ने उसे कुछ ऐसा बता दिया जिससे हमारी कलई

खुल जाए! मुझे हमेशा ऐसा लगता रहता था कि हम शीशे के एक ऐसे मकान में रह रहे हैं, जिसमें रोशनी जल रही है और कभी भी कोई भी उसमें झांककर वह सब कुछ देख सकता है, जिसे देखने के लिए शायद वह थोड़ा-बहुत पैसा भी खर्च करने से गुरेज नहीं करेगा।

एक शब्द गैस्टन गॉडिन के बारे में भी। मुझे अगर उसका साथ अच्छा लगता था या कम से कम मैं आराम से अगर उसे बर्दाश्त कर लेता था, तो इसकी सबसे बड़ी वजह यह थी कि उसकी वजह से मेरे राज पर पर्दा पड़ा हुआ था। ऐसी बात नहीं है कि वह इस राज को जानता था, उसे इस बारे में बताने के लिए मेरे पास कोई वजह भी नहीं थी। खुद वह भी अपने ही कामों में इतना उलझा रहता था कि मेरे मामले में वह कुछ गौर करता और शक कर पाता, इसलिए उसने कभी मुझसे कोई सवाल नहीं किया था। अगर उसे मेरे और लोलिता के बारे में पता चल भी जाता, तो इससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था। वह एक भोला-भाला और उदास-सा दिखाई देने वाला कुंवारा था। उसके सिर पर बाल कम ही रह गए थे। वह हमेशा काले कपड़े पहनता था। यहां तक कि उसकी टाई का रंग भी काला ही हुआ करता था। उसका ऊपरी हिस्सा पतला लेकिन निचला काफी चौड़ा था और चाल मदमस्त हाथी की तरह थी। लोग उसे बहुत पसंद करते थे। उसका घर मेरे घर के पास ही था और आसपास रहने वाले सभी छोटे लड़कों को वह नाम से जानता था। बच्चे उसके लिए घर के छोटे-मोटे कामों से लेकर सफाई तक का काम कर दिया करते थे और बदले में वह भी उनको ढेर सारी चॉकलेटें दिया करता था। उसके घर का तहखाना किसी गुफा की तरह लगता था, जिसमें जमीन पर मखमली कालीन बिछी हुई थी और दीवारों पर तरह-तरह के खंजर और बंदूकें सजी हुई थीं। ऊपर उसके कमरे में बड़े-बड़े रूसी और अंग्रेजी लेखकों और शायरों की तस्वीरें लगी हुई थीं। वहीं उसने एक छोटा-सा स्टूडियो भी बना रखा था, क्योंकि उसे थोड़ा-बहुत पेंटिंग का भी शौक था। उसके पास एक एलबम थी, जिसमें उसने पड़ोसियों के फोटो लगा रखे थे।

हम-मैं और गैस्टन-हफ्ते में दो-तीन बार शतरंज की बाजी खेला करते थे। लेकिन मैं यह खेल उसके बजाय अपने ही घर पर खेलना पसंद करता था। आप समझ सकते हैं कि क्यों! वह अपने झुर्रीदार हाथों को गोद में रखे इस तरह बैठा होता था, जैसे कोई लाश हो। इसी तरह दस मिनट तक सोचते रहने के बाद वह ऐसी चाल चलता था, जिससे खुद उसे ही शिकस्त हो जाती थी। कभी-कभी इससे भी ज्यादा देर तक सोचने के बाद वह किसी बूढ़े कुत्ते की तरह गुर्राकर एक ठंडी सांस भरता हुआ नजरें उठाकर देखता और तब मैं बाजी की तरफ इशारा करके उसे बताता कि उसे मात हो चुकी है।

कभी-कभी इसी तरह मेरे कमरे में शतरंज खेलते-खेलते हमें लो के डांस की प्रैक्टिस करने की आवाज आती, लेकिन गैस्टन के कान पे जूं तक ही नहीं रेंगती थी। जब शोर ज्यादा ही तेज होता, तो वह बस अपनी खोपड़ी या गाल सहलाकर रह जाता था। अगर कभी हमारे खेल के

दौरान लो वहां आ जाती, तो वह बड़े रस्मी ढंग से अपनी सीट से उठकर खड़ा होता। लो से हाथ मिलाता और फौरन ही उसका हाथ छोड़कर उस जाल में फंस जाता था, जो शतरंज की बाजी में मैंने उसके लिए बिछाया होता था।

मैं उसके बारे में इतनी ज्यादा बात नहीं करना चाहता (एक साल बाद वह एक समुद्री सफर पर यूरोप गया, जहां से वह लौटा नहीं)। मैं उसका जिक्र भी नहीं करता अगर हमारे बर्ड्सले में रहने में उसका हाथ नहीं होता। मैं अपने बचाव के लिए उसका जिक्र करना चाहता हूं। वह एक ऐसा आदमी था, जिसमें कोई भी खास बात नहीं थी, वह एक साधारण टीचर था। एक मोटा बूढ़ा आदमी था जिसे अमेरिकी जिंदगी से नफरत थी और अंग्रेजी न जानने का घमंड था। उसे बूढ़े भी पसंद करते थे और छोटे भी पसंद करते थे। पता नहीं दूसरे लोग उसे बेवकूफ बना रहे थे या वह दूसरे लोगों को।

और अब मुझे लोलिता के चरित्र में गिरावट के बारे में आपको बताना है। दरअसल, मैं अब तक जज्बाती रूप से कमजोर हो चुका था। मेरी समझ-बूझ पर मेरे जज्बात का साया था। और मैं अपनी इस स्कूली किशोरी के साथ बहुत खुश था। वह लगातार मेरी कमजोरी बनती जा रही थी और इसी बात का उसने फायदा उठाया।

उसको मैं हर हफ्ते 21 सेंट का जेब खर्च दिया करता था बशर्ते कि वह अपना फर्ज निभाती रहे। एक बात हमारे बर्ड्सले के दिनों के शुरू की है। आखिर तक मैंने उसका जेब खर्च बढ़ाकर 1 डॉलर 5 सेंट कर दिया था। इतना जेब खर्च उसके लिए काफी था, खासतौर से इसलिए भी कि मैं उसे तरह-तरह के तोहफे भी देता रहता था। फिल्में, चॉकलेट या किसी भी दूसरी चीज के लिए उसे सिर्फ एक बार कहना भर पड़ता था। यह अलग बात है कि इतने सब कुछ के बदले मैं उससे एक चुंबन ज्यादा मांग लूं या कभी उसको किसी चीज का ज्यादा ही शौक हो, तो उसके बदले मैं चुंबन से ज्यादा भी कुछ मांग लूं। लेकिन उसे हैंडल करना बड़ा ही मुश्किल काम था, क्योंकि उसे जब भी ऐसा लगता कि मेरी जरूरत उसकी जरूरत से ज्यादा सख्त है, तो वह मुझे बुरी तरह सताती थी। वह जानती थी कि मैं अपनी जरूरत पूरी किए बगैर कुछ दिनों से ज्यादा नहीं रह सकता और जबरदस्ती भी अपनी जरूरत नहीं पूरी कर सकता। इस तरह वह अपना जेब खर्च रोज-बरोज

बढ़ाती जा रही थी। अक्सर, कुछ खास मौकों पर वह मुझसे कुछ ज्यादा ही पैसे ऐंठ लेती थी,

लेकिन फिर भी मैं उसे निकलकर जाने नहीं देता था। मैं अकसर उसके कमरे में जाकर तलाशी लेता था। एक बार उसकी एक किताब में मुझे आठ डॉलर मिले, जिन्हें मैंने अपने पास ही रख लिए। अगले ही दिन उसने ईमानदार मिसेज होलिगन पर चोरी का इलजाम लगा दिया। लेकिन उसके बाद उसने अपने पैसे छुपाने की जगह ही बदल दी, जिसे लाख ढूंढने के बावजूद मैं नहीं तलाश कर पाया। मगर उसके बाद मैंने उसका जेब खर्च कम कर दिया। मुझे डर बस इतना था कि वह कुछ पैसा जमा करके मुझे छोड़कर न भाग जाए। उसे शायद ऐसा लगता था कि अगर उसके पास पचास डॉलर हो जाएं तो वह हॉलीवुड या अपने सपनों की उस दुनिया में पहुंच जाएगी, जहां कारें होंगी, महल होंगे, चांद-तारे होंगे और नौकर-चाकर होंगे।

योर ऑनर, मैंने लड़कों के मसले से निपटने के लिए बहुत कोशिश की। इस मामले में मैं लो के साथ कैसा बर्ताव करूं, इसके लिए मैं 'बर्ड्सले स्टार' में किशोरों के लिए कॉलम भी पढ़ा करता था-

'एक शब्द पिताओं के लिए। अपनी बेटी के दोस्त को भगाइए मत। हो सकता है कि यह बात हजम करना आपके लिए बहुत मुश्किल हो कि आपकी बेटी लड़कों को पुर-कशिश लगने लगी है, जबकि आपके लिए वह अभी बच्ची ही है। आज आप बड़े-बड़े काम करते हैं, लेकिन आप शायद भूल गए कि स्कूल के दिनों में अपनी एक हसीन दोस्त की किताबें पकड़कर चलते थे। अब जबकि आपकी बेटी की बारी आई है, तो उसे भी अपने प्रशंसकों के बीच रहने दीजिए, उन प्रशंसकों के बीच, जिन्हें वह खुद भी पसंद करती है। क्या आप नहीं चाहते कि वह भी जिंदगी का मजा लूटे?'

जिंदगी का मजा! ओह माई गॉड!

'उसके दोस्तों का अपने घर में मेहमानों की तरह इस्तकबाल कीजिए। उनके साथ बात कीजिए, उन्हें जानिए, उनके साथ एक अच्छे मेजबान की तरह हसिए और बोलिए। अगर आपकी बेटी से कोई गलती हो जाए, तो उसके साथी के सामने उसे डांटिए मत। अपनी नाराजगी अकेले में जाहिर कीजिए और लड़कों को यह मत महसूस होने दीजिए कि वह एक बूढ़े खूसट की बेटी है।'

सबसे पहले इस बूढ़े खूसट ने फैसला किया कि लो को कहां जाने की इजाजत बिल्कुल नहीं देनी है और कहां थोड़ी सी छूट देनी है। उसे किसी एक, दो या तीन लड़कों के साथ जाने के लिए मैंने बिल्कुल साफ मना कर दिया, क्योंकि इसके बाद उसका अगला कदम 'ऑर्जी' या

ग्रुप सेक्स ही होता। वह अपनी सहेलियों के

साथ आइसक्रीम खाने या घूमने के लिए जाए और वहां कोई लड़का मिल जाए, तो उससे बात करने की उसे इजाजत थी, क्योंकि ऐसे मौके पर उससे थोड़ी ही दूरी पर मैं अपनी कार में मौजूद होता उसे इस बात की भी इजाजत थी कि वह अपने घर पर अपने स्कूल के लड़के-लड़कियों को पार्टी दे सकती है। लेकिन किसी लड़के के साथ फिल्म देखने या स्कूल के साथियों के घरों पर लड़के-लड़कियों की पार्टियों में जाने या मेरी इजाजत के बगैर किसी लड़के से फोन पर बात करने के लिए मैंने उसे सख्ती से मना कर रखा था, चाहे फोन पर की जाने वाली बात उस लड़के के लो की किसी सहेली से ताल्लुकात के बारे में ही क्यों न हो।

इस सब पर लो को बहुत गुस्सा आता था और वह मुझे तरह-तरह की गालियां देती रहती थी। मुझे भी शायद उस पर गुस्सा आ जाता, लेकिन फिर मैंने सोचा कि उसका गुस्सा किसी हद तक ठीक ही था, क्योंकि मैंने जिन चीजों से उसे रोका था वह एक तरह से उसका हक ही तो था।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह चोरी-छुपे किसी लड़के से मिली ही नहीं होगी, क्योंकि मैं उसके खाली वक्त पर कितनी भी नजर क्यों न रखूं, कभी न कभी तो वह मेरी नजरों से बच ही जाती थी। लेकिन फिर भी मुझे लगता था-और आज मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि खतरे की कोई बात थी नहीं। क्योंकि उसे स्कूल के सभी तरह के लड़के सीधे-सादे, बेवकूफ जिन्हें हाथ पकड़ने में ही सब कुछ मिल जाता है, से लेकर चालाक और बलात्कारी किस्म के लड़के तक नापसंद थे। उसकी एक किताब में मैंने बाद में लिखा देखा, 'लड़कों के बारे में बातों से मुझे घुटन महसूस होती है,' और आगे मोना (जिसके बारे में आप जल्दी ही जानेंगे) ने लिखा था, 'और रिगर के बारे में क्या ख्याल है?'

उसके साथी लड़के कुल मिलाकर मैंने बहुत कम देखे। एक बार लड़का उसे घर तक छोड़ने आया था। मैंने अपने कमरे की खिड़की से खड़ा देखता रहा कि पोर्च तक आने के बाद वह हमेशा की तरह किताबें अपने सीने से लगाए अपनी आदत के मुताबिक कभी एक टांग पर, कभी दूसरी टांग पर खड़ी उससे बातें करती रही थी। इसी तरह एक बार एक रेस्टोरेंट के सामने वह एक और लड़के से बातें करती रही, हंसती-खिलखिलाती रही, जबकि लड़के की मां और बहन मुझे अपने साथ टहलाती हुई वहां से दूर ले जाना चाहती थीं। लेकिन फिर मेरे

आवाज देने पर मुस्कुराते चेहरे के साथ वह मेरी तरफ चली आई थी। मुझे उसकी एक-एक अदा खूबसूरत लगती थी-चाहे यह उसका 'ओह डियर' कहना हो या लंबा सा 'नो-ओ' कहना। मैं उसे थेयर स्ट्रीट में इधर-से-उधर साइकिल पर घूमते देखता रहता-वह साइकिल चलाते-चलाते पैडलों पर उचकती, फिर साइकिल की गद्दी पर आराम से बैठती और साइकिल की रफ्तार कम होने का इंतजार करती। फिर

वह लैटर-बॉक्स पर रुकती और साइकिल पर चढ़े-चढ़े उसमें से कोई मैग्जीन निकाल कर देखती, वापस लैटर बॉक्स में रखती और फिर जबान निचले होंठ के किनारे पर लगाते हुए पैरों से जोर लगाकर फिर से साइकिल को आगे बढ़ा देती। कुल मिलाकर मुझे लगता था कि लोलिता का दिल बर्ड्सले में अच्छी तरह से लग गया है। मैं भी हर तरह से उसका ध्यान रखने की कोशिश करता था।

लोलिता की सहेलियां, जिनसे मैं चाहता था, कुल मिलाकर निराशाजनक साबित हुई। ओपल, लिंडा हॉल, एविस चैपमैन, इवा रोजेन और मोना डाल (एक को छोड़कर शायद बाकी सभी नाम मुझे गलत याद हैं) उसकी खास सहेलियां थीं। ओपल एक बेडौल, मुंहासों भरी और चश्मे वाली लड़की थी जो कि लो को बहुत पसंद करती थी, हालांकि लो उसे बहुत तंग किया करती थी। लिंडा हाल, जो कि स्कूल की टेनिस चैम्पियन थी, हफ्ते में कम-से-कम दो मैच लो के साथ जरूर खेला करती थी-मुझे लगता है कि लिंडा सचमुच एक शानदार किशोरी थी, लेकिन पता नहीं क्यों वह हमारे घर नहीं आती थी-शायद उसे आने नहीं दिया जाता था। उसके बारे में मुझे इतना ही याद है कि वह सूरज की एक चमकीली किरन थी। बाकी एविस बालों भरी टांगों वाली एक मोटी-सी लड़की थी, जबकि मोना हालांकि खूबसूरत और पुरकशिश थी और मेरी जान से सिर्फ एक साल बड़ी थी, लेकिन देखने से वह किशोरी नहीं लगती थी। इवा रोजेन हालांकि बहुत खूबसूरत नहीं थी। लेकिन अपने सुडौल नाबालिग जिस्म, आंखों और गाल की हड्डियों की वजह से एक आदर्श किशोरी की खूबसूरत मिसाल थी। उसके तांबे जैसे रंग के बालों में लोलिता के बालों जैसी चमक थी और उसके दूध जैसे सफेद चेहरे के नाक-नक्शे, गुलाबी होंठ और चमकदार पलकें उसे एक ऐसी मासूमियत बख्शते थे, जो उसकी उम्र की दूसरी लड़कियों में नहीं होती है। वह ज्यादातर काले या गहरे रंग के कपड़े और ऊंची एड़ी के काले जूते पहनती थी। मैं अक्सर उससे फ्रेंच में बात करता था (क्योंकि वह एक फ्रांसीसी शरणार्थी थी) और लोलिता को यह अच्छा नहीं लगता था। बदकिस्मती से, इससे पहले कि मैं अपने घर में उसकी महकदार मौजूदगी से फायदा उठा पाता, लोलिता ने उससे दोस्ती खत्म कर दी। आप जानते ही हैं कि मैं इस बात को बहुत अहमियत देता था कि लोलिता के

आसपास दासियों की तरह दूसरी किशोरियां रहें। इसलिए, कुछ समय तक मैंने अपना ध्यान मोना डाल की तरफ लगाने की कोशिश की, क्योंकि वह अक्सर हमारे घर पर मौजूद होती थी, खासतौर से इसलिए कि वह और लो दोनों ही ड्रामों की बहुत शौकीन थीं। मैं आज तक सोचता हूं कि लोलिता ने उसे हमारे बारे में कौन-सा राज बता दिया था, जबकि दूसरी तरफ मेरे बार-बार कहने और पैसे देने पर उसने मुझे बताया था कि मोना का एक फौजी से 'संबंध' है। मोना की आवाज

भारी थी, बाल काले, आंखें चमकीली और भरे-भरे होंठ थे। वह बहुत ज्यादा ज्वैलरी पहनती थी, जिसकी वजह से उसे स्कूल में डांट भी पड़ती थी। उसकी औरतों जैसी कमर पर एक भूरा तिल भी था, जो मैंने तब देखा, जब वह और लो बटलर एकेडमी के एक डांस में भाग ले रही थीं।

मैंने मोना से यह जानने की बहुत कोशिश की कि लो की दोस्ती किस तरह के लड़कों से है, लेकिन चालाक मोना ने कभी भी मुझे इस बारे में कुछ नहीं बताया। एक बार लो टेनिस खेलने लिंडा हाल के क्लब गई हुई थी। उसने मुझे फोन किया कि वह पूरा आधा घंटा लेट हो सकती है। इसलिए, इस बीच अगर एक ड्रामे के रिहर्सल के लिए मोना आए, तो मैं उसका ध्यान रखूं। मोना आई तो मैंने फिर से लोलिता के दोस्तों के बारे में जानने की कोशिश की। मेरी तरफ देखते हुए बड़ी मीठी सी आवाज में उसने कहा, "सर, सच बात तो यह है लोलिता लड़कों से ज्यादा दिलचस्पी बड़ों में लेती है। इस मामले में वह और मैं एक-दूसरे के रकीब हैं, क्योंकि हम दोनों ही पादरी रिगर के चक्कर में हैं।" मैं जानता था कि मोना मजाक कर रही है, क्योंकि रिगर एक भद्दा सा आदमी था और बहुत ज्यादा बोर था।

मैंने मोना से और भी कई सवाल पूछे। डांस कैसा रहा? एक गदर था। क्या था? बहुत बढ़िया था। क्या लो ने काफी डांस किया था? बहुत ज्यादा तो नहीं, बस इतना जितना कि वह कर सकती थी। तुम लो के बारे में क्या सोचती हो, स्कूल में वह कैसी चल रही है? वह एक अच्छी लड़की है? उसका बर्ताव कैसा है? वह बहुत अच्छी लड़की है। फिर भी? "अरे, वह तो एक गुड़िया है," मोना ने कहा। एक ठंडी सांस लेते हुए पास रखी एक किताब को उठा लिया और बड़ी संजीदगी के साथ पूछने लगी, "मुझे बालजैक के बारे में बताइए। क्या वह वाकई इतना ही अच्छा था, जितना कि उसके बारे में कहा जाता है?" इतना कहकर वह अपनी कुर्सी मेरे इतने करीब ले आई कि मुझे उसके बदन में लगी क्रीम की खुशबू अपने नथुनों में घुसती

महसूस होने लगी। अचानक एक सवाल मेरे दिमाग में कौंध आया, क्या लोलिता मेरे और मोना के बीच दलाली कर रही है। अगर हां तो उसने गलत लड़की चुनी। मोना की नजरों से बचता हुआ मैं एक किताब पढ़ने लगा। तभी वहां लोलिता आ गई और आंखें फाड़-फाड़कर हमें देखने लगी। मैं दोनों सहेलियों को साथ छोड़कर वहां से बाहर चला आया।

कभी-कभी, जब लोलिता अपना होम वर्क कर रही होती थी, अपनी पेंसिल चूसती हुई, इधर-उधर डोलती हुई अपनी दोनों टांगें अपनी आराम कुर्सी के दोनों हत्थों पर रखती हुई, तो मैं एक टीचर होने के अपने सारे फर्ज भुलाकर, लोलिता

के साथ हुए सारे झगड़ों को भुलाकर, अपनी मर्दाना शान को भुलाकर घुटनों के बल चलता हुआ लोलिता की कुर्सी तक पहुंच जाता था। तब वह मेरी तरफ ऐसे गुस्से और बे-यकीनी के साथ देखती थी, जैसे कह रही हो, "ओह नो, दोबारा नहीं, इतनी जल्दी नहीं।" क्योंकि उसे कभी ऐसा नहीं लगता था कि मैं बगैर किसी तैयारी और वजह के उसके पास आकर अचानक अपना चेहरा उसकी स्कर्ट के अंदर डाल दूंगा। उसके उन नन्हे-मुन्ने पतले-पतले नंगे बाजू, जिन्हें अपनी बांहों में समेटकर मैं उसकी आंखों को चूम लेता था, और वह कहती थी, "प्लीज, मुझे छोड़ दो, भगवान के लिए, मुझे छोड़ दो।" और मैं फर्श से उठ खड़ा होता था, जबकि वह 'मुझे' देखती रहती थी और मुंह चिढ़ाती थी। लेकिन खैर, कोई बात नहीं, मैं तो हूं ही जंगली। मैं अपनी कहानी आगे बढ़ाता हूं।

एक सोमवार को, शायद दिसंबर में स्कूल की हेड मिस्ट्रेस प्रैट ने मुझे बातचीत के लिए बुलाया। मुझे मालूम था कि लो के नंबर अच्छे नहीं आए थे। लेकिन चोर की दाढ़ी में तिनके वाली बात थी, मुझे कुछ और भी डर लगा हुआ था। बहरहाल, जाना तो था ही, इसलिए मैं गया भी।

जब मैं लंबी-चौड़ी, सफेद बालों और बड़ी-सी चपटी नाक और छोटी-छोटी आंखों वाली प्रैट के कमरे में पहुंचा, तो उसने मुझे बिठाया। काफी देर तक मुझे घूरते रहने के बाद उसने कहा, "मैं आप से एक सीधा सवाल पूछती हूं? क्या आप एक दकियानूस किस्म के बाप नहीं हैं?"

"नहीं तो," मैंने कहा।

उसने एक ठंडी सी सांस छोड़ी, मुझे देखा, और फिर से बोली, "आपकी बेटी एक बहुत प्यारी बच्ची है, लेकिन जिस्म में बालिग होने पर आने वाले बदलाव की वजह से उसे परेशानी हो रही है।"

मैंने धीरे से सिर झुका दिया। और मैं कर भी क्या सकता था?

"वह एक बैडमिंटन की शटल की तरह," मिस प्रैट अपने हाथों के इशारे से बता रही थी, "गुदा और योनि के विकास की कशमकश में मुब्तेला है।"

"माफ करना," मैंने कहा। "किसका विकास?"

"यह आपके अंदर का दकियानूसी यूरोपियन बोल रहा है!" मिस प्रैट ने मेरी कलाई पर हाथ मारते हुए अचानक अपने दांत निपोरकर कहा। "मेरे कहने का बस इतना मतलब है कि उसकी जिम्मेदारी और दिमागी जरूरतें-क्या आप सिगरेट पीते हैं-मेल नहीं खा पा रही हैं। वह खूबसूरत है, समझदार है, लेकिन लापरवाह है (जोर-जोर की सांसें लेती हुई मिस प्रैट ने अपनी सीट से उठे बगैर एक डेस्क से लो का रिपोर्ट कार्ड निकाला)। उसके नंबर रोज-बरोज खराब होते जा रहे हैं। मुझे

हैरत है-खैर, छोड़िए-वैसे मैं सिगरेट पीती हूं। ऐसा नहीं है कि मुझे इस पर फख है, बस मुझे सिगरेट पीना अच्छा लगता है।"

अजीब औरत थी? पता नहीं चलता था कि क्या कहना चाहती है और क्या कह रही है। कुछ कागज ढूंढते हुए उसने कहा, "मैं आपको थोड़ा तफसील से बताती हूं। वह मिस रैडकॉक का कहना नहीं मानती है और मिस कॉर्पोरन्ट से बदतमीजी से पेश आती है। वह क्लास में सबके साथ मिलकर गाना पसंद करती है, हालांकि अक्सर ऐसा लगता है, जैसे उसका दिमाग कहीं और भटक रहा हो। वह टांग पर टांग रखकर बैठती है। संगीत की ताल के साथ अपना बायां पैर हिलाती है। अक्सर गालियां भी देती है। वैसे मैं जानना चाहती हूं कि उसकी मां क्या करती थी और आप क्या करते हैं? खैर, छोड़िए। मुझे कुछ और ही पूछना था। शायद वह घर का कोई काम नहीं करती है। आपने अपनी बेटी की परवरिश राजकुमारी की तरह की है, ना? और

क्या है इस रिपोर्ट में? हां, उसकी आवाज अच्छी है। कुछ खोई-खोई रहती है। हंसी-मजाक भी करती है। और यह उसकी नई रिपोर्ट है। मिस गोल्ड का कहना है कि वह टेनिस बहुत अच्छा खेलती है, लिंडा हॉल से भी बेहतर, लेकिन उसमें भी लापरवाही बरतती है। मिस कॉमौरन्ट का कहना है कि पता नहीं क्यों कभी-कभी लोलिता अपने जज्बात को बहुत अच्छी तरह कंट्रोल कर लेती है या फिर कभी बिल्कुल ही नहीं। मिस हॉर्न का कहना है कि लोलिता अपने जज्बात का इजहार नहीं कर पाती, जबकि मिस कोल के मुताबिक वह काफी तंदुरुस्त है। मिस मोलर कहती है कि लोलिता की दूर की नजर कमजोर है, जिसके लिए उसे एक अच्छे आंखों के डॉक्टर से मिलना चाहिए, लेकिन दूसरी तरफ मिस रैडकॉक का कहना है कि वह सिर्फ पढ़ाई से बचने के लिए आंखों में दर्द का बहाना करती है। लेकिन, मिस्टर हम्बर्ट, हम लोग एक चीज के बारे में काफी परेशान हैं। स्कूल की सारी ही टीचर्स का मानना है कि सेक्स के बारे में लोलिता कोई भी दिलचस्पी नहीं लेती है, हालांकि वह चौदह साल की हो चुकी है। हम चाहते हैं कि हमारी लड़कियां अपने पति और बच्चों के साथ खुश रहें और उन्हें भी खुश रख सकें। हमें लगता है कि लोलिता भी अगर अपनी लापरवाही को खत्म कर दे तो वह भी अपनी जिंदगी को कामयाब बना सकती है। लोलिता किसी हद तक जिद्दी है। सभी का मानना यह है कि अगर आपका फैमिली डॉक्टर उसकी अच्छी देखभाल करे-अगर आप उसे अपनी सहेलियों के भाइयों या डॉ. रिगर की संस्था के लड़कों के साथ घुलने-मिलने की इजाजत दें, तो यह उसके लिए बहुत अच्छा होगा।"

"वह अपने घर पर लड़कों के साथ घुल-मिल सकती है," मैंने कहा। "मुझे यकीन है," प्रैट ने खुशी से कहा। "जब हमने उससे उसकी परेशानियों के बारे में पूछा, तो उसने अपने घरेलू मामलों के बारे में कुछ नहीं कहा। लेकिन हमने उसकी कुछ सहेलियों से बातचीत की, और-"

"मैंने हमेशा अपने आपको एक हमदर्द बाप समझा है," मैंने कहा।

"बेशक, बेशक, लेकिन मिस कॉमौरन्ट का कहना है और मैं भी मानती हूं कि लोलिता को सेक्स से संबंधित अपने ख्यालात और ख्वाहिशों को जाहिर करने का मौका नहीं मिल पा रहा है।"

मैंने जवाब में सिर्फ अपने कंधे उचका दिए।

"मिस्टर हम्बर्ट, हमें मिलकर बैठना होगा और सोचना होगा कि उस बच्ची को आखिर परेशानी क्या है।"

"मुझे तो वह बिल्कुल ठीक-ठीक लगती है," मैंने कहा, लेकिन अंदर-ही-अंदर मैं डर गया था कि क्या आखिरकार हमारी कलई खुल ही गई है, क्या उन्होंने लो को हिप्नोटाइज करके सब कुछ पता लगा लिया है?

"मुझे जो चीज परेशानी में डाले हुए है," प्रैट बोली, "वह यह है कि हम सबका मानना है कि लोलिता एक दुखी और परेशान लड़की है, लेकिन फिर भी आप उसको उन चीजों से क्यों रोकते हैं, जो उसकी उम्र के बच्चों के लिए नॉर्मल होती हैं।"

"आपका मतलब सेक्स से है?" मैंने कहा।

"बात यह नहीं है। इसमें शक नहीं कि बर्ड्सले स्कूल में डांस और ड्रामा वगैरह होते हैं, जिसमें लड़कियां लड़कों से भी मिलती-जुलती हैं, लेकिन इसे हम सेक्स नहीं कह सकते। इसीलिए मैं चाहती हूं कि बर्ड्सले कॉलेज में जो नाटक होने वाला है, उसमें आपकी बेटी भाग ले।"

"ठीक है", मैंने कहा। "आप जीतीं। लोलिता नाटक में भाग ले सकती है, बशर्ते कि नाटक में लड़कों के रोल भी लड़कियां ही करें," मैंने कहा।

"मुझे आपकी बात से खुशी हुई," प्रैट ने कहा। "और यकीनन इस बात से मिस गोल्ड, जो हमारे ड्रामा ग्रुप की इंचार्ज हैं वे भी खुश होंगी, क्योंकि वह स्कूल की उन कुछेक टीचर्स में हैं, जो लोलिता को किसी हद तक पसंद करती हैं। अब मैं आपसे एक खास बात करना चाहती हूं।"

थोड़ी देर रुककर वह आगे बोली, "देखिए, मैं साफ बात करने की आदी हूं, लेकिन उसूल तो उसूल हैं। हमारे स्कूल में काफी अच्छे-अच्छे परिवारों की लड़कियां पढ़ती हैं, और ऐसे में यह बर्दाश्त करना बड़ा मुश्किल है कि लोलिता या कोई भी दूसरी लड़की गंदी जबान का इस्तेमाल करे। हो सकता है कि वह खुद ऐसे शब्दों का मतलब नहीं जानती हो, लेकिन अभी पिछले

दिनों मिस रैडकॉक ने लड़कियों में कुछ पेपर्स बांटे थे, जिस पर लोलिता ने अपनी लिपस्टिक से एक ऐसा शब्द लिखा था जिसका मतलब होता पेशाबघर मेरे ख्याल से बेहतर यही होगा कि लोलिता को यहीं बुलाया जाए और उससे अभी इसी वक्त इस बारे में बात की जाए।"

97

"नहीं वैसे तो आप अपने स्कूल के उसूलों के मुताबिक जो चाहें कर सकती हैं, लेकिन मैं उससे इस मामले में घर पर ही बात करना पसंद करूंगा।" मैंने कहा।

"ठीक है," प्रैट ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। "हम कुछ दिन बाद फिर मिलेंगे और अगर हालात में कोई सुधार नहीं हुआ, तो हम इस बारे में उसे किसी डॉक्टर को दिखाएंगे।"

क्या मैं प्रैट से शादी करके उसका गला घोंटकर मार डालूं?

"और मेरी राय है कि आप अपने फैमिली डॉक्टर से भी उसके बारे में बात करें। इस वक्त लोलिता मशरूम में है, आप चाहें तो उससे मिल सकते हैं।"

इंग्लैंड के लड़कियों के एक मशहूर स्कूल की नकल में बर्ड्सले स्कूल ने भी अलग-अलग क्लासों को अलग-अलग नाम दे रखे थे। मशरूम भी एक क्लास का नाम था। मैं वहां पहुंचा तो लोलिता और दूसरी लड़की वहां बैठी कुछ पढ़ रही थीं। मैं खामोशी से जाकर उनके पीछे बैठ गया।

दिसंबर के आखिर में लोलिता ठंड से बीमार हो गई। मिस लैस्टर ने उसे अपनी एक दोस्त डॉ. आइल्से ट्रिस्ट्रैमसन (वह एक अच्छी औरत थी, उसने मेरे और लोलिता के बारे में कुछ भी जानने की कोशिश नहीं की) को दिखाया। आइल्से ने बताया कि लो के फेफड़ों पर सूजन है और उसे कम से कम एक हफ्ते के आराम की जरूरत है। उसे बुखार था और मेरी बांहों में भी वह कांपती, खांसती और कराहती रहती थी। जैसे ही उसकी तबीयत ठीक हुई, मैंने उसके लिए लड़कों के साथ पार्टी रखी।

पार्टी में तीन लड़कों और तीन लड़कियों को बुलाया गया था, लेकिन एक लड़की तो आई ही नहीं, एक लड़का अपने साथ एक दोस्त को ले आया। इस तरह चार लड़के और दो लड़कियां थीं। मैं, हालांकि दिखाने के लिए तो ऊपर अपने कमरे में चला गया था, लेकिन हर दस-बीस

मिनट बाद मैं अपना पाइप लेने या अखबार ढूंढने के बहाने नीचे आ जाया करता था। कुछ देर तो वे लोग डांस करते रहे, फिर उन्होंने अंताक्षरी खेली, लेकिन कुल मिलाकर पार्टी कामयाब नहीं रही। सबके जाने के बाद लोलिता कहने लगी कि उसने इतने बेहूदा लड़के कभी नहीं देखे और ऐसा कहने के इनाम में मैंने उसे टेनिस का एक नया बल्ला दिलाया।

जनवरी में हल्की-सी गर्मी शुरू हो गई और फरवरी में बर्ड्सले के लोग कह रहे थे कि उन्होंने इस जमाने में ऐसा मौसम पहले कभी नहीं देखा। लो की सालगिरह पर मैंने उसे एक साइकिल और अमेरिकन पेंटिंग के इतिहास पर एक किताब भेंट की। साइकिल पर सवारी करने में उसके कूल्हों का हिलना देखकर मुझे बहुत अच्छा लगता था, लेकिन पेंटिंग की किताब में लो ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

98

हरे, गुलाबी, पीले फूलों के साथ जब तक बसंत का मौसम आया, लोलिता उस ड्रामे में बुरी तरह बिजी हो चुकी थी, जिसमें उसे हिस्सा लेने के लिए मैं प्रैट से वादा कर चुका था। एक दिन एक रेस्टॉरेंट में मैंने प्रैट को कुछ लोगों के साथ लंच करते भी देखा, और उसने मुझे देखकर (जबकि लोलिता की नजर उसकी तरफ नहीं थी) हाथ से इशारा भी किया। मुझे ड्रामे और थिएटर से सख्त नफरत है, हालांकि कुछ ड्रामों में कभी-कभी अच्छी कविता भी सुनने को मिल जाती है। लेकिन इसके अलावा उनमें बाकी सब कुछ बेवकूफी भरा होता है।

चूंकि उन दिनों मैं खुद अपनी पढ़ाई-लिखाई में काफी मसरूफ था, इसलिए मैं 'मोहित शिकारी' (थे इचांटेड हंटर) (वह नाटक जिसमें लोलिता काम करने वाली थी) नहीं पढ़ा सका। लेकिन रिहर्सल के लिए उसे जो पेपर्स मिले थे, जिन्हें वह घर में हर जगह फेंकती थी, कभी-कभी उन्हें उठाकर मैं उन पर एक नजर डाल लिया करता था। उन्हीं से मैंने अंदाजा लगाया कि नाटक में लो का रोल एक किसान की बेटी का है, जो अपने आपको जंगल की एक चुड़ैल समझती है। उसके हाथ जादू की एक किताब लग जाती है, जिससे थोड़ा-बहुत जादू सीखकर वह जंगल में भटके हुए शिकारियों पर जादू कर देती है। लेकिन आखिरकार खुद उसके ऊपर एक आवारा शायर (जिसका रोल मोना डाल कर रही थी) का जादू चल जाता है।

नाटक को देखकर मुझे 'मोहित शिकारी' (थे इचांटेड हंटर) नाम का वह होटल याद आ गया, जहां ठहरना तो मेरे साथ शैर्लट चाहती थी, लेकिन जहां मैं और लो पहली बार साथ ठहरे थे।

यकीनन नाटक के लेखक ने उसी होटल से अपने नाटक का नाम चुराया होगा। लेकिन मैंने लो को उस होटल की याद नहीं दिलाई। मुझे डर था कि वह नाराज हो जाएगी। हालांकि मैंने इस नाटक को कोई खास अहमियत नहीं दी, लेकिन नाटक के बारे में मुझे ऐसा लगता था कि यह बहुत ही बचकाना है। हालांकि हकीकत यह थी कि इसका पहला शो तीन-चार महीने पहले ही न्यूयॉर्क के किसी ड्रामा ग्रुप ने किया था। इसमें छः लाल टोपी पहने शिकारी (एक बैंक में काम करने वाला आदमी, एक प्लंबर, एक पुलिसवाला, एक कब्रें खोदने वाला, एक बीमे वाला और एक फरार मुजरिम) ऐसे हैं, जिन्हें लो अपनी गुफा में ले जाती है और उन पर जादू करके उन्हें इस बात का यकीन दिलाती है कि अब तक उन्होंने जो जिंदगी गुजारी थी, वह सिर्फ एक ख्वाब था और अब उनकी असल जिंदगी है। रिवायती जोकरों वाली हरी टोपी पहने जब सातवां शिकारी जो कि एक जवान शायर है, लो की गुफा में जाता है, तो वह लो की हजार कोशिश करने के बावजूद उसकी बात का यकीन नहीं करता है। आखिर लो उसको जंगल से दूर अपने खेत पर ले जाती है, और उसे यह यकीन दिलाने के बाद कि वह हकीकत में कोई चुड़ैल नहीं, बल्कि एक जीती-जागती

इंसान है, उसका चुंबन करती है। इस तरह नाटक यह पैगाम देता है कि हकीकत और झूठ दोनों आखिर में प्यार में मिल जाते हैं। मैंने इस नाटक की बुराई लो के सामने न करने में ही भलाई समझी। वह बड़ी गहराई से अपनी ऐक्टिंग को सुधारने में लगी हुई थी। उसने मुझसे यह भी कह रखा था कि दूसरी लड़कियों के बेवकूफ मां-बाप की तरह मैं हर रिहर्सल पर न जाऊं और एक ही बार नाटक देखें।

लेकिन एक रिहर्सल बहुत ही खास था। मई महीने में एक दिन दोपहर को मैंने लो को साइकिल चलाते देखा। हमारे लॉन के किनारे पर रुककर उसने अपनी हथेली एक पेड़ पर टिकाई और मुझे इस तरह मुस्कराकर देखा कि मुझे लगा जैसे मेरी सारी मुसीबतों, सारी परेशानियों का खात्मा हो गया हो। "क्या तुम्हें याद है," वह बोली, "कि उस होटल का क्या नाम था? याद है (नाक सिकोड़कर) वह होटल, जिसमें सफेद खंबे थे और लॉबी में संगमरमर का हंस था? मुझे पता है तुम्हें याद है (जोर से सांस छोड़कर)- वह होटल जहां तुमने मेरा बलात्कार किया था। अच्छा, यह बात छोड़ो। मेरा मतलब, उसका नाम (लगभग फुसफुसाते हुए) 'मोहित शिकारी' ही था ना? यही था न (जैसे सोच रही हो), सही नाम था ना?" और इतना कहकर जोर से हंसती हुई वह साइकिल पर चलती हुई गली के आखिर तक गई। वहां से वापस आई और साइकिल रोककर वहीं खड़ी हो गई, उसकी गोद में रखा हाथ ऐसा लग

रहा था, जैसे कोई ख्वाव देख रहा हो।

डांस और ड्रामा में लो की दिलचस्पी को देखते हुए मैंने पियानो सीखने के लिए उसे मिस एम्परर के पास भेजना शुरू कर दिया। मिस एम्परर का घर बर्ड्सले से करीब एक मील दूर था, और लो उनके घर हफ्ते में दो बार जाया करती थी। मई के आखिरी हफ्ते में एक रात को मैं अपने कमरे में बैठा गैस्टन के साथ शतरंज की एक बाजी खेल रहा था। हमेशा की तरह आज भी जीतने की पोजीशन में था। उसी वक्त मेरे फोन की घंटी बजी। फोन पर मिस एम्परर थी। उसने मुझसे कहा कि लोलिता चूंकि पिछले मंगल को और उसके पास नहीं गई इसलिए अगले मंगल को जरूर आए। मैंने बड़े सुकून से कहा कि लो अगले मंगल को जरूर आएगी, लेकिन यह बात मेरे होश उड़ा देने के लिए काफी थी कि पिछले मंगल को और आज लोलिता अगर मिस एम्परर के घर नहीं गई थी, तो फिर कहां गई थी? उसके बाद तो गैस्टन के साथ मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी हार बचाकर बाजी बराबरी पर खत्म की, और उसके जाने के बाद मैंने लो की खबर ली। वह किचन की टेबल पर बैठी कुछ खाती हुई ड्रामे की स्क्रिप्ट को पढ़ रही थी। उसने नजरें उठाकर मेरी तरफ देखा, और मेरे पूछने पर उसने बड़े सुकून से जवाब दिया कि उन दो दिनों में वह जादुई जंगल वाले सीन की 'रिहर्सल' के लिए मोना को लेकर पास

के पब्लिक पार्क में चली गई थी। मैंने "ठीक है" कहा और वापस अपने कमरे में आकर मोना के घर का फोन मिलाया। उसकी मां ने कहा, "हां, वह घर पर ही है," और फिर उसने मोना को आवाज देते हुए कहा, "रॉय का फोन है, मोना।" मोना ने फोन उठाते ही रॉय को प्यार के साथ डांटना शुरू कर दिया, लेकिन बड़ी ही नर्म और सेक्सी आवाज में मेरी बात का जवाब दिया, "हां, सर। हम गए थे और इसके लिए कुसूरवार मैं ही हूं। मैं ही लो को ले गई थी, मेरी ही गलती थी। क्या बात है!" मैंने सोचा। 'कमीनी! रंडी!'

मैं अपना गाल साफ करता हुआ वापस नीचे आया। तब तक लो कमरे में पहुंच चुकी थी, अपनी पसंदीदा कुर्सी पर। नाखून को चबाती हुई वह मजाक बनाने जैसी नजरों से मुझे देख रही थी, और अपना पैर पास के ही स्टूल पर रखे हुए स्टूल को धीरे-धीरे हिचकोले दे रही थी। अचानक मुझे महसूस हुआ और सोचकर बुरा भी लगा कि दो साल पहले जब मैं पहली बार उससे मिला था, तब से अब तक वह कितनी बदल चुकी है या फिर यह बदलाव सिर्फ पिछले दो हफ्तों में आया है? वह मेरे गुस्से का मरकज बनी मेरे ठीक सामने बैठी थी। हवस के सारे जज्बात छू हो चुके थे। हाय, वह कितनी बदल गई थी। उसका रंग किसी ऐसी गंदी स्कूली

लड़की जैसा हो गया था जो अपने गंदे हाथों से बिना मुंह धोए चेहरे पर रंग-बिरंगी क्रीमें लगाती है। उसके चेहरे की मासूमियत की जगह अब पक्कापन आ चुका था। उसे देखकर जैसे मुझे डर-सा लगने लगा हो, मैंने अपनी नजरें नीची कीं, तो मेरी नजरें उसकी जांघों के निचले हिस्से पर जा पड़ीं उसकी नंगी जांचें भी मर्दाना लग रही थीं। उसकी नजरें भी मुझ पर जमी हुई थीं। उसकी आंखों में दोबारा देखते ही मुझे लगा कि मोना ठीक ही तो कह रही थी कि लो बेकसूर है। मैं कितना गलत सोच रहा था! मै कैसा पागल हूं! लोलिता में कहां कोई बदलाव आया है-उसकी सुडौल टांगें, उसके मोजों में वह छेद, उसका मोटा-सा स्वेटर, उसके बदन की मदहोश करने वाली खुशबू, उसकी ठोढ़ी और उसके लिपस्टिक लगे होंठ। होंठों की कुछ लिपस्टिक उसके सामने के दांतों पर भी लग गई थी। उसे देखकर मुझे बरसों पहले की यह तवायफ याद आ गई, जिसे मुझसे पहले कोई इस्तेमाल कर चुका था, और मैंने सोचा था कि मुझे कोई खतरनाक बीमारी तो नहीं लग जाएगी, उसके भी दांतों पर उसके होंठों की थुपी हुई लिपस्टिक लग गई थी और वह अपने बालों के जूड़े में एक लाल रंग का रिबन बांधे हुए थी।

"बोलो," लो ने कहा, "अब तो तुम्हें मेरी बात पर एतबार हो गया?"

"हां," मैंने कहा। "बिल्कुल हां। और मुझे कोई शक नहीं हैं कि तुम दोनों ने मिलकर यह कहानी गढ़ी होगी। मुझे इसमें भी कोई शक नहीं कि तुमने मोना को हमारे ताल्लुकात के बारे में भी सब कुछ बता दिया होगा।"

"अरे हां।"

मैंने अपनी सांस दुरुस्त की और कहा, "लोलिता, यह सब फौरन बंद हो जाना चाहिए वरना मैं तुम्हें बर्ड्सले से ले जाऊंगा और कहीं बंद कर दूंगा। यह जगह छोड़ने के लिए मुझे बस इतना वक्त लगेगा जितना कि सूटकेस में सामान पैक करने में लगता है। यह सब बंद हो जाना चाहिए वरना कुछ भी हो सकता है।"

"कुछ भी हो सकता है? हुंह!"

उसके पैर के नीचे रखे स्टूल को मैंने एक झटके के साथ खींच लिया और उसका पैर धम्म से जमीन पर गिर पड़ा।

"अरे," वह चिल्लाई, "होश में रहो।"

"पहले तुम ऊपर जाओ," मैं भी चिल्लाया। साथ ही मैंने उसे पकड़कर एक झटके से उठा लिया। उसके बाद हम दोनों एक-दूसरे पर चिल्लाते रहे। उसने ऐसी-ऐसी बातें कहीं, जिन्हें छापा नहीं जा सकता। उसने कहा कि उसे मुझसे नफरत है उसने मुझे तरह-तरह से मुंह चिढ़ाया। उसने कहा कि मैंने उसके घर में किराएदार की हैसियत से रहते हुए भी उससे फायदा उठाने की कोशिश की थी। उसने कहा कि उसे पूरा यकीन है कि मैंने ही उसकी मां का खून किया है। उसने कहा कि वह किसी भी दूसरे आदमी के साथ सो जाएगी और मैं कुछ नहीं कर सकूंगा। मैंने उससे कहा कि वह ऊपर जाए और पैसे छुपाने की अपनी सारी जगहें मुझे दिखाए। कुल मिलाकर यह एक बहुत ही खराब सीन था। मैं उसकी कलाई पकड़े रहा और वह अपना हाथ छुड़ाने के लिए पूरा जोर लगाती रही। उसकी आंखों में ठंडा गुस्सा और गर्म आंसू थे। वह मुझे गालियां देती जा रही थी और जिस तरह से वह बार-बार अपना हाथ छुड़ाने के लिए झटके दे रही थी उससे मुझे डर था कि कहीं उसका हाथ टूट न जाए। हम एक-दूसरे पर इस तरह चिल्ला रहे थे कि हमें टेलीफोन की घंटी की आवाज भी नहीं सुनाई दे रही थी, और जैसे ही मेरा ध्यान घंटी की तरफ गया, वह अपना हाथ छुड़ाकर भाग गई।

दरअसल हमारे घर के पूर्वी तरफ की खिड़की खुली रह गई थी, जिधर मिस फेन्टन लीबोन रहती थीं। हालांकि उसका घर इतना दूरी पर था कि कोशिश के बावजूद भी वह साफ-साफ कुछ भी नहीं सुन पाई होगी। खिड़की पर पर्दा होने की वजह से कुछ देख भी नहीं पाई होगी, लेकिन हां, झगड़े से हो रहे शोर की आवाज जरूर उस तक पहुंच गई। फोन उसी का था और वह कह रही थी, "यह झगड़ा, यह शोर-शराबा हम लोग कोई झुग्गियों के रहने वाले नहीं हैं। देखिए।"

मैंने फौरन अपनी बेटी के दोस्तों के शोर-शराबे के लिए मिस फेन्टन से माफी मांगी और आगे कुछ सुने बगैर मैंने नीचे की तरफ ध्यान दिया, जहां से दरवाजे की जोरदार आवाज आई थी। क्या लो भाग गई? मैंने सीढ़ियों की खिड़की से बाहर

झांककर देखा। अंधेरे में एक छोटी-सी चमकदार चीज-साइकिल के पहिए की धुरी, कांपती-सी झाड़ियों में गुम होती दिखाई दी। वह जा चुकी थी।

मेरी कार भी उस रात मरम्मत के लिए गई हुई थी। इसलिए मेरे पास इसके अलावा अब कोई चारा नहीं था कि मैं पिंजरे से निकल भागे उस पंछी का पीछा पैदल ही करता। आज तीन साल बाद भी जब मैं उस रात के बारे में सोचता हूं तो कांप-सा उठता हूं। मैं कुछ दौड़ता हुआ कुछ पैदल चलता आगे बढ़ रहा था। हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी। गली के मोड़ पर एक नौजवान लोलिता को बांहों में लिए उसे प्यार कर रहा था। नहीं, वह लोलिता नहीं हो सकती, मुझे गलतफहमी हुई होगी। मेरे तन-बदन में आग-सी लग गई और मैं उसी तरफ दौड़ता चला गया।

थेयर स्ट्रीट को काटती हुई एक गली थी, जो कि शहर की तरफ जाती थी। मैं उसी गली में दौड़ गया और मैंने बड़े सुकून की सांस ली, जब मैंने एक दवा की दुकान के सामने लो की साइकिल खड़ी देखी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वहां रुकूं या आगे बढ़ता जाऊं। आखिर मैं रुक ही गया और तब मैंने एक टेलीफोन बूथ के शीशे के पार उसे देखा कि वह फोन कर रही है। मुझे देखकर उसने फोन रख दिया और बाहर निकलते हुए बड़े खुश लहजे में कहा, "मैंने घर पर तुम्हें फोन मिलाने की कोशिश की थी। आज मैंने एक बहुत बड़ा फैसला किया है। लेकिन डैड, पहले मुझे कुछ पिलाओ।"

लोलिता कोल्ड ड्रिंक्स के फाउंटेन पर दुबली-सी लड़की को गिलास में बर्फ डालते और फिर कोक डालते बड़े गौर से देख रही थी। जबकि मैं अपनी प्यारी-सी बेटी को देख रहा था और मेरा दिल प्यार के मीठे मीठे से दर्द से फटा जा रहा था। मुझे याद आया कि लोग मुझसे कहते थे कि मिस्टर हम्बर्ट, आपकी बेटी बड़ी प्यारी-सी है। वह जब भी सामने से गुजरती है, हम उसे देखते ही रह जाते हैं। इसी बीच बारिश भी तेज हो गई थी और लोलिता अब खूबसूरत भी लग रही थी।

"देखो," वापसी में मेरे साथ चलते हुए धीरे-धीरे साइकिल चलाते और अपना एक पैर जमीन पर रगड़ते हुए उसने कहा, "देखो, मैंने एक फैसला किया है। मैं स्कूल छोड़ना चाहती हूं। मुझे उस स्कूल से नफरत है। मुझे उस नाटक से भी नफरत है। मैं अब उस स्कूल में वापस नहीं जाऊंगी। कोई और स्कूल ढूंढ़ते हैं। और हम फिर से घूमने चलते हैं। लेकिन इस बार हम उन्हीं जगहों पर जाएंगे, जहां मैं चाहूंगी। ठीक है ना?"

मैंने हामी भरते हुए सिर हिला दिया। मेरी लोलिता !

लोलिता ने खुशी से दांत निकाल दिए और फिर मुझे पैदल छोड़कर तेजी से घर की तरफ बढ़ गई, मेरी चिड़िया।

103

आगे एक पेड़ से टिककर वह मेरा इंतजार कर रही थी।

"मैं भीग गई हूं." लो ऊंची आवाज से बोली। "क्या तुम खुश हो? भाड़ में जाए नाटक ! तुम मेरा मतलब समझ रहे हो ना?"

घर के अंदर पहुंचते ही लो ने अपना स्वेटर उतारा, अपने बाल खोले और अपने दोनों नंगे बाजू मेरी तरफ फैलाकर खड़ी हो गई, "मुझे ऊपर ले चलो। आज रात मैं रोमांटिक हो रही हूं." वह बोली।

मेरे सीने में जो आधियां चल रही थीं, जो आंसू रुके हुए थे, उन सबकी भड़ास मैंने ऊपर जाकर निकाली।

कार के ब्रेक, वॉटर पाइप, वॉल्व और भी कई चीजों की मरम्मत की गई थी, और अपना सफर आगे बढ़ाने से पहले कार की हालत काफी सुधर चुकी थी। बर्ड्सले स्कूल में मैंने बताया कि हॉलीवुड की एक फिल्म की रिसर्च के सिलसिले में मुझे हॉलीवुड जाना है और जैसे ही वहां मेरा काम खत्म हो जाएगा, हम लोग वापस आएंगे और लो एक बार फिर से बर्ड्सले स्कूल में ही दाखिला लेगी। असल में मेरा इरादा था कि मैं किसी तरह मैक्सिको की सरहद को पार कर जाऊं। मैंने सोच रखा था कि उसके बाद मुझे अपनी इस छोटी-सी रखैल (जो कि अब पांच फीट और नब्बे पौंड की हो चुकी थी) के साथ क्या करना है। हमने अपने सफर के नक्शे और गाइड फिर से निकाल लिए थे। उसने बड़े जोश के साथ हमारे रूट की स्टडी की। इससे पहले उसने ऐसा कभी नहीं किया था। उसे कोई मतलब ही नहीं होता था कि आगे हमें कहां जाना है। क्या नाटक के रिहर्सल ने उसे बड़ा बना दिया था?

जिस दिन हमने प्रोफेसर गैस्टन के मकान को छोड़ा, तो मुझे बड़ा अच्छा महसूस हुआ। हमारी कार एक रैड लाइट पर रुकी, तो हमारे पास ही एक और कार आकर रुकी जिसमें एक बहुत गोरे रंग और कंधों तक लंबे, चमकदार बालों वाली खूबसूरत औरत सवार थी। उसने लो को देखकर "हाय!" कहा और फिर मुझसे कहने लगी, "लोलिता को नाटक से निकालकर आपने

अच्छा नहीं किया। नाटक की लेखिका को तो बहुत नाराजगी थी।"

"ग्रीन लाइट हो गई, बेवकूफ औरत!" लो ने धीरे से कहा और साथ ही हाथ उठाकर उसे विदा भी किया।

"वह कौन है? बरमोन्ट या रम्पैलमेयर?" मैंने पूछा।

"नहीं, यह तो एडुसागोल है और यह हमारी कोच है।"

"मैं उसकी बात नहीं कर रहा। नाटक किसने लिखा है?"

"अच्छा, वह कोई बूढ़ी औरत है। शायद क्लेअर है उसका नाम। नाटक में बहुत लोग थे, सबके नाम भी तो नहीं याद।"

"तो उसने तुम्हारी तारीफ की थी?"

"उसने मेरी आंखों की तारीफ की थी और मेरा चुंबन भी किया था," लो ने बताया और फिर बड़े अजीब अंदाज से खुशी भरी किलकारी मारी, जो कि शायद उसने नाटक के रिहर्सल के दौरान ही सीखी थी।

"तुम बड़ी अजीब लड़की हो, लोलिता," मैंने कहा। "मुझे खुशी है कि तुमने नाटक को छोड़ दिया। लेकिन यह कितनी अजीब बात है कि तुमने नाटक का शो होने से सिर्फ एक हफ्ता पहले उसे छोड़ दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए था। मुझे याद है कि तुमने कैंप जाने के लिए रैम्सेडल को और घूमने जाने के लिए कैंप को अचानक छोड़ दिया था। इसके अलावा भी ऐसी ही कई बातें मुझे याद हैं। अपने अंदर कुछ ठहराव लाओ। कुछ चीजें ऐसी भी होती हैं, जिन्हें कभी नहीं छोड़ना चाहिए। तुम मेरे साथ भी अपना बर्ताव थोड़ा बेहतर बनाओ। अपने खाने-पीने की तरफ भी थोड़ा ध्यान दो। तुम्हारी जांघे साढ़े सत्रह इंच से ज्यादा मोटी नहीं होनी चाहिए। इससे ज्यादा तो खतरनाक हो सकती हैं (मैं मजाक कर रहा था)। हम एक लंबे सफर पर घूमने-फिरने के लिए जा रहे हैं। मुझे याद है कि-।"

बचपन में मैं अमेरिका के नक्शे को देखकर सोचा करता था कि अमेरिका कितनी खूबसूरत जगह है। अब मैं उसी खूबसूरत अमेरिका के पश्चिम की तरफ अपनी लो के साथ बढ़ता जा रहा था। पिछले सफर के दौरान भी लो की आदत रही थी कि वह अजनबियों से खूब घुल-मिल जाया करती थी। अब भी उसकी इस आदत में मेरे हर वक्त रोकने-टोकने के बावजूद कोई खास कमी नहीं आई थी। एक पेट्रोल पंप पर हम रुके और जब मैं कार का बोनट उठाकर कुछ ठीक कर रहा था, तो वह अपनी सीट से उतरकर कहीं चली गई। मैंने सोचा कि उसके साथ हर समय ज्यादा सख्ती नहीं करनी चाहिए, इसलिए मैंने कोई खास ध्यान नहीं दिया। कार ठीक हो जाने तक भी वह वापस नहीं आई और मेरी नजरें उसकी तलाश में बेचैनी के साथ इधर से उधर भटकती रहीं। मेरे दिमाग में हजारों खराब-खराब ख्यालात आने लगे, तभी वह पास की बिल्डिंग से आती दिखाई दी। उसने बताया कि चूंकि पेट्रोल पंप का कोई भी टॉयलेट खाली नहीं था, इसलिए वह पास की बिल्डिंग में चली गई थी।

आगे चलकर हम पिस्की पहुंचे, जहां हम पहले भी एक बार आ चुके थे। पिस्की में ही उसकी ननिहाल भी थी और मैं नहीं चाहता था कि वहां हमारा कोई जान-पहचान वाला मिल जाए। इसलिए मैं जल्दी ही वहां से आगे चले जाना चाहता था। मैंने यही बात उससे कही, तो उसने कहा कि उसे सुस्ती हो रही है और वह चाहती है कि यहां से शाम को चला जाए। तब तक वह आराम करना चाहती थी।

मैंने सोचा कि मैं उसके लिए कुछ ताजे फल ले आऊं और साथ ही अपने बाल भी कटाता आऊं। यह सोचकर मैं उसे होटल के कमरे में ही बिस्तर पर छोड़कर पैदल चल पड़ा। कुछ दूर चलकर मैंने अपने बाल कटाए, एक कप खराब-सी कॉफी पी, अपनी बंदरिया के लिए केले खरीदे और दस मिनट कुछ और खरीदारी करने के बाद मैं वापस होटल की तरफ चल दिया। वापसी में मैंने उस साइकिल वाली लड़की और उसके बड़े से कुत्ते को देखा, जिसे जाते वक्त भी मैंने देखा था। दोपहर हो चुकी थी। थोड़ा आगे एक बूढ़ा जोड़ा घूमता दिखाई दिया। होटल के पास ही मुझे एक गहरे काले बालों वाला स्मार्ट-सा आदमी दिखाई दिया, जो अपनी कार पर झुका हुआ था। उसके पास ही उसकी बीवी, जो शायद पेट से थी और बच्चे भी थे, इसलिए उसकी तरफ कोई खास ध्यान दिए बगैर मैं बढ़ता चला गया।

होटल में अपने कमरे पर पहुंचकर मुझे यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि लो कपड़े पहने बिल्कुल तैयार बैठी थी। उसकी पतली-सी टी-शर्ट से उसकी छोटी-छोटी छातियों को झांकते

देख मुझे बहुत बुरा लगा। उसके चेहरे पर बड़ी रौनक थी। हालांकि उसने मुंह नहीं धोया था, लेकिन काफी मेकअप किया हुआ था। वह अपने हाथों को गोद में रखे बड़े आराम से बैठी थी। मैंने अपना थैला नीचे रखते वक्त उसकी पिंडलियों की तरफ देखा और उसके सैंडलों पर मुझे बाहर की मिट्टी लगी दिखाई दी। मैंने पहले उसके मासूम चेहरे और फिर गुनाहगार पैरों को देखकर कहा, "तुम बाहर गई थीं?"

"मैं तो अभी उठी हूं." उसने कहा, लेकिन फिर यह भांपते हुए कि मेरी नजर उसके जूतों पे लगी मिट्टी पर पड़ चुकी है, वह बोली, "बस एक सेकंड के लिए मैं बाहर गई थी। यह देखने के लिए कि तुम आ रहे हो या नहीं।"

फिर केलों को देखते ही वह उन पर झपट पड़ी। मैंने अपने दिल में सोचा कि मैं क्यों उस पर शक कर रहा हूं? क्या सिर्फ इसलिए कि आज वह कुछ ज्यादा ही खुश दिखाई दे रही थी? मैं खिड़की से बाहर की तरफ देखने लगा। फिर अचानक मुझे उस कार वाले आदमी की बेवजह मुस्कुराहट याद आ गई। मैं तेजी से कमरे से बाहर आया। इतनी देर में एक उसकी कार के अलावा बाकी सारी कारें वहां से जा चुकी थीं और अब उसकी कार में भी उसकी बीवी और बच्चे सवार हो रहे थे।

"क्या बात है, तुम कहां जा रहे हो?" लो ने बाहर आते हुए पूछा।

मैंने कोई जवाब देने के बजाय उसे वापस कमरे में धकेल दिया। फिर किसी जंगली जानवर की तरह मैंने उसकी टी-शर्ट फाड़ डाली, उसके सैंडल उतार दिए और उसके बाकी सारे कपड़ों की जिपें खोलकर उसे नंगा कर दिया। और मैं तलाश करने लगा उसकी बेवफाई की निशानियों को। लेकिन मैं किसी खास नतीजे पर नहीं पहुंच सका।

106

गैस्टन गोडिन अपने नपे-तुले अंदाज में दूसरों को तोहफे देने का बहुत शौकीन था। ऐसे तोहफे जो आम चीजों से कुछ अलग किस्म के हों। एक रात को उसने देखा कि मेरा शतरंज के मोहरों का डिब्बा टूटा हुआ है। अगले ही दिन उसने एक लड़के के हाथ मुझे तांबे का एक डिब्बा भेज दिया, जिसके ढक्कन पर एक बड़ा खूबसूरत-सा डिजाइन भी बना हुआ था। वह डिब्बा कुछ ज्यादा ही पतला था और बाद में मैंने उनका इस्तेमाल एक बिल्कुल ही अलग तरह के काम के लिए किया।

मैं अनजाने में ही यह महसूस करने लगा था कि किस्मत ने मुझे एक मुसीबत में फंसा दिया है। उसी मुसीबत से निजात हासिल करने की कोशिश में, लोलिता के गुस्से और झुंझलाहट की परवाह न करते हुए भी मैंने पिस्की के उसी होटल 'चैस्टनट कोर्ट' में एक रात और ठहरने का फैसला किया। रात में चार बजे मैंने खुद को यकीन दिलाया कि वह वाकई सो रही है। सोते में उसका मुंह खुला हुआ था, जैसे उसे हैरत हो कि मैंने उसे कैसी झंझट भरी जिंदगी दे दी है। फिर मैंने यह यकीन किया कि तांबे के डिब्बे में रखी हुई मेरी चीज महफूज है। उसके अंदर मैंने 32 बोर का एक ऑटोमैटिक पिस्तौल रखा हुआ था। यह पिस्तौल मुझे शैर्लट के पहले शौहर हैराल्ड हेज की चीजों के साथ मिला था। डिब्बे में वह पिस्तौल अभी भी लोड किया हुआ इस्तेमाल के लिए बिल्कुल तैयार रखा हुआ था।

मुझे खुशी हो रही थी कि मेरे पास एक हथियार है और इससे भी ज्यादा खुशी इस बात की थी कि दो साल पहले मैंने रैम्सेडल की झील के पास इसका इस्तेमाल भी सीख लिया था। फारलो जो कि एक अच्छा निशानेबाज था, अपने 38 बोर के पिस्तौल से मुझे निशानेबाजी सिखाता था। बाद में क्रेस्तोव्स्की नाम का एक भारी-भरकम रिटायर्ड पुलिस ऑफिसर भी, जिसने बीस-पच्चीस साल पहले जेल से भागे दो मुजरिमों को गोली से उड़ा दिया था, हमारे साथ आ गया। उन दोनों अच्छे निशानेबाजों के बीच मैं अपने को बिल्कुल अनाड़ी महसूस करता था और मेरा हर निशाना खता हो जाता था, लेकिन मुझे याद है कि बाद में मैंने एक गिलहरी पर सही निशाना भी लगाया था। "तुम यहीं लेटो," मैंने अपनी उस छोटी-सी चीज से कहा और शराब का एक गिलास चढ़ा लिया।

अगले कुछ दिन तक लगातार आंधी-तूफानों की वजह से मौसम बहुत खराब रहा। लेकिन अब मेरे दिमाग से लो के चाहने वालों का ख्याल निकालकर सिर्फ एक ही ख्याल रह गया था-ट्रैप नाम का जासूस।

है ना अजीब बात ! हमें कहीं भी कोई भी मर्द मिलता था, तो मुझे उससे जलन हुआ करती थी। लेकिन कुछ दिनों से लोलित के अच्छे बर्ताव की वजह से मेरी

इस जलन में और शक्की मिजाज में कुछ कमी आ गई थी। वैसे भी, मैं पागल भले ही रह चुका हूं, लेकिन एक पागल भी यह तो नहीं सोच सकता था कि हम्बर्ट और उसकी लो के

पीछे एक और हम्बर्ट हर जगह लगा हुआ है। शायद उसे किसी आदमी ने पैसा देकर इस काम पर लगाया था कि वह पता लगाए कि हम्बर्ट अपनी सौतेली बेटी के साथ क्या करता है। दिमागी मरीज होने की वजह से अक्सर मुझे ऐसी अजीब-अजीब चीजें दिखाई देने लगती थीं, जिनका हकीकत से कोई ताल्लुक नहीं होता था। हो सकता है कि तब भी यही हुआ हो जब एक रात को शायद मेरी शराब में उसने या फिर लो ने या दोनों ने ही मिलकर कुछ मिला दिया था। रात में किसी ने हमारे कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी, मैंने उठकर अचानक दरवाजा खोल दिया और मैंने दो चीजें देखीं एक तो यह कि मैं बिल्कुल नंगा था, और दूसरी यह कि बाहर अपने चेहरे पर मुखौटा लगाए एक आदमी खड़ा हुआ था। उसने मुझे देखकर हल्का-सा ठहाका लगाया और वहां से भाग गया, मैं वापस अपने कमरे में आकर सो गया। लेकिन मुझे आज तक नहीं मालूम कि वह ख्वाब था या हकीकत। यह अलग बात है कि अगली सुबह को मैंने दो बच्चों को देखा, जो उस आदमी जैसे ही एक मुखौटे से खेल रहे थे।

ज्यूरी के माननीय सदस्यों! मैं कातिल जरूर हूं, लेकिन मेरी याददाश्त बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है, इसलिए मैं सही-सही वह दिन नहीं बात सकता, जब मुझे इस बात का पक्का यकीन हो गया कि एक लाल रंग की कार वाकई हमारा पीछा कर रही है। लेकिन हां, मुझे वह मौका अच्छी तरह याद है, जब मैंने उसके ड्राइवर को साफ-साफ देखा था। मैं अपनी कार में बड़े आराम से चल रहा था। बारिश बहुत तेज थी, लेकिन फिर अचानक बारिश की रफ्तार पहले कम हुई और फिर बिल्कुल ही रुक गई। फिर कुछ देर तेज धूप निकल आई और मुझे एक काले चश्मे की जरूरत महसूस होने लगी। मैंने कार एक पेट्रोल पंप पर रोक दी। जो कुछ भी हो रहा था, वह मेरे लिए किसी नासूर से कम नहीं था, लेकिन मैं इस बारे में कुछ कर भी नहीं सकता था, इसलिए मैंने इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया कि पीछा करने के बाद पैसा अदा करने के लिए पेट्रोल पंप के ऑफिस में गया और वहां से ही मैंने एक बड़ी भयंकर चीज देखी। एक लंबा-चौड़ा और गंजा आदमी जिसकी मुझे सिर्फ पीठ दिखाई दे रही थी, लोलिता की बात सुन रहा था जो कि कार से बाहर सिर निकाले अपना हाथ हिला हिलाकर बड़ी संजीदगी के साथ लेकिन जल्दी-जल्दी उससे कुछ कह रही थी। मेरे लिए सबसे ज्यादा जानलेवा बात यह थी कि जिस तरह वह उस आदमी से बात कर रही थी, उससे ऐसा लगता था, जैसे वे दोनों हफ्तों से एक दूसरे को जानते हों। मैंने देखा कि उस आदमी ने सिर हिलाते हुए अपना गाल खुजाया और वापस मुड़कर अपनी लाल रंग की कार तक चला

गया। वह मेरी ही उम्र का एक भारी-भरकम, मुझसे ज्यादा चौड़े चेहरे और सूखे होंठों वाला

आदमी था। उसे देखकर मुझे अपने बाप के स्विटजरलैंड में रहने वाले एक रिश्तेदार की याद आ गई। जब मैं वापस कार में पहुंचा, तो लोलिता सड़कों के एक नक्शे को देख रही थी।

"वह आदमी तुमसे क्या पूछ रहा था, लो?"

"आदमी? अच्छा, वह आदमी। हां, पता नहीं। वह पूछ रहा था कि क्या मेरे पास नक्शा है। शायद रास्ता भटक गया होगा।" हम आगे बढ़ते रहे। और मैंने कहा, "सुनो, लो। मुझे नहीं पता कि तुम झूठ बोल रही हो या नहीं, मुझे नहीं पता कि तुम पागल हो या नहीं और मुझे इसकी कोई परवाह भी नहीं। लेकिन वह आदमी सुबह से हमारा पीछा कर रहा है। कल भी मैंने उसकी कार हमारे होटल के बाहर देखी थी और मुझे लगता है कि वह पुलिस का आदमी है। तुम अच्छी तरह जानती हो कि अगर पुलिस को हमारी हकीकत पता चल गई, तो हमारा क्या हश्र होगा और तुम्हारा क्या हश्र होगा। अब मुझे सच-सच बता दो कि उसने तुमसे क्या कहा और तुमने उसे क्या बताया।"

"अगर वह वाकई पुलिस का आदमी है, तो हमारे लिए बेहतर यही होगा कि उसे ऐसा न लगे कि हम उससे डर रहे हैं। उसकी तरफ ध्यान ही मत दो, डैड।" लोलिता ने तीखे ढंग से कहा, लेकिन उसने कुछ गलत नहीं कहा था।

"क्या उसने पूछा कि हम कहां जा रहे हैं?"

"यह तो उसे मालूम ही है," वह मेरा मजाक उड़ाते हुए बोली।

"खैर," मैंने बात खत्म करते हुए कहा। "मैंने उसका चेहरा देख लिया है। वह बहुत खूबसूरत नहीं है। वह ट्रैप नाम के मेरे एक रिश्तेदार से हूबहू मिलता है।"

"शायद वह ट्रैप ही हो। वैसे अगर मैं तुम्हारी जगह होती-अरे, देखो," वह कार के मीटर की तरफ देखती हुई बोली, "सारे '9' बदलकर हजार बनने वाले हैं। जब मैं बचपन में अपनी मां के साथ में बैठती थी, तो मुझे लगता था कि अगर मां कार को पीछे की तरफ ले जाए, तो शायद हजार फिर से '999' में बदल जाएगा।"

जहां तक मुझे याद है यह पहला मौका था, जब उसने मुझसे मिलने से पहले के अपने बचपन की कोई बात की हो और इस तरह से वह असल बात को टाल गई थी। यह तरकीब शायद

उसने नाटक से सीखी थी। हम आगे बढ़ते रहे, शायद अब कोई हमारा पीछा भी नहीं कर रहा था।

लेकिन अगले ही दिन किसी खतरनाक बीमारी के ऐसे दर्द की तरह जो दवा का असर खत्म होते ही वापस लौट आता है, वह लाल रंग की गाड़ी फिर से हमारे पीछे आती दिखाई दी। उस दिन सड़क पर ट्रैफिक कम था। किसी को भी किसी से आगे निकलने की जल्दी नहीं थी, इसलिए हमारी पुरानी नीली कार और उस

चमकदार लाल रंग की नई कार के बीच कोई भी दूसरी गाड़ी नही आई-जैसे कि दोनों गाड़ियों के बीच का टुकड़ा जादू भरा हो। उस कार का मूंछों वाला ड्राइवर किसी डमी की तरह अपनी गाड़ी में बैठा हुआ था और ऐसा लगता था जैसे कि उसकी गाड़ी सिर्फ इसलिए आगे बढ़ रही थी कि मेरी और उसकी कार के बीच कोई रस्सी बंधी हो, जो उसकी कार को खींच रही हो। अपनी कार के कमजोर इंजन को देखते हुए मैंने अपनी कार की स्पीड तेज करके उसे पीछे छोड़ देने की कोशिश भी नहीं की। सारे रास्ते यही चलता रहा और मैं देखता रहा कि लोलिता की आंखों में कितनी चमक है, उसके गालों पर कैसी दमक है!

दोनों गाड़ियों के बीच बने इस सिलसिले को आखिर साढ़े चार बजे सड़कों की भूल-भुलइयों के बीच खड़े एक ट्रैफिक पुलिसमैन ने तोड़ा। उसने हाथ के इशारे से मुझे आगे बढ़ जाने को कहा और साथ ही साये की तरह मेरे साथ चल रही उस कार को रोक दिया। अब मेरे पीछे करीब एक दर्जन कारें आ चुकी थीं, मैंने मौके का फायदा उठाते हुए अपनी गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी और थोड़ा आगे चलकर एक पतली सी सड़क में दाखिल हो गया। कई जगह रुककर पीछे देखने और भटकने के बाद मैं वापस हाइवे पर आ गया, जहां अब उस लाल कार का कोई पता नहीं था।

लोला गुर्राकर बोली, "अगर तुम वाकई उसे पुलिस का आदमी समझ रहे हो, तो इस तरह उससे छुटकारा हासिल करना कितनी बड़ी बेवकूफी है।"

"मुझे अब उसके बारे में कुछ और शक था," मैंने कहा।

मेरी बात को समझते हुए वह व्यंग्य भरे लहजे में बोली, "उसके आगे चलते हुए उस शक को

दूर कर लेते।" फिर सपाट लहजे में बोली, "तुम कमीने हो।"

वह रात हमने एक गंदे से कमरे में गुजारी। जबकि बाहर तेज बारिश हो रही थी और बिजली कड़क रही थी, अंदर भी ऐसा ही कुछ हो रहा था। लो बिजली के कड़कने से डरती थी, जो कि मेरे लिए हर तरह से फायदेमंद था।

"मुझे लगता है कि वह मोटे चेहरे वाला यहां भी आ पहुंचा है," मैंने कहा। "तुम्हारे मजाक पर मुझे बुरी तरह हंसी आने लगती है," लो बोली।

वैसे ऊपरी तौर पर सब कुछ ठीक था। वह मुसीबत टल चुकी थी। इसलिए सोडा नाम के उस छोटे से शहर में हमने अगले दो दिन बड़े चैन से गुजारे। आगे हमें वेस शहर जाना था, जहां लोलिता जादुई गुफा का जश्न देखना चाहती थी। लेकिन शायद लो ने जश्न की तारीख गलत पढ़ ली थी, क्योंकि हमारे वेस पहुंचने तक वह जश्न खत्म भी हो चुका था। मगर मुझे मानना पड़ेगा कि लो ने इस झटके को बड़ी बहादुरी से झेल लिया। फिर जब हमें पता चला कि वेस में एक थिएटर भी है, तो हमें वहां तो जाना ही था। जून के उस महीने में उस थिएटर के अंदर हमने जो

नाटक देखा, उसकी कहानी तो अब मुझे याद नहीं, लेकिन यह अच्छी तरह से याद है कि उसमें लगभग लो की उम्र की सात लड़कियां भी थीं, जो कि इंद्रधनुष के सात रंगों की नुमाइंदगी कर ही थीं। वे नाटक के आखिर तक स्टेज पर रहीं। उनमें खासतौर से दो लड़कियां बड़ी प्यारी थीं, जिनमें से एक लगातार खुद को कहीं न कहीं खुजाती रही, जबकि दूसरी बार-बार अंधेरे में बैठे दर्शकों में शायद अपनी मां या किसी और को देखकर मुस्कुरा देती थी। उन्हें देखकर मेरे अंदर ख्वाहिशों की अंगड़ाइयां सी उठने लगती थीं।

इसीलिए जैसे ही नाटक खत्म हुआ और तालियों का वह शोर, जिससे मुझे हमेशा से बड़ी सख्त नफरत रही है, शुरू हुआ। मैं लोलिता को लेकर बाहर निकलने के लिए दरवाजे की तरफ चल पड़ा। मैं चाहता था कि जल्दी अपने कमरे में पहुंचकर मैं इस तारों भरी खूबसूरत रात का पूरा फायदा उठा सकूं। लेकिन लो पीछे रह गई थी। वह बहुत खुश थी और तालियां भी बजा रही थी। उधर तब तक स्टेज पर नाटक के दोनों लेखक पहुंच चुके थे-कोट पहने एक

मर्द और नंगे बाजुओं व काले बालों वाली गिद्ध जैसी एक बहुत लंबी-सी औरत।

कार में बैठते हुए लोलिता ने कहा, "तुम बिल्कुल जंगली हो, तुमने फिर से मेरी कलाई दबा दी।"

"आई एम सॉरी, मुझे सचमुच बहुत दुख है," मैंने कहा। फिर उसकी तकलीफ की तरफ से उसका ध्यान बटाने के लिए मैंने नाटक और उसके लेखकों विवियन डार्कब्लूम (मर्द) और क्लेर क्विलटी (औरत) के बारे में बात शुरू कर दी। क्विलटी के नाम पर मैंने उसे रैम्सेडल के डॉ. क्विलटी की भी याद दिलाई, लेकिन वह कुछ याद नहीं करना चाहती थी। और मैं सोचने लगा कि यह नाबालिग किशोरियां कितनी जल्दी सब कुछ भुला देती हैं, जबकि हम बालिग बूढ़े उनके साथ बिताए एक-एक लम्हे को अपनी जिंदगी का खजाना मानते हैं।

बर्ड्सले के पोस्टमास्टर से चलते वक्त हमने कह दिया था कि हमारे खत वेस या एलफिस्टन के डाकघरों में भेज दिए जाएं। चूंकि अभी हम वेस में थे, इसलिए मैंने वहां के पोस्ट ऑफिस जाकर डाक देखना भी मुनासिब समझा। वहां हमें लाइन में लगकर काफी देर इंतजार करना पड़ा। इस बीच लो वहां लगे 'वांटेड' के पोस्टरों पर मुजरिमों के बारे में पढ़ने लगी। खूबसूरत शक्ल का ब्रायन ब्रायन्सकी उर्फ एंथनी ब्रायन उर्फ टोनी ब्रायन-बड़ी-बड़ी आंखें, गोरा रंग, जुर्म अगवा। दूसरा मुजरिम एक भद्दी सी शक्ल का बूढ़ा था। तीसरा था सालिवन जिसके साथ लिखा था-हथियार से लैस और खतरनाक। इनके अलावा एक खोई हुई चौदह साल की लड़की का धुंधला सा फोटो भी था आखिरी बार देखी गई थी तो कत्थई रंग के जूते पहने थी। इनके बारे में कुछ भी पता लगने पर शैरिफ बुलर को खबर करें।

111

मेरी अपनी क्या डाक थी, मुझे याद नहीं। लो की डाक में उसका रिपोर्ट कार्ड और एक खूबसूरत-सा लिफाफा था। उसे खोलकर मैंने पढ़ा। उसने बुरा नहीं माना और बाहर मैग्जीनों की दुकान पर चली गई, इसका मतलब उसे मालूम था कि किसका खत है। यह भी कि किसका खत है और यह भी कि मैं उसे जरूर पढ़गा।

*लोलिता नाटक बहुत अच्छा रहा। तीनों कुत्ते खामोशी से पड़े रहे, क्योंकि शायद डॉ. कटलर ने उन्हें नशे की दवा दे दी थी। लिंडा को तुम्हारा रोल याद था। उसने अच्छा रोल किया, लेकिन जो बात तुम्हारी ऐक्टिंग में थी, वह उसमें नहीं थी। स्टेज पर दिखाए जाने वाले तूफान की

आवाज बाहर आए हुए तूफान की आवाज में दब गई थी। जिंदगी कट रही है, बस अब जबकि नाटक, स्कूल, रॉय वाला मामला, मां की बीमारी (बच्चा जिंदा नहीं रह सका) सब कुछ खत्म हो चुका है, तो ऐसा लगता है कि जैसे तुमसे मिले मुद्दतें हो गई हों।

'हम लोग परसों न्यूयॉर्क जा रहे हैं और मुझे लगता है कि मुझे मां और डैड के साथ यूरोप भी जाना पड़ेगा। इससे भी खराब यह है कि अगर तुम बर्ड्सले लौटकर आईं, तो शायद मैं तुम्हें वहां नहीं मिलूंगी। डैड चाहते हैं कि मैं एक साल तक पेरिस में पढ़ाई करूं।

'जैसी उम्मीद थी, तीसरे सीन में बेचारा शायर लड़खड़ा गया था। क्योंकि वहां उसे फ्रांसीसी में अपने डायलॉग बोलने थे। याद है? मेरी तो जबान ही मुड़ जाती थी। खैर, ढेर सारा प्यार। अब मैं तुम्हें यूरोप पहुंचकर खत लिखूंगी। तुम्हारी मोना।' (जहां तक मुझे याद है उसने फिर कोई खत नहीं लिखा।)

मैंने खत से नजर उठाई और अभी मैं लेकिन लोलिता तो वहां थी ही नहीं, जबकि मैं मोना का खत पढ़ने में लगा हुआ था, वह बाहर निकल गई थी। "क्या तुमने देखा-" मैंने गेट के पास झाड़ू लगा रहे एक कुबड़े से पूछा। उसने कहा कि हां, देखा तो था, लेकिन शायद उसकी कोई दोस्त मिल गई होगी, जिसके साथ वह इधर-उधर कहीं चली गई होगी। मैं तेजी से बाहर निकल पड़ा। रुका। फिर आगे बढ़ा। लेकिन उसका कहीं पता नहीं था। आखिर वह हो ही गया, जिसका मुझे डर था। वह मुझे छोड़कर हमेशा के लिए जा चुकी थी।

आज मैं सोचता हूं कि काश वह उस दिन हमेशा के लिए ही चली गई होती। वह क्यों नहीं गई? क्या उन कपड़ों की वजह से, जो अभी मेरी कार में थे? क्या इसलिए कि उसके प्लान में अभी कहीं कोई कमी रह गई थी? क्या सिर्फ इसलिए कि वह मेरे साथ एलफिंस्टन तक जाना चाहती थी, क्योंकि वही उसकी मंजिल थी मुझे बस इतना मालूम है कि मुझे पूरा यकीन था कि वह मुझे हमेशा के लिए छोड़ गई है। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कि हर चीज मेरे ऊपर हंस रही है।

मैं पोस्ट ऑफिस की जिस नई और खूबसूरत बिल्डिंग से बाहर निकला था, वह एक सिनेमा

हॉल और पोपलर के झुंड के बीच थी। सुबह का वक्त था। उस स्ट्रीट का नाम था मेन स्ट्रीट। मैं इधर-उधर पागलों की तरह उसे तलाश करता रहा। आसपास की जितनी दुकानें थीं, उन सबको मैंने खंगाल डाला, लेकिन वह कहीं नहीं थी। क्या मैं चिल्लाकर कहूं कि मेरी बेटी मेरे सीधेपन का फायदा उठाकर एक पुलिसवाले के साथ, एक ब्लैकमेलर के साथ भाग गई है? क्या मैं रास्ता चलते लोगों से उसके बारे में पूछू? नहीं। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मैं कार में आकर बैठ गया। मुझे खुद पर गुस्सा आने लगा क्यों मैं उस पर शक कर रहा हूं, वह तो अभी खुद ही वापस आ जाएगी।

और वह आ गई।

उसने मेरे पास आकर मेरी कलाई पर अपना नाजुक हाथ रखा। मेरे अचानक घूमने से उसका हाथ मेरी कलाई से हट गया। वह मुस्कुरा रही थी।

"कार में बैठो," मैंने कहा।

उसने मेरा कहना माना और मेरे दिमाग में बेनाम ख्यालात की आंधियां चलने लगीं कि उसकी बेवफाई से, उसके दोहरे किरदार से मैं किस तरह निपटूं। वह मेरे पास आ गई और तब मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी सुनने की ताकत अब वापस आई हो। वह मुझसे कह रही थी कि उसे अपनी एक सहेली मिल गई थी।

"अच्छा? कौन?"

"बर्ड्सले की एक लड़की।"

"हूं। मैं वहां की तुम्हारी सारी सहेलियों को जानता हूं। एलिस एडम्स थी?"

"वह लड़की मेरी सहेली नहीं थी।"

"अच्छा। मेरे पास तुम्हारे क्लास की लड़कियों के नामों की पूरी लिस्ट है। मुझे उसका नाम बताओ।"

"वह मेरे क्लास में नहीं थी। लेकिन वह बर्ड्सले की ही रहने वाली एक लड़की है।"

"ठीक है। मेरे पास बर्ड्सले की डायरेक्टरी भी है। मैं उसके उपनाम से पता लगा लूंगा।"

"मुझे उसका सिर्फ पहला नाम मालूम है।"

"मेरी या जेन?"

"नहीं, उसका नाम डॉली है।"

"तुम पूरे अट्ठाईस मिनट गायब रहीं। इतनी देर तुम दोनों क्या करती रहीं?"

"हम एक दुकान पर गए थे।"

"वहां से तुमने क्या लिया?"

"बस दो कोका कोला।"

"सोच-समझकर जवाब देना। मैं दुकान पर जाकर मालूम कर सकता हूं।"

"उसने कोक ली थी। मैंने पानी पिया था।"

"अच्छा। तो क्या तुम उस सामने वाली दुकान में थीं?"

"हां।"

"ठीक है, मेरे साथ आओ। हम वहीं चलते हैं।"

"एक सेकंड रुको। हो सकता है कि वह आगे मोड़ वाली दुकान हो।"

"कोई बात नहीं। हम सारी दुकानें देख लेते हैं।"

"अरे भाड़ में जाओ तुम," वह बोली।

"लो, यह बर्ताव तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेगा।"

"ठीक है," उसने कहा। "लेकिन तुम मुझे फंसाने की कोशिश मत करो। चलो, हमने कोक नहीं पी थी। हम बस दुकानों की खिड़कियों में कपड़े देखते रहे थे।"

"कौन-सी दुकान? क्या वह सामने वाली?"

"हां, वही सामने वाली।"

"ठीक है, चलो उसे करीब से देखते हैं।"

उस दुकान का नजारा बड़ा प्यारा था। वहां दो औरतों के बुत थे, जिन्हें देखकर ऐसा लग रहा था जैसे अभी उनके पास कोई बम फटा हो। एक औरत बिल्कुल नंगी थी, उसके दोनों बाजू नहीं थे और सिर पर बालों की विग भी नहीं थी। उसके साथ ही लोलिता के साइज की लड़की का बुत था। जिस कालीन पर वे दोनों खड़ी थीं, उसे एक स्मार्ट-सा आदमी साफ कर रहा था। पास में ही एक दुल्हन का बुत था, जो कि सारे कपड़े पहने हुए थी, लेकिन उसका भी एक बाजू गायब था। इन हसीनों के पैरों के पास, जहां वह आदमी सफाई में जुटा हुआ था, तीन पतले-पतले बाजू और भूरे बालों की एक विग पड़ी हुई थी। दो बाजू मुड़े हुए थे जिन्हें देखकर ऐसा लगता था कि औरत के कंधों पर लगने के बाद वह औरत हाथ जोड़ती दिखाई देगी।

"देखो लो," मैंने धीरे से कहा। "इन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता कि ये कुछ बोलना चाहती हों?" खैर, मैंने वापस कार की तरफ जाते हुए कहा। "मैंने अब थोड़ी एहतियात बरतने का फैसला किया है। यहां इस कागज पर मैंने उस आदमी की कार का नंबर नोट कर लिया है, जो हमारा पीछा करता रहा है।"

लेकिन मुझ गधे ने उस नंबर को याद नहीं किया था। अब तक मुझे बस उसका पहला अक्षर और आखिरी नंबर-अंग्रेजी का 'पी' और 6 याद रह गया था। मुझे यह छोटी-छोटी बातें इसलिए बतानी पड़ रही हैं कि उस कागज पर जब मेरी नजर पड़ी, तो उसमें 'पी' की जगह 'बी' हो चुका था, 6 सिरे से गायब ही था और बाकी

नंबरों को देखकर ऐसा लगता था, जैसे किसी बच्चे ने उन्हें या तो पहले मिटाकर बदलने की कोशिश की है या फिर बगैर मिटाए इस तरह की कोशिश की है। उस तोड़े-मरोड़े गए नंबर से अब कुछ भी अंदाजा लगाना नामुमकिन था अलावा इसके कि गाड़ी का रजिस्ट्रेशन नंबर बर्ड्सले की पड़ोसी स्टेट का था।

मैंने खामोशी से उस कागज को जहां से निकाला था, वहीं कार में रख दिया और फिर बिना कुछ बोले गाड़ी चलाता हुआ वेस से बाहर निकल आया। लो ने पिछली सीट से बच्चों की कहानियों की कुछ किताबें उठाईं और अपनी कोहनी कार की खिड़की पर टिकाकर पढ़ने में मसरूफ हो गई। वेस से तीन-चार मील बाहर निकलने से नजर उठाई और हैरत के साथ मुस्कराने लगी। मैंने बगैर कुछ कहे उल्टे हाथ का एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर जड़ डाला।

और फिर जो कुछ हुआ, वह था पछतावा और नाउम्मीदी। मेरी लो मुझसे रूठ गई थी। मैंने उसे तरह-तरह से मनाने की कोशिश की। मिराना होटल में चांदनी रात में मैंने उसकी लंबी-लंबी उंगलियों वाले पैरों के तलवों को चूमा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। शायद हम दोनों ही फना हो चुके थे। जल्दी ही मुझे और मुसीबतों का सामना करना था।

वेस शहर के बाहरी इलाके की एक गली में-मुझे यकीन है कि यह मेरी आंखों

का धोखा नहीं था-मैंने उसी लाल रंग की एक कार या फिर उसकी जुड़वां को

देखा। ट्रैप के बजाय उसमें अब चार या पांच लड़के और लड़कियां थे, लेकिन मैंने

इस बारे में लो से कुछ नहीं कहा। वेस से निकल आने के बाद मैं अपने आपको यह यकीन दिलाने की कोशिश करता रहा कि हमारा कभी पीछा किया ही नहीं गया था, बल्कि यह शायद मेरी नजरों का धोखा था, मेरी गलतफहमी थी। लेकिन फिर मैंने धीरे-धीरे महसूस किया कि ट्रैप ने अपना पीछे करने का ढंग बदल दिया है और वह अब भी किराए की कारें बदल-बदलकर हर जगह हमारे पीछे लगा हुआ है। कारों के रंग बदल-बदलकर अलग-अलग तरह की कारों में वह हमारे पीछे पड़ा रहा और मैं इसके लिए सिवाय गुस्से के और कुछ भी नहीं कर

सका। उसकी छोटी-छोटी मूंछों, खुली शर्ट, गंजी खोपड़ी और चौड़े कंधों की तलाश में मैं अपने आगे-पीछे, इस तरफ, उस तरफ हर कार पर नजर डालता रहता था, और इस तरह कितनी ही कारों और उनमें सवार तरह-तरह के लोगों को देखता रहता था। कभी तो मुझे छुट्टी पर घूमने जा रही फैमिली की कार दिखाई देती, जिसकी पिछली खिड़की में टिश्यू बॉक्स होता था, गाड़ी के अंदर बच्चे भरे होते थे, एक खिड़की से गंदा-सा कुत्ता सिर निकाले होता था, गाड़ी का मडगार्ड गंदा और कुचला हुआ होता था। कभी मेरी नजर किसी कुंवारे की कार पर पड़ती, जिसमें हैंगर पर सूट झूलते दिखाई देते थे, कभी कोई फैमिली वाला मोटा-सा

आदमी कार से ढेर सारा धुआं उगलता हुआ जाता दिखाई देता, किसी कार की अगली सीट पर कोई लड़की बैठी दिखाई देती, जो कि कार चलाते लड़के से चिपककर बैठने की कोशिश में लगी होती थी, कोई कार सामान ही ढोने का काम करती दिखाई देती; मेरी नजर ग्रे रंग की कारों की तरफ अपने आप ही उठ जाती थी। क्योंकि शायद यह रंग ट्रैप का पसंदीदा रंग था और इसी रंग की कारों में वह ज्यादातर दिखाई दिया करता था।

अगली बार जब मैंने साफ तौर पर ट्रैप की शक्ल देखी, तब उस समय हम एक पहाड़ी इलाके में थे और हमारी कार एक हल्के से ढलान से नीचे की तरफ उतर रही थी। हमारे पीछे जो धुंध थी, उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे वह सब एक जगह इकट्ठी होकर उस कमीने की नीले रंग की सीडान में बदल गई हो। जैसे मेरे मन की तकलीफ को हमारी कार ने भी भांप लिया हो, यूं अचानक ढलान से उतरते-उतरते वह इधर से उधर लड़खड़ाने लगी, और उसके नीचे कोई चीज फटर-फटर-फटर की आवाज के साथ बोलने लगी।

"तुम्हारी कार में पंक्चर हो गया, मिस्टर," लो खुश होते हुए बोली।

मैंने एक चट्टान के पास कार रोक दी। लो ने अपने हाथ बांधे और पैर फैलाकर डैशबोर्ड पर रख लिए। मैंने कार से बाहर निकलकर पिछला दाहिना पहिया देखा। वह बिल्कुल पिचककर जमीन से जा लगा था। ट्रैप हमसे करीब पचास गज पीछे रुक चुका था। दूर से भी मैं उसके चेहरे पर आ गई खुशी की चमक देख सकता था। लेकिन अब मेरी बारी थी। मेरे दिमाग में एक शानदार तरकीब आई और मैंने फौरन ही उस पर अमल करना शुरू कर दिया। हालांकि मेरी अपनी कार में भी जैक मौजूद था, लेकिन फिर भी मैं जैक मांगने उसकी कार की तरफ चल दिया। उसने शायद घबराकर अपनी कार थोड़ा पीछे हटाई। तभी उसकी कार के पीछे से एक

माल से लदा ट्रक आया और तेजी से मेरे पास से गुजर गया। अगले ही लम्हे मुझे अपने पीछे से उस ट्रक के जोरदार हॉर्न की आवाज सुनाई दी। मैंने अचानक पलटकर देखा और मैंने देखा कि मेरी कार धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। मैंने दूर से भी लो को ड्राइविंग सीट पर बैठे देख लिया, गाड़ी के इंजन से भी चलने की आवाज आ रही थी-हालांकि मैंने इंजन बंद कर दिया था, लेकिन इमरजेंसी ब्रेक नहीं लगाया था और चंद लम्हों के उस वक्फे में जब तक कि मैं अपनी कार तक पहुंचा, हालांकि मेरे पहुंचने तक कार का इंजन बंद हो चुका था, मेरी समझ में सारी बात आ गई। पिछले दो साल में ड्राइविंग की छोटी-छोटी-सी बातें सीखने का लो को भरपूर मौका मिला था और कार का दरवाजा खोलते वक्त मुझे पूरा यकीन था कि लोलिता ने जानबूझकर कार को स्टार्ट किया था, ताकि मैं ट्रैप के पास नहीं जा सकूं। लेकिन उसकी यह तरकीब बेकार गई, क्योंकि जब मैं उसके पास पहुंचा,

ट्रैप की कार एक यू-टर्न लेकर वापस जा चुकी थी। मैंने थोड़ी देर आराम किया, और फिर कार की स्टेपनी बदलने में लग गया, जबकि लोलिता एक नक्शे को देखती रही। मुझे लग रहा था कि मैं पागल होता जा रहा हूं।

हमारा यह भुतहा सफर जारी रहा। पहाड़ी रास्तों पर हम थोड़ी दूर तक सुनसान ढलान पर बढ़ते रहे और उसके बाद लगातार ऊपर की तरफ चढ़ते रहे। एक जगह जहां कुछ ज्यादा ही चढ़ाई थी, हम उस ट्रक के पीछे पहुंच गए, जिसने टायर पंक्चर होने वाली जगह हमारी कार को ओवरटेक किया था। वहां रास्ता बड़ा टेढ़ा-मेढ़ा और पेचीदा होने के साथ ही काफी पतला भी था। इसलिए हमारे लिए उससे आगे निकल पाना अब बिल्कुल नामुमकिन हो रहा था। ट्रक के अगले हिस्से से च्यूइंग गम का एक चमकदार कागज उड़ता हुआ आया और हमारी कार के अगले शीशे से लगकर फड़फड़ाने लगा। मैंने सोचा कि अगर मैं वाकई पागल होता जा रहा हूं, तो हो सकता है कि मेरे हाथ से किसी का खून हो जाए। मेरे बहकते हुए दिमाग ने मुझे समझाया कि अगर मैं अपने इस काम की तैयारी कर लूं और अपने हथियार को बॉक्स में से निकालकर जेब में रख लूं तो ठीक ही होगा। मुझे पागलपन के इस दौरे का फायदा उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मुझे लगता है कि मुझ बेवकूफ ने लोलिता को नाटक करने और ऐक्टिंग सीखने की इजाजत देकर बहुत बड़ी गलती की थी। इस तरह उसने और कुछ सीखा हो या नहीं, हां मुझे धोखा

देना जरूर सीख लिया था। बर्ड्सले में मैं छुपकर देखा करता था कि वह किस तरह ऐक्टिंग की प्रैक्टिस किया करती है। अंधेरे में से किसी के कराहने की आवाज सुनने, सौतेली मां से पहली बार मिलने, किसी खराब चीज को चखने, किसी हरे-भरे बगीचे में कुचली हुई घास को सूंघने या फिर किसी चीज को पकड़ने जैसी कितनी ही चीजें थीं, जिनकी प्रैक्टिस वह हमारे ड्राइंग रूम में बिल्कुल अकेले किया करती थी। ऐक्टिंग सीखने के दौरान वह कितने ही कागजात घर लाया करती है। उनमें से एक कागज आज भी मेरे पास मौजूद है, जिस पर लिखा है-

'इन चीजों को अपने तसव्वुर में ही उठाने और अपने हाथ में पकड़ने की प्रैक्टिस करो-टेबल टेनिस की गेंद, सेब, चिपचिपी खजूर, लॉन टेनिस की गेंद, गर्म आलू, बर्फ का टुकड़ा, बिल्ली का बच्चा, कुत्ते का पिल्ला, घोड़े की नाल, चिड़िया का पर, फ्लैशलाइट।

'इसी तरह इन चीजों को अपनी उंगलियों से मसलो-रोटी का टुकड़ा, रबर, किसी दोस्त की दर्द करती कनपटी, मखमली कपड़े का नमूना, गुलाब की पत्ती। 'तुम एक अंधी लड़की हो। इनके चेहरों को सहलाओ-एक खूबसूरत यूनानी

लड़का, सैंटा क्लाज, कोई बच्चा, हंसती हुई चुडैल, सोता हुआ अजनबी, तुम्हारे पिता।'

मुझे आज उस सबके बारे में सोचकर बहुत बुरा लगता है, लेकिन तब मुझे यह सब अकेले में करती लोलिता कितनी प्यारी लगती थी, मैं बता नहीं सकता। वह अपनी एक्टिंग में खोई हुई होती थी और मैं उसकी नन्ही-मुन्नी प्यारी-प्यारी अदाओं में। उन चीजों को करती अपनी तसव्वुर की दुनिया में खोई वह सपनों जैसी दिखाई पड़ती थी। बर्ड्सले में रहते हुए किसी-किसी शाम को मैं उसे किसी गिफ्ट या कोई दूसरी चीज देने का वादा करके उससे डांस भी कराता था। हालांकि वह बहुत अच्छा डांस करना नहीं जानती थी और फुटबाल के किसी जोशीले दर्शक की तरह बस बार-बार टांगें चीरकर उछल-कूद करती रहती थी, लेकिन फिर भी मुझे उसका यही डांस अच्छा लगता था और यह तो कुछ भी नहीं था। सबसे प्यारी तो वह तब लगती थी, जब वह टेनिस के कोर्ट पर होती थी। उसे टेनिस खेलते देखकर मुझे कैसा लगता था, वह बता पाना मेरे बस की बात नहीं है। बस मैं इतना कह सकता हूं कि उस वक्त वह इस दुनिया की नहीं लगती थी, बल्कि ऐसा लगता था, जैसे आसमान से कोई हूर कोर्ट पर उतर आई हो।

अपनी बढ़ती उम्र के बावजूद वह पहले से कहीं ज्यादा सही मायने में एक किशोरी लगती थी। स्नो और एलफिंस्टन के बीच कोलोरैडो के होटल का वह टेनिस कोर्ट जहां लोलिता टेनिस खेली थी-सफेद चौड़ा-सा लड़कों वाला नेकर, पतली-सी कमर, पेट पर ऊपर का अखरोटी रंग का भाग, छातियों पर बंधा वह सफेद रूमाल जिसकी पट्टियां ऊपर जाकर उसकी गर्दन को लपेटे हुए उसकी कमर पर एक गांठ की शक्ल में बंध जाती थीं और फिर उसके किनारे नीचे लटककर झूलते रहते थे। उसके मदहोश कर देने वाले पतले-पतले अखरोट जैसे रंग के बाजू, बगलों में इस बात की निशानी कि वह धीरे-धीरे बालिग होती जा रही है, उसकी प्यारी-सी कंधों की हड्डियां और नीचे की तरफ पतली होती हुई पीठ। उसकी टोपी और टोपी का सफेद किनारा। उसका रैकेट, जिसके लिए मैंने काफी पैसा खर्च किया था। बेवकूफ था मैं, बिल्कुल बेवकूफ था। उससे रैकेट की कीमत के बारे में झूठ भी तो बोल सकता था!

सर्विस करने के लिए वह बड़े आराम से चलती हुई कोर्ट की पिछली लाइन तक जाती थी और सर्विस करने से पहले गेंद को कम से कम एक-दो बार जमीन पर मारा करती थी। ऐसा लगता था जैसे वह बस खेल का मजा ले रही हो, स्कोर की उसे कोई परवाह नहीं होती थी। घर में जो अंधेरी जिंदगी वह गुजारती थी, टेनिस कोर्ट पर जैसे उसे उससे छुटकारा मिल जाता हो, शायद इसलिए कोर्ट पर वह हमेशा खुश दिखाई देती थी।

लोलिता को खेलते हुए देखने में उसकी खूबसूरती का साथ निभाने के लिए संगीत भी हुआ करता था-उसके हर स्ट्रोक के साथ निकलने वाली आवाज का संगीत। टेनिस की सफेद गेंद ऐसी लगती थी, जैसे उसके पास आने पर वह और भी ज्यादा सफेद हो जाती हो और उसका रैकेट जैसे एकदम से लचीला हो जाता हो। उसका खेल भी बहुत बढ़िया था, लेकिन फिर भी वह कभी जीत नहीं पाती थी। एक दिन जब मैं एक बेंच पर बैठा उसे लिंडा हाल के साथ खेलते (और हारते) देख रहा था, तो एडुसा की बहन इलेक्ट्रा गोल्ड, जो कि टेनिस की एक बहुत अच्छी कोच थी। मुझसे बोली, "ऐसा लगता है जैसे लोलिता के रैकेट के बीचोबीच चुंबक लगा हो, लेकिन फिर भी ऐसा क्यों लगता है जैसे वह हारने के लिए ही खेल रही हो?" ओह, इलेक्ट्रा, इतना शानदार खेलकर वह हार भी जाती थी, तो क्या फर्क पड़ता है? जब वह सर्विस करती थी तो उसका बायां घुटना पहले मुड़ता, फिर सीधा होता था। उसकी बगल, उसके बाजू, उसका रैकेट सब कुछ चमकदार दिखाई देने लगते थे, गेंद को हवा में उछालकर वह मुस्कराती थी, तो मेरा दिल अपने काबू में नहीं रह पाता था। हाय, उसकी अदाएं। आज मुझे अफसोस होता है कि मैंने उसकी उन सारी अदाओं की तस्वीरें खींचने के बजाय (जिन्हें

अब मैं जला चुका हूं) मूवी क्यों नहीं बना ली?

उसे टेनिस से ज्यादा तैराकी पसंद थी और तैराकी से भी ज्यादा एक्टिंग। लेकिन फिर भी मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैंने उसके अंदर किसी चीज, शायद उसकी आत्मा को बरबाद नहीं किया होता-उस वक्त मुझे इस बात का अहसास नहीं था- तो शायद उसके अंदर जीतने की, जिंदगी में आगे बढ़ने की, अपनी मंजिल तक पहुंचने की ख्वाहिश होती और फिर जितना अच्छा वह खेलती थी। उस खेल की बदौलत वह जरूर टेनिस की चैम्पियन बन जाती। लोलिता, बिंबलडन टेनिस का खिताब जीतती ! बड़ी-बड़ी कंपनियों के लिए विज्ञापन करती! किसी फिल्म में टेनिस चैम्पियन का रोल करती! और शरीफ, भला, खामोशमिजाज कोच और शौहर हम्बर्ट उसके साथ होता!

लेकिन वह लोलिता जो कि रोजाना की जिंदगी में अपनी मासूमियत की नकाब के पीछे एक इंतहाई चालाक लड़की थी, वह न जाने क्यों टेनिस खेलते वक्त अपनी सारी चालाकी को कोर्ट से बाहर ही छोड़ आती थी और अपने मुखालिफ खिलाड़ी पर ऐसे मेहरबान हो जाती थी, जैसे वह उसे हारते देखना ही नहीं चाहती हो। उसके इतने बढ़िया खेल के बावजूद भी कोई भी खराब से खराब खिलाड़ी भी उसे बड़े मजे से हरा सकता था। जीतने की तो उसके अंदर ख्वाहिश ही नहीं थी। वह तो बस जैसे टेनिस खेलकर अपना वक्त बिताना चाहती हो। वह अपने सारे शॉट दूसरे खिलाड़ी के ठीक सामने डालती थी, ताकि वह आसानी से उन्हें

रिटर्न कर सके। अक्सर उसके लगाए स्ट्रोक नैट में ही उलझते हुए कोर्ट से बाहर निकल जाते थे।

मुझे खेलों में हमेशा से ही दिलचस्पी रही है और खेलों को हमेशा ही मैंने बहुत संजीदगी से लिया है। गैस्टन जैसे घटिया खिलाड़ी से शतरंज खेलते हुए भी मुझे शतरंज की बाजी ऐसी दिखाई देती थी, जैसे कि वह साफ-सुथरे पानी का एक टैंक हो, जिसमें मोहरों की शक्ल में खूबसूरत गुलाबी घोंघे और सीपियां बिल्कुल तली में पड़ी हों। लो को कैलिफोर्निया के उस कोच के हवाले करने से पहले मैंने खुद उसे जो ट्रेनिंग दी थी, वह भी मैंने बहुत ही गंभीरता से ली थी। हालांकि वह मेरी किसी भी बात को नहीं मानती थी। उल्टा मेरे कुछ बताने पर वह चिढ़ ही जाती थी और इसीलिए मेरे दिमाग में उन दिनों की बड़ी कड़वी यादें हैं।

लेकिन बहरहाल, अब जबकि कोलोरैडो के पहाड़ी इलाके में उस चैम्पियन होटल के कोर्ट में मैं उसके साथ टेनिस खेल रहा था, तो हालात काफी अलग थे। मैं खेलते हुए यह सोच रहा था कि उसकी बेवफाई की दास्तान को मैं उसकी खूबसूरत टेनिस में भुला दूं। वह काफी जोरदार शॉट लगा रही थी, लेकिन हमेशा की तरह उसके सारे शॉट सीधे मेरे सामने आकर गिरते, जिसकी वजह से मुझे इधर-उधर घूमने की ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती थी। मेरी सर्विस बड़ी जोरदार हुआ करती थी, जो मुझे मेरे पिता ने और उन्हें उनके दोस्तों, डेक्युजिस और बॉरमैन जैसे महान खिलाड़ियों और चैम्पियनों ने सिखाई थी। ऐसी सर्विस से मैं लोलिता को बड़ा परेशान कर सकता था, लेकिन उस परीजादी को परेशान करने की मुझमें हिम्मत कहां थी कि वह कुल चौदह साल की ही तो थी और मैं उससे बेइंतहा मुहब्बत करता था!

उसी वक्त टेनिस के नेकर पहने वहां दो लोग आ गए। उनमें से एक आदमी था, जो कि मुझसे तकरीबन आठ साल छोटा रहा होगा, जबकि दूसरी एक काली-सी लड़की थी, जो कि लोलिता से कोई दो साल बड़ी होगी। उन दोनों के पास उनके रैकेट थे, जो उनके हाथों में ऐसे लग रहे थे-जैसे वे रैकेट न होकर हथौड़े हों। बड़ी बेतकल्लुफी के साथ वे दोनों कोर्ट के पास पड़ी एक बेंच पर बैठ गए, जिस पर मेरा कोट भी रखा हुआ था और खूब शोर मचा-मचाकर हम दोनों के खेल का मजा लेने लगे।

खेलते-खेलते मुझे प्यास लगी और मैं पानी पीने के लिए चला गया। तभी वह आदमी मेरे पास आकर कहने लगा, "मेरा नाम बिल मीड है, और उसका फे पेज (तब तक फे पेज लोलिता के पास पहुंचकर उससे बातें करने लगी थी)। अगर आपकी इजाजत हो, तो हम एक गेम खेलें। एक तरफ मैं फे पेज, दूसरी तरफ आप और आपकी पार्टनर।" मैं अजनबियों के साथ किसी भी तरह का ताल्लुक नहीं

रखना चाहता था। इसलिए मैं 'सॉरी' कहने ही वाला था कि तभी मेरा ध्यान होटल के अंदर से निकलते होटल के एक लड़के पर चला गया, क्योंकि वह दूर से ही इशारे से मुझे होटल के अंदर बुला रहा था, क्योंकि मेरे लिए कहीं दूर से कोई फोन आया था। मैंने फौरन अपना कोट पहना (जिसके अंदर की जेब में मेरा पिस्तौल पड़ा हुआ था) और लो से कहा कि मैं अभी एक मिनट में वापस आता हूं। वह अपने रैकेट से गेंद उठा रही थी-ऐसा करना मैंने ही उसे सिखाया था। वह मुझे देखकर मुस्कराई और मैं उसे देखकर मुस्कराता हुआ अंदर चला गया।

लड़के के पीछे-पीछे होटल में जाते वक्त मेरे दिल पर एक बोझ था। मेरे दिल की कुछ अजीब-सी कैफियत थी, जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। क्योंकि इस वक्त लोलिता अजनबियों के पास थी। मुझे डर लग रहा था कि वह महफूज नहीं है। लेकिन क्या फर्क पड़ता है? मैं लडूंगा। हां, मैं जरूर लडूंगा। आसानी से उसे किसी के हवाले कर देने के बजाय मैं सब कुछ बर्बाद करके रख दूंगा।

मेरे काउंटर तक पहुंचने में जितनी देर लगी, तब तक फोन कट चुका था या काटा जा चुका था, लेकिन वहां मुझे लंबी-सी नाक वाले भले से आदमी ने (हालांकि मुझे पूरा यकीन था कि वह सचमुच एक भला आदमी नहीं है) मेरे हाथ में एक पैगाम पकड़ा दिया, जिस पर लिखा था-

'मिस्टर हम्बर्ट, बर्ड्सले स्कूल की हेड का फोन था। फौरन 28282 पर फोन कीजिए। बहुत जरूरी बात है।'

मैं फौरन एक टेलीफोन बूथ में गया और करीब बीस मिनट तक बर्ड्सले में जगह-जगह फोन मिलाता रहा। जो फोन नंबर 28282 मुझे दिया गया था, बाद में मुझे पता चला कि बर्ड्सले में यह नंबर है ही नहीं। बर्ड्सले स्कूल की हेड मिस्ट्रेस प्रैट इंग्लैंड जाने की तैयारी में थी और स्कूल से मुझे फोन नहीं किया गया था। स्कूल से मुझे फोन किया भी नहीं जा सकता था, क्योंकि यह बात तो कोई जानता ही नहीं था कि उस दिन मैं कोलोरैडो के चैम्पियन होटल में ठहरा हुआ था। लंबी नाक वाले से कहकर मैंने एक्सचेंज से पता कराया कि फोन कहां से आया था। पता चला कि लोकल कॉल थी। मैंने उसका शुक्रिया अदा किया। परेशानी और गुस्से के आलम में मैंने बार में जाकर एक बड़ी-सी ड्रिंक ली और उसके बाद टेनिस के कोर्ट की तरफ वापस चल दिया। ऊपर से ही मेरी नजर टेनिस कोर्ट पर पड़ी। यह कोर्ट इतनी ऊंचाई से किसी स्कूली बच्चे की स्लेट की तरह दिखाई दे रहा था। कोर्ट पर डबल्स गेम चल रहा था। एक तरफ मीड और फे थे, दूसरी तरफ लो और बड़ी सी खोपड़ी व भूरी पैंट वाला एक आदमी जो बार-बार हंसी-हंसी में ही लो के नितंब पर अपना रैकेट मार रहा था। उसने नीचे से ही मुझे देखा और अपना-

बल्कि मेरा रैकेट फेंककर वह चढ़ाई वाले रास्ते पर खड़ी अपनी ग्रे रंग की कार की तरफ भाग

खड़ा हुआ। अगले ही लम्हे वह और उसकी ग्रे कार वहां से जा चुके थे। जब तक मैं नीचे पहुंचा, बाकी तीनों लोग गेंदों में से कुछ छांट रहे थे।

"मिस्टर मीड, वह आदमी कौन था?"

मीड और फे दोनों ने अपना सिर हिलाकर बताया कि वे उसे नहीं जानते।

मेरे रैकेट का हैंडल अभी तक गर्म था, जिससे मुझे नफरत सी हो रही थी। होटल में पहुंचने से पहले मेरा इरादा था कि मैं लो को पास वाली झाड़ियों में ले जाकर रो-रोकर उससे पूछेंगा कि वह आदमी कौन था। लेकिन झाड़ियों में मुझे मीड और फे भी दिखाई दे गए जो कि शायद कुछ ऐसा कर चुके थे कि जोर-जोर से हंस रहे थे। लोलिता का अंदाज ऐसा था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो और जिंदगी अपनी सारी रानाइयों के साथ एक हसीन सफर तय करती चली जा रही हो। उसने मुझसे कहा कि वह होटल जाकर अपना स्वीमिंग सूट पहनना चाहती है, ताकि वह बाकी की शाम तैराकी करने में गुजार दे। कितना बढ़िया दिन था वह। लोलिता !

"लो! लो! लोलिता!" मैं जोर-जोर से पुकार रहा था, क्योंकि मेरे तैयार होने से पहले ही वह तैयार होकर बाहर निकल चुकी थी। मेरी आवाज इतनी बेकरार और बेताब थी कि अगर लोलिता मर चुकी होती, तो मेरी आवाज से उसका कफन तक उड़ जाता। लेकिन उस बेरहम लोलिता पर मेरी पुकार का कोई असर नहीं हुआ। लोलिता ! आखिर वह मुझे बाहर खुले लॉन के बीचोबीच खड़ी दिखाई दे गई। वहां वह मेरे बजाय एक कुत्ते के साथ खेल रही थी। कुत्ता एक लाल रंग की गेंद को बार-बार अपने जबड़े से पकड़ और छोड़ रहा था। मैं सिर्फ यह देखना चाहता था कि वह कहां है, हालांकि उस वक्त मेरे दिमाग की जो हालत थी, उसमें मैं किसी सूरत में तैराकी का मजा नहीं ले सकता था। बहरहाल मैंने आवाजें लगाना बंद कर दीं क्योंकि अब वह मुझे दिखाई दे चुकी थी। लेकिन अचानक मैं चौंक पड़ा। ट्रैप की लाल कार जैसे रंग की पैंटी और ब्रा पहने लोलिता इस वक्त कुछ ज्यादा ही खुश दिखाई दे रही थी। वह खुशी में पागल सी हो रही थी। यहां तक कि कुत्ता भी उसके जोशीले अंदाज की वजह से हैरत में पड़ा दिखाई दे रहा था। मैंने अपने सीने पर हाथ रखा और हालात का जायजा लेने की कोशिश करने लगा। लॉन के पीछे जो हरे-नीले रंग का स्वीमिंग पूल हुआ करता था, वह वहां होने के बजाय मेरे हलक में आ फंसा था और उसमें मुझे अपने बदन के कटे हुए हिस्से इस तरह तैरते दिखाई दे रहे थे जैसे नाइस में समंदर के नीले पानी में कूड़ा-करकट तैरता रहता है। एक तैराक अभी-अभी स्वीमिंग पूल से बाहर निकला था और पेड़ों के साये में मेरी नजरों से आधा छुपा हुआ वह अपनी गर्दन के सामने तौलिया को ताने

लगातार लोलिता को घूर रहा था। आसमान पर धूप और छांव का खेल चल रहा था और वह वहां नंगा खड़ा था। वह लगभग पूरा नंगा था, उसके बचे-खुचे बाल उसकी गोल खोपड़ी से चिपके हुए थे, उसकी मूंछ चिपचिपी-सी दिखाई दे रही थी, सीने पर बाल फैले हुए थे, उसकी बालों भरी जांघों से पानी की बूंदें टपक रही थीं और उसके स्वीमिंग का नेकर देखकर लगता था, जैसे अंदर से कोई चीज शायद उसके जंगलीपन की वजह से फट पड़ने को हो। कुल मिलाकर उसके वहशियों जैसे बदन में एक मर्दाना शान थी। मुझे ख्याल आया कि उसकी तरफ मेरा ध्यान लोलिता की अजीबो-गरीब हरकतों की वजह से गया था। मैं जानता था कि मेरी बेटी को अच्छी तरह मालूम है कि वह उसी की तरफ देख रहा है और वह इसी बात से खुश थी। कुत्ते के साथ अपने खेल में वह गेंद की तरफ लपकी और फिसलकर अपनी कमर के बल गिर पड़ी। उसकी टांगें हवा में लहराने लगीं, मैं अंदाजा लगा सकता था कि इस वक्त वह कितनी मजे में है। तभी मैंने देखा कि वह आदमी एक पेड़ से हाथ टिकाकर लोलिता की इस हरकत पर दांत निकाल रहा है। इसके फौरन ही बाद उस आदमी में बदलाव आया। अब वह मुझे कोई राक्षस नहीं दिखाई दे रहा था, बल्कि वह तो स्विटजरलैंड में रहने वाला, गुस्ताव ट्रैप नाम का मेरा वह रिश्तेदार था, जो कि बड़ा भलामानस था और एक अच्छा वेट-लिफ्टर था, हालांकि वह शराब में दूध मिलाकर पीने जैसी बेवकूफी की हरकतें भी किया करता था। ट्रैप ने दूर से ही मुझे देखा और अपनी गर्दन पर तौलिया लपेटकर लापरवाही जताता हुआ वापस पूल की तरफ चला गया। इधर उसके जाने के बाद लो भी ढीली-सी पड़ गई और कुत्ते ने जो गेंद उसके आगे लाकर डाली थी, उस पर ध्यान दिए बगैर वह वहां से उठ खड़ी हुई। कौन जाने बेचारे कुत्ते का भी दिल टूट गया हो! मैंने कुछ कहना चाहा, लेकिन तभी मेरे सीने में जोर का दर्द उठा और मैंने वहीं घास पर बैठकर उबकाई कर दी।

मैंने लोलिता की आंखों में देखा। ऐसा लगता था जैसे वह डरी हुई होने के बजाय कुछ हिसाब लगाने की कोशिश कर रही हो। फिर मैंने सुना कि वह किसी रहमदिल औरत से कह रही है कि उसके बाप को दौरा पड़ गया है। उसके बाद मैं काफी देर तक आराम कुर्सी पर पड़ा रहा। अगले दिन सुबह तक मैं आगे चलने के लिए तैयार था (आज भी डॉक्टरों को इस पर हैरत है)।

एलफिंस्टन के सिल्वर स्पर कोर्ट नामक होटल में हमने दो कमरों के जिस कॉटेज का ऑर्डर दिया था, वह देवदार की चमकदार भूरे रंग की लकड़ी का था, और हमारे पिछले सफर के

दौरान मैंने देखा था कि लोलिता को ऐसे कॉटेज बहुत पसंद आया करते थे। लेकिन अफसोस, अब हालात में किस कदर तबदीली आ

चुकी थी। नहीं, मैं ट्रैप या उस जैसे किसी और आदमी की वजह से ऐसा नहीं कह रहा हूं। क्योंकि धीरे-धीरे यह बात बिल्कुल साफ होती जा रही थी कि ट्रैप या उस जैसे जो भी दूसरे लोग मुझे बार-बार अलग-अलग रंग की कारों में, कभी एक जैसी शक्लों और कभी अलग-अलग शक्लों में दिखाई दे रहे थे, वह सब मेरा वहम था, धोखा था, मेरे पागल रह चुके और परेशान जेहन की उपज थे। लोलिता के इश्क में पागल कोई सेल्समैन, गुंडा या कोई और जो मुझे परेशान कर रहा था या मुझे कानूनी पचड़ों में डालने की धमकी दे रहा था-ऐसे सारे ख्यालों को मैंने अपने दिमाग से निकाल देने का फैसला कर लिया था। यहां तक कि बर्ड्सले से जो झूठा फोन आया था, मैं उसे भी अपना वहम समझने की कोशिश में लगा हुआ था। मैं ट्रैप का ख्याल अपने दिमाग से निकाल सकता था, चैम्पियन होटल में पड़े दौरे से लापरवाही बरत सकता था, लेकिन लो जो कि अब जल्दी ही उस उम्र में दाखिल होने वाली थी, जहां से उसे किशोरी नहीं कहा जा सकता था, उसकी मेरी तरफ लापरवाही और बेनियाजी के लिए मैं क्या करता?

एलफिंस्टन में बड़े ही प्यार से एक और परेशानी मेरी मुन्तजिर थी। चैम्पियन से यहां तक के दो सौ मील के पहाड़ी सफर में लो ज्यादातर खामोश और सुस्त रही थी, हालांकि मुझे इस बात की खुशी थी कि अब कोई भी हमारा पीछा नहीं कर रहा था। रास्ते में पड़े मशहूर और अजीबोगरीब आकार के पहाड़ों की तरफ शायद ही उसने कभी नजर डाली हो। एलफिंस्टन शहर सात हजार फीट की बुलंदी पर एक वादी में आबाद था और हाल ही में बसा लगता था। मुझे उम्मीद थी कि लो जल्दी ही यहां से बोर हो जाएगी और फिर हम कैलिफोर्निया होते हुए मैक्सिको चले जाएंगे। मुझे क्यों ऐसा लगता था कि दूसरे मुल्क में जाकर हम ज्यादा खुश रहेंगे? शायद इसलिए कि जब बचने की कोई उम्मीद नहीं रह जाती है, तो फेफड़ों की ही तरह मुहब्बत को भी आबोहवा में तबदीली की जरूरत पड़ जाती है।

होटल की तेजतर्रार, मेकअप की हुई नीली आंखों वाली विधवा मालकिन मिसेज हेज ने मुझसे पूछा कि क्या मैं स्विट्जरलैंड का रहने वाला हूं। उसकी बहन की शादी वहां हुई थी। मैंने बताया कि हां, मैं वहां का रहने वाला हूं। लेकिन मेरी बीवी आयरिश थी, इसलिए मेरी बेटी स्विस आयरिश है। मैंने अपना रजिस्ट्रेशन कराया, मिसेज हेज ने मुस्कुराते हुए मुझे चाबी

थमाई और मुस्कुराते हुए ही यह भी बताया कि कार कहां पार्क करनी है। लो कार से बाहर निकली और हल्के से कंपकंपाई। शाम की हवा में ठंडक थी। कॉटेज में जाने के बाद वह एक टेबल पर अपनी कोहनी पर सिर टिकाए बैठ गई और कहने लगी कि उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। 'नाटक कर रही है! ताकि मुझसे बच जाए', मेरा दिमाग मुझसे कह रहा था! मेरा बदन प्यासा था, लेकिन मेरे छूते ही वह कराहने लगी। लोलिता

124

बीमार थी! लोलिता मर रही थी! उसका जिस्म तप रहा था। मैंने उसे छूकर देखा। काफी तेज बुखार था। बच्चों को बुखार तो हो ही जाता है, मैंने सोचा ! और अगर मैं उसके अंगारे जैसे लाल हलक को नहीं देखता, तो शायद मैं उसे थोड़ी-सी तेज शराब और दो ऐस्पिरिन देता और उसे चूमना शुरू कर देता। फिर भी मैंने उसके कपड़े उतार दिए। लेकिन उसकी सांस उखड़ी हुई थी। वह सिर से पैर तक कांप रही थी और अपनी कमर में दर्द बता रही थी। सेक्स करने की जब कोई उम्मीद नहीं बची, तो मैंने उसे एक चादर में लपेटा और उठाकर कार में ले आया। इस बीच उस रहमदिल औरत मिसेज हेज ने डॉक्टर को खबर कर दी थी। "अच्छा हुआ कि यहां आने के बाद ऐसा हुआ," वह बोली, "क्योंकि न सिर्फ डॉ. ब्लू शहर का सबसे अच्छा डॉक्टर है, बल्कि एलफिंस्टन के अस्पताल में सारी मॉडर्न सहूलियतें मौजूद हैं, सिवाय इसके कि उसमें बिस्तरों की तादाद थोड़ी कम है।" सूरज डूब रहा था और मिसेज हेज ने एक औरत को मुझे रास्ता दिखाने के लिए साथ कर दिया था। डॉ. ब्लू जो कि हकीकत में इतना अच्छा डॉक्टर नहीं था, जितना उसके बारे में मशहूर था, हमें अस्पताल में मिल गया और उसने मुझे बताया कि लो को वाइरल इंफेक्शन है। जब मैंने उसे बताया कि उसे कुछ दिन पहले फ्लू भी हो गया था, तो उसने रूखेपन से कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने सोचा कि क्या मैं हल्के से हंसकर उसे यह बताऊं कि मेरी पंद्रह साल की बेटी का कुछ दिन पहले एक छोटा-सा एक्सीडेंट भी हो गया था। लेकिन फिर यह सोचकर कि मैं पिए हुए हूं, कहीं ज्यादा न बोल जाऊं, मैंने खामोश रहना ही मुनासिब समझा। डॉक्टर की भूरे बालों वाली रूखे मिजाज की चुड़ैल सेक्रेट्री को मैंने अपनी बेटी की उम्र 'लगभग सोलह' बताई। जब मेरी नजर उसकी तरफ नहीं थी, तो उसी बीच मेरी बच्ची को मुझसे दूर पता नहीं कहां ले गए। मैं दरख्वास्त करता रहा कि अस्पताल के एक कोने में चटाई पर मुझे भी रात गुजारने की इजाजत दे दी जाए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैं इधर-उधर दौड़ता, अस्पताल की सीढ़ियों पर चढ़ता-उतरता उसे तलाश करता रहा, ताकि उससे कम से कम इतना ही कह दूं कि अपनी बेहोशी के आलम में कहीं वह हमारे ताल्लुकात के बारे में कुछ न बड़बड़ा दे। एक नर्स से तो इसी बात को लेकर मेरा झगड़ा भी हो गया। आखिर थक-हारकर मैं वापस अपनी कार में आकर बैठ गया और

पता नहीं कितने घंटों तक वहीं बैठा अस्पताल की बिल्डिंग को देखता रहा, जो कि तारों की रोशनी में नहाई हुई सी लगती थी और अपनी इस नई तन्हाई से लड़ने की कोशिश में पता नहीं क्या-क्या सोचता रहा। ऐसा लगता था जैसे वह रात कभी खत्म नहीं होगी। उकताकर मैं वापस होटल चला आया। बूढ़ी औरत जो मेरे साथ अस्पताल तक आई थी, कब की जा चुकी थी और मुझे रास्ते में भटक जाने का अंदेशा था। चौड़ी-चौड़ी रेतीली

सड़कें एक-दूसरे को काटती गुजर रही थीं। मुझे एक स्कूल के खेल के मैदान पर पास के जेलखाने का साया पड़ता नजर आया। दूसरी तरफ वहां के लोकल लोगों का कोई मंदिर था। आखिरकार मुझे रास्ता भी मिल गया और उसके बाद होटल भी, जहां 'नो वैकेंसी' के बोर्ड के इर्द-गिर्द लाखों कीड़े मंडरा रहे थे। रात के तीन बजे मैं अपनी उदासी और थकान को दूर करने के लिए नहाया और फिर उसके लिए बिस्तर पर जाकर लेट गया, जिससे उसके गुलाब जैसे बदन की भीनी-भीनी महक उठ रही थी। मैं इस बात को पचा नहीं पा रहा था कि दो साल में आज पहली बार मैं अपनी लोलिता से जुदा हूं। अचानक मुझे ख्याल आया कि उसकी बीमारी भी कहीं उसी श्रृंखला का ही तो एक हिस्सा नहीं है, जिसका सामना मैं अपने सारे पिछले सफर के दौरान करता आया था-कहीं इसके पीछे वही जासूस या प्रेमी या चालबाज या मेरा वहम या वह जो भी हो-कहीं वही तो इस बीमारी के पीछे नहीं था? कहीं यह बीमारी एक साजिश का तो हिस्सा नहीं थी? यह सोचते ही मैं दिन की रोशनी होने से पहले ही बगैर नाश्ता किए बगैर सुबह के जरूरी काम निपटाए बड़ी बेताबी और बेचैनी के आलम में वापस अस्पताल पहुंच चुका था।

उस दिन मंगल था और बुध या बृहस्पति तक उसकी तबीयत में काफी सुधार आ चुका था। डॉक्टर का कहना था कि दो दिन के अंदर वह एकदम चंगी हो जाएगी। कुल मिलाकर आठ बार मैं उससे मिलने के लिए अस्पताल गया और इनमें से आखिरी मौका मेरे दिमाग पर आज भी नक्श है। उस वक्त तक मुझे भी इंफेक्शन हो चुका था और उस बीमारी में अस्पताल तक जाना अपने आपमें एक बड़ा कारनामा था। लोलिता के लिए मशहूर लेखकों की डांस, ड्रामा और टेनिस पर लिखी किताबें, जो कि मैं साठ मील दूर से खरीदकर लाया था और फूलों का गुलदस्ता लेकर चलना भी मेरे लिए दुश्वार हो रहा था-फूलों का गुलदस्ता मैंने खुद सवेरे-सवेरे एक पहाड़ी दर्रे से जंगली फूलों और पत्तियों से चुनकर तैयार किया था (उस पूरे हफ्ते में मैं शायद ही किसी रात सोया होऊं)। बहरहाल, जब मैं लड़खड़ाता हुआ-सा अपनी लो के तेरह डॉलर रोजाना के कमरे की तरफ बढ़ रहा था, तो वहां से उसकी वह नर्स जो पता नहीं क्यों

मुझसे खार खाने लगी थी, नाश्ते के खाली बर्तनों की ट्रे लेकर निकली। मुझे देखते ही ट्रे को बाहर रखकर वह तेजी से वापस कमरे में चली गई, शायद लो को यह बताने के लिए कि उसका खडूस बाप फिर से आ रहा है।

मेरी नजर ट्रे की तरफ गई, तो उसमें एक लिफाफा रखा हुआ था जो कि अब तक किनारे से फाड़ा जा चुका था, लेकिन उस पर कोई पता नहीं लिखा था। मैंने उसके बारे में नर्स मेरी लोर से पूछा तो उसने लिफाफे को देखा और बोली, "इसे छूना मत। आपकी उंगलियां जल जाएंगी।"

ऐसी बात का जवाब देना मेरी शान के खिलाफ था। मैंने बस इतना कहा, "तुम्हारे किसी दोस्त का लव-लैटर तो नहीं है यह?"

और फिर मैं लोलिता के कमरे में आ गया, "कैसी हो, मेरी जान?"

"लोलिता," मेरी लोर ने कहा, जो कि फिर से कमरे में घुस आई थी और वह चुड़ैल बार-बार मेरी नजरों में खटक रही थी, हालांकि मैं उसे देखकर यह भी सोच रहा था कि यह नर्से कितनी तेजी से अपने काम निपटाती हैं। "लोलिता, तुम्हारे पापा सोचते हैं कि मेरा कोई दोस्त तुम्हें चिट्ठियां लिखता है।"

इतना कहकर वह कमरे से बाहर चली गई। लोलिता जो कि अब फिर से अपनी ताजगी और गुलाबी रंगत वापस पा चुकी थी, उसके होंठों पर लिपस्टिक लगी थी, बालों में कंघी की हुई थी, नंगे बाजू उसके साफ-सुथरे बिस्तर पर फैले हुए थे, वहां लेटी मुझे देखकर मुस्करा रही थी, पास में ही एक मेज पर पड़ी एक नैपकिन और पेंसिल के साथ ही उसकी हीरे की अंगूठी सूरज की रोशनी में चमचमा रही थी।

"कितने भद्दे मय्यत जैसे फूल हैं," वह बोली। "खैर शुक्रिया।"

थोड़ी ही देर में नर्स फिर से वापस आई और लो के लिए अखबार लेकर आई। मेरी लाई किताबों की ओर से लापरवाही दिखाते हुए उसने उस अखबार को ले लिया।

"मेरी बहन ऐन पॉन्डेरोसा प्लेस में काम करती है," मेरी लोर ने कहा। शायद वह मुझे लिफाफे पॉन्डेरोसा लॉज के डिजाइन के बारे में बताना चाहती थी।

मुझे लगा लोलिता और मेरी लोर और शायद कोई और भी मिलकर मेरे खिलाफ एक साजिश कर रही थी। लो ने शायद मेरी लोर से कह रखा था कि वह मेरे साथ रहने के बजाय उसके अंकल के साथ रहना चाहती है, क्योंकि मैं उसके और उसके प्यार के बीच आ रहा हूं। मेरे गले में अब तकलीफ होने लगी और मैं थूक निगलता हुआ खिड़की के पास खड़ा होकर सामने की रोमांटिक पहाड़ियों और मुस्कराते साजिश करते आसमान की तरफ देखने लगा।

"मेरी जान," मैंने कहा, (कभी-कभी मैं लो को इस तरह भी पुकारता था) "हम इस गंदे शहर को तुम्हारी तबीयत ठीक होते ही छोड़ जाएंगे।"

"मुझे मेरे सारे कपड़े चाहिए," उसने लापरवाही से अखबार का एक पन्ना उलटते हुए कहा।

"...क्योंकि," मैंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "यहां रुकने का कोई फायदा नहीं है।"

"कहीं भी रुकने का कोई फायदा नहीं है," उसने अखबार से नजर हटाए बगैर कहा।

127

मैं एक कुर्सी पर बैठकर कमरे की मनहूस खामोशी से ध्यान हटाने के लिए एक किताब खोलकर बैठ गया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसी वक्त गैलरी में से कहीं एक म्यूजिकल घंटी की कोमल-सी आवाज सुनाई दी।

मुझे नहीं लगता कि उस दिखावटी अस्पताल में एक दर्जन से ज्यादा मरीज होंगे और उनमें से भी जैसा कि मुझे लोलिता ने बताया था, तीन या चार पागल थे। वहां के स्टाफ के पास करने को ज्यादा कुछ काम नहीं था। लेकिन फिर भी दिखावे के लिए ही यहां के नियम बड़े सख्त थे। यह बात भी सच है कि मैं हमेशा गलत वक्त पे ही वहां जाया करता था। म्यूजिकल घंटी बजने के कुछ देर बाद चुड़ैल मेरी लोर आई और आस्तीन से पकड़कर मुझे बाहर ले जाने लगी। जब मैं जा रहा था, तो जाते-जाते भी लो ने मुझे याद दिलाया कि मैं अगले दिन सुबह को उसका सामान लेता आऊं। उसे याद नहीं था कि जो चीजें उसे चाहिए थीं वह कहां रखी थीं। "मेरा नया ग्रे सूटकेस और मां का संदूक लेते आना," वह पुकार रही थी, जबकि उसके

कमरे का दरवाजा बंद हो चुका था। लेकिन अगली सुबह तक मैं कांप रहा था। बुखार ने मुझे पूरी तरह से अपनी गिरफ्त में ले लिया था। और मजबूरन मुझे लो का सामान मिसेज हेज की एक बूढ़ी औरत के हाथ भिजवाना पड़ा और मैं बिस्तर पर पड़ा सोचता रहा कि किस तरह लो यह सारा सामान मेरी लोर को दिखाएगी। मैं बेसुध-सा पड़ा रहा। अगले दिन भी मेरी हालत में कोई खास फर्क नहीं आया। उधर जबकि लोलिता अब ठीक हो गई थी। अपने बिस्तर पर लेटी कहानियां पढ़ रही थी, मैं न सिर्फ अपनी खराब तबीयत से लड़ रहा था, बल्कि लो से जुदाई के अहसास से भी जूझ रहा था। मैं सारी रात जागता रहता और इधर-उधर की बातें सोचता रहता। दिन में भी मैं अपने कमरे पर ही पड़ा रहता। दिन-भर शहर में जिस तरह की आतिशबाजी और पटाखे चलते रहे, जोरदार धमाके होते रहे, उससे लगता था कि वहां कोई जश्न मनाया जा रहा है। शाम को करीब पांच बजे मैंने अधखुले दरवाजे से आती किसी के सीटी बजाने की आवाज सुनी। अपने होंठों से सीटी बजाता फ्रैंक अगले ही क्षण मेरे दरवाजे को खोले खड़ा था। उसने पहले मुझसे मेरी खैरियत मालूम की। फिर मुझे बताया कि मेरे लिए नर्स मेरी लोर का फोन आया है और वह पूछ रही है कि क्या मैं ठीक हूं और क्या मैं आज अस्पताल आ पाऊंगा।

बीस कदम की दूरी पर खड़ा फ्रैंक पहाड़-सा दिखाई देता था। उसके सारे जिस्म पर जख्मों के निशान थे, क्योंकि वह एक बार किसी बम धमाके की चपेट में आ गया था, लेकिन अनगिनत जख्मों के बावजूद भी वह ट्रक चलाता था, मछली का शिकार खेलता था, जंगली जानवरों का शिकार करता था, खूब पीता था और औरतों के साथ अय्याशी करता था। उस दिन या तो जश्न का दिन होने की वजह से या फिर एक बीमार आदमी का ध्यान बंटाने के लिए उसने अपने बाएं

हाथ का दस्ताना भी उतारा हुआ था। उसका बायां हाथ दरवाजे पर टिका हुआ था और उसकी चौथी और पांचवी उंगली सिरे से गायब थी, जबकि उसके हाथ की पुश्त पर एक नंगी लड़की की तस्वीर गुदी हुई थी, जिसकी गुलाबी छातियां थीं। उसके हाथ की दो उंगलियों को कलाकार ने लड़की की टांगें बना दिया था जबकि उसका मुकुट पहना सिर उसकी कलाई पर गुदा हुआ था।

मैंने उससे कहा कि वह मेरी लोर से कह दे कि मैं आज दिर भर अपने बिस्तर पर ही रहूंगा

और अगर मेरी तबीयत ठीक रही, तो कल किसी वक्त मैं अपनी बेटी से मिलने आऊंगा।

उसने मेरी नजरों का रुख आने हाथ की तरफ देखा और 'ओके ओके' गाता हुआ मेरा संदेश फोन तक ले गया, जबकि मैं अपने कमरे में पड़ा शराब पीता रहा। सुबह तक मेरा बुखार उतर चुका था। हालांकि अभी भी मुझे काफी कमजोरी महसूस हो रही थी, लेकिन फिर भी किसी तरह से मैं बैंगनी गाउन पहनकर होटल के ऑफिस के टेलीफोन तक जा पहुंचा। सब कुछ ठीक-ठीक था। एक मीठी-सी आवाज ने मुझे बताया कि हां, सब कुछ ठीक है, मेरी बेटी को कल अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। दो बजे के करीब उसके अंकल मिस्टर गुस्ताव एक प्यारे से कुत्ते को एक काले रंग की कार में साथ लेकर मुस्कराते हुए अस्पताल आए थे, उन्होंने लोलिता का बिल कैश में अदा किया और मेरे लिए यह पैगाम छोड़ा कि मैं परेशान नहीं होऊं, क्योंकि वे हमारे पहले से तय किए प्रोग्राम दादा जी के फार्म पर जा रहे हैं।

एलफिंस्टन एक प्यारा-सा छोटा-सा शहर था और मुझे उम्मीद है कि अब भी वैसा ही होगा। हरी-हरी ऊन-सी ओढ़े इसके पेड़, लाल रंग की छतें और जैसा कि मैं पहले भी जिक्र कर चुका हूं इसका मॉडल स्कूल, मंदिर और वह चरागाह जहां खच्चर और दूसरे जानवर चरते थे-सब कुछ जुलाई की धुंध भरी सुबह में बड़ा प्यारा नजारा पेश करता था। इस प्यारे से शहर से अपनी कार से नशे में तेजी से गुजरता हुआ मैं कुछ ही देर बाद अस्पताल पहुंच चुका था। गुस्से, हताशा और पागलपन में मैंने डॉक्टर को पीट डालने की कोशिश की। मैं सारे स्टाफ पर बुरी तरह चिल्ला रहा था और मेरी लोर ढूंढ रहा था, लेकिन यह उसकी खुशकिस्मती थी कि उस वक्त वह वहां मौजूद नहीं थी। वहां जो लोग मौजूद थे, वे मुझे रोकने की कोशिश कर रहे थे और इस छीना-झपटी में मेरे गाउन की जेब भी फट चुकी थी। डॉ. ब्लू समझकर मैं एक मरीज पर चढ़ बैठा और तभी एक दुबली-पतली नर्स वहां मेरे लिए कुछ खूबसूरत किताबें और एक चादर लेकर आई। उसने मुझसे एक रसीद पर साइन करने को कहा। तभी मेरी नजर वहां मौजूद एक पुलिसवाले पर पड़ी और फौरन मुझे याद आ गया कि रास्ते में एक कार वाले ने शायद मुझे हाथ

के इशारे से इसीलिए रोकने की कोशिश की थी कि वह मेरी तेज और खतरनाक ड्राइविंग की वजह से मेरा पीछा कर रही पुलिस की गाड़ी के बारे में मुझे बाखबर करना चाहता था। मैंने खामोशी से रसीद पर अपने साइन किए और इस तरह मैं अपनी लोलिता उन लंगूरों के हाथ हार गया। लेकिन मैं और कर भी क्या सकता था? मेरे दिमाग में उस समय एक ही ख्याल था,

'इस वक्त आजादी ही सब कुछ है।' मेरी एक जरा-सी गलती मुझे जेल की हवा खिला सकती थी और मुझे अपने सारे जुर्मों की दास्तान सुनानी पड़ सकती थी। इसलिए मैंने ऐसी एक्टिंग की, जैसे कि मैं किसी सदमे से धीरे-धीरे उबर रहा हूं। मैंने डॉ. ब्लू से खासतौर से और उसके अलावा सारे अस्पताल से माफी मांगी। शराब की वजह से मुझे अपनी आंखों में आंसू लाने में कोई खास परेशानी नहीं हुई। मैंने अपने आपसे कहा कि मेरा हथियार अभी भी मेरे पास है और अब मैं आजाद हूं-उस भगोड़े को तलाश करने के लिए, उसे बर्बाद कर देने के लिए।

कई दिन तक मैं उस शैतान को एलफिंस्टन और उसके आसपास के इलाके में तलाश करता रहा, लेकिन मेरे हाथ नाकामी के सिवाय कुछ नहीं लगा। कैसबीम जहां उसकी लाल रंग की कार पहली बार दिखाई दी थी, वह यहां से लगभग एक हजार मील की दूरी पर रहा होगा क्योंकि वहां से यहां तक आने में हमें करीब पूरा जून लग गया था। हम एक दिन में डेढ सौ मील से ज्यादा नहीं चलते थे और इतना चलने के बाद चार-पांच दिन एक ही जगह पर ठहरे भी रहते थे। मुझे लगा कि इन्हीं एक हजार मील के बीच उसे तलाश करना शायद ज्यादा ठीक रहेगा।

आप जरा सोचिए कि मुझ जैसे शर्मीले और किसी भी तरह के दिखावे में यकीन न रखने वाले आदमी के लिए कितना मुश्किल होता होगा, जब होटलों के रजिस्टरों में उसका नाम तलाश करने के लिए मैं बहाने करता था, और अपने अंदर के गहरे दुख को दबाते हुए होंठों पर मुस्कुराहट सजाकर किसी होटल के काउंटर पर क्लर्क से कहता था, "मुझे यकीन है कि यहां मैं पहले भी एक बार ठहर चुका हूं-मैं जून के नामों की लिस्ट देखता हूं-नहीं, शायद मुझे गलतफहमी हुई है-कितना अजीब नाम है इस शहर का, 'कावटागेन।' बहुत-बहुत शुक्रिया या मेरा एक ग्राहक यहां ठहरा हुआ है, मैं उसका पता भूल गया हूं, क्या मैं...?" और अक्सर ऐसा होता था कि काउंटर क्लर्क कोई चिड़चिड़े किस्म का आदमी होता था और वह होटल का रजिस्टर दिखाने से इंकार कर देता था।

उस साल पांच जुलाई और अठारह नवंबर के बीच (जब मैं बर्ड्सले लौटा) मैंने कुल मिलाकर तीन सौ बयासील होटलों, ढाबों और टूरिस्ट में अपना रजिस्ट्रेशन कराया, हालांकि मैं उन सभी में ठहरा नहीं। और सिर्फ एक जगह, चैस्टनट और

बर्ड्सले के बीच, मुझे उस शैतान का सिर्फ एक साया-सा नजर आया, जो कि बाद में मेरे

जेहन का धोखा साबित हुआ। इस सबके दौरान मुझे किसी पर यह भी जाहिर नहीं होने देना था कि मैं किसी की तलाश में हूं; कम से कम पचास जगहों पर मैंने काउंटर पर ही पूछताछ करने की कोशिश की, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ, इसलिए मजबूरन मुझे उन कमरों कर किराया देना पड़ता था, जिनकी न तो मुझे जरूरत थी और न उनमें ठहरना था। यही एक तरीका था, जिससे कि मैं होटल के रजिस्टर तक पहुंच पाता और उसे खोलकर कुछ तलाश कर पाता था।

मैं जिन तीन सौ रजिस्टरों का मुआयना करने में कामयाब हुआ, उनमें से कम से कम बीस में मुझे उसका सुराग मिला-वह शैतान मुझसे भी ज्यादा रुकता रुकता चल रहा था या फिर सिर्फ मेरा मजाक उड़ाने के लिए वह झूठा रजिस्ट्रेशन कराके और हल्का-सा सुराग छोड़कर बढ़ जाता था। वह सिर्फ एक ऐसे होटल में रुका था, जिसमें पहले मैं भी ठहर चुका था। मुझे याद आता था कि बर्ड्सले से चलने से पहले किस तरह से लोलिता ने रास्तों के नक्शे पर अपने लिपस्टिक से उन जगहों पर निशान बनाए थे, जहां वह ठहरना चाहती थी या जहां के बारे में वह कमीने को पहले बता चुकी थी।

शुरू से ही मुझे बात का अंदाजा हो चुका था कि वह जानता है कि मैं उसकी तलाश में हूं, और इसीलिए वह होटल के रजिस्टर में अधूरे जाने-पहचाने से नाम लिखता था। पॉन्डेरोसा लॉज, जहां मैं सबसे पहले उसकी तलाश में गया, वहां भी उसने ऐसा ही नाम लिखा था। लॉज की मालकिन से पूछने पर पता चला कि वह यहां पांच दिन ठहरा था और बीमार था, जाते वक्त किसी लोकल गैराज में मरम्मत के लिए अपनी कार छोड़ गया था और चार जुलाई को ही होटल छोड़ गया था। यह भी पता चला कि वहां मेरी लोर नाम की एक लड़की भी काम किया करती थी, लेकिन सीडाल शहर में एक परचून वाले से शादी हो जाने के बाद वह चली गई थी। एक दिन एक सुनसान गली में मैंने मेरी लोर को घेर लिया। वह घबराकर चिल्लाने ही वाली थी कि मैं उसके आगे अपने घुटनों के बल गिर गया और रोकर, बिलखकर उससे इल्तेजा करने लगा कि वह मेरी मदद करे। वह कसम खाकर कहने लगी कि उसे कुछ भी नहीं मालूम। मैंने जेब से एक सौ डालर का नोट निकालकर उसे थमाया, लेकिन तब भी कोई काम की बात पता नहीं चली, तो मैंने वह नोट उसके हाथ से छीना और उसे गालियां देता हुआ वहां से पलट आया। इस वाकये से मैंने सबक सीखा कि मुझे किसी की मदद पर नहीं, बल्कि खुद अपने पर ही भरोसा करना पड़ेगा। मुझे मालूम था कि ट्रैप इतना बड़ा सुराग दे बैठे, जो बाद में मेरे काम आ सके। धोखेबाजी और बेवफाई पर गुस्से, अकेलेपन और उम्मीद जैसे जज्बात लिए मैं उसके पीछे-पीछे चलता रहा और वह अपने शैतानी खेल में मुझे नचाता रहा।

जो सुराग वह छोड़ता था, उनसे उसकी नहीं, उसकी शख्सियत की पहचान हो जाती थी। उसकी हैंडराइटिंग बहुत कोशिश करने के बावजूद भी बदल नहीं पाती थी। उसकी बहुत-सी बातें मुझसे मिलती-जुलती थीं-उसके सोचने का ढंग, मजाक करने और उसके मजाक उड़ाने का ढंग-वह काफी पढ़ा-लिखा था, उसे फ्रांसीसी भाषा अच्छी तरह से आती थी, उसकी हैंडराइटिंग औरतों जैसी थी, वगैरह, वगैरह और इस तरह जब तक मैं बर्ड्सले पहुंचा, मेरे दिमाग में उस शैतान की एक तस्वीर सी बन चुकी थी और उस तस्वीर की ही शक्ल को तलाश कर रहा था।

बर्ड्सले स्कूल में पादरी रिगर और एक जर्मन व लैटिन के टीचर के अलावा सभी मर्द टीचर टैम्पोरेरी थे। लेकिन वहां की लड़कियों को लैक्चर देने के लिए दो बार बर्ड्सले कॉलेज का एक आर्ट इंस्ट्रक्टर आया था। मैं भी दोनों बार उसके लैक्चर को सुनना चाहता था, लेकिन अपनी आदत के मुताबिक दोनों ही बार लोलिता ने मुझे वहां जाने से रोक दिया था। मुझे याद था कि गैस्टन ने भी एक बार उस लैक्चर की तारीफ की थी, लेकिन मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा था।

मैं उसकी तलाश में बर्ड्सले कॉलेज जा पहुंचा। रिसेप्शन पर ही मैंने पता लगा लिया कि उसका नाम रिग्स है और वह कुंवारा है। मैंने उससे मिलने की ख्वाहिश जाहिर की, तो मुझे इंतजार करने के लिए कहा गया, क्योंकि वह क्लास ले रहा था। मैं परेशान, शराब के नशे में धुत्त, नींद का मारा अपने रेनकोट की जेब में पड़े पिस्तौल को मजबूती से थामे वहां बैठकर उसका इंतजार करने लगा। लेकिन फिर मैंने सोचा कि इस हालत में मैं कोई भयंकर गलती न कर बैठूं। ऐसा कैसा हो सकता है कि बर्ड्सले में रहने वाला कोई प्रोफेसर मेरी लोलिता को छुपाए हुए हो। यह आदमी वह नहीं हो सकता, जिसकी मुझे तलाश है। वह तो मेरी लो के साथ जरूर कैलिफोर्निया में होगा।

उसी वक्त एक तरफ कुछ शोर-सा हुआ-उधर नहीं जिस तरफ से मैं उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा था और कई लड़कियों के झुरमुट में एक गंजा सिर और दो चमकदार भूरी आंखें आगे आती दिखाई दीं।

वह मेरे लिए बिल्कुल अजनबी था, हालांकि वह कह रहा था कि बर्ड्सले स्कूल की एक पार्टी में हम मिल चुके हैं। उसने पहले मुझसे मेरी बेटी के बारे में पूछा। उसके बाद उसने कहा कि

उसकी एक और क्लास है, इसलिए वह मुझसे बाद में मिलेगा।

यह कहानी लोलिता के बारे में है और मैं अब इसके उस हिस्से में पहुंच चुका हूं, जिसे 'गुम हो गई लोलिता' का नाम दिया जा सकता है, इसलिए अगले तीन

साल का जिक्र करना बिल्कुल बेकार ही होगा। क्योंकि मैं उसे तलाश करता रहा और मेरी तलाश को हमेशा सिर्फ नाकामी का ही मुंह देखते रहना पड़ा।

वैसे यह बड़ी अजीब-सा बात है कि मैंने शायद ही लोलिता को कभी अपने सपनों में देखा हो। मैं उसे देखता था, लेकिन दिन के सपनों में, बिल्कुल ऐसे ही जैसे वह एकदम मेरे पास ही हो। अगर वह सोते में मेरे सपने में आती भी थी, तो बड़े अजीब ढंग से कभी वेलेरिया के रूप में, तो कभी शैर्लट या कभी दोनों के मिले-जुले रूप में। यह अजीबो-गरीब सी चुड़ैल उदासी और नाउम्मीदी के माहौल में आती और किसी पतले से तख्ते पर टिकी मुझे दावत देती, जबकि उसका बदन किसी फुटबाल के वॉल्व की तरह कहीं से खुला दिखाई देता था। मेरे दांत उसके शरीर में धंसे हुए होते और सपने के आखिर में शैर्लट या वेलेरिया मेरी खून भरी बांहों में होती वे और मैं एक भाई जैसे प्यार के साथ उसका चुंबन कर रहा होता।

एक दिन मैंने कार से उसकी सारी मैग्जीनें निकालीं- वे जिनमें तरह-तरह की बेकार चीजों के इश्तेहारों, मेकअप की हुई औरतों और हैंडसम मर्दों के फोटो के अलावा कुछ नहीं होता है। इन सारी मैग्जीनों और उसकी सारी कहानियों की किताबों को मैंने जलाकर राख में बदल दिया। लेकिन इन किताबों के अलावा उसकी जो दूसरी चीजें थीं, उन्हें इस तरह से बर्बाद कर देना मेरे लिए आसान नहीं था।

उसके जूतों का एक जोड़ा, एक बुश्शर्ट, एक पुरानी जींस, जो कि मुझे एक संदूक में पड़ी मिल गई थी, एक कुचली हुई स्कूली टोपी और इसी तरह की दूसरी कई चीजों को 1949 के आखिर तक मैंने अपने पास सहेजकर रखा और अक्सर उन पर अपने चुंबनों और आंसुओं की झड़ी-सी लगाता रहा। फिर जब मुझे महसूस होने लगा कि मैं अंदर से बिल्कुल टूटता और बिखरता-सा जा रहा हूं, तो मैंने इन सारी चीजों को एक जगह इकट्ठा कर लिया। फिर बर्ड्सले में जमा किए उसके सारे सामान, एक किताबों से भरा संदूक, एक साइकिल, पुराने कोट और बरसाती जूतों के साथ इस सामान को भी मैंने कनाडा बॉर्डर पर एक झील के किनारे बने

लड़कियों के यतीमखाने को एक बेनाम तोहफे के रूप में भेज दिया। उसके पंद्रहवें जन्मदिन पर !

उस वक्त तक मेरे दिमाग की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। मुझे ऐसा लगने लगा था कि इस दुनिया से, बल्कि दुनिया की हकीकत से मेरा ताल्लुक टूटता जा रहा है। इसीलिए जाड़े के पूरे मौसम में और उसके बाद बसंत में भी काफी दिनों तक मैं क्यूबेक के एक सैनेटोरियम में रहा, जहां मैं पहले भी एक बार ठहर चुका था। वहां से निकलने के बाद मैंने फैसला किया कि पहले मैं न्यूयॉर्क जाकर अपने कुछ मामले निपटाऊंगा और फिर कैलिफोर्निया पहुंचकर वहां अच्छी तरह

से लोलिता की तलाश में लग जाऊंगा। इस दौरान मैंने कितनी ही कविताएं भी लिखीं, जिन्हें पढ़कर आज भी मुझे लगता है, जैसे सचमुच उन्हें किसी पागल ने लिखा हो। लेकिन इस सबके दौरान एक लम्हे को भी बदले की भावना को मैंने अपना दामन छोड़ने का मौका नहीं दिया।

अगर मैं ऐसा कहूं या आप ऐसा समझें कि लोलिता को खो देने के बाद बच्ची उम्र की लड़कियों की तरफ मेरे दिल में कशिश कम हो गई थी, तो यह एकदम गलत होगा। खेल के मैदानों में और समंदर के किनारों पर मेरी आंखें, मेरी ख्वाहिश न होने पर भी, चोरी-चोरी वहां खेलती बच्चियों पर जा पड़ती थीं। अब यह अलग बात है कि वे सभी मुझे लोलिता की कनीजों से ज्यादा कुछ भी नहीं लगती थीं। यह बात भी अलग है कि अब मेरे अंदर इस तरह की भी कोई ख्वाहिश नहीं जागा करती थी कि उनमें से किसी के साथ मैं दूर किसी दुनिया में चला जाऊं और उसके साथ वही सारे खेल खेलूं, जो मैंने लोलिता के साथ खेले थे। कम से कम कुछ समय के लिए तो मेरे अंदर इस तरह की सारी ख्वाहिशें मर चुकी थीं। दूसरी तरफ, चूंकि दो साल तक अपनी हवस को मिटाने की मुझे ऐसी आदत-सी पड़ गई थी कि मुझे यह डर बना रहता था कि कहीं अगर कभी किसी सुनसान गली में मुझे कोई कमसिन लड़की दिखाई दे गई, तो कहीं मुझ पर पागलपन का ऐसा दौरा न पड़ जाए कि मैं उसके साथ कुछ उलटा-सीधा कर बैठूं। अकेलापन मुझे और मेरे ख्यालात को बिगाड़ रहा था। मुझे किसी के साथ की और हमदर्दी की जरूरत थी। मेरा दिल पागल हो रहा था और भरोसे के लायक नहीं रह गया था और इस तरह मेरी जिंदगी में रीटा दाखिल हुई।

वह लोलिता से दोगुनी उम्र की थी, दुबली-पतली, काले बाल, बड़ी-बड़ी आंखें, खूबसूरत और गुदाज बदन। उससे मेरी पहली मुलाकात मौन्ट्रील और न्यूयॉर्क के बीच कहीं टाइगरमोश नाम के एक बार में हुई। उस समय वह थोड़े से नशे में थी और कहने लगी कि वह बचपन में मेरे ही स्कूल में पढ़ा करती थी। इतना कहकर उसने अपना छोटा-सा हाथ मेरे बंदर जैसे पंजे पर रख दिया। हालांकि इससे मेरे अंदर बहुत हल्की-सी ही हलचल हुई, लेकिन मैंने सोचा कि एक बार कोशिश कर देखने में कोई हर्ज नहीं है। मैंने कोशिश की और वह मेरे सफर की साथी बन गई। वह इतने नाज़ुक दिल की थी कि शायद वह किसी दुखी जानकर या टूटे-फूटे पेड़ को भी देखती, तो हमदर्दी में उसी की हो जाती।

जब मैं पहली बार उससे मिला था, उससे कुछ ही समय पहले उसने अपने तीसरे शौहर को तलाक दिया था और उसी के कुछ दिन बाद उसके सातवें बॉयफ्रेंड ने उसे छोड़ दिया था इसके अलावा थोड़े-थोड़े वक्त के लिए उसके

कितने बिस्तर के साथी रह चुके थे, उसे याद नहीं था। उसका रंगीन मिजाज भाई अपने शहर का मेयर था। पिछले आठ साल से वह अपनी बहन को हर महीने कई सौ डॉलर देता था बशर्ते कि वह उसके शहर ग्रेनवॉल में दाखिल न हो। उसने बताया कि पता नहीं क्यों, लेकिन उसके सारे बॉयफ्रेंड उसे ग्रेनवॉल शहर की ही तरफ ले जाने की कोशिश किया करते थे।

उसके पास एक छोटी-सी कार थी और हम उसी में कैलिफोर्निया तक गए, ताकि मेरी थकी हुई काया को थोड़ा-सा आराम मिल जाए। वह आमतौर से नब्बे की स्पीड से कार चलाया करती थी। हम 1950 की गर्मियों से 1952 की गर्मियों तक, दो साल साथ रहे और वह बहुत ही सादा मिजाज, शरीफ और हमदर्द साथी साबित हुई। वह वेलेरिया और शैर्लट से कहीं बेहतर थी। मैं मानता हूं कि इस गुनाहों भरी कहानी में उसका जिक्र नहीं होना चाहिए और आज वह जहां भी है, चाहे वह नशे में हो या ठीक-ठाक, मैं उससे कहना चाहता हूं कि वह एक बहुत हमदर्द और समझदार साथी थी और उसी के प्यार और देखभाल ने मुझे पागलखाने में दाखिल होने से बचा लिया। मैंने उसे बता दिया कि मैं एक बेवफा लड़की की तलाश कर रहा हूं और मेरा इरादा उस लड़की के साथी को मार डालने का है। रीटा ने मेरे प्लान को सही बताया और मेरी मदद के लिए बिना मुझे बताए ही वह अपनी तरफ से खोजबीन भी करने लगी। लेकिन इसी खोजबीन के दौरान वह बदमाशों के हाथों में पड़ गई। जब काफी तलाश के बाद वह मुझे मिली, तो वह बलात्कार का शिकार हो चुकी थी और घायल थी, लेकिन मेरे लिए

वह पहले ही की तरह जिंदादिल बनी रही। फिर एक दिन वह मेरे पिस्तौल से खेलने की कोशिश करने लगी, मैंने उसे यह कहकर रोकने की कोशिश की कि यह रिवॉल्वर नहीं है। छीना-झपटी में गोली चल गई, जिससे पानी की टंकी में छेद हो गया और एक पतली मगर तेज पानी की धार उसमें से बह निकली। मुझे आज भी इस बात पर उसका जोर-जोर से हंसना याद है।

उसके बदन की खूबसूरत गोलाइयों, उसके बदन की चिकनाहट और उसके धीरे-धीरे प्यार करने के अंदाज ने मुझे बुराइयों से बचाए रखा। मैं एक घटना के बारे में खास बताना चाहता हूं, क्योंकि बाद में उसके काफी अहम नतीजे बरामद हुए। मैंने अपनी तलाश को फिलहाल खत्म कर दिया था। एक शाम को एक लंबे सफर से वापसी में हम एक गंदे से होटल में ठहरे थे। हम अपने कमरे में सो रहे थे। जब हमारी आंख खुली, तो हमने देखा कि हमारे कमरे में एक तीसरा आदमी भी मौजूद है-एक भूरे बालों और सफेद पलकों वाला जवान आदमी, जिसके कान कुछ ज्यादा ही बड़े थे। उसे न तो मैं पहचानता था और न ही रीटा। एक मोटा-सा गंदा अंडरवियर और पुराने फौजी जूते पहने हमारे डबल-बैड पर वह मेरी पाकीजा

रीटा की तरफ लेटा खर्राटे ले रहा था। उसका एक सामने का दांत गायब था और उसके माथे पर मोटे-मोटे दाने उभरे हुए थे। चूंकि सबसे पास मेरा रेनकोट ही पड़ा था, इसलिए रीटा ने अपने नंगेपन को मेरे रेनकोट से ही ढक लिया। मैंने भी अपने पूरे कपड़े पहने और फिर हमने हालात का जायजा लिया। उस आदमी ने कमरे में आने के बाद शराब पीने के लिए पांच गिलासों का इस्तेमाल किया था। दरवाजा ठीक से बंद नहीं किया गया था। एक स्वेटर और पैंट फर्श पर पड़े हुए थे। हमने उस आदमी को हिला-डुलाकर होश में लाने की कोशिश की। बुरी तरह नशे में लड़खड़ाती जबान से (जिसे रीटा ही समझ सकी) उसने कहा कि हमने उसकी पाकीजगी को बर्बाद किया है। हमने फौरन उसे कपड़े पहनाए और उसे पास के ही अस्पताल में छोड़ आए और तब हमें पता चला कि हम इस वक्त ग्रेनवॉल में हैं। खैर, छः महीने बाद रीटा ने अस्पताल के डॉक्टर को चिट्ठी लिखकर उस आदमी जैक हम्बर्टसन की खैरियत मालूम की, तो पता चला कि उसकी याद्दाश्त अभी तक वापस नहीं आई है।

मैं इस वाकये के बारे में कोई जिक्र नहीं करता, लेकिन इस वाकये ने मुझे 'याददाशत' के बारे में ऐसे विचार दिए, जिन्हें मैंने एक लेख की शक्ल में 'केंद्रीय रिव्यू' नाम के एक अखबार में छपवा दिया। उस लेख को पढ़कर चार सौ मील दूर कैंट्रिप कॉलेज ने मुझे न्यूयॉर्क से, जहां

उस वक्त मैं रीटा के साथ एक छोटे-से फ्लैट में रह रहा था, बुला लिया। वहां मुझे बड़ी इज्जत से सितंबर, 1951 से जून, 1952 तक रखा गया। इस दौरान मैंने रीटा को वहां एक सराय में ठहराया, जहां मैं हफ्ते में दो बार उससे मिलने के लिए जाया करता था। एक महीने बाद वह वहां से गायब हो गई, जिसके एक महीने बाद मुझे पता चला कि वह मिसेज रोलैंड नाम की किसी औरत का कोट चुराने के जुर्म में जेल में है। रीटा ने मुझे बताया कि वह कोट उस औरत के शौहर रोलैंड ने खुद ही नशे में आकर उसे भेंट किया था। मैंने बिना उसके भाई की मदद लिए उसे जेल से छुड़ाया और ब्राइलैंड (जहां पिछले साल भी हम एक बार रुके थे) होते हुए हम सेंट्रल पार्क वेस्ट आ गए।

लोलिता के साथ कभी वहां गुजारे वक्त की याद को ताजा करने की एक तेज ख्वाहिश मेरे अंदर अंगड़ाई ले रही थी। मैं अब तक एक ऐसे दौर में पहुंच चुका था, जहां मैं लोलिता को और उसे मुझसे छीनकर ले जाने वाले बदमाश को तलाश कर पाने की उम्मीद लगभग खोता जा रहा था। अब मैं सिर्फ पुरानी यादों को ही ताजा करने की कोशिश कर सकता था। पतझड़ का मौसम आने वाला था। मैंने ब्राइसलैंड के उसी 'मोहित शिकारी' होटल को प्रोफेसर हैम्बर्ग के लिए डबल बैडरूम बुक करने के लिए एक पोस्टकार्ड लिखा। लेकिन जल्दी ही वहां से जवाब आ गया कि होटल पूरा भरा हुआ है। सिर्फ तहखाने में चार बैड वाला

बिना बाथरूम का एक कमरा खाली है। उनके लिफाफे पर 'मोहित शिकारी, चर्च के नजदीक, कुत्तों को लाने की इजाजत नहीं, सारे कानूनी पेय' वगैरह लिखा था। मुझे लगा कि वहां जाकर मैं पुरानी यादों में खोकर अपने को संभाल नहीं पाऊंगा। इसलिए मैं रीटा को एक बार के अंदर छोड़कर शहर की लाइब्रेरी देखने चला गया। अगस्त 1947 में खिंचे डॉ. ब्रैडक के उस फोटो को देखने, जिसमें इत्तफाक से मेरा फोटो भी आ गया था, जबकि मैं लोलिता से मिलने के लिए उसके बिस्तर की तरफ जा रहा था।

जब मैं वापस रीटा के पास आया, तो उसके पास एक छोटे-से कद का मुरझाया हुआ सा आदमी बैठा था। रीटा ने मुस्कराते हुए मुझे उससे यह कहकर मिलाया कि वह कभी उसका क्लासमेट रहा था। कुछ देर बाद हम वापस न्यूयॉर्क जा रहे थे। न्यूयॉर्क आकर हम फिर से अपने पुराने फ्लैट में बस गए। मुझे लगता है कि न्यूयॉर्क से कैंट्रिप जाते में और फिर कैंट्रिप से वापस न्यूयॉर्क आते में दोनों बार हम ब्राइसलैंड में ठहरे थे और दोनों बार के वाकेआत को मैंने गड्डमड्ड कर दिया है।

इस फ्लैट की बिल्डिंग में बना लैटर बॉक्स कुछ इस तरह का था कि उसे खोले बगैर भी अंदर पड़ी चिट्ठियों के ऊपर लिखे पते वगैरह को पढ़ा जा सकता था। कई बार मेरे साथ ऐसा भी हुआ कि मुझे बाहर से देखने में लगता था जैसे लोलिता की लिखाई हो, लेकिन जब मैं जल्दी से लैटर बॉक्स खोलकर खत को निकालता था, तो सिर्फ निराशा ही हाथ लगती थी। सितंबर 1952 की उस सुबह को भी मैं जब अपनी डाक देखने लैटर बॉक्स तक पहुंचा, तो वहीं मुझे बिल्डिंग का चौकीदार नजर आ गया जिसके साथ मेरे ताल्लुकात काफी खराब थे। वह मुझसे कहने लगा कि पिछले दिनों एक आदमी जो रीटा को यहां तक छोड़ने आया था, वह 'कुत्ते की तरह बीमार' है और सीढ़ियों पर पड़ा है। मैंने उसकी बात को अनसुनी कर दिया, तो उसने अपनी बात दोहराई। तब तक मैं लैटर बॉक्स से अपनी डाक निकाल चुका था।

उनमें से एक खत रीटा की मां का था, जिससे मिलने एक बार हम केपकॉड गए थे। वह अकसर मुझे खत लिखा करती थी कि उसकी बेटी और मेरा जोड़ा बहुत अच्छा है, अगर हम दोनों शादी कर लें तो और भी अच्छी बात होगी। दूसरा खत, जिसे मैंने जल्दी से खोला और अपने फ्लैट तक जाते-जाते लिफ्ट में पढ़ भी लिया, जॉन फार्लो का था।

हम सभी अपने-अपने दोस्तों, पहाड़ियों और दूसरे जानवरों को इतनी अच्छी तरह से जानते हैं कि हमें अच्छी तरह से मालूम होता है कि वह क्या कर सकते हैं और क्या नहीं। मिसाल के तौर पर हम अपने एक दोस्त के बारे में जानते हैं कि

वह एक बड़ा म्यूजिक डायरेक्टर नहीं बन सकता, हमारा अंदाजा बिल्कुल सही होता है या किसी दूसरे दोस्त के बारे में हमें मालूम होता है कि वह किसी का खून नहीं कर सकता या किसी को धोखा नहीं दे सकता है। अगर कभी कुछ हमारे अंदाजे से उलटा होता है, तो हमें सदमा-सा पहुंचता है। यह सब कुछ मैं इसलिए कह रहा हूं कि मैं भी जॉन फालों का खत पढ़कर हैरत में पड़ गया। मैं जानता था कि उसकी बीवी जीन कैंसर से मर चुकी है, लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि उस जैसा संजीदा आदमी दोबारा कभी किसी भी औरत के साथ ताल्लुकात नहीं बनाएगा। उसने लिखा था कि कुछ दिन पहले ही वह एक लंबे टूर से लौटा है और रैम्सेडल के अपने सारे मामलात वह डैक विंडमुलर नाम के एक वकील (जिसे मैं भी जानता था) को सौंप रहा है। खासतौर से उसे शैर्लट के मामलों से छुटकारा हासिल होने पर बड़ी खुशी थी। उसने एक कमसिन स्पेनी लड़की से शादी कर ली थी, सिगरेट पीना छोड़ दिया था और उसका वजन तीस पौंड बढ़ गया था और अब वह हनीमून के लिए इंडिया जाने वाला

था। चूंकि अब उसके पास वक्त की कमी थी, इसलिए वह मेरे 'अजीबो-गरीब' मामलों में भी ध्यान नहीं दे सकेगा। उसे यह भी पता चल चुका था कि लोलिता का कोई पता नहीं है और मैं कैलिफोर्निया में एक बदनाम औरत के साथ रह रहा हूं। उसने लिखा था कि उसका ससुर एक असरदार और पैसे वाला आदमी है। वे लोग जो कुछ सालों से शैर्लट के मकान में किराये पर रह रहे थे, अब उसे खरीदना चाहते थे। उसका कहना था कि मैं जल्दी लो को पेश करूं। साथ ही उसने अपनी और अपनी नई बीवी की चिली में खिंची एक तस्वीर भी भेजी थी।

मुझे याद आया कि अपने फ्लैट में घुसते वक्त मैं सोच रहा था कि अब मैं उनका पता लगा लूंगा, क्योंकि तब तक मैं फालों के खत के साथ आए दूसरे खत को पढ़ रहा था, जो कि मेरे लिए रैम्सेडल में ही आया था-

'डियर डैड,

क्या हाल है? मेरी शादी हो चुकी है। मेरा बच्चा होने वाला है। मुझे उम्मीद है कि वह खूब तंदुरुस्त होगा। यह चिट्ठी में बड़ी मजबूरी में लिख रही हूं, क्योंकि हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि हम अपने उधार चुकाकर यहां से निकल सकें। डिक को अलास्का में नौकरी मिलने की उम्मीद है। मैं अपना पता नहीं लिख रही हूं, क्योंकि तुम मुझसे अब भी बुरी तरह नाराज होंगे और मैं नहीं चाहती कि इस बारे में डिक को कुछ भी पता चले। प्लीज डैड, मुझे एक चैक भेज दो। तीन-चार सौ डॉलर या इससे भी कम से हमारा काम चल जाएगा। तुम चाहो तो मेरे सामान को बेच डालो, क्योंकि मुझे यकीन है कि एक बार यहां से निकल जाने के बाद हमारे हालात ठीक हो जाएंगे। मैं बहुत दुख और परेशानी झेल चुकी हूं। प्लीज डैड, जल्दी जवाब देना।

जवाब की उम्मीद के साथ,

लोलिता (मिसेज़ रिचर्ड ए.फ. शिलर)'

138

मैं फिर से सड़क पर आ गया, फिर से उसी नीली कार के स्टेयरिंग पर, फिर से अकेला। जब तक मैंने खत पढ़ा और अपने अंदर उठे तूफान को दबाया, तब तक रीटा सो ही रही थी। मैंने उसकी तरफ देखा, वह नींद में भी मुस्करा रही थी, फिर मैंने उसके माथे को चूमा, उसके नाम

विदाई की एक मीठी-सी चिट्ठी लिखी, जिसे मैंने एक टेप से उसके पेट पर चिपका दिया (वरना शायद वह उसे नहीं मिलती) और उसे हमेशा के लिए छोड़कर वहां से निकल आया।

जैसे ही मैं एक सुनसान जगह पहुंचा तो मैंने कार की डिक्की से अपना एक पुराना गंदा सा स्वेटर निकाला और उसे एक पेड़ पर टांगकर मिस्टर रिचर्ड एफ. शिलर की कुत्ते जैसी मौत की प्रैक्टिस शुरू कर दी। इस प्रैक्टिस में मुझे थोड़ी-सी परेशानी हुई, क्योंकि मेरे पिस्तौल का ट्रिगर कुछ सख्त हो गया था। मैं यह सोचने पर मजबूर हो गया कि क्या आगे बढ़ने से पहले मुझे ट्रिगर के लिए थोड़ा तेल खरीदना पड़ेगा, लेकिन मैंने फैसला किया कि मेरे पास इतना वक्त नहीं है। इसलिए मैंने अपने जख्मी स्वेटर को वापस कार में डाला और अपने पिस्तौल को फिर से लोड करके आगे का सफर शुरू कर दिया।

उसका खत आठ सितंबर, 1952 का था और अब बाईस सितंबर थी, जबकि चैक भेजने के लिए कोलमौन्ट के पोस्ट ऑफिस का पता दिया गया था। खोजबीन से पता चला कि कोलमौन्ट न्यूयॉर्क सिटी से तकरीबन आठ सौ मील दूर एक छोटा-सा शहर था। पहले तो मैंने सोचा कि मैं दिनभर और रातभर चलता रहूं, लेकिन फिर मैं कोलमौन्ट से कुछ मील के फासले पर सुबह होने से कुछ पहले दो घंटे के लिए एक होटल में रुक गया। मुझे यकीन हो चुका था कि जब बर्ड्सले में लोलिता म्यूजिक सीखने के लिए मिस एम्पर के पास जाती थी और उस दौरान एक दिन उसकी साइकिल का टायर पंक्चर हो गया था, जिसकी वजह से उसे घर लौटने में भी देर हो गई थी, शायद उसी दिन यह शैतान शिलर पहली बार उससे मिला था और उसने लोलिता को अपनी कार में लिफ्ट दी थी। मौत की सजा पा चुका मेरा स्वेटर कार की पिछली सीट पर पड़ा हुआ था और उसे देख-देखकर मैं उसमें ट्रैप-शिलर की घिनौनी लाश को देख रहा था। मैं अंदर से शैतान बन रहा था, लेकिन ऊपर से मैंने खुद को हैंडसम और स्मार्ट बनने का फैसला कर लिया। सुबह छः बजे अलार्म बजा और मैं उठ खड़ा हुआ। मैंने अपने कागजात का मुआयना किया, नहाया, अपने नाजुक से जिस्म पर परफ्यूम का छिड़काव किया, अपने चेहरे और सीने का शेव किया, एक सिल्क की शर्ट और साफ-सुथरी पैंट पहनी, नए मोजे पहने। खुद को इस बात की मुबारकबाद दी कि उस वक्त मेरे पास अच्छे कपड़े थे।

मैंने जल्दी-जल्दी थोड़ा-सा नाश्ता किया, अपना मुंह साफ किया, जबान

पर एक टेबलेट और जेब में मौत रखी और मैं एक टेलीफोन बूथ में पहुंच गया। डायरेक्ट्री में

एक ही शिलर-पॉल शिलर का नाम मिला और उसे मैंने फोन कर दिया। उसने बताया कि वह एक रिचर्ड शिलर को जानता है, जो उसका कोई दूर का रिश्तेदार है और 10, किलर स्ट्रीक पर रहता है।

10, किलर स्ट्रीट एक झोंपड़ी थी। वहां पहुंचकर मैंने बहुत से लोगों और दो प्यारी-सी बच्चियों से शिलर के बारे में पूछा। वे दोनों ही बच्चियां अपनी नानियों के साथ थीं और शिलर को मारने के बाद अपने सीने से एक मिनट के लिए लगाने को मुझे उनमें से किसी की जरूरत पड़ सकती थी। वहां पता चला कि डिक स्किलर नाम का आदमी यहां रहता तो था, लेकिन वह अपनी शादी के बाद कहीं चला गया। कहां, यह किसी को नहीं मालूम था। किसी ने कहा कि शायद सामने वाले स्टोर पर उसका पता मालूम हो जाए। मैं पहले गलत स्टोर पर पहुंच गया था, जहां के नीग्रो मालिक ने मेरे कुछ पूछने से पहले ही खोपड़ी हिला दी कि उसे कुछ नहीं मालूम। मैं दूसरी परचून की दुकान पर पहुंचा, वहां एक औरत ने बताया, हंटर रोड, आखिरी मकान।

हंटर रोड कई मील दूर था और किलर रोड से भी कहीं ज्यादा गंदा इलाका थी। मैंने गंदे से 'आखिरी मकान' के सामने कार रोक दी। मकान के पीछे से ठोका-पीटी की आवाज आ रही थी। मैं कई मिनट तक कार में बैठा जाने क्या-क्या सोचता रहा था। मेरी मंजिल, जो कई वर्षों की मेहनत के बाद मुझे मिली थी, मेरे ठीक सामने थी। मेरे दिल की धड़कनों की रफ्तार कभी बहुत धीमी हो जाती थी, तो कभी बहुत तेज। कार पे हलकी-सी बूंदा-बांदी की आवाज आ रही थी। मेरा पिस्तौल अब तक पिछली जेब से निकलकर सामने दाईं तरफ की जेब में आ चुका था। तभी मकान के पीछे से कीचड़ में लथपथ एक कुत्ता निकलकर आया और मुझे देखकर हैरत से मुझ पर भौंकने लगा। फिर वह आगे बढ़ गया और पलटकर एक बार फिर से भौंका। मैंने कार से बाहर निकलकर कार का दरवाजा जोर से बंद कर दिया। कुत्ता फिर से भौंकने लगा। फिर मैंने दरवाजे पर लगी घंटी को दबाया। घंटी की आवाज मुझे अपने सारे वजूद में दौड़ती महसूस हुई। अंदर कुछ आवाज हुई और फिर दरवाजा खुल गया।

पहले से दो इंच लंबी। आंखों पर गुलाबी फ्रेम का चश्मा। बालों का नया स्टाइल। फूला हुआ पेट। पिचके गाल। बाजुओं और पिंडलियों की सारी चमक गायब। वह भूरे रंग के कपड़े और चप्पल पहने हुए थी। यह सब कुछ मैंने दो सेकंड में देख लिया था।

एक लम्हे को वह भौचक्की रह गई और फिर जोर से खुशी की किलकारी मार उठी।

"पति घर पर हैं?" मैंने पूछा, जेब में मुट्ठी डाले-डाले।

अगर आपने सोचा था कि मेरा इरादा लोलिता को मारने का था, तो आपका सोचना गलत था। मैं उससे प्यार करता था। मेरी जिंदगी, मेरा सब कुछ उसी का तो था। उसे मैं कैसे मार सकता था।

"अंदर आओ," उसने खुश होते हुए कहा। वह दरवाजे के एक तरफ खड़ी होकर झुकी हुई अपना हाथ फैलाकर मुझे अंदर आने का इशारा कर रही थी। मैं उसके फूले हुए पेट में होने वाले बच्चे को छुए बिना अंदर चला गया। लोलिता की खुशबू मेरी नाक से टकराई, "नहीं, तुम बाहर ही रहो," उसने कुत्ते से कहा और दरवाजे को बंद करके मेरे और अपने फूले हुए पेट के पीछे-पीछे चली आई। हम इसी तरह उसके ड्राइंगरूम में पहुंच गए।

"डिक वहां है," उसने एक तरफ इशारा किया। ड्राइंगरूम से किचन में होते हुए पिछले दरवाजे की तरफ मेरी नजर उठी, जहां एक काले बालों वाला अजनबी मेरी तरफ पीठ किए सीढ़ी पर खड़ा अपने पड़ोसी के मकान में कुछ ठोका-पीटी का काम कर रहा था। वह मेरे लिए अजनबी था कि मैं जिस इरादे से आया था, उस इरादे को फौरन ही बदल देना पड़ा। लो ने मुझसे पूछा कि क्या वह डिक को बुलाए। मैंने इंकार कर दिया।

कमरे के बीच में खड़ी लो ने मुझे कुर्सी या दीवान पर बैठने के लिए कहा। हम दोनों ही उस दीवान पर बैठ गए, जो रात दस बजे के बाद उन दोनों का बिस्तर होता था। हालांकि वह काफी मुरझा-सी गई थी। लेकिन अभी मेरे लिए वह हुस्न की देवी थी। मैंने जेब में पड़े पिस्तौल पर अपनी उंगलियों की गिरफ्त कुछ ढीली कर दी।

"यह वह आदमी नहीं है, जिसकी मुझे तलाश थी," मैंने कहा।

उसकी आंखों में पहले वाला खुशी का भाव बदल गया और पुराने दिनों की तरह उसके माथे पर बल पड़ गए, "कौन नहीं हैं?"

"वह कहां है, मुझे बताओ! जल्दी!"

"देखो," वह अपना सिर हिलाते हुए बोली, "उस बारे में हम कोई बात नहीं करेंगे।"

"मैं जरूर करूंगा," मैंने कहा और एक लम्हे के लिए पूरी बातचीत के दौरान सिर्फ इसी बार-हम दोनों एक दूसरे को ऐसे खा जाने वाली नजरों से घूरने लगे, जैसे वह अभी भी मेरी ही हो।

लेकिन अब वह समझदार हो गई थी; उसने अपने गुस्से पर काबू कर लिया। डिक को इस बारे में कुछ नहीं मालूम था। वह मुझे उसका बाप ही समझ रहा था। वह समझता था कि वो अपने घर से भाग गई थी। वह तो किसी भी बात पर

यकीन करने को तैयार था। तो फिर भी मैंने लो से कहा कि उसे समझदारी से काम लेना चाहिए और अगर उसे वाकई मेरी मदद की जरूरत है, जैसा कि उसने अपने खत में लिखा था, तो उसे कम से कम मुझे सारे हालात के बारे में जरूर बताना चाहिए।

"हां, तो उसका नाम बताओ !"

"मैं तो समझती थी कि तुम उसका नाम जानते होगे। बड़ा सनसनीखेज नाम था उसका। तुम यकीन नहीं करोगे। मुझे खुद ही यकीन नहीं आया था। वैसे उसके नाम से क्या फर्क पड़ता है? सिगरेट पियोगे?"

"नहीं, मुझे उसका नाम चाहिए।"

उसने नाम बताने से साफ इंकार कर दिया और कहने लगी कि अब उस बारे में हंगामा करने का कोई फायदा नहीं है।

"तो ठीक है, मैं चलता हूं।"

"हां, उसका नाम जानने का कोई फायदा नहीं है। वैसे क्या तुम वाकई जानना चाहते हो कि वह कौन था? अच्छा, तो ठीक है। वह-"

और फिर बड़ी नर्मी से, राजदारी से, अपनी भौंहों को घुमाते हुए, अपने होंठों को टेढ़ा करते हुए उसने बहुत धीमे से मुझे वह नाम बताया, जिसका अंदाजा आप पहले ही लगा चुके हैं।

रैम्सेडल की झील जैसी एक चमक मेरे दिमाग में कौंध गई। मैं भी न जानते हुए भी उस नाम को जानता था। मुझे कोई हैरत नहीं, कोई ताज्जुब नहीं हुआ। मेरा सारा तनाव दूर हो चुका था। मैं तो पहले ही जानता था कि वह कौन था। मैं तो बस लो से बात करके अपने शक को यकीन में बदलना चाहता था। वह अब आराम से बातें कर रही थी। उसका तनाव भी अब दूर हो चुका था। वह बता रही थी कि उसकी जिंदगी में वह एक ऐसा आदमी था, जिसके लिए वह पागल हो गई थी और यह डिक कहां से आया? डिक तो एक बहुत ही सीधा-सादा आदमी है, और वह उसके साथ बहुत खुश थी। वह मुझसे कह रही थी कि जो गुजर गया, वह गुजर गया, अब मैं उसे भूल जाऊं।

वह शैर्लट को भी जानता था। वह उसका पुराना दोस्त था और वह एक बार रैम्सेडल भी आया था। बरसों पहले वहां शैर्लट के क्लब में उसने सबके सामने लो के नंगे बाजू को पकड़कर उसे अपनी गोद में खींचकर उसके चेहरे को चूम लिया था। वह उस वक्त दस साल की थी और उसकी इस हरकत पर बहुत नाराज हुई थी। उसने मुझे और लो को उस सराय में भी देख लिया था, जहां वह उस नाटक को लिख रहा था, जिसकी दो साल बाद लो ने बर्ड्सले में रिहर्सल की थी। लोलिता ने बड़ी चालाकी से मुझे यह बता दिया था कि नाटक का लेखक क्लेअर मर्द नहीं, औरत है।

142

लो ने मुझे इतना ही बताया था कि तभी पिछले दरवाजे की तरफ से डिक और पड़ोसी बिल की आवाजें आईं। वे दोनों किचन में बीयर की तलाश में आए थे और एक अजनबी को बैठा देखकर ड्राइंगरूम में चले आए।

"डिक, यह मेरे डैड हैं!" लो जोर से चिल्लाई और मुझे उसकी आवाज अजनबी-सी लगी। डिक एक लड़ाई में शरीक हो चुका था और ऊंचा सुनता था। उसकी नीली आंखें थीं, काले बाल, सुर्ख गाल और बिना शेव की हुई ठोढ़ी। हमने हाथ मिलाए। बिल को शायद इस बात पर फख्र था कि हालांकि उसका एक ही हाथ है, लेकिन वह सारे काम एक हाथ से भी कर सकता है। वह बीयर की बोतलें लाया, उनको उसने अपने एक हाथ से खोला। थोड़ी देर बाद वह हमें वहीं छोड़कर जाना चाहता था, ताकि हम अपनी बातें कर सकें। लेकिन उसे रोक लिया गया। मैं भी यही चाहता था और शिलर परिवार भी। मैं दीवान से उठकर कुर्सी पर बैठ गया। लो ने मेरे सामने खाने-पीने का सामान सजा दिया। दोनों आदमी उसके मखमली कोट पहने, कमजोर

बदन के, पुराने जमाने के, लेकिन ज्यादा बूढ़े न दिखने वाले बाप को देखने लगे।

वे दोनों समझ रहे थे कि मैं शायद यहीं ठहरूंगा, डिक ने माथे पर बल डालते हुए कहा कि वह और लोलिता किचन में एक अलग गद्दे पर सो जाएंगे। मैंने हाथ हिलाकर लोलिता को इशारा किया, और उसने डिक को बताया कि मैं तो अपने कुछ दोस्तों से मिलने रीड्सबर्ग जा रहा था, तो रास्ते में थोड़ी देर के लिए यहां रुक गया। तभी किसी ने देखा कि बिल के अंगूठे में खून निकल रहा है (एक हाथ से वह बहुत अच्छा काम नहीं कर सकता था!) जब लोलिता उसके अंगूठे को देखने के लिए झुकी, तो मैंने देखा कि उसकी छातियां और उनके बीच की घाटी भरी पूरी औरतों जैसी हो गई है। वह बिल के हाथ पर पट्टी बांधने उसे किचन में ले गई। कुछ मिनट तक मैं और डिक वहां अकेले बैठे रहे। वह एक कुर्सी पर बैठा दाढ़ी खुजा रहा था। उसकी उदास आंखों पर खूबसूरत पलकें थीं, उसके दांत एकदम सफेद थे। ये लड़के लोग शेविंग क्यों नहीं करते हैं? वह और लोलिता इसी बैड पर सेक्स करते होंगे। अब तक कम से कम एक सौ अस्सी बार या इससे भी ज्यादा बार वे सेक्स कर चुके होंगे। लोलिता उसे कब से जानती है? क्या फर्क पड़ता है? कितनी अजीब सी बात है कि मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था। बस एक दुख था और दुख-भरी यादें थीं। अब वह अपनी नाक खुजा रहा था। मुझे यकीन था कि जब अपना मुंह खोलेगा, तो यही कहेगा कि 'मिस्टर हेज, वह बहुत अच्छी लड़की है और वह बहुत अच्छी मां भी बनेगी।' आखिर उसने मुंह खोला-बीयर का घूंट लेने के लिए और फिर वह पीता ही गया। उसने इन्हीं हाथों से लोलिता की खूबसूरत छातियों को पकड़ा होगा! उसके नाखून टूटे-फूटे और गंदे से थे, लेकिन बाकी शरीर मुझसे कहीं अच्छा था।

143

ठीक है, अगर वह खामोश है, तो मैं भी खामोश रह सकता हूं। वैसे, मुझे आराम की जरूरत भी थी, क्योंकि अब मुझे जानवर की मांद में जाकर अपने मकसद को हासिल करना था, अपनी पिस्तौल का इस्तेमाल करना था। लेकिन फिर मुझे डिक पर तरस आ गया। वह बात करने में कुछ शर्मीला था, इसीलिए अभी तक वह मुझसे मेरी बेटी की तारीफ नहीं कर पाया था, इसलिए मैंने ही बातचीत शुरू की। "तो," मैंने कहा, "तुम कनाडा जा रहे हो?"

किचन में बिल ने शायद कुछ ऐसा किया या कहा था कि लो हंस रही थी।

"तो," मैं जोर से बोला, "तुम कनाडा जा रहे हो? कनाडा नहीं," मैं दोबारा चिल्लाया-"मेरा मतलब अलास्का।"

उसने अपना गिलास संभाला और बड़ी संजीदगी से जवाब दिया, "हां, शायद किसी मशीन से कट गया था। उसका दायां हाथ इटली में कटा था।"

लो और बिल वापस आ गए। शायद बिल को भी लोलिता अच्छी लगती थी। वह आराम की सांसें लेता वहीं खड़ा रहा। वह सोच रहा था कि वह और बिल फिर से अपने काम में लग जाएंगे। उसे लगता था कि मिस्टर हेज और लोलिता को बहुत-सी बातें करनी होंगी। उसका सोचना था कि मेरे जाने से पहले वह फिर मुझसे मिल पाएगा। ये लोग क्यों इतना ज्यादा सोचते हैं और इतना कम शेव करते हैं और सुनने की मशीन से नफरत करते हैं!

उन दोनों के जाने के बाद लो ने अपनी हथेलियां अपने कूल्हों पर मारी और मुझसे बोली, "बैठ जाओ।" मैं फिर से कुर्सी पर बैठ गया।

"तो तुमने मुझे धोखा दिया? तुम कहां चली गई थी? अब वह कहां है?"

उसने एक फोटो उठाकर मुझे दिखाया। एक सेहतमंद, हंसती हुई, टेढ़ी टांगों वाली, सफेद कपड़े पहने बूढ़ी औरत और एक मूछों वाला बूढ़ा, ये उसके सास-ससुर थे। उसने बताया कि वे डिक के भाई के साथ जूनेव में रहते हैं।

"क्या तुम वाकई सिगरेट नहीं पियोगे?"

वह खुद सिगरेट पी रही थी। मैं पहली बार उसे सिगरेट पीते देख रहा था। "मैंने तुम्हें धोखा दिया? नहीं।" उसने बिल्कुल शैर्लट जैसे अंदाज में सिगरेट की राख गिराई और बोली, "नहीं, मैंने धोखा नहीं दिया। एडुसा ने मुझे बता दिया था कि क्यू को छोटी बच्चियां पसंद हैं और इस सिलसिले में वह जेल की हवा भी खा चुका है। लेकिन वह तुम्हारी तरह नहीं था। वह हर वक्त हंसता-हंसाता रहता था। जब मैंने उसे मेरे और तुम्हारे रिश्ते के बारे में बताया था, तब भी खूब हंस-हंसकर बोला था कि वह यह बात पहले से जानता था। इसलिए उसे इस बारे में बताने में कोई हर्ज नहीं..."

"तो लोग उसे क्यू कहकर बुलाते थे! एलफिंस्टन से वह मुझे एक फार्महाउस

पर ले गया। बड़ा खूबसूरत फार्महाउस था वह तुम्हें याद होगा कि एक बार हमने ('हम' सुनना अच्छा लगा!) एक लाल बालों वाले आदमी के साथ टेनिस खेली थी। वह फार्महाउस उसी लाल बालों वाले के भाई का था, लेकिन गर्मी-गर्मी के लिए वह फार्महाउस उसने क्यू को दे दिया था। जब हम वहां पहुंचे, तो वहां हमारा शानदार इस्तकबाल किया गया था। अगर-"

"आगे बताओ, प्लीज।"

"उसका इरादा था कि सितंबर में वह मुझे हॉलीवुड ले जाएगा और वहां उसके नाटक पर बन रही फिल्म के टेनिस मैच के एक सीन में मुझे एक छोटा-सा रोल दिलाएगा, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ।"

"वह कमीना अब कहां है?" मैंने पूछा।

"नहीं, वह कमीना नहीं था। वह कुछ मामलों में एक महान आदमी था। लेकिन शराब ने उसे बिगाड़ रखा था और सेक्स के मामले में उसका दिमाग बहुत गंदा था। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि वे लोग फार्महाउस पर क्या-क्या करेंगे। मैंने उन सब चीजों में हिस्सा लेने से इंकार कर दिया, क्योंकि मैं उससे प्यार करती थी। बदले में उसने मुझे वहां से निकाल दिया।"

"क्या कर रहे थे वे लोग?" मैंने सवाल किया।

"ओह, बड़ी भयानक, अजीब गंदी हरकतें। वहां दो लड़कियां, दो लड़के और तीन या चार आदमी थे और वे एक-दूसरे के साथ भद्दी-भद्दी हरकतें कर रहे थे, जबकि एक बूढ़ी औरत उनकी मूवी बना रही थी।"

"वे कर क्या रहे थे?" मैंने फिर पूछा।

"ऐसी चीजें, ऐसी हरकतें कि मैं..." वह आगे नहीं बोल पाई। थोड़ी देर उसे खुद को संभालने में लगी, फिर वह आगे बोली, "अब उस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है," उसने कहा और वहीं दीवान पर लेट गई, "गंदी, अजीब हरकतें। मैंने उनका साथ देने से इंकार कर दिया। मैंने कह दिया कि मैं सिर्फ तुमसे प्यार करती हूं, इसलिए मैं इन लड़कों को नहीं... (वह

लापरवाही से बोलती चली गई)। फिर उसने मुझे निकाल बाहर किया।"

"और कोई खास बात नहीं है। उसी साल 1949 में मुझे और फे को नौकरी मिल गई। लगभग दो साल तक हम छोटे-छोटे शहरों के होटलों में काम करते रहे। फिर मेरी मुलाकात डिक से हो गई। नहीं, मुझे नहीं मालूम कि अब वह कहां है। हालांकि वह इतना मशहूर था कि मैं जब चाहती, उसके पास पहुंच जाती। हो सकता है कि वह न्यूयॉर्क में हो। फे ने वापस फार्महाउस पर जाने की कोशिश की। लेकिन वह फार्महाउस जल चुका था और अब वहां कूड़े के ढेर के सिवा कुछ नहीं था।"

145

लोलिता-10

वह अपना मुंह खोले आंखें बंद करके तकिए पर टिक गई। उसे, अपनी डार्लिंग को तकलीफ देने का मेरा जरा भी इरादा नहीं था। मेरी वह लोलिता, जो कभी एक ताजे गुलाब की तरह थी, सिर्फ सत्रह साल की उम्र में मेरे सामने अपनी गुजरी जिंदगी की सिर्फ एक छाया बनी लेटी थी। वह बिल्कुल बिखरी हुई अपनी उम्र से कहीं ज्यादा बूढ़ी लग रही थी। लेकिन फिर भी जितना मुझे इस बात का यकीन है कि एक दिन मुझे मौत आनी है, उतना ही इस बात का यकीन था कि मैं दुनिया की किसी भी चीज से ज्यादा उससे प्यार करता हूं। वह मुरझा गई थी, उसकी खूबसूरती पता नहीं कहां घुल गई थी। आप शायद मेरा मजाक बनाएं या शायद मुझसे नफरत करें, लेकिन फांसी के फंदे पर आधा दम घुट जाने तक भी मैं चिल्ला-चिल्लाकर यही कहूंगा कि लोलिता अभी भी मेरे लिए पहले जैसी खूबसूरत है, अभी भी मैं उसी को चाहता हूं, अभी भी वह मेरी है, भले ही उसके पेट में किसी और का बच्चा हो। भले ही उसकी बड़ी-बड़ी खूबसूरत आंखें सिकुड़कर मछली की आंखों की तरह हो जाएं, भले ही उसकी छातियां सिकुड़ जाए, भले ही उसके जिस्म की सबसे प्यारी जगह मुरझा जाए, लेकिन फिर भी उस पर एक नजर पड़ते ही उसकी आवाज का एक बोल सुनते ही मैं उसके लिए पागल हो जाऊंगा। मेरी लोलिता !

"लोलिता," मैंने कहा, "शायद मेरे यह सब कहने का अब कोई फायदा न हो, लेकिन फिर भी मुझे कुछ कहना है। जिंदगी बहुत कम है। यहां से मेरी उस पुरानी कार तक सिर्फ बीस-पच्चीस कदम का फासला है। यह बहुत थोड़ी-सी दूरी है। तुम मेरे साथ इन बीस-पच्चीस कदम की दूरी तय कर लो, तो हम हमेशा खुश रहकर जिंदगी गुजार सकते हैं।"

"तुम्हारा मतलब," उसने आंखें खोलीं और इस तरह से थोड़ी-सी उठी, जैसे सांप का फन उठा हो। "तुम्हारा मतलब है कि तुम हमें पैसा इस शर्त पर दोगे कि मैं तुम्हारे साथ किसी होटल में चलूं? यही कहना चाहते हो ना तुम?"

"नहीं," मैंने कहा, "तुम गलत समझीं। मेरा मतलब है कि तुम डिक को और इस घोंसले को छोड़कर मेरे साथ चलो, मेरे साथ जिंदा रहो, मेरे साथ मरो, सब कुछ मेरे साथ करो।"

"तुम पागल हो।" वह गुस्से से बोली।

"सोच लो, लोलिता। इसमें तुम्हें कभी कोई परेशानी नहीं होगी। अलावा इसके कि..." मैंने अपनी बात अधूरी छोड़ दी। फिर मैंने आगे कहा, "लेकिन अगर तुम मना भी करोगी तो मैं तुम्हें पैसा दूंगा।"

"तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो?" उसने पूछा।

मैंने उसको एक लिफाफा दिया, जिसमें चार सौ डॉलर थे और साथ ही तीन हजार छः सौ डॉलर का एक चैक था।

146

हिचकिचाते हुए, बेयकीनी के साथ उसने मेरी उस छोटी-सी भेंट को ले लिया और उसके चेहरे की रंगत बदलकर गुलाबी हो गई, "तुम्हारा मतलब है," उसने जोर देते हुए कहा, "तुम हमें चार हजार डॉलर दे रहे हो?" मैंने अपने चेहरे को हाथों से ढक लिया, इतने गर्म आंसू मैंने कभी नहीं बहाए थे। मेरे आंसू मेरी उंगलियों को भिगोते हुए मेरी ठोढ़ी तक पहुंच रहे थे और मझे अंदर तक जला रहे थे, मेरी नाक फंस चुकी थी, लेकिन मेरा रोना था कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। तभी उसने मेरी कलाई को छुआ।

"अगर तुम मुझे छुओगी, तो मैं मर जाऊंगा," मैंने कहा। "क्या तुम वाकई मेरे साथ नहीं चल रही हो? क्या तुम्हारे चलने की मैं कोई उम्मीद नहीं करूं? मुझे बस इतना बता दो।"

"नहीं," वह बोली। "नहीं, हनी नहीं।"

उसने पहले कभी मुझे 'हनी' कहकर नहीं पुकारा था।

"नही," वह फिर से बोली, "इसका कोई सवाल ही नहीं उठता है। इससे बेहतर तो मैं क्यू के पास जाना समझेंगी। मेरा मतलब-"

वह अपनी बात पूरी करने के लिए शब्द ढूंढ रही थी। लेकिन मुझे मालूम था कि वह कहना चाहती है 'उसने तो बस मेरा दिल ही तोड़ा था। लेकिन तुमने तो मेरी जिंदगी ही बर्बाद कर दी है।'

"मुझे लगता है," वह आगे बोली, "अरे!" लिफाफा उसके हाथ से फिसलकर जमीन पर गिर पड़ा-उसने उसे फिर से उठा लिया, "मैं समझती हूं कि तुमने हमें इतना पैसा देकर हम पर बहुत बड़ा अहसान किया है। इससे हमारी सारी परेशानियां दूर हो जाएंगी, हम अगले ही हफ्ते यहां से चले जाएंगे। अब रोओ मत, प्लीज। तुम बात को समझने की कोशिश करो। मैं तुम्हारे लिए और बीयर लेकर आती हूं। नहीं, रोओ मत, मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हें इतना परेशान किया, लेकिन अब मैं कर भी क्या सकती हूं?"

मैंने अपने चेहरे और उंगलियों को पोंछा। वह मेरी भेंट को देखकर मुस्कराई। वह खुश थी और डिक को बुलाना चाहती थी। मैंने कहा कि बस मैं थोड़ी ही देर में जा रहा हूं और डिक से बिल्कुल भी नहीं मिलना चाहता। हम इधर-उधर की बात करने की कोशिश करने लगे। पता नहीं क्यों मेरी आंखों के सामने बार-बार एक ही मंजर घूमकर आ जाता था-एक बारह साल की बच्ची चौखट पर बैठी एक खाली डिब्बे पर 'पिंग-पिंग' कंकरियां मारती हुई। कुछ बात करने की कोशिश में मैं उससे पूछने वाला था कि पता नहीं मैक की छोटी-सी लड़की का क्या हुआ, वह ठीक हुई या नहीं? लेकिन मैंने खुद को यह पूछने से वक्त रहते रोक लिया, ताकि कहीं वह जवाब में मुझसे न पूछ बैठे कि 'पता नहीं हेज की छोटी-सी लड़की का क्या हुआ...।'

आखिर मैंने पैसे की बात छेड़ दी। मैंने कहा कि "जो पैसा मैंने दिया था, उसे वह इतने सालों का अपनी मां के घर का किराया समझो।" उसने कहा, "क्या वह मकान वर्षों पहले ही बिक नहीं गया था?" "नहीं (मैंने उसे यह बात रैम्सेडल से अपना ताल्लुक हमेशा के लिए तोड़ने की

खातिर बताई थी); एक वकील सारा हिसाब-किताब बाद में भेजेगा; पैसे के हालात काफी अच्छे हैं; उसकी मां के खरीदे हुए कुछ शेयर काफी अच्छी कीमत में बिकेंगे। अब मुझे चलना चाहिए। चलना चाहिए और उसे तलाश करके मिटा देना चाहिए।"

चूंकि मैं उसके होंठों की छुअन को बर्दाश्त नहीं कर पाता, इसलिए मैं दरवाजे की तरफ पीछे एक-एक कदम बढ़ाता गया और वह अपने पेट के साथ मेरे साथ-साथ आती गई दरवाजे तक !

उसने और कुत्ते ने मुझे विदा किया। मुझे हैरत हुई कि अपनी उस पुरानी कार को देखकर भी उस पर कोई खास असर नहीं पड़ा। उसने बस इतना कहा कि उसका रंग कहीं-कहीं नीले की जगह बैंगनी हो गया है। मैंने कहा कि कार उसी की है, वह चाहे तो मैं बस से भी जा सकता हूं। वह बोली, "पागल मत बनो।" मैंने कहा कि यह कार मैं उससे पांच सौ डॉलर में खरीद लूंगा।

"इस तरह तो हम जल्दी ही लखपति हो जाएंगे," उसने कुत्ते से कहा।

"एक आखिरी बात," मैंने बहुत संभलकर कहा, "क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि तुम कल भी नहीं, परसों भी नहीं, किसी दिन भी नहीं, कभी भी नहीं लौटोगी मेरे पास? अगर तुम मुझे उम्मीद की एक हल्की-सी किरन भी दे दो, तो किसी तरह उसी के सहारे मैं अपनी जिंदगी काट लूंगा।"

"नहीं," उसने मुस्कराते हुए कहा, "नहीं।"

मैं अपनी कार में जाकर बैठ गया। "गुडबाय," वह जोर से चिल्लाई। वह जो मेरा प्यार थी, जो मेरे लिए मर चुकी थी, जो अमर थी। मैंने कार आगे बढ़ाई तो मैंने डिक को पुकारती उसकी आवाज सुनी। कुत्ता मेरी कार के साथ-साथ थोड़ी दूर तक दौड़ा, फिर हांफता हुआ रुक गया। मैं ढलती हुई शाम की बूंदा-बांदी में आगे बढ़ता चलता गया। कार के वाइपर पूरी तेजी से चल रहे थे। लेकिन वे भी मेरे आंसुओं को साफ करने के लिए नाकाफी थे।

कोलमौन्ट से मैं चार बजे चला था और अगर शॉर्टकट के लालच में नहीं आता, तो सवेरा होते-होते मैं बड़े आराम से रैम्सेडल पहुंच सकता था। रात ढलते-ढलते मैं वुडबाइन पहुंच चुका था और रास्तों का अपना नक्शा देखकर वहां से मैं शॉर्टकट पर चल पड़ा। लेकिन जैसे-जैसे मैं

आगे बढ़ता गया, रास्ता खराब से खराब होता चला गया। उस रास्ते पर इतने ज्यादा गड्ढे, कीचड़ और रेत थी कि करीब दस मील चलने के बाद मैंने वापस अपने लंबे रास्ते से चलने का फैसला कर लिया।

लेकिन तब तक मेरी पुरानी कमजोर कार गहरे रेत में फंस गई। हर तरफ अंधेरा और सन्नाटा था। कार के अगले पहिए एक पानी भरे गड्ढे में थे। मैंने बार-बार कोशिश की कि रेत से कार को निकाल सकूं, लेकिन पिछले पहिए बस रेत में तेजी से घूमते हुए घूं-घूं की आवाज करके रह जाते थे। अपनी किस्मत को बूरा-भला कहते हुए मैंने अपने साफ-सुथरे कपड़े उतारकर एक पुराना जोड़ा पहना, ऊपर से मैंने गोलियों से छिदा स्वेटर पहना और चार मील पीछे के एक फार्महाउस की तरफ पैदल चल दिया। रास्ते में ही बारिश शुरू हो गई थी, लेकिन अब मेरे अंदर इतनी ताकत या हिम्मत नहीं बची थी कि मैं अपनी बरसाती लेने वापस फिर से कार तक जाता। ऐसे ही वाकेआत की वजह से मुझे लगता है कि भले ही डॉक्टर लोग कुछ भी कहें, मेरा दिल काफी मजबूत है। आधी रात के करीब मैं अपनी कार को रेत से निकलवाने में कामयाब हो पाया। उसके बाद मैं वापस दस मील तक आया और अपनी मंजिल की तरफ चल पड़ा। करीब एक घंटे बाद, एक अनजान शहर में, मुझ पर बुरी तरह से थकावट हावी हो गई, तो मैंने सड़क के किनारे कार रोककर अपने फ्लास्क में पड़ी ढेर सारी शराब को अपने पेट में डाल लिया।

बारिश मीलों पहले ही रुक चुकी थी। उस वक्त मैं शायद कहीं अपैलेचिया के करीब था। अंधेरे से भरी गर्म रात थी वह। मेरे पास से इक्का-दुक्का कारें गुजरती जा रही थीं, लेकिन आमतौर पर वह शहर सोया हुआ था। कोई भी सड़कों पर घूमता-फिरता नहीं दिखाई दे रहा था। मैं अकेला था, जो इस मासूम रात और अपने भयानक ख्यालात का मजा लूट रहा था। यह जगह ब्राइसलैंड के उस होटल से ज्यादा दूर नहीं थी, जहां मैं पहली बार लोलिता को लेकर गया था। मैं फिर से रो रहा था। मैं यादों की बारात से घिरा हुआ था। कितनी ही यादें थीं हमारी रैम्सेडल की जिंदगी की, पहले सफर की, दूसरे सफर की। वह मुझे अपनी मां का कातिल समझती थी। वह बेबस थी। मैं जंगली जानवर था। शायद उसकी समझ में आ चुका था। कि एक बाप बेटी से बलात्कार करे, इससे घिनौनी जिंदगी एक बेटी के लिए हो ही नहीं सकती और मैं उसे ऐसी ही जिंदगी के अलावा कुछ भी नहीं दे सकता था।

वापस रैम्सेडल में! मैं झील वाली साइड से शहर में दाखिल हुआ। दोपहर का वक्त था और धूप तेज थी। मैं धूल और कीचड़ में अटी अपनी कार में से ही दूर देवदार के पेड़ों के बीच झील के पानी को चमकता देख रहा था। मैं कब्रिस्तान पहुंचा और कब्रों के बीच से गुजरने लगा। हवा खामोश थी और कब्रों पर लगे झंडे भी सिर झुकाए उदास से खड़े थे। मैं शैर्लट की कब्र पर पहुंचा। अचानक मुझे जी. एडवर्ड ग्रामर का केस याद आ गया। वह पैंतीस साल का न्यूयॉर्क का एक ऑफिस

मैनेजर था जिसने अपनी पैंतीस साल की बीवी डोरोथी का कत्ल किया था। उसने पहले अपनी बीवी को पत्थर मार-मारकर मार डाला और फिर उसे लाकर कार में डाल दिया। कत्ल का पता तब चला, जब गश्त कर रहे दो पुलिसवालों ने मिसेज ग्रामर की उस नीली कार को देखा, जो उसके शौहर ने उसे शादी की सालगिरह पर तोहफे में दी थी और अब तेजी से एक पहाड़ी से नीचे गिरती जा रही थी। जब दोनों पुलिसवाले कार तक पहुंचे, तो पलटी हुई कार के पहिए अभी तक घूम रहे थे। मिसेज ग्रामर की लाश निकाली गई, लेकिन मिस्टर ग्रामर को गिरफ्तार कर लिया गया, क्योंकि जहां कार को हल्की-सी खराशें आई थीं, वहां मिसेज ग्रामर का जिस्म जख्मों से बुरी तरह चूर था। ग्रामर से अच्छा काम तो मैंने किया था।

मैं आगे बढ़ गया। एक बार फिर से रैम्सेडल के उस सफेद चर्च और उन पेड़ों को देखकर बड़ा अजीब सा लग रहा था। यह भूलकर कि यहां के लोग कार वालों से ज्यादा पैदल चल रहे लोगों को ध्यान से देखते हैं, मैंने कार छोड़ी और पैदल ही तीन सौ बयालीस लॉन स्ट्रीट की तरफ चल दिया। पड़ोसी के मकान पर 'बिक्री के लिए' का बोर्ड लगा था। मिस अपोजिट का पता नहीं था। कुत्ता भी नहीं दिखाई दिया। मैं खड़ा सोच रहा था कि क्या मैं अपने पुराने घर के अंदर जाऊं। ऊपर खिड़की से किसी के पियानो बजाने की तेज आवाज आ रही थी। अचानक मेरी नजर अंदर उस लॉन पर पड़ी, जिसकी कभी मैं देखभाल किया करता था, वहां सफेद नेकर पहने एक नौ या दस साल की किशोरी खड़ी थी। वह मुझे हैरत से देख रही थी। मैंने उससे कहा कि उसकी आंखें बड़ी खूबसूरत हैं, लेकिन वह फौरन ही पीछे हटकर अंदर भाग गई और ऊपर से पियानो की आवाज आनी भी बंद हो गई। अंदर से एक भयानक-सा दिखने वाला पसीने से भीगा आदमी बाहर आया और मुझे घूरने लगा। मैं अपने बारे में बताने ही वाला था कि अचानक मुझे ख्याल आया कि मैं कीचड़ में लथपथ पैंट और फटा-पुराना स्वेटर पहने हूं और मेरी दाढ़ी बढ़ी हुई है। बिना एक शब्द कहे, मैं जिधर से आया था, उधर ही वापस लौट गया। मिस अपोजिट को उनकी दो भतीजियां व्हील चेयर पर ले जा रही थीं। यह सोचकर कि

कहीं वे मुझे आवाज न दे दें, मैंने अपने कदम तेज कर दिए।

मुझे लगा कि मैं अपना वक्त बर्बाद कर रहा हूं, इसलिए मैं फौरन उस होटल में जाकर ठहर गया, जहां मैं पांच साल पहले एक नया बैग लेकर आया था। मैंने एक कमरा लेने के बाद फोन करके दो जगह मुलाकात का वक्त तय किया, शेव किया, नहाया, काले कपड़े पहने और बार में थोड़ी-सी शराब पीने के लिए चला गया। होटल का माहौल अब भी पहले ही जैसा था, कुछ भी नहीं बदला था। मैं उसी छोटी-सी टेबल पर बैठा, जहां किरायेदार बनने की खुशी में मैंने शैर्लट को साथ लेकर उसके साथ शराब पी थी और तभी उसका उदास दिल जीत लिया था।

150

तब की तरह आज भी एक खूबसूरत सा बैरा एक शादी की पार्टी के लिए ट्रे में पचास बोतलें सजा रहा था। तीन बजने में आठ मिनट बाकी थे। लॉबी में से गुजरते वक्त मैं उन ढेर सारी औरतों से बचकर चल रहा था, जो कि एक लंच पार्टी के बाद एक-दूसरे से विदा ले रही थीं। लेकिन मैं बच नहीं सका। मुझे पहचानते हुए एक औरत जोर से चिल्लाई और मेरे ठीक सामने आ गई। वह मिसेज चैटफील्ड थी। वह मुझे देखकर मुस्कराई, "मैं सोच रही थी कि आप कैलिफोर्निया में होंगे। लोलिता कैसी है?" मैंने उसे बहुत खुशी के साथ बताया कि मेरी सौतेली बेटी की शादी एक इंजीनियर से हो गई है। उसने कहा कि उसे इतनी कम उम्र की शादियां पसंद नहीं हैं, और वह कभी अपनी फिलिस को इजाजत नहीं देगी कि वह-

"हां, बिल्कुल," मैंने कहा। "मुझे फिलिस याद है। फिलिस और वह कैंप भी। क्या आपको मालूम है कि कैंप में चार्ली होम्स ने क्या किया था?"

मिसेज चैटफील्ड के होंठों पर मुस्कुराहट पहले ही फीकी पड़ चुकी थी। अब बिल्कुल ही गायब हो गई। "शर्म कीजिए," वह बोली, "शर्म कीजिए, मिस्टर हम्बर्ट, वह कुछ दिन पहले ही कोरिया में मारा जा चुका है।"

होटल से कुछ ही दूरी पर वकील विंडमुलर का दफ्तर था। उसने बड़ी गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। उसे भी यही लग रहा था कि मैं अभी कैलिफोर्निया में हूं। "आप कभी बर्ड्सले में भी रहे हैं न! मेरी बेटी अभी हाल ही में बर्ड्सले कॉलेज में दाखिल हुई है। और लोलिता कैसी है?" मैंने उसे मिसेज शिलर के बारे में सारी जरूरी बातें बताईं। काफी देर उससे बातचीत के बाद मैं एक संतुष्ट भिखारी की तरह उसके दफ्तर से बाहर निकल आया।

अब जबकि सारे जरूरी मामलात निपट चुके थे, तो मैं रैम्सेडल आने के अपने खास मकसद की तरफ पूरी तरह से ध्यान दे सकता था। मैंने क्लेअर क्विलटी के चेहरे को कुछ वक्त के लिए अपने दिमाग की काल-कोठरी में बंद कर दिया था, जहां वह मेरा इंतजार कर रहा था। लेकिन अब मेरे पास इतना वक्त नहीं है कि मैं इधर-उधर की बातें करूं-मैं बहुत तेजी से चलता हुआ उसके अंकल के घर की तरफ जा रहा हूं-लेकिन आपको यह बता दूं कि दूर से कई बार देखने पर वह मुझे अपने स्विट्जरलैंड के एक रिश्तेदार ट्रैप की तरह लगता आया था, लेकिन अब ट्रैप के चेहरे का मास्क उसके चेहरे से उतर गया था। अब वह मुझे बिल्कुल साफ तौर पर सिर्फ और सिर्फ क्लेअर क्विलटी दिखाई दे रहा था। इसी क्लेअर क्विलटी का अंकल रैम्सेडल में दांतों का डॉक्टर क्विलटी था, जो हमारा पड़ोसी हुआ करता था और शैर्लट अक्सर उससे अपना इलाज कराया करती थी।

बर्ड्सले में डॉ. मोलनार ने मेरा ऑपरेशन करके मेरे मसूड़ों के पीछे एक तार लगाकर मेरे दांतों को बांध दिया था। यह तार दिखाई नहीं देता था। ऑपरेशन में

मेरे कई दांत निकाल भी दिए गए थे। मैं डॉ. क्विलटी से मशवरा लेने के बहाने उनके पास पहुंच गया। मैंने कहा कि अपने चेहरे के खिंचाव को खत्म करने के लिए मैं सारे दांत निकलवाकर नकली दांतों का सैट लगवाना चाहता हूं। आप मुझे बताएं कि इसमें कितना पैसा लग जाएगा? अगर इस काम को नवंबर में शुरू किया जाए, तो सारे दांत निकलने में कितना वक्त लग जाएगा? आपका भतीजा तो काफी मशहूर आदमी है, आजकल कहां है? क्या सारे दांत एक ही बार में नहीं निकाले जा सकते?

सफेद बालों वाला डॉ. क्पिलटी एक डेस्क के कोने पर बैठकर अपना पैर जोर-जोर से हिला रहा था और मेरे दांतों का मुआयना कर रहा था। वह कह रहा था कि वह अभी मेरे दांतों में एक प्लेट वक्ती तौर पे लगा देगा और फिर एक पूरा सैट तैयार करेगा। वह उस कमीने के पास 1946 से नहीं गया था, लेकिन वह शायद ग्रिम रोड पर रहता है। उसका पैर हिल रहा था और वह बता रहा था कि मेरे काम में शायद छह सौ डालर खर्च हो जाएंगे। उसने कहा कि वह सैट का नाप लेना चाहता है।

"नहीं," मैंने कहा। "मैंने सोचा कि यह काम भी मैं डॉ. मोलनार से ही करा लूंगा। वह शायद

कुछ पैसे ज्यादा ले, लेकिन वह तुमसे कहीं ज्यादा अच्छा डॉक्टर है।"

पता नहीं आपने कभी किसी के साथ इस ढंग से बात की होगी या नहीं, लेकिन मुझे उससे इस तरह बात करने में बड़ा मजा आया था। क्लेअर के अंकल की टांग हिलनी अचानक बंद हो गई। उसने तो कुछ नहीं कहा, लेकिन वहां से निकलते ही उसी नर्स ने जोर से दरवाजे को जरूर बंद कर दिया।

मेरे पिस्तौल की मैगजीन में आठ गोलियां भरी हुई थीं और अब पिस्तौल चलने को बेताब था।

पार्किंगटन में एक पेट्रोल पंप पर काम करने वाले आदमी ने मुझे बताया कि ग्रिम रोड तक कैसे पहुंचा जा सकता है। यह यकीन करने के लिए कि क्विलटी घर पे ही होगा मैंने उसके घर पर फोन किया, लेकिन पता चला कि उसके फोन की लाइन कट चुकी है। क्या इसका मतलब यह हुआ कि वह जा चुका है? मैं ग्रिम रोड की तरफ चल दिया, जो कि शहर के उत्तर में बारह मील की दूरी पर था। उस वक्त तक अंधेरा छाने लगा था और मैं पतली-सी टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर आगे बढ़ता जा रहा था। सड़क के एक तरफ खाई थी और दूसरी तरफ ढलान। हवा में छोटे-छोटे कीड़े उड़ रहे थे और वे बार-बार मेरी कार के विंड स्क्रीन से टकरा रहे थे। बारहवें मील पर, जैसा कि मुझे बताया ही गया था, एक पुल पड़ा और उसके आगे दाईं तरफ एक सफेद चट्टान और कुछ ही आगे दाईं तरफ ही ग्रिम रोड था।

152

दो मिनट तक मैं एक घने और अंधेरे जंगल से गुजरा। उसके आगे पेवर मेनर नाम का एक लकड़ी का घर था, जहां छह-सात कारें भी खड़ी थीं। मैंने पेड़ों के साये में रुककर कार की लाइट्स बुझाई और सोचने लगा कि अब मेरा अगला कदम क्या होना चाहिए। वह जरूर इस वक्त अपने आदमियों और तवायफों के बीच होगा। वह मकान एक किले जैसा था। मकान के अंदर शायद कोई जश्न मनाया जा रहा था-शायद वैसा ही जश्न, जैसा लोलिता को फार्महाउस पर ले जाने के बाद उसने मनाना चाहा था। लेकिन यह बात यकीनी थी कि वह घर पर मौजूद था। कुछ देर वहीं खड़े रहकर मकान का जायजा लेने के बाद मैंने फैसला किया कि मैं अगले दिन बिल्कुल सुबह-सुबह आऊंगा।

मैं धीरे-धीरे शहर की तरफ चल पड़ा अपनी उसी वफादार कार में, जिसने अभी तक मेरा बहुत साथ दिया था। ओ मेरी लोलिता! मेरे दिल में कसक सी हुई। हवा में कीड़े अभी भी थे। सड़क

के दोनों तरफ छोटे-छोटे पौधे अभी भी उगे हुए थे और मैं इन सबसे बेखबर अपने ख्यालात में डूबा आगे बढ़ता जा रहा था।

मैं रात-भर नहीं सो पाया और सुबह आठ बजे होटल से निकलने के बाद मैंने कुछ वक्त पार्किंगटन में बिताया। बार-बार मुझे यह ख्याल सता रहा था। कि कहीं कोई गड़बड़ न हो जाए, कहीं ऐन मौके पर पिस्तौल ही धोखा न दे जाए। मैंने पुरानी गोलियां निकालकर उसमें नई गोलियां भरीं। पिस्तौल को तेल में नहलाया और उसके ऊपर एक कपड़ा लपेट लिया, जबकि एक कपड़े के अंदर कुछ गोलियां अलग से रख लीं।

जब मैं ग्रिम रोड की तरफ जा रहा था तो तूफान आ रहा था, लेकिन पेवर मेनर तक पहुंचते-पहुंचते फिर से सूरज चमकने लगा था। मुझे लग रहा था कि मैंने शायद जरूरत से ज्यादा शराब पी रखी थी।

मैंने घंटी बजाई, तो जवाब खामोशी में मिला। लेकिन गैराज में उसकी काले रंग की कार खड़ी हुई थी। मैंने दरवाजा खटखटाया, लेकिन इस बार भी कोई जवाब नहीं मिला, तो मैंने दरवाजे को धक्का दिया और परियों की कहानियों की तरह दरवाजा अपने आप खुलता चला गया। दरवाजे को अंदर से बंद करके मैं उस लंबे-चौड़े और गंदे से हॉल से गुजरा। पास के ड्राइंगरूम में मैंने झांककर देखा, तो वहां कई खाली गिलास कालीन पर उगे हुए से लग रहे थे। यह सब देखकर मुझे लगा कि मकान का मालिक शायद अभी भी अपने बेडरूम में पड़ा सो रहा होगा।

इसलिए मैं सीढ़ियों के ऊपर चढ़ने लगा। मैंने अपनी दाईं जेब में पड़े कपड़ा लिपटे पिस्तौल पर अपने हाथ की गिरफ्त मजबूत कर ली। ऊपर जो तीन बेडरूम मैंने झांककर देखे, उनमें से एक में जरूर कोई रात में सोया था। एक लाइब्रेरी

थी, जिसमें फूल भरे हुए थे। एक खाली कमरा था, जिसमें बड़े-बड़े शीशे लगे हुए थे। चिकने फर्श पर रीछ की खाल बिछी हुई थी और भी कई कमरे थे। मेरे दिमाग में अचानक एक ख्याल आया। अगर अचानक घर का मालिक आ जाए और एक पिस्तौल वाले को देखे तो वह जरूर उस कमरे में ताला बंद करने की कोशिश करेगा। यह सोचकर मैंने सारे कमरे की चाबियां निकालकर अपनी जेब में डाल लीं।

अचानक एक बाथरूम से वह निकला। वह एक बैंगनी रंग का गाउन पहने था और उसके जिस्म से पानी टपक रहा था। मैं ठीक उसके सामने था, छुपने का कोई मौका ही नहीं था। उसकी आंखें मोटी-मोटी और सिर के बाल कम थे, लेकिन फिर भी मैंने उसे बड़ी आसानी से पहचान लिया था। वह मेरे पास से गुजरता चला गया। या तो उसने मुझे देखा नहीं या फिर ध्यान ही नहीं दिया। जैसे नींद में चल रहा हो, इस तरह वह सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। मैं उसके पीछे-पीछे चलता हुआ नीचे हॉल तक आ गया। आधा दरवाजा खोलकर उसने इस तरह बाहर देखा, जैसे किसी ने कुछ देर पहले घंटी बजाई हो। फिर वह ड्राइंगरूम में होता हुआ पास के एक कमरे में चला गया। मैं इत्मीनान से किचन में गया। कपड़े में लिपटे अपने दोस्त को बाहर निकाला, लेकिन यह ध्यान रखते हुए कि तेल का धब्बा कहीं न पड़े। उसे साफ करके मैंने वापस अपनी जेब में रख लिया। नशे की वजह से मेरे कदम थोड़ा लड़खड़ा से रहे थे। मेरे पैरों के नीचे एक गिलास भी आ गया।

ड्राइंगरूम में फिर से हमारी मुलाकात हुई।

"तुम कौन हो?" उसने अपने गाउन की जेबों में हाथ डाले-डाले ऊंची आवाज में मुझसे पूछा। "क्या तुम ब्रूस्टर हो?"

"जी हां," मैंने बड़े अदब से कहा। "मैं ही ब्रूस्टर हूं। क्या अपना काम शुरू करने से पहले हम कुछ देर बातचीत कर सकते हैं।"

उसने खुशी से हामी भरी और मैंने अपना रेनकोट उतार दिया जिसके नीचे मैं बिना टाई के काली शर्ट और काली पैंट पहने हुए था। हम दोनों आराम कुर्सियों पर बैठ गए। उसने अपने गाल को खुजाते हुए दांत निकालते हुए कहा, "तुम जैक ब्रूस्टर नहीं लगते। मेरा मतलब तुम उससे बहुत मिलते-जुलते नहीं हो। वैसे किसी ने मुझे बताया था कि उसी टेलीफोन कंपनी में उसका भाई भी काम करता है। क्या तुम उसके भाई हो ?

बरसों के पछतावे के बाद वह मेरे जाल में फंसा था, मैं फूले हुए हाथों पर बालों का देख रहा था, सैकड़ों आंखों से मैं उसके सीने के बाल देख रहा था और थोड़ी ही देर में वहां होने वाले छेदों को देख रहा था, उसकी तकलीफ भरी चीखों को सुन रहा था। यही वह आदमी था, जिसने मेरी डार्लिंग को मुझसे छीन लिया

था और उस पर जुल्म ढाया था। जिसकी तलाश में मैं कहां-कहां घूमता फिरा था और आज वह मेरे सामने था। ओह माई डार्लिंग लोलिता, यह खुशी मेरी बर्दाश्त से बाहर थी।

"नहीं, ब्रूस्टर भाइयों में से कोई नहीं हूं।" मैंने कहा। उसने कहा सिर हिलाया, जैसे उसे और भी खुशी हुई हो।

"फिर से अंदाजा लगाओ," मैंने कहा।

"मैं तुम्हारे ऊपर इल्जाम नहीं लगा रहा हूं, ब्रूस्टर," वह बोला, "लेकिन पता नहीं क्यों लोग बिना दरवाजा खटखटाए ही यहां आ जाते हैं, मेरे किचन का इस्तेमाल करते हैं, टेलीफोन से दूर-दूर बातें करते हैं। मैं क्यों उनका बिल भरू! लेकिन तुम्हारा बोलने का ढंग बड़ा अजीब-सा है।"

"क्विलटी," मैंने कहा, "क्या तुम्हें लोलिता नाम की लड़की याद है?"

"हां, हो सकता है वे सारे फोन उसी ने किए हों। खैर, किसे परवाह है!"

"मुझे परवाह है, क्विलटी। मैं उसका बाप हूं।"

"झूठ!" वह बोला। "तुम कोई फ्रांसीसी लेखक हो।"

"क्विलटी, वह मेरी बेटी थी।"

जिस नींद जैसी हालत में मैंने सुबह से उसे देखा था, उसमें उसका न चौंकना कोई ताज्जुब की बात नहीं थी, लेकिन मुझे उसके इस गुमसुम अंदाज पर कुछ शक-सा हो रहा था। उसकी आंखों में अचानक एक चमक आई और फिर गायब हो गई।

"मैं खुद भी बच्चों से बहुत प्यार करता हूं." वह बोला, "और इसीलिए बच्चों वाले बापों से बहुत जल्दी मेरी दोस्ती हो जाती है।"

उसने अपना सिर एक तरफ घुमाया, जैसे वह कुछ ढूंढ़ रहा हो। उसने अपनी जेबों को थपथपाया। फिर उसने अपनी जगह से उठने की कोशिश की।

"बैठ जाओ!" मैंने चिल्लाकर कहा।

"तो ऐसे गरजने की क्या बात है," उसने शिकायत भरे लहजे में कहा। "मुझे सिगरेट चाहिए। मैं सिगरेट के लिए मरा जा रहा हूं।"

"तुम वैसे भी मरने वाले हो," मैंने सपाट लहजे में कहा।

"ओहो," वह बोला। "तुम तो मुझे बोर करने लगे। क्या चाहिए तुम्हें? क्या तुम फ्रांसीसी हो? चलो बार में चलकर थोड़ी पीते-पिलाते हैं।"

उसने मेरी हथेली पर रखा काला पिस्तौल देखा जैसे मैं वह उसे देने वाला हूं। "अरे," उसने अपना हाथ मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, "तुम्हारे हाथ में तो यह बढ़ा प्यारा-सा पिस्तौल है। तुम्हें क्या चाहिए?"

मैंने उसके आगे बढ़े हुए हाथ पर जोर से अपना हाथ मारा, जिससे वह पास में

रखे डिब्बे पर पड़ गया। डिब्बा खुल गया और उससे कुछ सिगरेट बाहर निकले। "अरे यहां हैं," उसने कहा। "मगर अब माचिस की जरूरत है।"

"क्विलटी," मैंने कहा। "ध्यान से सुनो। तुम अभी मरने वाले हो। तुम अपना आखिरी सिगरेट कल ही पी चुके हो। अब तुम मरने की तैयारी करो।"

वह सिगरेट छांटता रहा। "मैं कोशिश कर रहा हूं." वह बोला। "तुम या तो आस्ट्रेलियन हो या फिर काई जर्मन शरणार्थी हो और सुनो, यह एक शरीफ आदमी का घर है। इसलिए तुम्हारे लिए बेहतर यही होगा कि तुम यहां से भाग जाओ। यह पिस्तौल मेरे सामने से हटाओ। मेरे पास भी एक बहुत बढ़िया बंदूक है, जो कि मेरे म्यूजिक रूम में रखी है।"

मैंने पिस्तौल का रुख उसके चप्पल पहने पैर की तरफ किया और ट्रिगर दबा दिया। क्लिक की आवाज हुई। वह कभी अपने पैर को और कभी पिस्तौल को हैरत से देखने लगा। मैंने फिर से कोशिश की और एक कमजोर-सी आवाज के साथ पिस्तौल चल गया। बुलेट मोटे गुलाबी कालीन में धंस गई।

"देखो, मेरी बात सुनो," क्विलटी बोला। "जरा ध्यान से! यह मुझे दे दो।"

वह मेरे लिए पिस्तौल पर झपटा, लेकिन मैंने धक्का देकर उसे वापस कुर्सी पर पहुंचा दिया। मेरी खुशी कम होती जा रही थी। अब वह वक्त आ गया था, जबकि मुझे उसे मार डालना चाहिए था, लेकिन उसे पता तो होना चाहिए था ना कि उसे क्यों मारा जा रहा है।

"ध्यान से सोच," मैंने कहा, "याद कर कि तूने लोलिता का अपहरण किया था-"

"मैंने उसका अपहरण नहीं किया था!" वह चिल्लाया। "तुम पागल हो रहे हो। मैंने तो उसे एक कमीने जंगली से बचाया था और वह तुम्हें वापस मिल तो चुकी है? बंद करो यह सब! आओ हम शराब पीते हैं!"

मैंने उससे पूछा, "वह खड़े होकर मरना पसंद करेगा या बैठकर।"

"मुझे सोचने दो," उसने कहा, "यह कोई आसान सवाल नहीं है। असल में मुझसे एक गलती हो गई, जिसका मुझे बहुत अफसोस है। देखो, मैंने तुम्हारी लोलिता के साथ कुछ नहीं किया। मैं नामर्द हूं, यह एक कड़वी हकीकत है। मेरी वजह से तो उसे कुछ आराम मिल गया था। वह काफी अच्छे लोगों से मिली, जिन्हें तुम भी नहीं जानते होगे। क्या तुम-"

इतना कहते-कहते वह अचानक मुझ पर झपट पड़ा, जिससे मेरा पिस्तौल मेरे हाथ से निकलकर दूर जा पड़ा। लेकिन वह ज्यादा ताकतवर नहीं था, इसलिए उसे वापस कुर्सी पर धकेलने में मुझे कोई खास दिक्कत नहीं हुई। उसने हांफते हुए अपने हाथ सीने पर बांध लिए। पिस्तौल एक अल्मारी के नीचे जा चुका था।

मैं उसे निकालने के लिए झुका। उसने फिर से मुझसे बात करना शुरू कर दिया। बातें करते-करते वह फिर से खड़ा हो गया। मैं उस पर नजर रखे हुए अल्मारी के नीचे पिस्तौल की तलाश में हाथ चला रहा था। पिस्तौल अल्मारी के दूसरे किनारे से नीचे से झांक रहा था, जो उसने देख लिया था। एक बार फिर से हममें कुश्ती शुरू हो गई। हम फर्श पर लड़ते-लड़ते इधर-उधर घिसटते रहे।

हमारी लड़ाई फिल्मों की तरह नहीं थी, जिसमें घूंसे लातें चलते हैं और फर्नीचर टूटता है। हमारी लड़ाई बड़ी नजाकत से हो रही थी। आखिर जब मैंने दोबारा पिस्तौल पर कब्जा करके उसे वापस कुर्सी में धंसा दिया, तो हम दोनों ही बुरी तरह हांफ रहे थे। मैंने उससे पूछा कि क्या उसे मरने से पहले कुछ कहना है। उसने मेरे पिस्तौल की तरफ देखा और एक ठंडी-सी सांस ली।

"देखो," उसने कहा, "तुम शराब पिए हुए हो और मैं एक बीमार आदमी हूं। इसलिए इस मामले को टाल ही जाते हैं। मुझे सुकून की जरूरत है। मुझे अपनी नामर्दी का भी इलाज कराना है। दोपहर में मेरे दोस्त आकर मुझे कहीं ले जाने वाले हैं। तुम्हारे इस पिस्तौल के खेल से मुझे डर लग रहा है। अगर तुम्हें मुझसे कोई नाराजगी है, तो मैं उसके कुछ भी करने को तैयार हूं। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मिस्टर हम्बर्ट, लेकिन तुम एक अच्छे सौतेले बाप साबित नहीं हुए और मैंने तुम्हारी बेटी को नहीं बहलाया-फुसलाया था। उसने ही मुझसे कहा था कि वह मुझे तुमसे छुटकारा दिला दे। यह मकान उस फार्महाउस जैसा बढ़िया नहीं है। लेकिन काफी आरामदेह है। मैं कुछ दिनों में इंग्लैंड या फ्लोरेंस चला जाऊंगा। इसलिए मेरी राय है कि तुम इस घर में रहने लगो। यह तुम्हारा हुआ। लेकिन मेरी शर्त यह है कि तुम इस पिस्तौल को मेरे सामने से हटा लो। मैं तुम्हें एक ऐसी औरत भी दे सकता हूं, जिसके तीन छातियां है। वह कुदरत का एक शाहकार है। इस पिस्तौल की वजह से तुम जेल में पड़ सकते हो, जबकि मेरा इलाज किसी अस्पताल में हो जाएगा। ब्रूस्टर, मैं वादा करता हूं कि तुम यहां बहुत खुश रहोगे। मैं अपने अगले नाटक की रॉयल्टी भी तुम्हारे नाम कर दूंगा। फिलहाल मेरे पास बैंक में ज्यादा कुछ नहीं है, लेकिन अगर तुम्हें पैसा चाहिए, तो मैं उधार लेकर इंतजाम कर सकता हूं। यहां की नौकरी मिसेज विब्रीसा की कई बेटियां और नातियां है। तुम ऐश करोगे ! देखो, पिस्तौल हटा लो। मेरी थोड़ी बहुत जान-पहचान तुम्हारी बीवी से भी थी। तुम मेरे सारे कपड़े ले सकते हो। पिस्तौल हटा लो। और हां, एक और बात-पिस्तौल तो हटाओ-मेरे पास ढेर सारी किताबें हैं, जिनमें नंगी लड़कियों के फोटो हैं। और-"

मैंने गोली चलाई, जो कि एक आराम कुर्सी के अंदर घुस गई और कुर्सी झूल गई। क्लेअर

उठकर, म्यूजिक रूम की तरफ भागा-उस कमरे में लगी चाबी की

तरफ तो मेरा ध्यान ही नहीं गया था और एक बार फिर से उस कमरे के दरवाजे पर हमारे बीच धींगा-मुश्ती शुरू हो गई। मैं एक बार फिर से जीता और क्लेअर एकदम से पियानो पर बैठकर उसे बेढंगेपन से बजाने लगा और बेसुरी आवाज में गाने लगा। पियानो बजाते-बजाते अचानक उसने पियानो के पास ही एक दराज खोली। मैंने फिर से गोली चलाई जो कहीं उसके जिस्म में लगी। वह अपनी जगह से उठता चला गया। वह अपनी बगल को ऐसे दबाए हुए था जैसे बहुत तकलीफ में हो। वह नीचे गिरा और फिर उठकर हॉल की तरफ भागा। मैं उसके पीछे दौड़ता हुआ छलांग लगाकर उसके और अधखुले दरवाजे के बीच आ गया।

वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। मैंने एक-एक करके तीन या चार गोलियां उसके जिस्म में उतार दीं। हर गोली के लगने पर उसके चेहरे पर तकलीफ के भाव उभरते थे। लेकिन फिर भी वह बोलता जा रहा था, "आह, चोट लगती है, सर, बस करो। बहुत तकलीफ हो रही है, दोस्त। बस करो अब। तुम्हें ऐसा तो नहीं-" उसकी आवाज कमजोर पड़ती जा रही थी, लेकिन वह सीढ़ियां चढ़ता ही जा रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मैंने उसके बदन में सीसा नहीं, बल्कि ताकत के कैप्सूल उतारे हों। मैंने फिर से पिस्तौल को लोड किया और ऊपर पहुंच गया, जहां वह कमरे-कमरे मारा-मारा फिर रहा था और अभी भी मुझे गोली चलाना बंद करने की नसीहत करता जा रहा था। मैंने उसकी खोपड़ी का निशाना लिया और वह सीधा अपने बेडरूम में पहुंच गया।

"निकल जाओ, निकल जाओ यहां से," उसने खांसते हुए कहा, और मैं हैरत से देखता रहा कि खून में लथपथ वह आदमी बिस्तर पर पड़े सारे कपड़ों को अपने ऊपर लपेट रहा था। मैंने बिल्कुल पास जाकर फिर उस पर गोली चलाई और वह लेट गया, एक गुलाबी बुलबुला उसके होंठों पर आया, फूलकर किसी गुब्बारे की तरह बना और फिर गायब हो गया।

आखिर वह मर चुका था। लेकिन जिस बोझ को अपने दिमाग से हटाने के लिए मैंने उसे मारा था, उससे बड़ा बोझ मुझे अपने दिमाग पर महसूस हो रहा था। मैं उसे छूने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा था। उसका चौथाई चेहरा गायब था, और दो मक्खियां अपनी किस्मत पे खुश भिनभिना रही थीं। मुझे अपने हाथ भी उसी की तरह मुर्दा से लग रहे थे। बाथरूम जाकर मैंने हाथ धोए। ऊपर से मुझे जो दूर से आती आवाजें लग रही थीं, नीचे आने पर पता चला कि वे

आवाजें घर के अंदर मौजूद लोगों की थीं, जो क्विलटी की शराब बड़े मजे से पी रहे थे। उनमें एक बूढ़ा आदमी था जो कि एक आराम कुर्सी पर बैठा था। दो लड़कियां थीं, जो यकीनन बहनें थीं और उनमें से छोटी लगभग किशोरी थी। एक आदमी किचन से दो गिलास निकालकर ला रहा था और किचन में दो औरतें गपशप में मसरूफ

थीं। मैंने दरवाजे पर रुकते हुए कहा, "मैंने अभी-अभी क्लेअर क्विलटी को मार डाला।" गिलास ला रहे आदमी ने एक औरत को शराब का गिलास देते हुए कहा, "अच्छा किया।" "यह काम तो किसी को बहुत पहले ही कर देना चाहिए था," बूढ़े आदमी ने कहा। किचन से एक औरत ने पूछा, "टोनी, यह क्या कह रहे हैं?" "यह कह रहे हैं कि इन्होंने क्यू को मार डाला।" एक आदमी कोने में बैठा कुछ फाइलें ढूंढ रहा था, वह बोला, "यह काम हममें से किसी को एक ना एक दिन करना ही था।" "खैर," टोनी बोला, "अब उसे नीचे आ जाना चाहिए। अगर उसे हमारे साथ चलना है, तो हम ज्यादा इंतजार नहीं कर सकते।" "इस आदमी को पीने को कुछ दो," मोटा बोला। "बीयर लोगे?" एक औरत ने पूछा।

सिर्फ तख्त पर बैठी दोनों लड़कियां अभी तक कुछ नहीं बोली थीं, बल्कि सिर्फ मुस्करा रही थीं। जैसे ही म्यूजिक रुका, अचानक सीढ़ियों से कुछ शोर की आवाज आई। मैं और टोनी बाहर निकले। क्विलटी किसी तरह बेडरूम से बाहर निकल आया था और वह हांफता फड़फड़ाता वहां मौजूद था। हमारी आंखों के सामने ही वह वहीं ढेर हो गया। इस बार हमेशा के लिए।

"जल्दी करो, क्यू." टोनी ने हंसते हुए कहा। "मुझे यकीन है कि अभी भी-" वह ड्राइंगरूम में वापस लौट गया और उसकी बाकी की बात म्यूजिक के शोर में डूब गई।

मुझे लगा कि यह शायद उस नाटक का आखिरी सीन था, जो क्विलटी ने मेरे लिए लिखा था। मैं भारी दिल से उस घर से निकलकर अपनी कार तक पहुंचा। मेरी कार के दोनों तरफ एक-एक कार खड़ी हुई थी, इसलिए मुझे वहां से अपनी कार निकालने में थोड़ी-सी परेशानी हुई।

मेरा रेनकोट क्विलटी ड्रांइगरूम में और पिस्तौल बाथरूम में रह गया था, लेकिन मुझे अब किसी चीज से कोई फर्क नहीं पड़ता था। मेरी कार खुले रोड पर आगे बढ़ती जा रही थी। मुझे ख्याल आया कि जिस तरह मैंने इंसानियत के सारे कानून तोड़ डाले हैं, उसी तरह ट्रैफिक के कानून तोड़कर भी देखा जाए। यही सोचकर मैंने अपनी कार को सड़क की दूसरी साइड में ले

लिया-गलत साइड में! वहां ट्रैफिक कम था, लेकिन फिर भी दूसरी कारें मेरी कार के पास से कभी लहराकर, कभी चीख-पुकार मचाती हुई अपने को बचाती निकलती जा रही थीं। थोड़ी ही देर में मैंने महसूस किया कि मेरा पीछा किया जा रहा है, लेकिन मुझे अब किसी बात की कोई चिंता नहीं थी। वे दोनों कारें मेरे आगे आकर ठहर गईं। मैंने अपनी कार सड़क से नीचे उतारकर एक छोटे-से टीले पर रोक दी, जहां गायें बड़ी हैरत से मुझे और मेरी कार को देख रही थीं।

159

मुझे मेरी कार से बाहर निकाल लिया गया (अलविदा, मेरी पुरानी दोस्त, मेरी कार) और मैं बगैर कोई मुकाबला किए एक मरीज की तरफ अपने आपको सरेंडर करके उनके बीच उनका सहारा लिए चल रहा था।

तो यह है मेरी कहानी! अब से छप्पन दिन पहले अपनी इस काल कोठरी में मैंने इस कहानी को लिखना शुरू किया था, तो मैंने सोचा था कि अपने मुकदमे में भी मैं इसी का इस्तेमाल करूंगा, लेकिन आधी कहानी लिखने के बाद मुझे लगा कि इससे लोलिता का नाम बदनाम हो सकता है, इसलिए मैंने अपना इरादा बदल दिया। मेरी ख्वाहिश है कि यह कहानी तब तक न छपे, जब तक कि लोलिता जिंदा है।

मैं मौत की सजा दिए जाने के खिलाफ हूं और मुझे उम्मीद है कि मेरे इस मुकदमे का फैसला सुनाते वक्त जज भी इस चीज का ध्यान रखेगा। अगर इस केस में मैं खुद ही जज होता, तो मैं हम्बर्ट को बलात्कार के लिए पैंतीस साल की सजा सुनाता। लेकिन उसके बाकी सारे जुर्म माफ कर देता।

जब आप इस कहानी को पढ़ना शुरू करेंगे, तो इस दुनिया में न तो मैं होऊंगा, और ना ही लोलिता। लेकिन ओ मेरी लो, अभी जबकि मैं हमारी कहानी लिख रहा हूं और तुम भी जिंदा हो, तो मैं तुमसे इतनी दूर से ही सही, कुछ भी बात कर सकता हूं। अपने डिक के प्रति वफादार रहना। किसी भी दूसरे आदमी को इस बात की इजाजत मत देना कि वह तुम्हें छू भी सके। मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम्हारे शौहर का बर्ताव तुम्हारे साथ हमेशा अच्छा रहेगा, क्योंकि अगर ऐसा नहीं हुआ, तो मेरी आत्मा आएगी काले धुएं की तरह, एक पागल भूत की तरह और उसके चीथड़े करके रख देगी। और हां, क्लेअर क्विलटी की भयानक मौत पर अफसोस मत करना। मुझमें और उसमें से एक ही जिंदा रह सकता था और मैं चाहता था कि मैं जिंदा

रहूं। सिर्फ दो महीने के लिए, ताकि तुम्हें आनी वाली पीढ़ियों के लिए अमर बना जाऊं। क्योंकि अब सिर्फ अमर होकर ही हम दोनों का नाम साथ रह सकता है, मेरी जान, मेरी लोलिता !

□□ ***** समाप्त *****

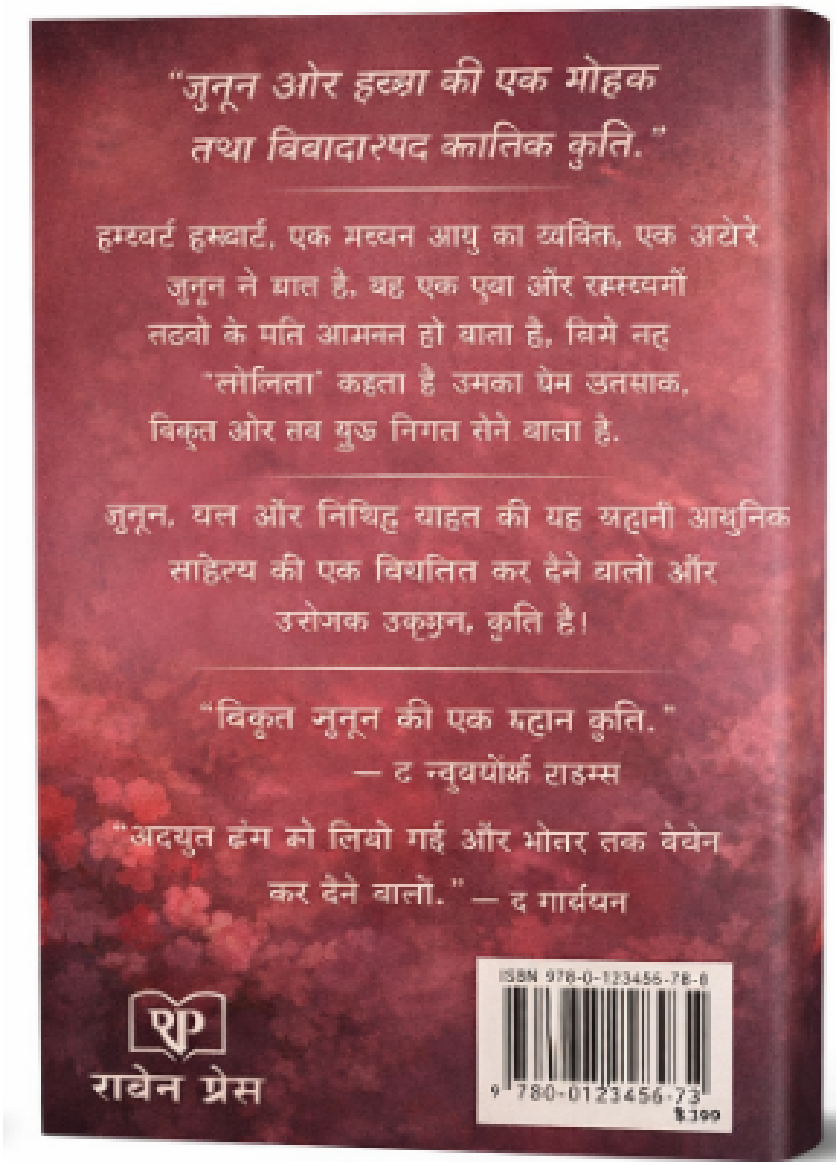
"जुनून और इच्छा की एक मोहक
तथा विवादास्पद क्लासिक कृति."
हम्बर्ट हम्बर्ट, एक मध्यम आयु का व्यक्ति, एक अटोरे
जुनून ने ग्रस्त है, वह एक एडा और रमस्यमयी
लडकी के प्रति आसक्त हो जाता है, जिसे वह
'लोलिता' कहता है उसका प्रेम उत्साक,
विकृत और तब शुरू निगल लेने वाला है.
जुनून, छल और निश्चिह्न चाहत की यह अद्भुत आधुनिक
साहित्य की एक विचलित कर देने वाली और
उरोजक उकृष्ट, कृति है।
"विकृत जुनून की एक महान कृति."
— द न्यूयॉर्क टाइम्स
"अदभुत ढंग से लिखी गई और भीतर तक बेचैन
कर देने वाली." — द गार्डियन
रावेन प्रेस
ISBN 978-0-123456-78-6
9 780-0123456-73
$199

एक खतरनाक जुनून,
एक असंभव प्रेम,

और एक त्रासद कहानी।